संस्कृतगङ्गा

वस्तुनिष्ठ

संस्कृत-व्याकरणम्

TGT, PGT, UGC-NET/JRF, C-TET, UP-TET,
DSSSB, GIC & Degree College Lecturer
M.A, B.Ed & Ph.D Entrance Exam

आदि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में उपयोगी पुस्तक

लेखकः

सर्वज्ञभूषणः

सचिवः

संस्कृतगङ्गा दारागञ्जः, प्रयागः

संस्कृतगङ्गा वस्तुनिष्ठ-संस्कृत-व्याकरणम् | कोड – 01

ISBN : 978-81-932244-0-3

* **प्रकाशक**
संस्कृतगङ्गा दारागञ्ज, प्रयाग
मो.नं. – 7800138404, 9839852033

* प्रथम संस्करण – मार्च - 2013
* द्वितीय संस्करण – जून - 2013
* तृतीय संस्करण – जनवरी - 2014
* चतुर्थ संस्करण – जनवरी - 2015
* पञ्चम संशोधित संस्करण – जनवरी - 2016

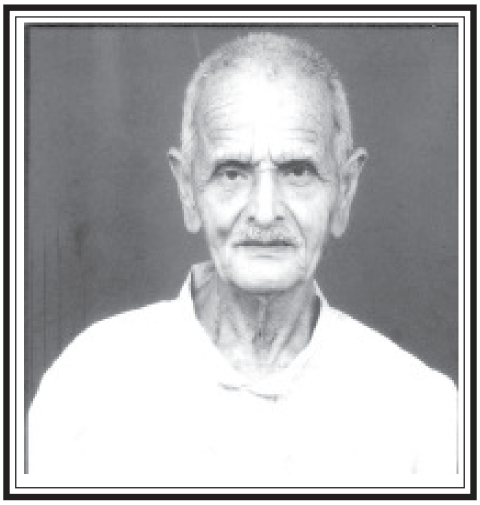
* **मूल्य – ` 198/-** (एक सौ अट्ठानबे रू० मात्र)

* **मुख्यवितरक**
राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो० 9453460552

* **प्रकाशनाधिकारिणी संस्था**
संस्कृतगङ्गा शिक्षा समिति (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, इलाहाबाद
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे,
संकटमोचन छोटे हनुमान मन्दिर के पास)
कार्यालय - 7800138404, 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. **मुख्य वितरक**
   राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 7800138404, 9839852033
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई – 9415414569
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर – 9235743254
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती – 8182854095
9. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर – 9415848788
10. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर – 0551-344862
11. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर – 9838172713
12. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
13. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ – 9918681824
14. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
15. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ – 9838640164
16. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ – 9450520503
17. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा – 9927092063
18. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर – 09907418171
19. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
20. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली
    सम्पर्क सूत्र : 9897529906
21. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर – 809062054
22. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा – 9616355944
23. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी – 9415820103
24. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
25. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली



समर्पणम्

करुणा-स्नेह-वात्सल्य की प्रतिमूर्ति

श्री अनन्तप्रसाद त्रिपाठी

गहनौआ, सिरमौर, रीवा (मध्यप्रदेश)

को

- *जिनकी गोद में बैठकर मैंने संस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया।*
- *जिनके लिए सम्बोधन तो '**गुरूजी**' का है, पर मुझे स्वयं पता नही, वे मेरे कौन हैं?*

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

—सर्वज्ञभूषणः



शुभाशंसा

'संस्कृतगङ्गा' के रूप में **सर्वज्ञभूषण जी** ने एक सराहनीय, स्तुत्य एवं स्वागतयोग्य कार्य किया है, संस्कृतच्छात्रों को विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु व्याकरण को लेकर काफी परेशान होना पड़ता था, यह पुस्तक सभी प्रतियोगी छात्रों के लिए एक वरदान सिद्ध होगी।

''संस्कृतगङ्गा'' यह नाम जितना पावन एवं पवित्र है, उसी तरह यह पुस्तक भी परिशुद्ध परिमार्जित एवं परम पवित्र है। भूषण जी का कठिन परिश्रम इस पुस्तक में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। इतना ही नही 'संस्कृतगङ्गा' इस नाम से दारागंज, इलाहाबाद में गङ्गाकिनारे छोटे हनुमान् जी मन्दिर के पास संस्कृतजगत् के लिए अद्भुत अनुपम एवं अद्वितीय शिक्षण कार्य जो आपकी देखरेख में किया जा रहा है, वह भारतीय संस्कृति, संस्कृत और समाज को चरमोत्कर्ष तक पहुँचायेगा - ऐसा विश्वास है। तीर्थराज प्रयाग में महाकुम्भ 2013 के पावनपर्व पर गङ्गा, यमुना, सरस्वती के सङ्गमस्थल से यह पुस्तक प्रादुर्भूत हुई है, तो निश्चित रूप से इन सभी की कृपा इस संस्कृतगङ्गा को प्राप्त होगी, और यह ग्रन्थ संस्कृत विद्वानों, संस्कृत प्रेमियों, एवं संस्कृतछात्रों के लिए ज्ञानाय विद्यादात्री, परीक्षायै मोक्षदात्री, तथा उद्योगार्थं धनदात्री सिद्ध होगी।

अन्त में **''वसुन्धरायां पुनरवतीर्णा संस्कृतगङ्गाधारा''** इस मङ्गलकामना के साथ 'संस्कृतगङ्गा' के यशस्वी होने की शुभाशंसा करता हूँ। प्रथम संस्करण के कुछ दोषों को दूर करने के बाद यह द्वितीय संस्करण और भी पवित्र और पावन हो गया है। अब इसका **'संस्कृतगङ्गा'** यह नाम पूरी तरह सार्थक हो गया है।

।। इति शम् ।।

महाशिवरात्रिः कुम्भमेला, प्रयाग
दिनाङ्क 10 मार्च 2013

विशुद्धानन्द ब्रह्मचारी
अध्यक्ष– संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयाग
निवास– ब्रह्मनिवास, अलोपीबाग, इलाहाबाद

संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण

सर्वप्रथम इस पुस्तक के लेखन, संशोधन एवं परिवर्धन में जिन महानुभावों एवं मित्रों का परामर्श, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिला, उन सभी का मैं कृतज्ञ हूँ, विशेषकर प्रतियोगी परीक्षाओं से जुड़े छात्रों एवं संस्कृत के युवविद्वानों का। मात्र एकमाह में प्रथमसंस्करण की 1100 प्रतियों का बिक जाना– यह इस पुस्तक की लोकप्रियता एवं संस्कृतच्छात्रों के संस्कृतप्रेम की सूचना देता है। संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज प्रयाग में पिछले दो वर्षों से संस्कृत के भाविवकर्णधारों के साथ पढ़ने-पढ़ाने का जो अवसर मिला, उससे तो मेरे जीवन की दिशा और दशा ही बदल गयी।

अन्त में सभी संस्कृतप्रेमियों से निवेदन है कि इस पुस्तक के विषय में जो भी संशोधन, परिवर्तन एवं परिवर्धन का विचार हो, हमें तत्काल सूचित करें। वह बहुत ही कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया जाएगा।

इस पुस्तक एवं संस्कृतगङ्गा के व्यवस्थापन में **राकेशकुमार (प्रबन्धक, संस्कृतगङ्गा) अनीता वर्मा (संयोजिका संस्कृतगङ्गा) एवं सतीशसारस्वत (प्रचारमन्त्री, संस्कृतगङ्गा)** का अविस्मरणीय योगदान था, है और सदैव रहेगा।

दिनाङ्क – 18 जून, 2013
गङ्गादशहरा, प्रयाग

सर्वज्ञभूषणः
सचिवः
संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद

संस्कृतप्रेमियों से संस्कृतगङ्गा की बात

प्रिय संस्कृतबन्धो!

नमः संस्कृताय।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने से एतत् अनुभूतं यत् बहुत कुछ पढ़ लेने के बाद भी परीक्षाओं में जब कोई प्रश्न बहुविकल्पीय के रूप में हमारे सामने आता है, तो कदाचित् अस्माकं मनसि संशयः उत्पद्यते। कई बार तो यही नहीं समझ में आता कि जो अहं पठन् अस्मि उससे किस तरह का सवाल पूछा जा सकता है, कई बार तो एवं अनुभूयते कि जैसे एक से ज्यादा उत्तर सही हैं, कदाचित् एवं लगति कि जैसे इन विकल्पों में कोई भी उत्तर सही नहीं है, और कभी-कभी तो ऐसा लगने लगता है जैसे सभी विकल्प सही हैं, हद तो तब हो जाती है, जब पूछा गया सवाल वयं समझ ही नही पाते, तत्र सही गलत का कोई क्या निर्णय करेगा। इन सभीप्रकार के संशयात्मक ज्ञान को दूरीकर्तुं एकः भगीरथः प्रयासः इस संस्कृतगङ्गा में किया गया है। और अहं विश्वसिमि कि जैसे गङ्गा सभी को मोक्ष प्रदान करती है, भवसागर से पार करती है, निष्पाप करती हैं, तथैव संस्कृतगङ्गा हमें परीक्षा रूपी भवसागर से पारं कृत्वा, मोक्ष प्रदान करेगी, और अस्माकं अज्ञानरूपी पापं प्रक्षाल्य हमें निष्पाप करेगी।

यथा गङ्गा को इस धराधाम में लाने के लिए भगीरथ के कई पूर्वजों ने तपस्या की थी, तथैव संस्कृतगङ्गा में भी कई भगीरथों ने अथक और अनवरत साधना की है, जिसका प्रतिफल इस महाकुम्भ के महापर्व पर गङ्गा, यमुना, के साथ साथ संस्कृतसरस्वती का सङ्गम इस ''संस्कृतगङ्गा'' के रूप में हो सका है। विशेष रूप से गङ्गा को अपनी जटाओं में धारण करके भगवान शंकर ने भगीरथ के ऊपर महती कृपा और करुणा प्रदर्शित की थी, तथैव इस संस्कृतगङ्गा को भी संस्कृतजगत् में लाने का भार **करुणाशंकर जी** ने अपने शिर पर धारण किया।

साथ ही इस संस्कृतगङ्गा को शुद्ध, परिमार्जित एवं पवित्र बनानें में जिन संस्कृतसाधकों का सत्प्रयास रहा, उनमें से सर्वश्री **पं. अजयकृष्णशास्त्री, (भागवत कथाव्यास) डॉ. शिवानन्द शुक्ल, मूलचन्द्रशुक्ल, राघवेन्द्र शुक्ल, गोविन्द द्विवेदी, राकेशपाल, रमाकान्त, परमानन्द, राजीव भैया, शैलेन्द्रपाल, श्रवण जी, रेखा, सुरेखा, नेगमदेवी, साधना जी** तथा मेरे प्रिय **पञ्चपाण्डव वीरेन्द्र, राकेशकुमार, रामप्रसाद, महेन्द्रकुमार, श्यामजी** आदि मुख्य हैं। फिर भी कुत्रचित् मुद्रणदोष होने की संभावना होगी, तदर्थं सहृदयविद्वानों से क्षमायाचना पूर्वक दोषों को सूचित करने का निवेदन करता हूँ।

इस लेखनकार्य में हमारे मित्र **ब्रह्मानन्द मिश्र** तथा **आशीषकुमार द्विवेदी** (गङ्गानाथ झा परिसर, इला.)**, स्वयंप्रकाश, अनुज मिश्र, अमित, सुधीर तिवारी** का भी योगदान अविस्मरणीय रहा जो लगातार मुझे इस कार्य के लिए प्रेरित करते रहे।

संगणक प्रतिकृति को यथासमय अतिशीघ्र सम्पादित करने हेतु **जंगबहादुर** (अल्लापुर, इला.) **वीरेन्द्र चतुर्वेदी (पं. माठा)**, तथा पृष्ठ विन्यास हेतु **चन्द्र दीप** जी का योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

मुद्रण कार्य हेतु त्रिवेणी ऑफसेट, अल्लापुर तथा प्रकाशन हेतु युनिवर्सल बुक्स, अल्लापुर के स्वामी **राजू जी** का हृदय से आभारी हूँ।

अन्त में अनन्तवात्सल्यवारिधि गुरूजी के **ललित** श्रीचरणों में प्रणाम निवेदित करते हुए आशीर्वादं कामयमानः-

दिनाङ्क – 10 मार्च 2013
महाशिवरात्रि, महाकुम्भमेला, प्रयाग

सर्वज्ञभूषणः
ग्राम - शिवपुर (डोडिया), पो. बरगढ़,
जिला - चित्रकूट (उ.प्र.) मो. 9839852033
E-mail : **sanskritganga@gmail.com**
Visit us : **www.sanskritseva.com**

विषयानुक्रमणी

संस्कृत व्याकरण के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- पाणिनिना प्रोक्तं **पाणिनीयं** व्याकरणशास्त्रम् ।
- (वैयाकरणानां) सिद्धान्तानां कौमुदी सिद्धान्तकौमुदी ,लघ्वी च असौ सिद्धान्तकौमुदी लघुसिद्धान्तकौमुदी। **(षष्ठीतत्पुरुषगर्भकर्मधारय)**
- लघुसिद्धान्तकौमुदी में **''नत्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्''** इस वाक्य में नमस्कारात्मकमङ्गलाचरण एवं **''पाणिनीयप्रवेशाय लघुसिद्धान्तकौमुदीम्''** में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण हुआ है।
- सृष्टिकाल से आज तक उपलब्ध व्याकरणों में **पाणिनीयव्याकरण** ही सर्वोत्कृष्ट है।
- वेदों की रक्षा के लिए व्याकरणशास्त्र का अध्ययन करना चाहिए -**'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्'**
- 'व्याकरण' के लिए शब्दानुशासन शब्द का भी प्रयोग होता है -**''अथ शब्दानुशासनम्''**
- पाणिनीय व्याकरण के अन्तर्गत आचार्य पाणिनि प्रोक्त **पञ्चपाठी** (सूत्रपाठ,धातुपाठ,गणपाठ,उणादिपाठ, तथा लिङ्गानुशासन) कात्यायन रचित **वार्तिक** तथा महर्षि पतञ्जलि का **महाभाष्य** सम्मिलित है ।

व्याकरणम् - वि+आङ्+कृ+ल्युट्

- **व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्**
- **अनुशिष्यन्ते संस्क्रियन्ते वा शब्दाः अनेन इति शब्दानुशासनम्**
- महर्षि पतञ्जलि ने भी 'व्याकरण' की परिभाषा की है- **''लक्ष्यलक्षणे व्याकरणम्''**
  अर्थात् लक्ष्य के लक्षण का कथन करने वाले शास्त्र को **'व्याकरण'** कहा जाता है।
- **''मुखं व्याकरणं स्मृतम्''** अर्थात् व्याकरण, वेदरूपी शरीर का मुख है।
- महाभाष्यकार पतञ्जलि व्याकरणाध्ययन की अनिवार्यता स्पष्ट करते हुए कहते हैं-**''ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च'' ।**
- **षट्वेदाङ्ग** हैं- 1.शिक्षा 2.कल्प 3.निरुक्त 4.ज्योतिष 5.छन्द 6.व्याकरणम् ।
- **''प्रधानं च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्''** वेद के षडङ्गो (वेदाङ्ग) में व्याकरण की प्रधानता है।
- व्याकरणाध्ययन की अनिवार्यता के सन्दर्भ में एक और सूक्ति प्रसिद्ध है-
  यद्यपि बहु नाधीषे , तथापि पठ पुत्र व्याकरणम् ।
  स्वजनः श्वजनो माभूत् , सकलं शकलं सकृच्छकृत् ॥
  अर्थात् बहुत ज्यादा नही पढ़ सकते तो कम से कम व्याकरण तो पढ़ो ही। अन्यथा कहीं **स्वजनः (अपने जन)** की जगह **श्वजनः (कुत्ता जन)** न बन जाय। इसी तरह **सकलम् (सम्पूर्ण)** की जगह **शकलम् (टुकड़ा)** न हो जाय। और **सकृत् (एकबार)** के स्थान पर **शकृत् (विष्टा)** न हो जाय।
- महाभाष्य के अनुसार शब्दशास्त्र (व्याकरणशास्त्र) के **आदिप्रवक्ता 'ब्रह्मा'** हैं-
  ''ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भरद्वाजाय,भरद्वाज ऋषिभ्यः, ऋषयो ब्राह्मणेभ्यः।''
  (महाभाष्य)
- संस्कृत इतिहासविद् प्रायः **नौ व्याकरण परम्पराओं** की चर्चा करते हैं-
  ऐन्द्रं चान्द्रं काशकृत्स्नं कौमारं शाकटायनम्।
  सारस्वतं चापिशलं शाकलं पाणिनीयकम् ॥

1. ऐन्द्रव्याकरण	2. चान्द्रव्याकरण
3. काशकृत्स्नव्याकरण	4. कौमारव्याकरण
5. शाकटायनव्याकरण	6. सारस्वतव्याकरण
7. आपिशलव्याकरण	8. शाकलव्याकरण
9. पाणिनीयव्याकरण	

अष्टाध्यायी

- पाणिनीयव्याकरण का प्रतिनिधिग्रन्थ **''अष्टाध्यायी''** के रचयिता **महर्षि पाणिनि** हैं।
- अष्टाध्यायी में कुल **आठ अध्याय** है। प्रत्येक अध्याय में **चार-चार पाद** हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में **8×4=32 पाद** हैं।
- सम्पूर्ण पाणिनीयशब्दानुशासन को आठ अध्यायों में विभक्त होने से **'अष्टाध्यायी'** या **'अष्टक'** भी कहते हैं।
- अष्टाध्यायी **सूत्रशैली** में लिखा गया ग्रन्थ है।
- अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र **''वृद्धिरादैच्''** तथा अन्तिम सूत्र **''अ अ''** है।

- स्वरसिद्धान्तचन्द्रिका के अनुसार पाणिनि ने **3995** सूत्रों की, निर्णयसागर संस्करण के अनुसार **3985**,तथा तारानाथ वाचस्पति के अनुसार **3965** सूत्रों की रचना की है। इस प्रकार अष्टाध्यायी में लगभग **चार हजार** सूत्र हैं। यहाँ सूत्रों की संख्या में मतभेद है, क्योंकि कहीं कहीं योग विभाग करके एक ही सूत्र को दो सूत्र भी माना गया है।
- पाणिनीयधातुपाठ में लगभग **2000 (दो हजार)** धातुयें परिगणित हैं।
- पाणिनि के सूत्रों में जो न्यूनतायें दृष्टिगोचर हुई, उनकी पूर्ति हेतु **कात्यायन (वररुचि)** ने लगभग **5000 (पाँच हजार)** वार्तिकों की रचना की ।
- सूत्र और वार्तिकों की व्याख्या के रूप में **महर्षि पतञ्जलि** ने **84 आह्निकों** में **'व्याकरणमहाभाष्यम्'** लिखा।
- 'महाभाष्य' के प्रथम आह्निक का नाम **'पस्पशाह्निक'** तथा उसका प्रथमवाक्य **'अथ शब्दानुशासनम्'** है।
- पाणिनि , कात्यायन और पतञ्जलि व्याकरण के **'मुनित्रय'** कहे जाते है। उक्तं च - **''मुनित्रयं नमस्कृत्य.........''**
- प्रक्रियाग्रन्थों में **भट्टोजिदीक्षित** की रचना **'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी'** अतिप्रसिद्ध है ,जिसमें पाणिनि के समस्त **4000 सूत्रों** का समावेश है ।
- भट्टोजिदीक्षित के शिष्य **वरदराजाचार्य** ने **सारसिद्धान्तकौमुदी**, **मध्यसिद्धान्तकौमुदी**,**एवं लघुसिद्धान्तकौमुदी** की रचना की ।
- लघुसिद्धान्तकौमुदी में पाणिनीय अष्टाध्यायी के लगभग **1275 सूत्रों** का समावेश है

सूत्र का लक्षण

अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम् ।
अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः॥

अल्प अक्षरों से अधिक अर्थ बताने की क्षमता, सन्देह रहित विषय की प्रस्तुति, सारतम प्रक्रियासरणी, आवश्यक सभी जगहों पर प्रवृत्त होने की क्षमता, दोषों का अभाव होना, और अनिन्दनीय रहना- ये **सूत्रों के छह लक्षण** हैं।

- सूत्रों की अल्पाक्षरता के विषय में वैयाकरणों में यह उक्ति बहुत प्रसिद्ध है- **''अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः''**

वार्तिक की परिभाषा

उक्तानुक्तदुरुक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्तते।
तं ग्रन्थं वार्तिकं प्राहुर्वार्तिकज्ञा मनीषिणः॥

वार्तिक में उक्त, अनुक्त (जो छूट गया है) तथा दुरुक्त (प्रमादजन्य दोष) इन तीनों के विषय में चिन्तन होता है।

वार्तिक की एक अन्य परिभाषा

यद् विस्मृतमदृष्टं वा सूत्रकारेण तत्स्फुटम्।
वाक्यकारो ब्रवीत्येव तेनाऽदृष्टं च भाष्यकृत् ॥

अर्थात् जो सूत्रकार आचार्य पाणिनि से छूट गया, उसे आचार्य कात्यायन ने वार्तिक के द्वारा कह दिया है।

भाष्य का लक्षण

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदं सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

अर्थात् जो सूत्रों के अर्थो का वर्णन सूत्रों के अनुसार अपने शब्दों में उनकी व्याख्या करें; उसें **''भाष्य''** कहते हैं।

सूत्रों के छह प्रकार

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रमुच्यते॥

1. संज्ञासूत्र 2. परिभाषासूत्र 3. विधिसूत्र 4. नियमसूत्र 5. अतिदेशसूत्र 6. अधिकारसूत्र

1. संज्ञा सूत्र- ''संज्ञाकरणं व्यवहारार्थं लोके''

- व्याकरणशास्त्र के व्यवहार के लिए 'संज्ञा' की आवश्यकता होती है। जो सूत्र संज्ञाओं का विधान करते हैं, ऐसे सूत्र **'संज्ञासूत्र'** या **'संज्ञाविधायक सूत्र'** कहलाते हैं।
- अष्टाध्यायी में लगभग **280 संज्ञासूत्र** हैं।
- यथा- **वृद्धिरादैच्** , **अदर्शनं लोपः**, **अदेङ्गुणः**, आदि।
- महर्षिपाणिनि ने अनेक प्रकार की संज्ञाओं का प्रयोग किया है-
- **अन्वर्थसंज्ञा-** सर्वनाम, सम्प्रदान, अपादान, अव्यय आदि अन्वर्थ संज्ञायें हैं।
- **कृत्रिमसंज्ञा- टि, घु , घ,** तथा **भ** इत्यादि कृत्रिम संज्ञायें हैं।
- **परम्परागतसंज्ञा-**सर्वनामस्थान, प्रातिपदिक, आर्धधातुक, सार्वधातुक, अङ्ग इत्यादि परम्परागत संज्ञायें हैं।

2. परिभाषासूत्र-''अनियमे नियमकारित्वं परिभाषात्वम्''

- अर्थात् नियम न रहने पर नियम (व्यवस्था) किया जाय, उसे **'परिभाषा'** कहते हैं।
- **'परितः सर्वतो भाष्यन्ते नियमाः यया सा परिभाषा'** अर्थात् जिसके द्वारा नियमों की स्थिरता की जाय, उसे 'परिभाषा' कहते हैं।

- इन्हें **निर्णयकर्त्ता सूत्र** भी कहा जाता है।
- परिभाषासूत्र स्वयं विधायक न होकर विधिसूत्रों के सहायक के रूप में पठित हैं।
- विधिसूत्रों की प्रवृत्ति में जहाँ सन्देहात्मक स्थिति उत्पन्न हो जाती है, वहाँ '**परिभाषासूत्र**' उपस्थित होकर उस सन्देह की निवृत्ति करता है। यथा- **यथासंख्यमनुदेशः समानाम्, स्थानेऽन्तरतमः, अनेकाल्शित् सर्वस्य** आदि।
- पाणिनीयव्याकरण में **सबसे अधिक विधिसूत्र** तथा उसके बाद संज्ञासूत्र हैं। सबसे कम परिभाषासूत्र तथा अधिकारसूत्र हैं।
- अष्टाध्यायी में **लगभग 36 परिभाषासूत्र** हैं।

3. विधिसूत्र- ''येन विधीयते स विधिः'' अर्थात् जिसके द्वारा यण् , गुण, वृद्धि, दीर्घ आदि का विधान किया जाता है, उसे **विधिसूत्र** कहा जाता है।

- अष्टाध्यायी में विधिसूत्रों की संख्या सर्वाधिक है। यथा- **इको यणचि, आद्गुणः, वृद्धिरेचि, अकः सवर्णे दीर्घः** आदि।
- विधिसूत्रों के द्वारा प्रत्ययविधान, लोप, आगम, वर्णविकार आदि अनेक कार्य सिद्ध होते हैं।

4. नियमसूत्र- ''नियम्यन्ते निश्चीयन्ते प्रयोगाः येन सः''।

- अर्थात् जिसके द्वारा प्रयोगों का नियमन किया जाय, उसे '**नियम**' कहते हैं।
- अष्टाध्यायी में लगभग **217 नियमसूत्र** प्राप्त होते हैं।
- किसी सूत्र के द्वारा कार्य सिद्ध होते हुए, उसी कार्य के लिए यदि किसी अन्य सूत्र को पढ़ा गया हो, तो वह सूत्र **नियमसूत्र** कहलाता है।

''सिद्धे सत्यारम्भमाणो विधिः नियमाय भवति''

- अर्थात् सिद्ध होने पर भी पुनः विधान करने से एक विशेष नियम का सङ्केत उससे प्राप्त होता है। यथा- **पतिः समास एव, एच इग्घ्रस्वादेशे, कृत्तद्धितसमासाश्च**

5. अतिदेशसूत्र

- **''अतिदिश्यन्ते तुल्यतया विधीयन्ते कार्याणि येन सोऽतिदेशः''** अर्थात् जिसके द्वारा समानता प्रदान की जाय, अथवा आरोप किया जाय, उसे अतिदेश कहते हैं।
- अष्टाध्यायी में लगभग **118 अतिदेशसूत्र** हैं ।
- वैयाकरणो ने 7 प्रकार का ''अतिदेश'' माना है -

1. निमित्तादिदेश 2. व्यपदेशातिदेश 3. तादात्म्यातिदेश 4. शास्त्रातिदेश 5. कार्यातिदेश 6. रूपातिदेश 7. अर्थातिदेश

- जो वैसा नही है उसे वैसा मानना ''**अतिदेश**'' है जैसे कि शिष्य जो गुरु नही है अब उसे गुरु के तुल्य माना जाय । सूत्र भी कई स्थानों पर ऐसा कार्य करते हैं ,ऐसे सूत्रों को **अतिदेशसूत्र** कहा जाता है।
- **जैसे- अन्तादिवच्च, गोतो णित्**

6. अधिकार सूत्र

- **''एकत्र उपान्तस्य अन्यत्र व्यापारः अधिकारः''** एक स्थान पर प्राप्त का अन्यत्र व्यापार ही '**अधिकार**' कहलाता है। कुछ सूत्र ऐसे होते हैं, जो अपने क्षेत्र में कोई कार्य नही करते, किन्तु अन्य सूत्रों के क्षेत्र में अपना अधिकार रखते हैं, उसके सहायक बनते हैं, ऐसे सूत्र '**अधिकारसूत्र**' हैं।
- अधिकारसूत्र अपने क्षेत्र में पड़ने वाले सभी सूत्रों के साथ अनुवृत्त होता है।
- 'अधिकार' और 'अनुवृत्ति' दोनो पर्याय ही हैं,अधिक विस्तृत क्षेत्र तक अनुवर्तन को '**अधिकार**' कहते हैं, तथा स्वल्प स्थानों तक अनुवर्तन को '**अनुवृत्ति**' कहते हैं।
- सम्पूर्ण सूत्र का पादपर्यन्त या अध्यायपर्यन्त अनुवर्तन '**अधिकार**' कहलाता हैं।
- अष्टाध्यायी में लगभग **48 अधिकार सूत्र** हैं। यथा- **कारके, ङ्याप्प्रातिपदिकात् , धातोः, प्रत्ययः, परश्च** आदि।
- पाणिनि ने अधिकार की सूचना स्वरित चिन्ह के द्वारा दी है। यथा- **स्वरितेनाधिकारः**।
- प्रवृत्ति के आधार पर **अधिकार तीन प्रकार** का कहा गया है-

'सिंहावलोकितं चैव मण्डूकप्लुतमेव च ।
गङ्गाप्रवाहवच्चाऽपि अधिकारास्त्रिधा मताः।

अनुवृत्ति और अधिकार में अन्तर

- **अधिकारसूत्र** अपने क्षेत्र में कोई काम नही करता किन्तु उत्तर सूत्र मे उसकी सहायता के लिए उपस्थित होता है, और अनुवृत्ति में वह शब्द अपने क्षेत्र में काम करते हुए उत्तरसूत्र के सहायतार्थ उपस्थित होता है।
- **अनुवृत्ति-** पूर्वसूत्र से जो पद अगले सूत्र में अपेक्षित होता है, उसका पाणिनि ने अगले सूत्र में साक्षात् पाठ न करके पूर्वसूत्र से उस पद का अनुवर्तन कर लिया है, व्याकरणशास्त्र में इसी को '**अनुवृत्ति**' कहते हैं।

➤ **अनुबन्ध- ''इत्संज्ञकत्वमनुबन्धत्वम्'' अथवा ''इत्संज्ञायोग्यत्वम् अनुबन्धत्वम्''**

➤ अनुबन्धों की इत्संज्ञा करके उनका लोप कर दिया जाता है।

आदेश- शत्रुवदादेशः

➤ किसी के स्थान पर उसे हटाकर जो शब्द होता है, उसे ' **आदेश** ' कहा जाता है।

➤ जिस प्रकार शत्रु किसी को हटाकर उसके स्थान पर अधिकार कर लेता है, उसी प्रकार **आदेश** अपने स्थानी को वहाँ से पूर्णतः हटा देता है।

➤ 'इको यणचि' में 'इक्' के स्थान पर 'यण्' आदेश होता है। यहाँ **'यण्' आदेश** है, 'इक्' स्थानी है।

➤ **'आदेश' दो प्रकार** का होता है-

1. **सर्वादेश- ''अनेकाल्शित्सर्वस्य''** 'अनेकाल्' (जिसमें अनेक वर्ण हों) तथा 'शित्' (जिसका 'शकार' इत् हो) आदेश समग्र स्थानी को हटाकर होते हैं।

➤ **''अस्तेर्भूः''** के द्वारा होने वाला 'भू' आदेश समग्र 'अस्' धातु के स्थान पर होता है।

2. **एकादेश- 'एकः पूर्वपरयोः'** जो पूर्व व पर दोनों स्थानियों के स्थान पर अकेला आदेश होता है, उसे **एकादेश** कहते हैं।

➤ 'आद्गुणः' सूत्र से 'अ+इ' के स्थान पर 'ए' यह एकादेश होता है।

➤ **आगम- ''मित्रवदागमः''** जैसे मित्र हमारे घर आता है, उसी प्रकार वर्णों के बीच आगम बिना किसी वर्ण को हटाये आकर बैठ जाता है।

➤ **स्थानी-** जिसके स्थान पर आदेश किया जाता है, उसे **''स्थानी''** कहा जाता है। **''इको यणचि''** सूत्र के द्वारा **'यण्'** आदेश **'इक्'** के स्थान पर होता है। अतः **'इक्'** स्थानी हुआ।

➤ **प्रत्याहार- ''प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र स प्रत्याहारः''** वर्णों या पदों के संक्षेपीकरण को **'प्रत्याहार'** कहा जाता है।

➤ **''आदिरन्त्येन सहेता''** सूत्र में प्रत्याहार निर्माण विधि बतायी गयी है।

➤ प्रत्याहार केवल वर्णों का ही नहीं, अपितु प्रत्यय, आगम तथा धातुओं का भी होता है।

➤ **'अच्' 'अक्' 'हल्'** आदि **42 या 43 वर्ण प्रत्याहार** हैं।

➤ **'सुप्' 'तिङ्'** तथा **'तङ्'** आादि **प्रत्यय-प्रत्याहार** हैं।

➤ **'ङमुट्'** आदि **आगम-प्रत्याहार** हैं।

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग	
01.	**अण्**	अ, इ, उ	03 वर्ण	उर**ण्** रपरः	1.1.51
02.	**अक्**	अ, इ, उ,ऋ, ऌ	05 वर्ण	**अकः** सवर्णे दीर्घः	6.1.101
03.	**अच्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ **(सम्पूर्ण स्वरवर्ण)**	09 वर्ण	**अचो**ऽन्त्यादि टि	1.1.64
04.	**अट्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र	13 वर्ण	शश्छो**ऽटि**	8.4.63
05.	**अण्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	14 वर्ण	**अणु**दित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः	1.1.69
06.	**अम्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	19 वर्ण	पुमः खय्य**म्**परे	8.3.6
07.	**अश्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	29 वर्ण	''भो भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''	8.3.17
08.	**अल्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ,	42 वर्ण	**अलो**ऽन्त्यात्पूर्व उपधा	1.1.65

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग	
		घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह **(सम्पूर्ण वर्णमाला)**			
09.	**इक्**	इ,उ,ऋ,ऌ	04 वर्ण	**इको** गुणवृद्धी	1.1.3
10.	**इच्**	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ	08 वर्ण	**इच** एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च	6.3.68
11.	**इण्**	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	13 वर्ण	**इण्**कोः	8.3.57
12.	**उक्**	उ,ऋ,ऌ	03 वर्ण	**उगि**तश्च	4.1.6
13.	**एङ्**	ए,ओ **(गुणसंज्ञकवर्ण)**	02 वर्ण	**एङि** पररूपम्	6.1.94
14.	**एच्**	ए,ओ,ऐ,औ	04 वर्ण	**एचो**ऽयवायावः	6.1.78
15.	**ऐच्**	ऐ,औ **(वृद्धिसंज्ञकवर्ण)**	02 वर्ण	वृद्धिरा**दैच्**	1.1.1
16.	**हश्**	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	20 वर्ण	**हशि** च	6.1.114
17.	**हल्**	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ, ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट, त,क, प,श,ष,स, (ह) **(सम्पूर्ण व्यञ्जनवर्ण)**	33 वर्ण	**हलो**ऽनन्तराः संयोगः	1.1.7
18.	**यण्**	य,व,र,ल, **(अन्तःस्थवर्ण)**	04 वर्ण	इको **यण**चि	6.1.77
19.	**यम्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	09 वर्ण	हलो **यमां** यमि लोपः	8.4.64
20.	**यञ्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ	11 वर्ण	अतो दीर्घो **यञि**	7.3.101
21.	**यय्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	29 वर्ण	अनुस्वारस्य **ययि** परसवर्णः	8.4.58
22.	**यर्**	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स	32 वर्ण	**यरो**ऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	8.4.45
23.	**वश्**	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	18 वर्ण	नेड् **वशि** कृति	7.2.8
24.	**वल्**	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ, ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	32 वर्ण	लोपो व्यो**र्वलि**	6.1.66

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग	
25.	**रल्**	र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	31 वर्ण	"**रलो** व्युपधाद्धलादेः सँश्च"	1.2.26
26.	**रँ**	र,ल	02 वर्ण	उरण् **रपरः**	1.1.51
27.	**ञम्**	ञ,म,ङ,ण,न **(वर्गों के पञ्चमवर्ण)**	05 वर्ण	**ञमन्ताड्डः**	(उणादि.1.114)
28.	**मय्**	म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	24 वर्ण	**मय** उञो वो वा	8.3.33
29.	**ङम्**	ङ,ण,न	03 वर्ण	**ङमो** ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्	8.3.32
30.	**झष्**	झ,भ,घ,ढ,ध **(वर्गों के चतुर्थ वर्ण)**	05 वर्ण	एकाचो बशो भष् **झष**न्तस्य स्ध्वोः	8.2.37
31.	**झश्**	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	10 वर्ण	झलां जश् **झशि**	8.4.53
32.	**झय्**	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	20 वर्ण	**झयो** होऽन्यतरस्याम्	8.4.62
33.	**झर्**	झ,भ,ध,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,	23 वर्ण	**झरो** झरि सवर्णे	8.4.65
34.	**झल्**	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	24 वर्ण	**झलो** झलि	8.2.26
35.	**भष्**	भ,घ,ढ,ध	04 वर्ण	एकाचो बशो **भष्** झषन्तस्य स्ध्वोः	8.2.37
36.	**जश्**	ज,ब,ग,ड,द **(वर्गों के तृतीय अक्षर)**	05 वर्ण	झलां **जशो**ऽन्ते	8.2.39
37.	**बश्**	ब,ग,ड,द	04 वर्ण	एकाचो **बशो** भष् झषन्तस्य स्ध्वोः	8.2.37
38.	**खय्**	ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प **(वर्गों के द्वितीय एवं प्रथम वर्ण)**	10 वर्ण	पुमः **खय्य**म्परे	8.3.6
39.	**खर्**	ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स	13 वर्ण	**खरि** च	8.4.54
40.	**छव्**	छ,ठ,थ,च,ट,त	06 वर्ण	नश्**छव्य**प्रशान्	8.3.7
41.	**चय्**	च,ट,त,क,प **(वर्गों के प्रथम अक्षर)**	05 वर्ण	**चयोः द्वितीयाः शरि** पौष्करशादेः वार्तिक-	8.4.47
42.	**चर्**	च,ट,त,क,प,श,ष,स	08 वर्ण	अभ्यासे **चर्च**	8.4.54
43.	**शर्**	श,ष,स	03 वर्ण	वा **शरि**	8.3.36
44.	**शल्**	श,ष,स,ह **(ऊष्मवर्ण)**	04 वर्ण	"**शल** इगुपधादनिटः क्सः"	3.1.45

प्रत्याहारों के विषय में कुछ विशेष तथ्य

- कुछ विद्वान् **''रँ''** और **'ञम्'** प्रत्याहारों की गणना नही करते हैं; अतः प्रत्याहारों की कुल संख्या 42 तथा कुछ विद्वान् 43 या 44 भी मानते हैं।
- **'अच्'** प्रत्याहार में समस्त **9 स्वरवर्ण** आते हैं; ये **चार सूत्रों** में कहे गये हैं।
- **'हल्'** प्रत्याहार में समस्त **33 व्यञ्जन वर्ण** आते हैं; ये **दश सूत्रों** में कहे गये हैं।
- वर्णों के सभी पाँचवे वर्ण **'ञम्'** प्रत्याहार में आते हैं,जो **'ञमङणनम्'** इस एक सूत्र में कहे गये हैं। इसमें कुल **05 वर्ण** आयेंगे।
- **'झष्'** प्रत्याहार में वर्गों के चौथे वर्ण आते हैं, जो **'झभञ् और घढधष्'** इन दो सूत्रों में कहे गये हैं। इसमें कुल **5 वर्ण** आते हैं।
- **'जश्'** प्रत्याहार में वर्गों के तीसरे वर्ण आते हैं, जो **'जबगडदश्'** इस एकसूत्र में कहे गये हैं, इसमें कुल **05 वर्ण** हैं।
- **'खय्'** प्रत्याहार में वर्गों के दूसरे और पहले वर्ण आते हैं, जो **''खफछठथचटतव् कपय्''** इन दो सूत्रों में कहे गए हैं। इसमें कुल **10 वर्ण** आते हैं।
- **'चय्'** प्रत्याहार में वर्गों के प्रथम वर्ण आते हैं। इसमें कुल **05 वर्ण** आयेंगे।
- **'शल्'** प्रत्याहार में **चारों ऊष्मवर्ण** आते हैं।
- **'यण्'** प्रत्याहार में चारों अन्तःस्थवर्ण आयेंगे; जो **हयवरट्** और **लण्** इन दो सूत्रों में कहे गये हैं।

संज्ञाप्रकरणम्

- अइउण् ,ऋऌक् आदि ये **चौदह सूत्र** हैं, इसलिए उन्हे **''चतुर्दशसूत्र''** कहते हैं। इन सूत्रों से प्रत्याहार बनाये जाते हैं; अतः इन्हें **''प्रत्याहार-सूत्र''** भी कहते हैं। भगवान शिव के डमरू से निकलकर पाणिनि को प्राप्त हुए हैं अतः इन्हें **''शिवसूत्र''** या **''माहेश्वरसूत्र''** कहते हैं। इन सूत्रों में संस्कृत की वर्णमाला है, अतः इन्हें **''वर्णसमाम्नाय''** भी कहते हैं।
- इन चतुर्दशसूत्रों का प्रयोजन अण् ,अच् आदि **प्रत्याहारों की सिद्धि** है।
- अइउण् ऋऌक् आदि चतुर्दश सूत्रों के अन्त में लगे हुए ''ण्, क्, ङ्, च्, ट्, ण्, म्, ञ्, ष्, श्, व्, य्, र् , ल्'' इन **चौदह वर्णों की इत्संज्ञा** की जाती है- **''एषामन्त्याः इतः''**
- **स्वरों** को **'अच्'** तथा **व्यञ्जनों** को **'हल्'** कहते हैं।
- 'हयवरल' आदि में ह् ,य् ,व् ,र् ,ल् इन वर्णों का अकार के साथ उच्चारण किया गया है; यह अकार केवल उच्चारण के लिए है- **''हकारादिषु अकारः उच्चारणार्थः'**
- **''हलन्त्यम्''** सूत्र में **''उपदेशेऽजनुनासिक इत्''** इस सूत्र से **'उपदेशे'** और **'इत्'** इन दो पदों की अनुवृत्ति आती है।
- **''हलन्त्यम्''** इत्संज्ञाविधायक संज्ञासूत्र है। अर्थात् इस सूत्र का कार्य है **हल् अक्षरों की इत्संज्ञा करना।**
- **उपदेश-** पाणिनि, कात्यायन एवं पतञ्जलि ने जिसका प्रथम उच्चारण या प्रथम पाठ किया है, उसे 'उपदेश' कहते हैं।- **''उपदेश आद्योच्चारणम्''**
- **'उपदेश'** के सम्बन्ध में एक पद्य भी अतिप्रसिद्ध है-
  धातुसूत्रगणोणादिवाक्यलिङ्गानुशासनम् ।
  आगमप्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः॥
  भू आदि धातु , अइउण् आदि सूत्र,गणपाठ, उणादिसूत्र, वार्तिक,लिङ्गानुशासन,आगम,प्रत्यय,आदेश,-ये उपदेश माने जाते हैं।
- **''सूत्रेष्वदृष्टं पदं सूत्रान्तरादनुवर्तनीयं सर्वत्र''**
  सूत्रों का सूत्रार्थ करने के लिए उसमें जो पद कम हों, उसे आवश्यकतानुसार अन्यसूत्रों से ले लेना चाहिए। जैसे- **''हलन्त्यम्''** इस सूत्र का अर्थ करने के लिए **'उपदेशे'** और **'इत्'** ये दो पद पूर्व सूत्र से ले लिए गये हैं।
- उणादि सूत्रों की संख्या लगभग 750 है।
- कात्यायन ने पाणिनि के लगभग 1500 सूत्रों के ऊपर 5000 वार्तिक लिखे हैं।
- सम्पूर्ण व्याकरण में इत्संज्ञा के बाद लोप करने के लिए एकमात्र **''तस्य लोपः''** सूत्र ही है।
- अइउण् , ऋऌक् आदि चौदह सूत्रों के अन्त्य में जो णकार,ककार आदि हल् वर्ण लगे हुए हैं; उनका प्रयोजन प्रत्याहार की सिद्धि है- **'णादयोऽणाद्यर्थाः'**

स्वरों की मात्रा

एकमात्रा भवेद्ध्रस्वं द्विमात्रो दीर्घमुच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयं व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्

- अर्थात् **अ,इ,उ,ऋ,ऌ**- इन ह्रस्व स्वरों की **एकमात्रा**,आ,ई,ऊ,ॠ,ए,ओ,ऐ,औ-इन **दीर्घस्वरों की दो मात्रा, प्लुतवर्णों की तीन मात्रा**, तथा **व्यञ्जनवर्णों की अर्धमात्रा** मानी जाती है। प्लुतवर्णों को दिखाने के लिए वर्ण के बाद ३ का अङ्क लिखा जाता है; जैसे- इ ३। उदात्त, अनुदात्त और स्वरित को समझने के लिए वैदिकग्रन्थों में विशेष चिह्नों का प्रयोग किया गया है। अनुदात्त अक्षर के नीचे पडी लाइन (-) तथा स्वरित के ऊपर खडी लाइन (।) होती है, और उदात्त के लिए कोई चिह्न नही होता है।

समास

- समास का अर्थ है - संक्षेप
- समस्यते एकीक्रियते प्रयोक्तृभिः इति समासः (कर्मपक्ष)
- समस्यते = एकीभवति कर्त्ता सुबन्तेन सह इति समासः (कर्तृपक्ष)

'समास' की परिभाषा

- **''विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते ।**
  पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते ।
- अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता है, परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता है, अनेक पद मिलकर एक पद बन जाता है, उसे **'समास'** कहते हैं।
- **'अनेकपदानामेकपदीभवनं समासः'** अनेकपदों का मिलकर एकपद होना 'समास' है।
- **''समसनं समासः'' (सम् + अस् +घञ्)** अर्थात् पास-पास रखना।
- संस्कृत भाषा में जब दो या दो से अधिक पद पास पास रखे जाय, तो वे अपनी स्वतन्त्र सत्ता खो देते हैं। फलतः जिस विभक्ति के कारण उनकी पदसंज्ञा थी, उसका लोप हो जाता है । इस प्रकार एक पृथक् पद के रूप में समस्त पद अभिव्यक्त होते हैं।
- इसप्रकार दो या दो से अधिक शब्द जहाँ एक जगह, एक पद, एक अर्थ वाले बन जाते हैं, उसे **'समास'** कहते हैं।

समास के प्रकार

- समास पाँच प्रकार का होता है- **'समासः पञ्चधा'**
  1. केवलसमास (सुप्सुपा समास) यथा- **भूतपूर्वः**
  2. अव्ययीभावसमास - **उपकृष्णम्**
  3. तत्पुरुषसमास - **राजपुरुषः**
  4. द्वन्द्वसमास - **रामलक्ष्मणौ**
  5. बहुव्रीहिसमास - **पीताम्बरः**

नोट– भट्टोजिदीक्षित एवं बाबूराम सक्सेना केवल समास को अव्ययीभाव के अन्तर्गत मानते हुए समास के चार भेद ही मानते हैं।

1. केवलसमासः- विशेषसंज्ञा-विनिर्मुक्तः केवल समासः

- जब व्याकरणशास्त्र में किसी समास की विशेष संज्ञा नहीं की जाती है, तो वह केवल समास कहलाता है, इसे ही **'सुप्सुपासमास'** भी कहते हैं । यथा- पूर्वं भूतः **'भूतपूर्वः'**
- **'भूतपूर्वे चरट्'** (5.3.53) इस सूत्र से 'भूत' शब्द का पूर्व में प्रयोग होता है।
- केवल समास विधायक सूत्र- **''सह सुपा''** 2.1.4
- **'इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च' (वा.)** 'इव' के साथ समास होने पर विभक्ति का लोप न हो । यथा- **जीमूतस्येव, वागर्थाविव।**

2. अव्ययीभाव-'प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः'

- इसमें पूर्वपद का अर्थ प्रायः प्रधान होता है, पूर्वपद प्रायः अव्यय होता है, तथा समस्तपद भी अव्यय के रूप में व्यवहृत होता है । **यथा- हरौ इति =अधिहरि**

समासविधायकसूत्र

- **''अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्था-भावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु''** 2.1.6

3. तत्पुरुष - प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः

- इसका उत्तरपद प्रधान होता है। यह अनेक प्रकार का होता है-
- **विभक्ति तत्पुरुष-** द्वितीयान्त से सप्तम्यन्त पर्यन्त जिस जिसका उत्तरपद के साथ समास होता है, वह तत् तत् विभक्ति के नाम से जाना जाता है-

- **द्वितीया तत्पुरुष-** कूपं पतितः = **कूपपतितः**
- **तृतीया तत्पुरुष-** शङ्कुलया खण्डः = **शङ्कुलाखण्डः**
- **चतुर्थी तत्पुरुष-** यूपाय दारु = **यूपदारु**
- **पञ्चमी तत्पुरुष-** चोरात् भयम् = **चोरभयम्**
- **षष्ठी तत्पुरुष-** राज्ञः पुरुषः = **राजपुरुषः**
- **सप्तमी तत्पुरुष-** अक्षेषु शौण्डः = **अक्षशौण्डः**
- **कर्मधारय-** इसके दोनों पद समान विभक्ति में होते हैं-
  कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

- **द्विगुसमासः- 'संख्यापूर्वो द्विगुः' 2.1.51**
- जब पूर्वपद संख्यावाचक होता है, तो 'द्विगुसमास' कहलाता है। **यथा-** त्रयाणां लोकानां समाहारः **त्रिलोकी**
- यह कर्मधारय का भेद है।

4. द्वन्द्व समास- 'प्रायेण उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः'

- प्रायः दोनों या सभी पदों का अर्थ प्रधान होता है।
- 'च' के अर्थ में समास का विधान होता है।
  यथा- कृष्णश्च अर्जुनश्च = **कृष्णार्जुनौ**
- समास विधायक सूत्र- **चार्थे द्वन्द्वः' 2.2.29**

5. बहुव्रीहि समास- प्रायेण अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः

- इसमें प्रायः अन्यपद प्रधान होता है।
  यथा- पीतानि अम्बराणि यस्य सः **पीताम्बरः**
- समासविधायक सूत्र - **अनेकमन्यपदार्थे 2.2.24**

समास से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

अन्तर्वर्तिनी विभक्ति

- समास में जो-जो पद समस्यमान होते हैं, उन सभी से कोई न कोई विभक्ति अवश्य होती है। वे **'अन्तर्वर्तिनी विभक्ति'** कहलाती है ।
- ये विभक्तियाँ समस्तपद के मध्य में आती हैं। अतः इनका लोप हो जाता है।
- **दशरथस्य पुत्रः = 'दशरथ ङस् पुत्र सु'** यहाँ अन्तर्वर्तिनी विभक्तियों ('ङस्' तथा 'सु') का लोप होकर 'दशरथपुत्र' एक समस्तपद बनता है। प्रातिपदिक संज्ञा होकर पुनः 'सु' आदि विभक्तियाँ आती हैं ।

वृत्ति-''परार्थाभिधानं वृत्तिः''

- समास आदि में जब पद अपने स्वार्थ को पूर्णतया या अंशतः छोड़कर एक विशिष्ट अर्थ को कहने लग जाते हैं, तो उसे 'वृत्ति' कहा जाता है ।
- 'वृत्ति' में एकार्थीभाव सामर्थ्य हो जाता है। यथा- दशरथस्य पुत्रः = दशरथपुत्रः (एकार्थीभूत पद)
- वृत्ति में पद मिलकर एकाकार हो जाते हैं; इसे ही **'पदविधि'** कहा जाता है ।
- **'वृत्ति' पाँच प्रकार की है-**
  (1) कृदन्तवृत्ति (2) तद्धितवृत्ति (3) समासवृत्ति
  (4) एकशेषवृत्ति (5) सनाद्यन्तधातुवृत्ति

विग्रह

''वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः''

- वृत्ति के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य होता है, उसे **'विग्रह'** कहते हैं ।
- विग्रह दो प्रकार का होता है-

(i) लौकिक विग्रह- जो लोक में व्यवहृत होता है, अर्थात् लोक के समझने लायक विग्रह को 'लौकिक विग्रह' कहते हैं । **यथा- 'दशरथपुत्रः'** का लौकिक विग्रह होगा- **दशरथस्य पुत्रः।**

(ii) अलौकिक विग्रह- जो व्याकरणशास्त्र की प्रक्रिया दर्शाने हेतु अर्थात् शास्त्रीयनिर्वाह के लिए विग्रह होता है, उसे 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं ।

- अलौकिक विग्रह में ही समास करने वाला सूत्र लगता है । **यथा- दशरथ ङस् पुत्र सु ।**

'समास' सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- समास हमेशा समर्थ अर्थात् परस्पर आकांक्षा वाले पदों में ही होता है।
- समास करने के लिए किसी सूत्र या वार्तिक की प्रवृत्ति होती है।
- समास करने के बाद सम्पूर्ण पद की **''कृत्तद्धितसमासाश्च''** सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है।
- समास के बाद दो शब्दों में किसका पूर्वनिपात अर्थात् पूर्व में प्रयोग हो, इसके लिए उपसर्जन संज्ञक आदि से निर्णय किया जाता है।
- अन्त में समास के प्रातिपदिकसंज्ञक होने के कारण पुनः 'सु' आदि प्रत्ययों की उत्पत्ति होती है।
- समास अधिकतर सुबन्त का सुबन्त के साथ होता है, तिङन्त के साथ नहीं।
- समास में दो या उससे अधिक पदों के मध्य रहने वाली **विभक्तियों का लोप** हो जाता है, तथा सभी पद मिलकर एक समस्तपद के रूप में परिणत हो जाते हैं।
- जिन समस्तपदों का विग्रहवाक्य देना सम्भव न हो, ऐसे समास को **'नित्यसमास'** कहते हैं। उसी का दूसरा नाम **'अस्वपद विग्रह'** है।
- **'प्राक्कडारात् समासः'** (2.1.3) अर्थात् 'कडाराः कर्मधारये' (2.2.38) से पूर्व समास संज्ञा का अधिकार है।
- **''सह सुपा''** (2.1.4) अर्थात् सुबन्त शब्दों के साथ समर्थ सुबन्त शब्दों का समास हो।
- **'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'** धातु और प्रातिपदिक के अवयव 'सुप्' का लोप होता है।
- समासों के विग्रह के लिए एक पद्य प्रसिद्ध है–
  चकारबहुलो द्वन्द्वः, स चासौ कर्मधारयः।
  यस्य येषां बहुव्रीहिः, शेषस्तत्पुरुषो मतः॥
- जिसके विग्रह में 'च' का प्रयोग हो, वह **द्वन्द्व** है। जिसमें 'स चासौ' विग्रह हो वह **कर्मधारय** है। जिसके विग्रह में **'यस्य या येषाम्'** आदि पदों का प्रयोग किया जाय, वह **'बहुव्रीहि'** है। इनके अतिरिक्त शेष **'तत्पुरुष'** है।
- **''अव्ययीभावः''** (2.1.5) यह अधिकार सूत्र है। इसका अधिकार क्षेत्र ''तत्पुरुषः'' (2.1.22) सूत्र के पूर्व तक है। अतः **''अन्य पदार्थे च संज्ञायाम्''** (2.1.21) सूत्र पर्यन्त होने वाले समास **'अव्ययी भाव'** संज्ञक होंगे।
- अव्ययीभाव समास की अव्ययसंज्ञा होती है।
- **'अनव्ययम् अव्ययः सम्पद्यते इति अव्ययीभावः'** अर्थात् जो शब्द समास होने के पूर्व तो अव्यय न हो, किन्तु समास होने पर 'अव्यय' हो जाय–वही **'अव्ययीभावसमास'** है। जैसे–शक्तिम् अनतिक्रम्य **यथाशक्ति**। यहाँ 'शक्ति' शब्द

अव्यय नही है, किन्तु अव्यय के साथ समास होने के कारण 'यथा' की तरह वह भी अव्यय हो जाता है।

- विभक्ति आदि **16 अर्थों** में विद्यमान अव्ययों का समर्थ सुबन्त के साथ **'नित्यसमास'** होगा और वह अव्ययीभावसंज्ञक होता है।
- **'अव्ययं विभक्ति-समीप......'** इत्यादि सूत्र से **'नित्यसमास'** होता है; नित्य समास का प्रायः लौकिक विग्रह नही होता, यदि विग्रह होता भी है, तो जिसका समास करना है उसके अर्थ के प्रकट करने वाले पर्यायवाची शब्द से सम्भव होता है। अतः प्राचीन आचार्यों ने इसे **''अस्वपदविग्रह''** कहा है।
- **''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्''** अर्थात् समास में प्रथमाविभक्ति से निर्देश किया हुआ पद **'उपसर्जनसंज्ञक'** होता है।
- **''अव्ययीभावश्च''** (2.4.18) अर्थात् अव्ययीभाव समास भी नपुंसकलिङ्ग में हो। यथा–उपकृष्णम्
- **'अव्ययीभावे चाकाले'** (6.3.81) सूत्र में अव्ययीभाव में 'सह' को 'स' आदेश होता है, किन्तु काल अर्थ में नहीं होता। जैसे–सचक्रम्, ससखि, सक्षत्रम्, सतृणम्, साग्नि आदि।
- काल अर्थ में 'सह' को 'स' आदेश नही होता। जैसे–सहपूर्वाह्णम्।

समास में पूर्वनिपात या परनिपात

- **''उपसर्जनं पूर्वम्''** सूत्र से समास में उपसर्जनसंज्ञक शब्द का प्रयोग पहले होता है।
- **''राजदन्तादिषु परम्''** सूत्र से राजदन्तादिगणपठित शब्दों में उपसर्जन संज्ञक पद का परे (बाद में) प्रयोग होता है। यथा– **'राजदन्तः'** यहाँ 'दन्त' शब्द की उपसर्जनसंज्ञा, तथा प्रकृतसूत्र से परनिपात हुआ।
- **''धर्मादिष्वनियमः''** (गणसूत्र) अर्थात् 'धर्म' आदि शब्दों में पूर्वनिपात व परनिपात के सम्बन्ध में कोई नियम नही होता। यथा–**धर्मार्थौ, अर्थधर्मौ। कामार्थौ, अर्थकामौ।**
- **''द्वन्द्वे घि''** सूत्र से द्वन्द्व समास में 'घिसंज्ञक' का पहले प्रयोग होता है– यथा–हरिहरौ। यहाँ 'हरि' घि संज्ञक है, अतः इस सूत्र से पूर्वनिपात हो गया।
- **''अनेकत्र प्राप्तावेकत्र नियमोऽनियमः''** इस वार्तिक से 'यदि द्वन्द्व समास में कई घिसंज्ञक पद हों तो, एक घिसंज्ञक पद का पूर्वनिपात करके अन्य घिसंज्ञक पदों को कहीं पर भी रखा जा सकता है। जैसे–**हरिश्च हरश्च गुरुश्च हरिहरगुरवः/ हरिगुरुहराः**
- द्वन्द्व समास में ही घिसंज्ञक का पूर्वनिपात होता है, अन्यत्र नही। जैसे–विस्पष्टं पटुः = **विस्पष्टपटुः**।
- **''अजाद्यदन्तम्''** सूत्र से जो शब्द अजादि भी हो, और अदन्त भी हो, उसका द्वन्द्वसमास में पूर्वनिपात होता है। जैसे– **ईशकृष्णौ, उष्ट्रखरम्** यहाँ 'ईश' पद अजादि है तथा अदन्त भी है; अतः पूर्वनिपात हो गया। **अजादि** = जिसके आदि में अच् = स्वर वर्ण हो। **अदन्त** = जिसके अन्त में ह्रस्व 'अकार' हो।
- द्वन्द्व समास में एक से अधिक अजादि व अदन्त पद हों, तो किसी एक पद का पूर्वनिपात करके शेष के विषय में स्वेच्छाचारिता होती है। जैसे– अश्वश्च इन्द्रश्च रथश्च = **अश्वेन्द्ररथाः। अश्वरथेन्द्राः। इन्द्राश्वरथाः।**
- यदि द्वन्द्वसमास में घिसंज्ञक व अजादि एवं अदन्त पद का एक साथ प्रयोग हो तो **''विप्रतिषेधे परं कार्यम्''** इस नियम के आधार पर अजाद्यदन्त पद का पूर्वनिपात होता है। जैसे– (i) अग्निश्च इन्द्रश्च = **इन्द्राग्नी** (ii) वायुश्च इन्द्रश्च = **इन्द्रवायू**
- अजादि व अदन्त = ह्रस्व अकारान्त शब्द का ही पूर्वनिपात होता है–अश्वा च वृषा च = **अश्वावृषे/वृषाश्वे**। यहाँ 'अश्वा' पद अजादि तो है, परन्तु अदन्त नही है; अतः **'अश्वा'** पद के पूर्वनिपात के विषय में स्वेच्छाचारिता है।
- **''अल्पाच्तरम्''** सूत्र से द्वन्द्वसमास में अपेक्षाकृत कम अचों (स्वरों) वाले पद का पूर्वप्रयोग होता है। जैसे–(i) शिवश्च केशवश्च = **शिवकेशवौ** (ii) उमा च महेश्वरश्च = **उमामहेश्वरौ।** यहाँ 'शिव', 'केशव' की अपेक्षा अल्पाच् है; अतः 'शिव' का पूर्वनिपात हुआ।
- **''ऋतुनक्षत्राणां समानाक्षराणामानुपूर्व्येण'' (वा.)** अर्थात् जिन शब्दों में अचों की संख्या समान हो, ऐसे ऋतुवाचक या नक्षत्रवाचक शब्दों के द्वन्द्वसमास में उनके आनुपूर्वी क्रम के अनुसार पूर्वनिपात होता है। यथा– (1) वसन्तश्च हेमन्तश्च शिशिरश्च = **हेमन्तशिशिरवसन्ताः** (ii) रोहिणी च कृत्तिका च = **कृत्तिकारोहिण्यौ।** यहाँ आनुपूर्वी क्रम से 'रोहिणी' से पूर्व 'कृत्तिका' नक्षत्र होता है, अतः 'कृत्तिका' का पूर्वनिपात हुआ।
- **''लघ्वक्षरञ्च पूर्वम्''** इस वार्तिक से द्वन्द्व समास में लघु (ह्रस्व) अच् = स्वर वाले शब्दों का पूर्वनिपात होता है। यथा– (i) कुशश्च काशश्च = **कुशकाशौ** (ii) शरश्च चापश्च = **शरचापम्**
- **''अभ्यर्हितञ्च पूर्वं निपततीति वक्तव्यम्''** इस वार्तिक से द्वन्द्वसमास में अधिकपूज्य का पूर्वनिपात होता है–(i) पिता च माता च = **मातापितरौ** (ii) अर्जुनश्च वासुदेवश्च = **वासुदेवार्जुनौ**
- **''भ्रातुश्च ज्यायसः पूर्वनिपातो वक्तव्यः''** इस वार्तिक से 'द्वन्द्वसमास में बड़े भाई के नाम का पूर्वनिपात होता है। यथा–अर्जुनश्च युधिष्ठिरश्च = **युधिष्ठिरार्जुनौ**
- **'वर्णानामानुपूर्व्येण पूर्वनिपातः'** इस वार्तिक से 'ब्राह्मण आदि वर्णवाचक (जातिवाचक) शब्दों का द्वन्द्व समास होने पर श्रेष्ठता के क्रम से पूर्वनिपात होता है।' जैसे– शूद्रश्च ब्राह्मणश्च विट् च क्षत्रियश्च = **ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः**

➢ **''संख्याया अल्पीयस्याः पूर्वनिपातो वक्तव्यः''** इस वार्तिक से समास में छोटी संख्या का पूर्वनिपात होता है। जैसे–पञ्च वा षड् वा = **पञ्चषाः।** द्वौ च दश च = **द्वादश।** यहाँ छः से छोटी संख्या पाँच है, अतः 'पञ्च' का पूर्वनिपात हुआ।

➢ **''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ''** सूत्र से 'बहुव्रीहिसमास में सप्तम्यन्त पद और विशेषणवाची पद का पूर्वनिपात होता है। जैसे–**(i) कण्ठे स्थितः कालः यस्य सः = कण्ठेकालः।** यहाँ सप्तम्यन्त 'कण्ठे' पद का इस सूत्र से पूर्वनिपात। **(ii) चित्रा गावो यस्य सः = चित्रगुः।** यहाँ विशेषणवाची 'चित्र' शब्द का इसी सूत्र से पूर्वनिपात हुआ।

➢ **''सर्वनामसंख्ययोरुपसंख्यानम्''** (वा0) अर्थात् सर्वनाम तथा संख्यावाचक शब्द का बहुव्रीहिसमास में पूर्वप्रयोग होता है। यथा– **(i) सर्वः श्वेतः यस्य सः = सर्वश्वेतः।** यहाँ 'सर्व' शब्द सर्वनामसंज्ञक है, अतः इसका पूर्वनिपात हुआ। **(ii) द्वौ शुक्लौ यस्य सः = द्विशुक्लः।** संख्यावाची 'द्वि' शब्द का पूर्वनिपात हुआ।

➢ **'वा प्रियस्य पूर्वनिपातः'** (वा0) इस वार्तिक से बहुव्रीहि समास में 'प्रिय' शब्द के पूर्वनिपात के सन्दर्भ में स्वेच्छाचारिता होती है। यथा– **गुडः प्रियः यस्य सः = गुडप्रियः, प्रियगुडः।**

➢ **''निष्ठा''** सूत्र से 'बहुव्रीहि समास में निष्ठा प्रत्ययान्त पद का पूर्वनिपात होता है। जैसे–**कृतकटः, कृतकृत्यः।** यहाँ प्रकृतसूत्र द्वारा 'कृत' इस निष्ठाप्रत्ययान्त पद का पूर्वनिपात हुआ।

➢ **''वाऽऽहिताग्न्यादिषु''** सूत्र से 'आहिताग्न्यादिगण में निष्ठा प्रत्ययान्त शब्दों का बहुव्रीहि समास में विकल्प से पूर्वनिपात होता है; पक्ष में परनिपात भी होता है।' जैसे– आहिताः अग्नयः येन सः– (i) पूर्वनिपात पक्ष में– **आहिताग्निः** (ii) परनिपात पक्ष में–**अग्न्याहितः**

➢ **''कडाराः कर्मधारये''** सूत्र से 'कर्मधारय समास में 'कडारा' आदि शब्दों का विकल्प से पूर्वनिपात होता है।'' जैसे– **कडारजैमिनिः। जैमिनिकडारः।**

समासविधायकसूत्र-तालिका

क्र.	समास	समासविधायक सूत्रम्		उदाहरणम्
1.	**केवलसमास**	(i) 'सह सुपा'	2.1.4	पूर्वं भूतः = **भूतपूर्वः**
2.	**अव्ययीभाव समास**	(ii) इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च		जीमूतस्य इव = **जीमूतस्येव**
		(i) 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि व्यृद्ध्यर्थाभावाऽत्ययासम्प्रति शब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्य यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्त-वचनेषु'	2.1.6	वागर्थौ इव = **वागर्थाविव** (i) हरौ इति = **अधिहरि** (ii) कृष्णस्य समीपम् = **उपकृष्णम्**
		(ii) 'नदीभिश्च'	2.1.19	सप्तगङ्गम्, पञ्चगङ्गम्, द्वियमुनम्
3.1	**द्वितीयातत्पुरुषसमास**	'द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्त प्राप्तापन्नैः'	2.1.24	कूपं पतितः = **कूपपतितः**
3.2	**तृतीयातत्पुरुष**	'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'	2.1.30	शङ्कुलया खण्डः = **शङ्कुलाखण्डः**
3.3	**चतुर्थीतत्पुरुष**	'चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुख-रक्षितैः'	2.1.36	यूपाय दारु = **यूपदारु**
3.4	**पञ्चमीतत्पुरुष**	'पञ्चमी भयेन'	2.1.37	चौराद् भयम् = **चौरभयम्**
3.5	**षष्ठीतत्पुरुष**	'षष्ठी'	2.1.38. 2.2.8	राज्ञः पुरुषः = **राजपुरुषः**
3.6	**सप्तमीतत्पुरुष'**	सप्तमी शौण्डैः'	2.1.40	अक्षेषु शौण्डः = **अक्षशौण्डः**
3.7	**कर्मधारय**	(i) 'उपमानानि सामान्यवचनैः	2.1.54	घन इव श्यामः = **घनश्यामः**
		(ii) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'	2.1.56	नीलम् उत्पलम् = **नीलोत्पलम्**
3.8	**द्विगुसमास**	(i) ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च''	2.1.50	अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः = **अष्टाध्यायी**
		तथा 'संख्यापूर्वो द्विगुः'	2.1.51	
3.9	**नञ्तत्पुरुष**	नञ्	2.2.6	न ब्राह्मणः = **अब्राह्मणः**
3.10	**गतितत्पुरुष**	कुगतिप्रादयः	2.2.18	कुत्सितः पुरुषः = **कुपुरुषः**
3.11	**उपपद तत्पुरुष**	उपपदमतिङ्	2.2.19	कुम्भं करोति इति = **कुम्भकारः**
4.	**बहुव्रीहिसमास**	अनेकमन्यपदार्थे	2.2.24	प्राप्तम् उदकं यं सः =**प्राप्तोदकः (ग्रामः)**
5.	**द्वन्द्वसमास**	चाऽर्थे द्वन्द्वः	2.2.29	रामश्च लक्ष्मणश्च = **रामलक्ष्मणौ**

कारक विभक्ति तालिका

कारक	विभक्ति	विभक्तिविधायक सूत्रम्
कर्त्ता	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
कर्म	द्वितीया	कर्मणि द्वितीया
करण	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
सम्प्रदान	चतुर्थी	चतुर्थी सम्प्रदाने
अपादान	पञ्चमी	अपादाने पञ्चमी
अधिकरण	सप्तमी	सप्तम्यधिकरणे च
सम्बोधन	प्रथमा	सम्बोधने च
सम्बन्ध	षष्ठी	षष्ठी शेषे
प्रातिपदिकार्थ	प्रथमा	प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा

विशेष–उक्त कारक में प्रथमा विभक्ति तथा अनुक्त कारकों में उपर्युक्त विभक्तियाँ होंगी।

उच्चारणस्थान-तालिका

क्र.	सूत्रम्	वर्णाः	उच्चारणस्थानम्
1.	**अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः**	अठारह प्रकार के सभी अकार, कवर्ग = क् ख् ग् घ् ङ् ह, विसर्ग **(कण्ठ्यवर्ण)**	कण्ठ
2.	**इचुयशानां तालु**	अठारह प्रकार के सभी इकार, चवर्ग = च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श् **(तालव्यवर्ण)**	तालु
3.	**ऋटुरषाणां मूर्धा**	अठारह प्रकार के सभी ऋकार, टवर्ग = ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् रेफ, ष् **(मूर्धन्य वर्ण)**	मूर्धा
4.	**लृतुलसानां दन्ताः**	बारह प्रकार के सभी लृकार, तवर्ग = त् थ् द् ध् न् ल् स् **(दन्त्यवर्ण)**	दन्त
5.	**उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ**	अठारह प्रकार के उकार, पवर्ग = प् फ् ब् भ् म्। ᳵपᳵफ **(ओष्ठ्यवर्ण)**	ओष्ठ
6.	**ञमङणनानां नासिका च**	ञ् म् ङ् ण् न् **(अनुनासिक वर्ण)**	नासिका
7.	**एदैतोः कण्ठतालु**	ए, ऐ **(कण्ठतालव्यवर्ण)**	कण्ठतालु
8.	**ओदौतोः कण्ठोष्ठम्**	ओ, औ **(कण्ठोष्ठ्यवर्ण)**	कण्ठोष्ठ
9.	**वकारस्य दन्तोष्ठम्**	व **(दन्तोष्ठ्यवर्ण)**	दन्तोष्ठ
10.	**जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्**	ᳵकᳵख **(जिह्वामूलीयवर्ण)**	जिह्वामूल
11.	**नासिकाऽनुस्वारस्य**	अनुस्वार (ं)	नासिका

- उच्चारणस्थान और प्रयत्न को अष्टाध्यायी सूत्रों में नहीं बताया गया, अपितु पाणिनीय शिक्षा आदि ग्रन्थों में इसका वर्णन है।
- पाणिनीयशिक्षा के अनुसार उच्चारणस्थान आठ माने गए हैं–

अष्टौ स्थानानि वर्णानाम्
उरः कण्ठः शिरस्तथा।
जिह्वामूलं च दन्तश्च
नासिकोष्ठौ च तालु च॥ – पाणिनीयशिक्षा-13

संज्ञा-सूत्र-तालिका (अष्टाध्यायी क्रमानुसार)

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
01.	वृद्धिसंज्ञा	**वृद्धिरादैच्** 1.1.1	आ, ऐ, औ इन तीन वर्णों की **वृद्धिसंज्ञा** होती है।	त्यागः, – **आ** सदैव – **ऐ** महौषधिः – **औ**
02.	गुणसंज्ञा	**अदेङ् गुणः** 1.1.2	अ, ए, ओ, इन तीन वर्णों की **गुणसंज्ञा** होती है।	रमेशः – **ए** सूर्योदयः – **ओ** महर्षिः – **अ (र्)**
03.	संयोगसंज्ञा	**हलोऽनन्तराः संयोगः** 1.1.7	अच् (स्वर) के व्यवधान से रहित व्यञ्जनों (हलों) की **'संयोगसंज्ञा'** होती है।	(i) 'राष्ट्रम्' में **'ष्ट्र' की संयोग संज्ञा** (ii) 'अग्निः' में 'ग्न' की संयोगसंज्ञा।
04.	अनुनासिकसंज्ञा	**मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः** 1.1.8	जो वर्ण मुख तथा नासिका दोनों की सहायता से उच्चरित हों उसकी **'अनुनासिकसंज्ञा'** होती है।	अँ, ङ्, ञ्, ण्, न्, म् यँ, वँ, लँ आदि
5.1	सवर्णसंज्ञा	**तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्** 1.1.9	जिन दो या दो से अधिक वर्णों के पारस्परिक कण्ठताल्वादि उच्चारणस्थान तथा आभ्यन्तरप्रयत्न दोनों समान हों, वे परस्पर **''सवर्णसंज्ञक''** होते हैं।	अ - आ इ - ई उ - ऊ आदि परस्पर सवर्णी हैं। रमापि, मुनीशः भानूदयः आदि।
●	सवर्णसंज्ञा का निषेध	**नाज्झलौ** 1.1.10	स्थान और प्रयत्न का साम्य होने पर भी अच् (स्वर) और हल् (व्यंजन) की परस्पर सवर्णसंज्ञा नही होती।	**दण्ड हस्त** डकारोत्तरवर्ती अकार तथा हकार की सवर्णसंज्ञा होकर दीर्घ नहीं हुआ।
5.2	सवर्णसंज्ञा	**ऋलृवर्णयोः मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्** (वा.)	ऋ और लृ की परस्पर **सवर्ण संज्ञा** होती है	होतृ + लृकारः =होतॄकारः
6.1	प्रगृह्यसंज्ञा	**ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्** 1.1.11	दीर्घ ईकारान्त, दीर्घ ऊकारान्त, तथा दीर्घ एकारान्त द्विवचन की **'प्रगृह्यसंज्ञा'** होती है।	हरी एतौ, विष्णू इमौ गङ्गे अमू, अग्नी इति वायू इति
6.2	प्रगृह्यसंज्ञा	**अदसो मात्** 1.1.12	'अदस्' शब्द के मकार से परे 'ईत्' तथा 'ऊत्' प्रगृह्य संज्ञक होते हैं।	अमी ईशाः, अमू आसाते अमू, अत्र, अमी अश्वाः
6.3	प्रगृह्यसंज्ञा	**शे** 1.1.13	'शे' इस सुबादेश की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है। (प्रायशः वेदों में)	युष्मे इति, त्वे इति, मे इति।
6.4	प्रगृह्यसंज्ञा	**निपात एकाजनाङ्** 1.1.14	'आङ्' को छोड़कर एक 'अच्' स्वरूप निपात की **'प्रगृह्यसंज्ञा'** होती है।	अ अपेहि इ इन्द्रम्। उ उत्तिष्ठ आ एवं नु मन्यसे

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
6.5	प्रगृह्यसंज्ञा	**ओत्** 1.1.15	ओकारान्त निपात की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है।	उताहो अनिष्टम् अहो अद्य शीतम्। अहो ईशाः
6.6	प्रगृह्यसंज्ञा (विकल्प से)	**सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे** 1.1.16	सम्बुद्धिनिमित्तक ओकार की अवैदिक 'इति' शब्द के परे रहते विकल्प से '**प्रगृह्यसंज्ञा**' होती है।	'विष्णो इति'
6.7	प्रगृह्यसंज्ञा	**उञः ऊँ** 1.1.17	अवैदिक 'इति' शब्द परे रहते शाकल्य आचार्य के मत में (क) उञ् की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है। (ख) 'उञ्' के स्थान पर 'ऊँ' आदेश होता है, जो **प्रगृह्यसंज्ञक** होता है।	'उ इति' 'ऊँ इति'
6.8	प्रगृह्यसंज्ञा	**ईदूतौ च सप्तम्यर्थे इति प्रगृह्यम्** 1.1.19	सप्तमी के अर्थ में ईकारान्त व ऊकारान्त की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है।	तनू इति गौरी अधिश्रितः
07.	घु-संज्ञा	**दाधा घ्वदाप्** 1.1.20	दारूप वाले तथा धारूप वाले धातुओं की '**घु' संज्ञा** होती है; 'दाप्लवने' तथा 'दैप शोधने' धातुओं को छोड़कर	दाञ्, दाण् डुधाञ्, धेट् आदि।
8.	घ-संज्ञा	**तरप्तमपौ घः** 1.1.22	तरप् तथा तमप् – ये दो प्रत्यय '**घ' संज्ञक** होते हैं।	कुमारितरा कुमारितमा
9.	संख्यासंज्ञा	**बहुगणवतुडति संख्या** 1.1.23	'बहु' व 'गण' शब्द की तथा 'वतु' व 'डति' प्रत्ययान्त शब्दों की ''**संख्यासंज्ञा**'' होती है।	बहुधा, बहुशः गणशः, तावत्कः, कतिधा, कतिशः।
10.1	षट्-संज्ञा	**ष्णान्ता षट्** 1.1.24	षकारान्त और नकारान्त संख्या वाची शब्दों की 'षट्' संज्ञा होती है।	षट्, (षकारान्त) पञ्च, सप्त, नव, दश (नकारान्त)
10.2	षट्संज्ञा	**डति च** 1.1.25	डति प्रत्ययान्त संख्यावाची शब्द की ''**षट्संज्ञा**'' होती है।	कति तिष्ठन्ति कति पश्य
11.	निष्ठासंज्ञा	**क्तक्तवतू निष्ठा** 1.1.26	'क्त' तथा 'क्तवतु' प्रत्यय की '**निष्ठासंज्ञा**'' होती है।	मुक्तः (क्त) भुक्तवान् (क्तवतु)
12.	सर्वनाम-संज्ञा	**सर्वादीनि सर्वनामानि** 1.1.27	'सर्व' आदि शब्दों की सर्वनामसंज्ञा होती है।	सर्वे इत्यादि।
13.1	अव्ययसंज्ञा	**स्वरादि निपातमव्ययम्** 1.1.37	स्वरादिगण में पठित शब्दों की तथा निपात शब्दों की '**अव्यय' संज्ञा** होती है।	प्रातर्, च, वा, ह इत्यादि
13.2	अव्ययसंज्ञा	**तद्धितश्चासर्वविभक्तिः** 1.1.38	जिससे सारी विभक्तियाँ उत्पन्न न हों, ऐसे तद्धित प्रत्ययान्त शब्द की '**अव्यय' संज्ञा** होती है।	ततः, तत्र, तदा विना इत्यादि।
13.3	अव्ययसंज्ञा	**कृन्मेजन्तः** 1.1.39	मकारान्त कृत् प्रत्ययान्त तथा एजन्त कृत् प्रत्ययान्त शब्द की '**अव्यय' संज्ञा** होती है।	स्वादुङ्कारम् वक्षे। पठितुम्
13.4	अव्ययसंज्ञा	**क्त्वातोसुन्कसुनः** 1.1.40	'क्त्वा' 'तोसुन्' तथा 'कसुन्' प्रत्ययान्त शब्दों की '**अव्यय' संज्ञा** होती है।	गत्वा, उदेतोः, विसृपः

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
13.5	अव्ययसंज्ञा	**अव्ययीभावश्च** 1.1.40	अव्ययीभावसमास की **अव्ययसंज्ञा** होती है।	अधिहरि, अध्यात्मम्, प्रत्यग्नि।
14.1	सर्वनामस्थान	**शि सर्वनामस्थानम्** 1.1.41	'शि' की **सर्वनामस्थान संज्ञा** होती है।	वनानि, दधीनि मधूनि।
14.2	सर्वनामस्थान	**सुडनपुंसकस्य** 1.1.42	नपुंसकलिङ्ग से भिन्न 'सुट्' (सु, औ, जस्, अम्, औट्–इन पाँच) प्रत्ययों की '**सर्वनामस्थान**' संज्ञा होती है।	राजा (सु) राजानौ (औ) राजानः (जस्) राजानम् (अम्) राजानौ (औट्)
15.	विभाषासंज्ञा	**न वेति विभाषा** 1.1.43	'न' का अर्थ है–निषेध 'वा' का अर्थ है–विकल्प निषेध तथा विकल्प– इन दो अर्थों की '**विभाषा' संज्ञा** होती है।	''विभाषा श्वेः'' 6.1.30
16.	सम्प्रसारणम्	**इग्यणः सम्प्रसारणम्** 1.1.44	'यण्' के स्थान पर होने वाले 'इक्' की ''**सम्प्रसारण'' संज्ञा** होती है।	यज् + क्त = इष्टः वप् + क्त = उप्तः
17.	लोप-संज्ञा	**अदर्शनं लोपः** 1.1.59	विद्यमान के अदर्शन = अश्रवण की ''**लोप'' संज्ञा** होती है।	शाला + छ = शालीयः 'आकार' की लोपसंज्ञा ''यस्येति च'' से लोप
18.	लुक् श्लु लुप्	**प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः** 1.1.60	(क) लुक् शब्द से कराया गया प्रत्ययादर्शन 'लुक्संज्ञक' होता है। (ख) श्लु शब्द से कराया गया प्रत्ययादर्शन '**श्लुसंज्ञक**' होता है। (ग) 'लुप्' शब्द से कराया गया प्रत्ययादर्शन '**लुप्संज्ञक**' होता है।	विशाखः (लुक्संज्ञा) जुहोति (श्लु संज्ञा) वरणाः (लुप् संज्ञा)
19.	टि-संज्ञा	**अचोऽन्त्यादि टि** 1.1.63	अचों के मध्य में जो अन्त्य अच्, वह है आदि में जिसके, उस समुदाय की ''**टिसंज्ञा**'' होती है।	मनस् में – 'अस्' राजन् में – 'अन्' दधि में – 'इ' की टिसंज्ञा।
20.	उपधासंज्ञा	**अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा** 1.1.64	अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण की ''**उपधा**'' संज्ञा होती है।	गम् में – अ मुच् में – उ भिद् में – इ की उपधा संज्ञा।
21.	प्रत्याहारसंज्ञा	**आदिरन्त्येन सहेता** 1.1.70	आदिवर्ण अन्त्य इत्संज्ञक वर्ण के साथ मिलकर अपने स्वरूप का तथा मध्य में स्थित वर्णों का बोध कराता है। यही ''**प्रत्याहार**'' है।	अण् = अ, इ, उ इक् = इ, उ, ऋ, लृ इत्यादि।
22.1	वृद्धसंज्ञा	**वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्** 1.1.72	जिस समुदाय के अचों के मध्य आदि अच् वृद्धिसंज्ञक हो, उस समुदाय की '**वृद्ध' संज्ञा** होती है।	'शालीयः' में 'शाला' शब्द की वृद्ध संज्ञा।
22.2	वृद्धसंज्ञा	**त्यदादीनि च** 1.1.73	त्यादिगण में पठित शब्दों की ''**वृद्धसंज्ञा**'' होती है।	'त्यदीयम्' में 'त्यद्' शब्द की वृद्धसंज्ञा।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
22.3	वृद्धसंज्ञा	**एङ् प्राचां देशे** 1.1.74	जिस समुदाय के अचों का आदि अच् 'एङ्' हो; उसकी **'वृद्धसंज्ञा'** होती है, पूर्व दिशा को कहने के विषय में।	'गोनर्दीयः' में 'गोनर्द' शब्द की वृद्धसंज्ञा।
23.	ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत	**ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः** 1.2.27	'ऊकाल' का अर्थ है–उकाल एकमात्रिक ऊकाल द्विमात्रिक, तथा उ ३ काल त्रिमात्रिक। एकमात्रिक, द्विमात्रिक, त्रिमात्रिक अच् की यथासंख्य करके **ह्रस्व, दीर्घ और प्लुतसंज्ञा** होती है।	दधिच्छत्रम् (ह्रस्व) गौरी (दीर्घ) देवदत्त ३ (प्लुत)
24.	उदात्तसंज्ञा	**उच्चैरुदात्तः** 1.2.29	ताल्वादि स्थानों से वर्णों का उच्चारण होता है; उन स्थानों के ऊर्ध्वभागों से उच्चरित अच् **'उदात्तसंज्ञक'** होता है।	उदात्त के लिए प्रायः कोई चिह्न नही होता।
25.	अनुदात्तसंज्ञा	**नीचैरनुदात्तः** 1.2.30	ताल्वादि स्थानों के निम्नभागों से उच्चरित 'अच्' **''अनुदात्तसंज्ञक''** होता है।	अनुदात्त के लिए वर्ण के नीचे पड़ी रेखा (–) अंकित की जाती है।
26.	स्वरितसंज्ञा	**समाहारः स्वरितः** 1.2.31	उदात्तत्व और अनुदात्तत्व ये दोनों जिस अच् में विद्यमान हो, वह **''स्वरितसंज्ञक''** होता है।	स्वरित के लिए वर्ण के ऊपर (।) खड़ी रेखा होती है।
27.	अपृक्तसंज्ञा	**अपृक्त एकाल् प्रत्ययः** 1.2.41	एकाल् = एक अल्/वर्ण जो प्रत्यय एक वर्णरूप हो, या एक वर्ण रूप हो गया हो, उसकी **''अपृक्त''** संज्ञा होती है।	'वाच् सु 'अनुबन्ध लोप। ''वाच् स्'' यहाँ 'स्' एक वर्ण रूप प्रत्यय है, अतः अपृक्तसंज्ञक है।
28.1	उपसर्जनसंज्ञा	**प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्** 1.2.43	समास विधायक शास्त्र में प्रथमा से निर्दिष्ट जो पद, उसके द्वारा बोध्य शब्द की **''उपसर्जनसंज्ञा''** होती है।	'उपकृष्णम्' में 'उप' की उपसर्जन संज्ञा।
28.2	उपसर्जनसंज्ञा	**एकविभक्तिक चाऽपूर्वनिपाते** 1.2.44	समास विग्रह में जो नियतविभक्तिक हो, उस पद की **'उपसर्जनसंज्ञा'** हो परन्तु उसका पूर्वनिपात न हो।	'अतिमाला' यहाँ 'माला' पद एक विभक्तिक है; अतः यह 'उपसर्जनसंज्ञक' है।
29.1	प्रातिपदिक	**अर्थवदधातुरप्रत्ययः** प्रातिपदिकम् 1.2.45	धातुरहित, प्रत्यय व प्रत्ययान्तरहित सार्थक शब्दस्वरूप की **प्रातिपदिक संज्ञा** होती है।	राम, कृष्ण, लता आदि।
29.2	प्रातिपदिक	**कृत्तद्धितसमासाश्च** 1.2.46	कृत् प्रत्ययान्त, तद्धित प्रत्ययान्त तथा समास भी **''प्रातिपदिकसंज्ञक''** होते हैं।	कारकः (कृत्) शालीयः (तद्धित) राजपुरुषः (समास)
30.1	धातुसंज्ञा	**भूवादयो धातवः** 1.3.1	क्रिया के वाचक 'भू' आदि तथा 'वा' के प्रकार वाले शब्दों की **धातुसंज्ञा** होती है।	भू, पठ्, गम्, वा आदि।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
30.2	धातुसंज्ञा	**सनाद्यन्ता धातवः** 3.1.32	सन् आदि प्रत्ययान्त समुदाय की **'धातुसंज्ञा'** होती है।	जुगुप्सते (सन्) पुत्रीयति (क्यच्)
31.1	इत्संज्ञा	**उपदेशेऽजनुनासिक इत्** 1.3.2	उपदेश अवस्था में अनुनासिक अच् वर्ण की **''इत्'' संज्ञा** होती है।	''एधँ''–यहाँ धकारोत्तरवर्ती अकार अनुनासिक होने से इत्संज्ञक है।
31.2	इत्संज्ञा	**हलन्त्यम्** 1.3.3	उपदेश में अन्तिम हल् **''इत्संज्ञक''** होता है।	अइउण् में 'णकार' की इत्संज्ञा है।
31.3	इत्संज्ञा	**आदिर्ञिटुडवः** 1.3.5	उपदेश अवस्था में धातु के आदि में वर्तमान ञि, टु, तथा डु –इनकी **''इत्संज्ञा''** होती है।	ञिमिदा टुवेपृ, डुकृञ् में ञि, टु तथा डु इत्संज्ञक हैं।
31.4	इत्संज्ञा	**षः प्रत्ययस्य** 1.3.6	उपदेश अवस्था में प्रत्यय के आदि में स्थित 'षकार' की **''इत्संज्ञा''** होती है।	नृत् + ष्वुन् यहाँ 'षकार' इत्संज्ञक है।
31.5	इत्संज्ञा	**चुटू** 1.3.7	उपदेश अवस्था में प्रत्यय के आदि में वर्तमान चवर्ग और टवर्ग की **''इत्संज्ञा''** होती है।	'ब्राह्मण + जस् = ब्राह्मणाः में 'ज्' की इत्संज्ञा वाच् + टा = वाचा में 'ट्' की इत्संज्ञा।
31.6	इत्संज्ञा	**लशक्वतद्धिते** 1.3.8	उपदेश अवस्था में प्रत्यय के आदि में स्थित लकार, शकार, तथा कवर्ग की **इत्संज्ञा** होती है। किन्तु तद्धित प्रत्ययों में नही।	चि + ल्युट् = चयनम् 'ल्' की इत्संज्ञा भुज् + क्त = भुक्तः 'क्' की इत्संज्ञा भू + शप् + तिप् = भवति श् की इत्संज्ञा
●	इत्संज्ञा निषेधक सूत्र	**न विभक्तौ तुस्माः** 1.3.4	विभक्ति में वर्तमान तवर्ग, सकार और मकार जो अन्त्य हल्, उनकी **इत्संज्ञा नहीं** होती है।	रामात्, जस्, आम्
32.1	नदीसंज्ञा	**यू स्त्र्याख्यौ नदी** 1.4.3	**'यू'** = (ई+ऊ) का अर्थ है– ईकारान्त व ऊकारान्त। **'स्त्र्याख्यौ'** का अर्थ है= नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्द। ईदन्त तथा ऊदन्त नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्दों की **''नदीसंज्ञा''** होती है।	नदी, गौरी, वधू आदि।
32.2	नदीसंज्ञा	**प्रथमलिङ्गग्रहणञ्च** (वा.)	जो शब्द पहले नित्यस्त्रीलिङ्ग है, तथा बाद में समास की दशा में गौण होकर अन्य लिङ्ग में चला गया हो, उसकी भी पहले के स्त्रीलिङ्ग के आधार पर **'नदीसंज्ञा'** हो जाती है।	बह्व्यः श्रेयस्यो यस्य स 'बहुश्रेयसी'
●	नदीसंज्ञा निषेधक सूत्र	**नेयङुवङ्स्थानावस्त्री** 1.4.4	जिन ईकार व ऊकार के स्थान पर क्रमशः इयङ् व उवङ् आदेश होते हैं, उन स्त्रीवाची पदों की **''नदीसंज्ञा''**	हे श्रीः! हे भ्रूः।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			नही होती है। 'स्त्री' शब्द को छोड़कर	
32.3	नदीसंज्ञा	**वाऽऽमि** 1.4.5	इयङ् उवङ् स्थानी, स्त्रीवाची ईकारान्त व ऊकारान्त शब्दों की 'आम्' परे रहते विकल्प से **''नदीसंज्ञा''** होती है। 'स्त्री' शब्द को छोड़कर।	श्रियाम् श्रीणाम्
32.4	नदीसंज्ञा	**ङिति ह्रस्वश्च** 1.4.6	ह्रस्व इकारान्त, उकारान्त स्त्रीवाची शब्दों तथा इयङ् उवङ् स्थानी ईकारान्त, उकारान्त स्त्रीवाची शब्दों की ङित् विभक्ति में विकल्प से **नदी संज्ञा** होती है; 'स्त्री' शब्द को छोड़कर।	(i) मत्यै, मतये। (ii) धेन्वै, धेनवे (iii) श्रियै, श्रिये।
33.1	घिसंज्ञा	**शेषो घ्यसखि** 1.4.7	जिनकी नदी संज्ञा नही है, ऐसे ह्रस्व इकार और ह्रस्व उकार हैं अन्त में जिनके, उन शब्दों की **'घि' संज्ञा** होती है, 'सखि' शब्द को छोड़कर।	(i) हरिः, (ii) भानुः, (iii) वारि (iv) मधु
33.2	घिसंज्ञा	**पतिः समास एव** 1.4.8	'पति' शब्द समास में ही **''घि'' संज्ञक** होता है।	(i) भूपतिः (ii) सीतापतिः
33.3	घिसंज्ञा	**षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा** 1.4.9	षष्ठ्यन्त शब्द से युक्त जो पति शब्द, उसकी वेदों में **''घि'' संज्ञा** होती है।	(i) क्षेत्रस्य पतिना (ii) दिशां च पतये।
34.	लघुसंज्ञा	**ह्रस्वं लघु** 1.4.10	ह्रस्व वर्ण की **''लघु'' संज्ञा** होती है।	भिद् + तृच् = भेत्ता
35.1	गुरुसंज्ञा	**संयोगे गुरु** 1.4.11	संयोग परे रहते ह्रस्ववर्ण की **''गुरुसंज्ञा''** होती है।	'शिक्षा'–यहाँ 'इकार' की गुरुसंज्ञा
35.2	गुरुसंज्ञा	**दीर्घञ्च** 1.4.12	दीर्घवर्ण की **''गुरुसंज्ञा''** होती है।	'ईहाञ्चक्रे' यहाँ 'ईकार' की गुरुसंज्ञा।
36.	अङ्गसंज्ञा	**यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्** 1.4.13	'प्रत्ययविधि' का अर्थ है–प्रत्यय का विधान। जिस प्रकृति (धातु या प्रातिपदिक) से प्रत्यय का विधान किया जाय, उस प्रत्यय के परे रहते उस प्रकृति का आदि वर्ण है आदि जिसका, उस सम्पूर्ण समुदाय की **''अङ्ग'' संज्ञा** होती है।	कृ + तृच् = कर्त्ता यहाँ 'कृ' की अङ्ग संज्ञा।
37.1	पदसंज्ञा	**सुप्तिङन्तं पदम्** 1.4.14	सुबन्त (सुप् अन्त वाला) तथा तिङन्त (तिङ् अन्त वाला) शब्द की **''पद'' संज्ञा** होती है। 'सु औ जश्' आदि **21 सुप्प्रत्यय** तथा 'तिप् तस् झि' आदि **18 तिङ्प्रत्यय** हैं।	(i) देवः (सुबन्त) (ii) पठति (तिङन्त)

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
37.2	पदसंज्ञा	**नः क्ये** 1.4.15	नकारान्त शब्द की क्यच्, क्यङ् व क्यष् प्रत्यय परे रहते ''**पदसञ्ज्ञा**'' होती है।	(i) राजीयति। (ii) राजायते।
37.3	पदसंज्ञा	**सिति च** 1.4.16	सित् प्रत्यय परे रहते पूर्व की ''**पद**'' **संज्ञा** होती है।	भवत् + छस् = भवदीयः यहाँ 'भवत्' की पद संज्ञा।
37.4	पदसंज्ञा	**स्वादिष्वसर्वनामस्थाने** 1.4.17	सर्वनामस्थान भिन्न 'सु' आदि प्रत्ययों के परे रहते पूर्व शब्दसमुदाय की ''**पद**'' **संज्ञा** होती है।	राजन् + भ्याम् = राजभ्याम् यहाँ 'राजन्' की पद संज्ञा।
38.1	भसंज्ञा	**यचि भम्** 1.4.18	सर्वनामसंज्ञक पाँच प्रत्ययों (सु, औ, जस्, अम्, औट्) को छोड़कर 'सु' से लेकर 'कप्' प्रत्यय पर्यन्त यकारादि तथा अजादि प्रत्यय परे रहते पूर्व की '**भ**' **संज्ञा** होती है।	(i) गर्ग + यञ् = गार्ग्यः (ii) दक्ष + इञ् = दाक्षिः
38.2	भ संज्ञा	**तसौ मत्वर्थे** 1.4.19	तकारान्त और सकारान्त शब्दों की मत्वर्थ प्रत्ययों के परे रहते '**भ**' **संज्ञा** होती है।	(i) विद्युत् सु + मतुप् विद्युत्वान् (iii) तपस् सु विनि = तपस्वी
38.3	भ-संज्ञा	**अयस्मयादीनि छन्दसि** 1.4.20	वेदों में 'अयस्मय' इत्यादि शब्द साधु होते हैं यहाँ भी '**भ**' **संज्ञा** होती है।	अयस्मयम् मनस्मयम्
39.1	अपादान	**ध्रुवमपायेऽपादानम्** 1.4.24	पार्थक्य होने पर अवधिभूत अर्थात् अचल की ''**अपादान**'' **संज्ञा** होती है।	**वृक्षात्** पत्रं पतति
39.2	अपादान	**भीत्रार्थानां भयहेतुः** 1.4.25	भय अर्थ वाले तथा रक्षा अर्थ वाले धातुओं के योग में, जो भय का हेतु होता है, उसकी '**अपादान**' **संज्ञा** होती है।	(i) बालकः **सिंहात्** बिभेति। (ii) **चौरात्** रक्षति देवः।
39.3	अपादान	**पराजेरसोढः** 1.4.26	'परा' उपसर्ग पूर्वक 'जि' धातु के योग में जो सहन न किया जा सके, ऐसे शब्द की **अपादानसंज्ञा** होती है।	अध्ययनात् पराजयते।
39.4	अपादान	**वारणार्थानामीप्सितः** 1.4.27	वारण (रोकना) अर्थ वाले धातुओं के प्रयोग में जिससे रोकना अभीष्ट है, उसकी '**अपादान**' **संज्ञा** होती है।	**यवेभ्यो** गां वारयति।
39.5	अपादान	**अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति** 1.4.28	ओट के होने पर छिपने वाला जिससे अपना छिपाव चाहता है, उसकी '**अपादान**' **संज्ञा** होती है।	(i) **आरक्षकात्** चोरः निलीयते। (ii) **मातुर्निलीयते** कृष्णः
39.6	अपादान	**आख्यातोपयोगे** 1.4.29	नियमपूर्वक विद्याग्रहण करने में पढ़ाने वाले की '**अपादान**' **संज्ञा** होती है।	**आचार्यात्** व्याकरणम् अधीते।
39.7	अपादान	**जनिकर्तुः प्रकृतिः** 1.4.30	जन्म के कर्त्ता की प्रकृति	**गोमयात्**

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			अर्थात् उत्पन्न होने वाले के कारण की **'अपादान' संज्ञा** होती है।	वृश्चिको जायते
39.8	अपादान	**भुवः प्रभवः** 1.4.31	भू धातु के कर्त्ता के उत्पत्तिस्थान की **'अपादान' संज्ञा** होती है।	गङ्गा **हिमालयात्** प्रभवति।
●	अपादान	**जुगुप्साविराम प्रमादार्थाना-मुपसंख्यानम्** (वा०)	जुगुप्सा, विराम, तथा प्रमाद अर्थ वाली धातुओं के योग में **अपादान संज्ञा** होती है।	**पापात्** जुगुप्सते। **पापात्** विरमति। **अध्ययनात्** प्रमाद्यति
40.1	सम्प्रदान	**कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्** 1.4.32	दान क्रिया के कर्म के द्वारा कर्त्ता जिसे अच्छी प्रकार युक्त या लक्षित करना चाहता है, उसकी **सम्प्रदानसंज्ञा** होती है।	नृपः **विप्राय** धनं ददाति।
●	सम्प्रदान	**क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्** (वा०)	क्रिया के द्वारा कर्ता जिसे लक्षित करता है, उसकी भी **सम्प्रदान संज्ञा** होती है।	**पत्ये** शेते।
40.2	सम्प्रदान	**रुच्यर्थानां प्रीयमाणः** 1.4.33	रुचि अर्थात् अभिलाषा अर्थवाली धातुओं के योग में, जिसे वह वस्तु प्रिय हो, उसकी **'सम्प्रदान' संज्ञा** होती है।	**बालकाय** दुग्धं रोचते। **बालकाय** मोदकं स्वदते।
40.3	सम्प्रदान	**श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः** 1.4.34	श्लाघ्, ह्नुङ्, स्था, शप् धातुओं के योग में जो जनाये जाने की इच्छा वाला है, उसकी **'सम्प्रदान' संज्ञा** होती है।	गोपी स्मरात् **कृष्णाय** श्लाघते। ह्नुते, तिष्ठति, शपते वा।
40.4	सम्प्रदान	**धारेरुत्तमर्णः** 1.4.35	धारि (धृ + णिच्) इस णिजन्त धातु के योग में उत्तमर्ण की **'सम्प्रदान' संज्ञा** होती है। नोट–ऋण देने वाला–उत्तमर्ण ऋण लेने वाला–अधमर्ण	मोहनः **श्यामाय** शतं धारयति।
40.5	सम्प्रदान	**स्पृहेरीप्सितः** 1.4.36	'स्पृह ईप्सायाम्' धातु के योग में ईप्सित = अभीष्ट की **'सम्प्रदान' संज्ञा** होती है।	कन्या **पुष्पेभ्यः** स्पृहयति।
40.6	सम्प्रदान	**क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः** 1.4.37	क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य, तथा असूय– इन धातुओं के योग में जिसके प्रति कोप किया जाय, उसकी **'सम्प्रदान' संज्ञा** होती है।	राजा **चोराय** क्रुध्यति
407.	सम्प्रदान	**राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः** 1.4.39	'राध्' और 'ईक्ष्' धातुओं के योग में जिसके विषय में विविध प्रश्न हों, उस कारक की **सम्प्रदान संज्ञा** होती है। 'राध्' व 'ईक्ष्' का अर्थ है–''शुभाशुभ विचार करना।''	(i) **श्यामाय** राध्यति (ii) **श्यामाय** ईक्षते।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
40.8	सम्प्रदान	**प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्त्ता** 1.4.40	'प्रति' तथा 'आङ्' पूर्वक 'श्रु' धातु के योग में पूर्व का जो कर्त्ता है, उसकी ''**सम्प्रदान**'' **संज्ञा** होती है।	राजा **ब्राह्मणाय** गां प्रतिशृणोति आशृणोति वा।
40.9	सम्प्रदान	**अनुप्रतिगृणश्च** 1.4.41	'अनु' तथा 'प्रति' उपसर्ग पूर्वक ''गृ'' धातु के प्रयोग में पूर्व का जो कर्त्ता है, उसकी ''**सम्प्रदान**'' **संज्ञा** होती है।	(i) **होत्रे** अनुगृणाति (ii) **होत्रे** प्रतिगृणाति
40.10	**करण तथा सम्प्रदानसंज्ञा** (विकल्प से)	**परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्** 1.4.44	परिक्रयण में साधकतम कारक की विकल्प से ''**सम्प्रदान**'' **संज्ञा** तथा पक्ष में यथाप्राप्त ''**करण**'' **संज्ञा** होती है।	(i) **शतेन** परिक्रीतः। (ii) **शताय** परिक्रीतः (सम्प्रदानसंज्ञा विकल्प से)
41.1	करण	**साधकतमं करणम्** 1.4.42	क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक उपकारक = सहायक हो, उसकी ''**करण' संज्ञा** होती है।	**परशुना** छिनत्ति।
41.2	**कर्म तथा करणसंज्ञा**	**दिवः कर्म च** 1.4.43	'दिव्' धातु का जो साधकतम कारक उसकी ''**कर्म**'' तथा ''**करण**'' **संज्ञा** होती है।	(i) **अक्षान्** दीव्यति (ii) **अक्षैः** दीव्यति
42.	**अधिकरण**	**आधारोऽधिकरणम्** 1.4.45	आधार की ''**अधिकरण**'' **संज्ञा** होती है। 'अधिकरण' तीन प्रकार का होता है– (i) अभिव्यापक (ii) औपश्लेषिक (iii) वैषयिक	(i) **तिलेषु** तैलम् (अभिव्यापक) (ii) कटे आस्ते (औपश्लेषिक) (iii) मोक्षे इच्छा अस्ति (वैषयिक)
43.	(अ) **कर्मसंज्ञा**	**अधिशीङ्स्थासां कर्म** 1.4.46 (आधार की कर्मसंज्ञा)	'अधि' उपसर्गपूर्वक 'शीङ्' धातु, अधि पूर्वक 'स्था' धातु, तथा अधि पूर्वक 'आस्' धातु के आधार की ''**कर्म**'' **संज्ञा** होती है।	(i) हरिः **वैकुण्ठम्** अधिशेते। (ii) मुनिः **शिलापट्टम्** अधितिष्ठति (iii) सः **पर्वतम्** अध्यास्ते।
	(इ) **कर्मसंज्ञा**	**अभिनिविशश्च** 1.4.47 (आधार की कर्मसंज्ञा)	'अभि' तथा 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'विश्' धातु के आधार की ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	सन्मार्गम् अभिनिविशते।
	(उ) **कर्मसंज्ञा**	**उपान्वध्याङ्वसः** 1.4.48 (आधार की कर्मसंज्ञा)	उप, अनु, अधि, तथा आङ् उपसर्ग पूर्वक ''वस्'' धातु के आधार की ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	(i) सेना **ग्रामम्** उपवसति (ii) सेना **पर्वतम्** अनुवसति (iii) सेना **ग्रामम्** अधिवसति (iv) सेना **ग्रामम्** आवसति
	(ऋ) **कर्मसंज्ञा**	**क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म** 1.4.38	उपसर्गयुक्त क्रुध, द्रुह् धातुओं के योग में जिसके प्रति कोप किया जाता है, उसकी ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	(i) बालकम् अभिक्रुध्यति। (ii) **बालकम्** अभिद्रुह्यति
	(ए) **कर्मसंज्ञा**	**कर्तुरीप्सिततमं कर्म** 1.4.49	कर्त्ता को अपनी क्रिया के द्वारा जो अत्यधिक ईप्सित हो, उसकी ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	बालकः **ग्रामं** गच्छति
	(ओ) **कर्मसंज्ञा**	**तथायुक्तं चाऽनीप्सितम्** 1.4.50	अभीष्टतम के समान क्रिया से युक्त	ग्रामं गच्छन्

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			होने पर अनभीष्ट की भी ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	**तृणं** स्पृशति।
	(ऐ) **कर्मसंज्ञा**	**अकथितञ्च** 1.4.51 **''दुह्याच्पच्दण्ड्रुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथ्मुषाम्। कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्॥**	अकथित अर्थात् अपादानादि के द्वारा न कहे गए कारक की भी ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है। दुह् आदि कुल सोलह तथा इनके समान अर्थ वाली धातुओं के योग में ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है। ●मुख्य कर्म में ''कर्तुरीप्सिततमं कर्म'' से तथा गौणकर्म में ''अकथितञ्च'' सूत्र से **कर्मसंज्ञा** होती है।	(i) वामनः **बलिं** वसुधां याचते। (ii) **तण्डुलान्** ओदनं पचति (iii) **गर्गान्** शतं दण्डयति (iv) **गां व्रजम्** अवरुणद्धि (v) **माणवकं** पन्थानं पृच्छति (vi) **वृक्षम्** अवचिनोति फलानि। (vii) **माणवकं** धर्मं ब्रूते शास्ति, भाषते, वक्ति, अभिधत्ते वा। (viii) **देवं** शतं जयति। (ix) **क्षीरनिधिं** सुधां मथ्नाति। (x) **देवं** शतं मुष्णाति (xi) देवः **ग्रामम्** अजां नयति, हरति कर्षति वहति
	(औ) **कर्मसंज्ञा**	**गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ** 1.4.52	गमनार्थक, ज्ञानार्थक, भक्षणार्थक, तथा शब्दकर्मक, और अकर्मक धातुओं के अण्यन्त अवस्था के कर्त्ता की ण्यन्तावस्था में ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	बालकः **ग्रामं** गच्छति (अण्यन्त अवस्था) **बालकं** ग्रामं गमयति (ण्यन्त अवस्था)
	(ह) **कर्मसंज्ञा**	**हृक्रोरन्यतरस्याम्** 1.4.53	'हृ', तथा 'कृ' धातु के अण्यन्त दशा के कर्त्ता की ण्यन्तदशा में विकल्प से ''**कर्मसंज्ञा**'' होती है।	माणवको भारं हरति (अण्यन्त) **माणवकं** भारं हारयति (ण्यन्त) माणवकेन भारं हारयति (ण्यन्त)
44.1	कर्तृसंज्ञा	**स्वतन्त्रः कर्त्ता** 1.4.54	क्रिया की सिद्धि में जो स्वतन्त्ररूपेण अर्थात् प्रमुखतया विवक्षित होता है, वह ''**कर्त्ता**'' **संज्ञक** होता है।	**सा** पचति। यहाँ उक्तकर्त्ता में 'प्रातिपदिकार्थ.....' से प्रथमा हुई।
44.2	कर्तृसंज्ञा	**तत्प्रयोजको हेतुश्च** 1.4.55	स्वतन्त्रतया विवक्षित कारक के प्रेरक की **'कर्त्ता' व 'हेतु' संज्ञायें** होती हैं।	**श्यामेन** देवः कटं कारयति। यहाँ 'श्याम' की 'कर्त्ता' व 'हेतु' दो संज्ञायें हुई।
45.1	निपातसंज्ञा	**प्राग्रीश्वरान्निपाताः** 1.4.56	'अधिरीश्वरे' (पा० 1.4.97) सूत्र पर्यन्त कहे गए शब्दों की **'निपात' संज्ञा** होती है।	
45.2	निपातसंज्ञा	**चादयोऽसत्त्वे** 1.4.57	द्रव्य अर्थ न होने पर 'च' आदि शब्दों की ''**निपात**'' **संज्ञा** होती है।	च, वा, ह आदि।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
46.	निपात एवं उपसर्ग संज्ञा	**प्रादय उपसर्गाः क्रियायोगे** 1.4.58	प्रादिगण में पठित असत्त्वार्थक शब्दों की **''निपातसंज्ञा''** होती है, तथा क्रिया के योग में उनकी **''उपसर्गसंज्ञा''** भी होती है। उक्त दोनों संज्ञायें होती है।	प्र, परा, अप, सम् अनु, अव, निस्, निर् दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि उप। ये प्रादिगण में पठित **22 उपसर्ग** हैं।
47.	गतिसंज्ञा उपसर्गसंज्ञा और निपातसंज्ञा	**गतिश्च** 1.4.59	क्रिया के योग में 'प्र' आदि की। **''गतिसंज्ञा''** और **''उपसर्गसंज्ञा''** **''निपातसंज्ञा''** भी होती है।	प्रणीतम् यहाँ 'प्र' की ''गति'' एवं ''उपसर्ग'' दोनों संज्ञायें हैं।
48.1	गति और निपातसंज्ञा	**ऊर्यादिच्विडाचश्च** 1.4.60	ऊर्यादि शब्द, च्व्यन्त, और डाजन्त शब्दों की क्रियायोग में **''गति और निपात''** संज्ञा होती है।	ऊरीकृत्य शुक्लीकृत्य पटपटाकृत्य
48.2	गति और निपातसंज्ञा	**अनुकरणं चानितिपरम्** 1.4.61	'इति' शब्द नही है जिससे परे, ऐसे अनुकरणवाची शब्द की क्रियायोग में **''गति और निपात''** संज्ञा होती है।	खाट्कृत्य
48.3	गति और निपातसंज्ञा	**आदरानादरयोः सदसती** 1.4.62	आदर और अनादर अर्थों में यथासंख्य 'सत्' तथा 'असत्' शब्दों की **''गति और निपात''** संज्ञा होती है।	सत्कृत्य असत्कृत्य
48.4	गति और निपातसंज्ञा	**भूषणेऽलम्** 1.4.63	भूषण अर्थ में 'अलम्' शब्द की क्रियायोग में **''गति तथा निपात''** संज्ञा होती है।	अलङ्कृत्य
48.5	गति और निपातसंज्ञा	**अन्तरपरिग्रहे** 1.4.64	'अपरिग्रह' अर्थ में 'अन्तर्' शब्द की **''गति और निपात''** संज्ञा होती है।	अन्तर्हत्य
48.6	गति और निपातसंज्ञा	**कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते** 1.4.65	श्रद्धा के प्रतिघात अर्थ में 'कणे' और 'मनस्' शब्दों की क्रियायोग में **''गति और निपात''** संज्ञा होती है।	कणेहत्य मनोहत्य
48.7	गति व निपातसंज्ञा	**पुरोऽव्ययम्** 1.4.66	क्रियायोग में **'पुरस्'** अव्यय की **''गति व निपात''** संज्ञा होती है।	पुरस्कृत्य (आगे करके)
48.8	गति तथा निपातसंज्ञा	**अस्तञ्च** 1.4.67	क्रिया के योग में 'अस्तम्' अव्यय की **''गति तथा निपात''** संज्ञा होती है।	अस्तङ्गत्य (अस्त होकर)
48.9	गति तथा निपातसंज्ञा	**अच्छ गत्यर्थवदेषु** 1.4.68	गमनार्थक धातु तथा वद् धातु के योग में 'अच्छ' अव्यय की **''गति तथा निपात''** संज्ञा होती है।	अच्छगत्य (सामने आकर)
48.10	गति तथा निपातसंज्ञा	**अदोऽनुपदेशे** 1.4.69	किसी की कही हुई बात को 'उपदेश' तथा जो स्वयं सोचा जाय, उसे 'अनुपदेश' कहते हैं। 'अनुपदेश' विषय में 'अदः' शब्द क्रियायोग में **''गति और निपात''** संज्ञक होता है।	अदःकृत्य (स्वयं विचारकर)

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
48.11	गति तथा निपातसंज्ञा	**तिरोऽन्तर्धौ** 1.4.70	अन्तर्द्धि का अर्थ है–व्यवधान। व्यवधान अर्थ में 'तिरस्' शब्द की क्रियायोग में ''**गति और निपात**'' संज्ञा होती है।	तिरोभूय (छिपकर)
48.12	गति तथा निपातसंज्ञा	**विभाषा कृञि** 1.4.71	छिपने अर्थ में 'तिरः' शब्द की 'कृ' धातु के योग में विकल्प से ''**गतिसंज्ञा**'' और ''**निपातसंज्ञा**'' नित्य होती है।	तिरस्कृत्य तिरःकृत्य तिरःकृत्वा
48.13	गति तथा निपातसंज्ञा	**उपाजेऽन्वाजे** 1.4.72	'उपाजे' तथा 'अन्वाजे' शब्दों की 'कृ' धातु के योग में विकल्प से ''**गतिसंज्ञा**'' और ''**निपातसंज्ञा**'' नित्य होती है।	उपाजेकृत्य उपाजे कृत्वा (निर्बल की सहायता करके) अन्वाजेकृत्य, अन्वाजे कृत्वा (निर्बल की सहायता करके)
48.14	गतिसंज्ञा (विकल्प से) निपातसंज्ञा (नित्य)	**साक्षात्प्रभृतीनि च** 1.4.73	'साक्षात्' इत्यादि शब्दों की 'कृ' धातु के योग में विकल्प से ''**गतिसंज्ञा**'' और नित्य ''**निपातसंज्ञा**'' होती है।	साक्षात्कृत्य साक्षात् कृत्वा मिथ्याकृत्य मिथ्या कृत्वा
48.15	गतिसंज्ञा (विकल्प से) निपातसंज्ञा (नित्य)	**अनत्याधान उरसिमनसी** 1.4.74	उपश्लेषण को 'अत्याधान' कहते हैं। जहाँ चिपकाकर न रखना–यह अर्थ हो तो 'उरसि' तथा 'मनसि' शब्दों की 'कृ' धातु के योग में विकल्प से ''**गतिसंज्ञा**'' तथा नित्य ''**निपातसंज्ञा**'' होती है।	उरसिकृत्य उरसि कृत्वा मनसिकृत्य मनसि कृत्वा
48.16	गति और निपातसंज्ञा	**मध्ये पदे निवचने च** 1.4.75	मध्ये, पदे तथा निवचने शब्दों की 'कृ' धातु के योग में अनत्याधान विषय में ''**गति और निपातसंज्ञा**'' विकल्प से होती है।	मध्ये कृत्य मध्ये कृत्वा पदे कृत्य पदे कृत्वा निवचने कृत्य निवचने कृत्वा
48.17	गति और निपातसंज्ञा	**नित्यं हस्ते पाणावुपयमने** 1.4.76	'उपयमन' का अर्थ है–विवाह 'हस्ते' तथा 'पाणौ' शब्दों की विवाह के विषय में 'कृ' के योग में नित्य ''**गति और निपात संज्ञा**'' होती है।	हस्तेकृत्य पाणौकृत्य (विवाह करके)
48.18	गति तथा निपातसंज्ञा	**प्राध्वं बन्धने** 1.4.77	आनुकूल्य अर्थ में बन्धन के विषय में 'कृ' के योग में 'प्राध्वम्' की नित्य ''**गति तथा निपातसंज्ञा**'' होती है।	प्राध्वङ्कृत्य
48.19	गति तथा निपात संज्ञा	**जीविकोपनिषदावौपम्ये** 1.4.78	जीविका और उपनिषद् शब्दों की उपमा के विषय में 'कृ' के योग में नित्य ''**गति और निपातसंज्ञा**'' होती है।	जीविकाकृत्य (जीविका के समान करके) उपनिषत्कृत्य (रहस्य के समान करके)
49.1	कर्मप्रवचनीय	**कर्मप्रवचनीयाः** 1.4.82	● यह संज्ञासूत्र एवं अधिकारसूत्र दोनों	

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			है। इस सूत्र से आगे जिनका कथन किया जायेगा, उनकी **'कर्मप्रवचनीय'** संज्ञा जाननी चाहिए। ● 'विभाषा कृञि' (1.4.97) इस सूत्र तक 'कर्मप्रवचनीयसंज्ञा' का अधिकार जानना चाहिए। ● कर्म अर्थात् क्रिया के द्वारा निरूपित सम्बन्ध विशेष को कहने के कारण इन्हें 'कर्मप्रवचनीय' कहा जाता है। ● ये उपसर्ग से भिन्न होते हैं, परन्तु उपसर्गों की तरह ये क्रिया से पूर्व आते हैं। ● उपसर्गों का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता है, परन्तु कर्मप्रवचनीय का स्वतन्त्र प्रयोग होता है। इनके योग में द्वितीया आदि विभक्तियाँ होती हैं।	
49.2	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अनुर्लक्षणे** 1.4.83	लक्षण अर्थ में 'अनु' निपात की **'कर्मप्रवचनीयसंज्ञा'** होती है।	जपम् अनु प्रावर्षत्।
49.3	**कर्मप्रवचनीय और निपातसंज्ञा**	**तृतीयार्थे** 1.4.84	तृतीया का अर्थ विवक्षित होने पर 'अनु' की ''**कर्मप्रवचनीय और निपात**'' संज्ञा होती है।	नदीमन्ववसिता सेना।
49.4	**कर्मप्रवचनीय और निपातसंज्ञा**	**हीने** 1.4.85	'हीन' अर्थ द्योतित होने पर 'अनु' शब्द की **'कर्मप्रवचनीय और निपात'** संज्ञा होती है।	(i) अनुशाकटायनं वैयाकरणाः। (ii) अनु हरिं सुराः।
49.5	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**उपोऽधिके च** 1.4.86	अधिक तथा न्यून अर्थों में 'उप' शब्द की ''**कर्मप्रवचनीय तथा निपात**'' संज्ञा होती है।	(i) उपशाकटायनं वैयाकरणाः (ii) उप सुरेषु हरिः
49.6	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अपपरी वर्जने** 1.4.87	वर्जन अर्थ के विषय में 'अप' और 'परि' शब्दों की ''**कर्मप्रवचनीय तथा निपात संज्ञा**'' होती है।	(i) अप हरेः संसारः (ii) परि हरेः संसारः (हरि से बिना संसार)
49.7	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**आङ्मर्यादावचने** 1.4.88	'मर्यादा' और 'अभिविधि' अर्थों में 'आङ्' की ''कर्मप्रवचनीय तथा निपात'' संज्ञा होती है।	आ मुक्तेः संसारः (मर्यादा) आ सकलाद् ब्रह्म (अभिविधि)
49.8	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**लक्षणेत्थम्भूताख्यान-भागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः** 1.4.89	लक्षण, इत्थम्भूताख्यान, भाग और वीप्सा अर्थों में प्रति, परि तथा अनु की ''**कर्मप्रवचनीय तथा निपात**'' संज्ञा होती है।	(i) लक्षण अर्थ में– वृक्षं प्रति परि अनु वा विद्योतते विद्युत् (ii) इत्थम्भूताख्यान अर्थ में– भक्तः विष्णुं प्रति परि अनु वा

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
				(iii) भाग अर्थ में– लक्ष्मीः हरिं प्रति परि अनु वा (iv) 'वीप्सा' अर्थ में– वृक्षं वृक्षं प्रति परि अनु वा सिञ्चति।
49.9	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अभिरभागे** 1.4.91	'भाग' अर्थ को छोड़कर लक्षणादि पूर्वोक्त अर्थों में 'अभि' की **''कर्मप्रवचनीय तथा निपात''** संज्ञा होती है।	(i) लक्षण-हरिम् अभिवर्तते। (ii) इत्थम्भूताख्यान-भक्तः **हरिम्** अभि (iii) वीप्सा-देवं देवम् अभिसिञ्चति
49.10	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः** 1.4.92	प्रतिनिधि और प्रतिदान अर्थ में 'प्रति' शब्द की **''कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा''** होती है।	(i) प्रतिनिधि अर्थ में– प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति। (ii) प्रतिदान अर्थ में– तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्
49.11	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अधिपरी अनर्थकौ** 1.4.93	'अधि' तथा 'परि' शब्दों की अन्य अर्थ के द्योतक न होने पर **''कर्मप्रवचनीय तथा निपात''** संज्ञा होती है।	(i) कुतः अध्यागच्छति (ii) कुतः पर्यागच्छति।
49.12	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**सुः पूजायाम्** 1.4.94	'पूजा' अर्थ में 'सु' की **कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा** होती है।	सुसिक्तं भवता।
49.13	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अतिरतिक्रमणे च** 1.4.95	'अतिक्रमण' अर्थात् उल्लंघन अर्थ और पूजा अर्थ में 'अति' की **''कर्मप्रवचनीय और निपात''** संज्ञा होती है।	अति देवान् कृष्णः।
49.14	**कर्मप्रवचनीय तथा निपातसंज्ञा**	**अपिः पदार्थसम्भावनान्ववसर्ग-गर्हासमुच्चयेषु** 1.4.96	पदार्थ, सम्भावन, कामचार, निन्दा, तथा समुच्चय-इन अर्थों में 'अपि' की **''कर्मप्रवचनीय तथा निपात''** संज्ञा होती है।	(i) पदार्थ सर्पिषः अपि स्यात्। (ii) सम्भावन– अपि स्तुयात् विष्णुम् (iii) अन्ववसर्ग– अपि स्तुहि (v) गर्हा–धिक् देवदत्तम् अपि स्तुयात् वृषलम् (v) समुच्चय– अपि सिञ्च, अपि स्तुहि।
49.15	**कर्मप्रवचनीय और निपातसंज्ञा**	**अधिरीश्वरे** 1.4.97	'ईश्वर' अर्थात् स्वस्वामिभाव अर्थ में 'अधि' की **''कर्मप्रवचनीय और निपात''** संज्ञा होती है।	(i) अधि पाञ्चालेषु ब्रह्मदत्तः। (iii) उप परार्धे हरेर्गुणाः।

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
49.16	**कर्मप्रवचनीय और निपातसंज्ञा**	**विभाषा कृञि** 1.4.97	'अधि' शब्द की 'कृ' धातु के परे विकल्प से '**कर्मप्रवचनीय और निपात**' संज्ञा होती है।	यदत्र माम् अधिकरिष्यति।
50.	**परस्मैपदसंज्ञा**	**लः परस्मैपदम्** 1.4.98	धातु से विहित 'ल्' के स्थान पर होने वाला आदेश ''**परस्मैपद**'' संज्ञक होता है। अर्थात् 'तिप्' से लेकर ''मस्'' पर्यन्त नौ प्रत्ययों, शतृ तथा क्वसु–इन प्रत्ययों की ''**परस्मैपद संज्ञा**'' होती है।	तिप्, तस्, झि सिप्, थस्, थ मिप्, वस्, मस्
51.	**आत्मनेपद**	**तङानावात्मनेपदम्** 1.4.99	'त' से लेकर 'महिङ्' पर्यन्त नौ प्रत्ययों, शानच् तथा कानच् इन प्रत्ययों की ''**आत्मनेपद**'' संज्ञा होती है।	त, आताम् झ थास्, आथाम्, ध्वम् इट्, वहि, महिङ्
52.	**प्रथम, मध्यम तथा उत्तमपुरुष संज्ञा**	**तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः** 1.4.100	'तिङ्' के आत्मनेपद और परस्मैपद दोनों पदों के तीन-तीन अर्थात् त्रिक की क्रमशः ''**प्रथम, मध्यम तथा उत्तम**'' संज्ञा होती है। इसी तरह आत्मनेपद में भी।	प्र. पु.-तिप् तस् झि म.पु.-सिप् थस् थ उ.पु.-मिप् वस् मस्
53.1	**एकवचन, द्विवचन बहुवचन संज्ञा**	**तान्येकवचनद्विवचन बहुवचनान्येकशः** 1.4.101	उन तिङ् प्रत्ययों के प्रत्येक त्रिक अर्थात् तीन-तीन की एक-एक करके क्रमशः **एकवचन, द्विवचन** तथा **बहुवचन संज्ञा** होती है।	(i) 'तिप्' की एकवचन संज्ञा (ii) 'तस्' की द्विवचन संज्ञा (iii) 'झि' की बहुवचन संज्ञा होती है। इसी प्रकार मध्यम तथा उत्तम पुरुष की भी होगी।
53.2	**एकवचन द्विवचन एवं बहुवचन संज्ञा**	**सुपः** 1.4.102	'सुप्' विभक्ति के प्रत्येक त्रिक् अर्थात् तीन-तीन की एक-एक करके क्रमशः **एकवचन, द्विवचन, बहुवचन** संज्ञा होती है। 'सुप्' के द्वारा 'सु' आदि 21 प्रत्ययों का ग्रहण होता है।	सु एकवचन औ-द्विवचन जस्-बहुवचन आदि।
54.1	**विभक्तिसंज्ञा**	**विभक्तिश्च** 1.4.103	सुप् और तिङ् के तीन-तीन की ''**विभक्तिसंज्ञा**'' होती है।	देवाः अपठत्।
54.2	**विभक्तिसंज्ञा**	**प्राग्दिशो विभक्तिः** 5.3.1	''दिक्शब्देभ्यः सप्तमी'' (पा० 5.3.27) इस सूत्र से पहले जो जो प्रत्यय कहें जायेंगे, उन उन की ''**विभक्ति संज्ञा**'' होती है।	
55.	**संहितासंज्ञा**	**परः सन्निकर्षः संहिता** 1.4.108	वर्णों के अत्यधिक सामीप्य की ''**संहिता**'' संज्ञा होती है।	मधु अपि = मध्वपि रमा ईशः = रमेशः
56.	**अवसानसंज्ञा**	**विरामोऽवसानम्** 1.4.109	अन्तिम वर्ण के पश्चात् उच्चारण	राम सु–रामस्

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			के अभाव की **'अवसानसंज्ञा'** होती है।	राम–रु–रामर् इस दशा में 'र्' की अवसान संज्ञा।
57.	**समाससंज्ञा**	**प्राक्कडारात् समासः** 2.1.3	'कडाराः कर्मधारये' (2.2.38) सूत्र से पूर्व समाससंज्ञा का अधिकार जानना चाहिए।	–
58.	अव्ययीभाव	**अव्ययीभावः** 2.1.5	''तत्पुरुषः'' (2.1.22) सूत्र तक सभी सूत्रों के द्वारा कहे गए समास की **'अव्ययीभाव' संज्ञा** होती है।	अधिहरि अध्यात्मम् पञ्चगङ्गम्
59.1	तत्पुरुष	**तत्पुरुषः** 2.1.22	यह अधिकार एवं संज्ञासूत्र दोनों है। यहाँ से लेकर ''शेषो बहुव्रीहिः (2.2.23) के पहले तक जो समास कहा जाएगा, उसकी **''तत्पुरुष'' संज्ञा** होगी।	राजपुरुषः
59.2	तत्पुरुष	**द्विगुश्च** 2.1.23	द्विगुसमास की भी ''तत्पुरुषसंज्ञा'' होती है।	पञ्चराजम्
60.	द्विगु	**संख्यापूर्वो द्विगुः** 2.1.52	यदि पूर्वपद संख्यावाचक हो तो उसकी **''द्विगु'' संज्ञा** होती है।	पञ्चकपालः
61.	तत्पुरुष	**नञ्** 2.2.6	'नञ्' अव्यय समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है, और वह समास **''तत्पुरुषसंज्ञक''** होता है।	न ब्राह्मणः अब्राह्मणः
62.	बहुव्रीहि	**शेषो बहुव्रीहिः** 2.2.23	शेष जो समास, उसकी **'बहुव्रीहि'** संज्ञा होती है।	वीणापाणिः
63.	आमन्त्रितसंज्ञा	**साऽऽमन्त्रितम्** 2.3.48	सम्बोधन में जो प्रथमा होती है, उसकी **''आमन्त्रितसंज्ञा''** होती है।	अग्ने।
64.	सम्बुद्धिसंज्ञा	**एकवचनं सम्बुद्धिः** 2.3.49	आमन्त्रितसंज्ञक प्रथमाविभक्ति के एकवचन की **''सम्बुद्धिसंज्ञा''** होती है।	साधो! हरे!
65.	प्रत्ययसंज्ञा	**प्रत्ययः** 3.1.1	पञ्चम अध्याय की समाप्ति तक सुप्, क्यच्, सन् आदि जिन शब्दस्वरूपों का विधान किया गया है, उनकी **''प्रत्यय'' संज्ञा** होगी।	कर्त्तव्यम् करणीयम् यहाँ 'तव्यत्' एवं 'अनीयर्' की ''प्रत्ययसंज्ञा'' है।
66.	कृत्संज्ञा	**कृदतिङ्** 3.1.93	धात्वाधिकार में 'तिङ्' से भिन्न प्रत्यय की **'कृत्' संज्ञा** होती है।	कृ+तृच् = कर्त्ता कृ + ण्वुल् = कारकः
67.	कृत्यसंज्ञा	**कृत्याः** 3.1.95	इस सूत्र से लेकर ''ण्वुल्तृचौ'' (3.1.133) पर्यन्त जितने प्रत्ययों का विधान किया गया है, उनकी **''कृत्य'' संज्ञा** होती	तव्यत्, तव्य अनीयर्, यत् क्यप्, ण्यत् केलिमर् – ये सात

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
			है। अतः 'कृत्य' के साथ 'कृत्' संज्ञा भी होती है।	प्रत्यय कृत्यसंज्ञक हैं।
68.	सत्संज्ञा	**तौ सत्** 3.2.127	शतृ व शानच् – इनकी "**सत्संज्ञा**" होती है।	करिष्यन् करिष्यमाणः
69.	सार्वधातुक संज्ञा	**तिङ्शित्सार्वधातुकम्** 3.4.113	धातु के अधिकार में पठित तिङ् व शित् प्रत्ययों की "**सार्वधातुकसंज्ञा**" होती है। 'तिङ्' का अर्थ है–तिप् आदि 18 प्रत्यय। जिसका 'श्' इत् है, उसे 'शित्' कहते हैं, जैसे–शप्, श्यन्, श्नु, श्ना आदि।	भू शप् ति भो अति भवति।
70.1	आर्धधातुक संज्ञा	**आर्धधातुकं शेषः** 3.4.114	तिङ् व शित् से अतिरिक्त प्रत्यय जो धात्वाधिकार में पठित हैं, उनकी '**आर्धधातुक संज्ञा**' होती है। आर्धधातुकसंज्ञा के दो कार्य हैं– (i) आर्धधातुकस्येड्वलादेः" से इट् का आगम (ii) "सार्वधातुकार्धधातुकयोः" से गुण	तृच्, तुमुन्, तव्यत् आदि की आर्धधातुक संज्ञा। जैसे– कर्त्ता, पठितुम् आदि।
70.2	आर्धधातुक संज्ञा	**लिट् च** 3.4.115	लिट् के स्थान पर विहित आदेश तिङ् की "**आर्धधातुक**" संज्ञा होती है।	पेचिथ। जग्ले।
70.3	आर्धधातुक संज्ञा	**लिङाशिषि** 3.4.116	आशीर्वाद में लिङ् के स्थान पर विहित 'तिङ्' की "**आर्धधातुक**" संज्ञा होती है।	भूयात्
70.4	आर्धधातुक संज्ञा	**छन्दस्युभयथा** 3.4.117	वेद में सार्वधातुक व आर्धधातुक दोनों संज्ञायें होती हैं। अर्थात् क्वचित् आर्धधातुक के स्थान पर सार्वधातुक तथा सार्वधातुक के स्थान पर आर्धधातुक संज्ञा देखी जाती है।	वर्धन्तु (ऋ. 7.99.7) उपस्थेयाम (ऋ. 7.15.5)
71.	तद्धित	**तद्धिताः** 4.1.76	यह अधिकारसूत्र है। यहाँ से लेकर पञ्चम अध्याय की समाप्ति तक जिस जिस प्रत्यय का विधान किया जाएगा, उस उसकी **तद्धितसंज्ञा** होती है।	
72.	गोत्रसंज्ञा	**अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्** 4.1.162	पौत्र अर्थात् तीसरी पीढ़ी तथा उससे आगे सभी अपत्य की "**गोत्र संज्ञा**" होती है।	

क्र.	संज्ञा	संज्ञाविधायक सूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरणम्
73.	**युवासंज्ञा**	**जीवति तु वंश्ये युवा** 4.1.163	वंश में होने वाले पिता, पितामह आदि के जीवित रहते पौत्र आदि के अपत्य अर्थात् चतुर्थ पीढ़ी व उससे आगे की **''युवा संज्ञा''** होती है।	
74.	**तद्राजसंज्ञा**	**ते तद्राजाः** 4.1.174	'जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ्' (4.1.168) सूत्र से विहित 'अञ्' प्रत्यय से लेकर यहाँ तक जिन जिन प्रत्ययों का विधान किया गया है, उन सभी की **''तद्राज''** संज्ञा होती है। 'तद्राज' संज्ञा का फल है– बहुवचन में प्रत्यय का लुक् हो जाता है।	अञ्, अण् ङ्यण्, ण्य तथा ञ्यङ् प्रत्ययों की ''तद्राज'' संज्ञा होती है।
75.	**अभ्याससंज्ञा**	**पूर्वोऽभ्यासः** 6.1.4	'एकाचो द्वे प्रथमस्य (6.1.1) के प्रकरण में पूर्व की **अभ्याससंज्ञा** होती है।	पच् पच् अ। प पच् अ = पपाच (लिट् प्र. पु. एक.)
76.	**अभ्यस्तसंज्ञा**	**उभे अभ्यस्तम्** 6.1.5	षष्ठाध्याय के द्वित्वप्रकरण में द्वित्व के द्वारा जिन दो शब्दस्वरूपों का विधान है, उन दोनों की समुदित रूप से **''अभ्यस्तसंज्ञा''** होती है।	द द् अत् ददत् सु ददत्।
77.	**आम्रेडितसंज्ञा**	**तस्य परमाम्रेडितम्** 8.1.2	द्वित्व किये हुए के पर वाले शब्द की **'आम्रेडितसंज्ञा'** होती है।	चौर-चौर भुङ्क्ते-भुङ्क्ते
78.	**कर्मधारयसंज्ञा**	**तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः** 1.2.42	जिस समास में पूर्वपद और उत्तरपद एक ही विभक्ति के हों, उस समास की **'कर्मधारयसंज्ञा'** होती है।	कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

संज्ञा विधायक सूत्रों की संख्या

संज्ञा	सूत्र/वार्तिकों की संख्या
➢ **'प्रातिपदिक'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 02
➢ **'पद'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 04
➢ **'इत्'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 06
➢ **'इत्संज्ञा'** निषेधकसूत्र	- 01 **न विभक्तौ तुस्माः**

संज्ञा	सूत्र/वार्तिकों की संख्या
➢ **'आर्धधातुक'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 04
➢ **'अव्यय'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 05
➢ **'प्रगृह्य'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 08
➢ **'धातु'** संज्ञाविधायकसूत्र	- 02
➢ **'करण'** संज्ञा विधायकसूत्र	- 02

संज्ञा		सूत्र/वार्तिकों की संख्या
➢ '**कर्मसंज्ञा**' विधायकसूत्र	-	9+02(वा0)
➢ '**सम्प्रदान**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	10+01(वा0)
➢ '**अपादान**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	8+01(वा0)
➢ '**कर्तृ**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	02
➢ '**षट्**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	02
➢ '**सर्वनामस्थान**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	02
➢ '**वृद्ध**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	03
➢ '**उपसर्जन**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	02
➢ '**नदी**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	03+01
➢ '**नदीसंज्ञा**' निषेधकसूत्र	-	01 '**नेयङुवङ्स्थानावस्त्री**'
➢ '**घि**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	03
➢ '**गुरु**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	02
➢ '**भ**' संज्ञाविधायकसूत्र	-	03
➢ '**सवर्णसंज्ञा**' विधायकसूत्र हैं	-	01+01 (वा0)
➢ '**विभक्तिसंज्ञा**' विधायकसूत्र हैं	-	02
➢ कितने प्रत्ययों की '**कृत्यसंज्ञा**' होती है	-	07

(तव्यत् , तव्य, अनीयर् , यत् , क्यप् , ण्यत् ,केलिमर्)

➢ कितने प्रत्ययों की '**सत्संज्ञा**' होती है - 02 **(शतृ+शानच्)**

➢ कितने प्रत्ययों की '**घ**' **संज्ञा** होती है - 02 **(तरप् + तमप्)**

➢ कितने प्रत्ययों की '**निष्ठा**' **संज्ञा** होती है - 02 **(क्त + क्तवतु)**

➢ निम्नलिखित संज्ञाओं का विधान केवल एक-एक सूत्र में किया गया है-
गुण,वृद्धि, लोप, सार्वधातुक, टि, उपधा, प्रत्याहार, अपृक्त, अङ्ग, अधिकरण, परस्मैपद, आत्मनेपद, संहिता, अवसान, संयोग, अनुनासिक, घु, घ, संख्या, निष्ठा, सत् , सर्वनाम, विभाषा, सम्प्रसारण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, लघु, सम्बुद्धि, अभ्यास, आम्रेडितसंज्ञा आदि।

वर्णों के भेद

क्र.	वर्ण	प्रकार (भेद)	विवरणम्
01	अ	18	अ-इ-उ-ऋ एषां
02	इ	18	वर्णानां प्रत्येकं
03	उ	18	अष्टादश भेदाः।
04	ऋ	18	
05	ऌ	12	ऌ वर्णस्य द्वादश, तस्य दीर्घाभावात्
06	ऋ + ऌ	18+12=30	ऋकारस्त्रिंशतः। एवं ऌकारोऽपि
07	ए	12	एचामपि द्वादश,
08	ओ	12	तेषां ह्रस्वाभावात् ।
09	ऐ	12	
10	औ	12	
11	य	02	अनुनासिकानुना-
12	व	02	सिकभेदेन यवला
13	ल	02	द्विधा

1. **सवर्णसंज्ञा विधायक सूत्र- 'तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्'**
2. **सवर्णसंज्ञा वार्तिक- 'ऋऌवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्**
3. **सवर्णियों का बोधक सूत्र- 'अणुदित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः'**

व्याकरण-पदावली-तालिका

क्र.	व्याकरणपदावली	प्रकार	विवरणम्
1.	**वचन**	03	एकवचन, द्विवचन, बहुवचन
2.	**लिङ्ग**	03	पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग
3.	**पुरुष**	03	प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष, उत्तमपुरुष
4.	**वाच्य**	03	कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य
5.	**क्रिया**	02	सकर्मक, अकर्मक
6.	**धातु-पद**	02	परस्मैपद, आत्मनेपद, (उभयपद)
7.	**धातु (इट् व्यवस्था)**	02	सेट्, अनिट्, (वेट्)
8.	**कारक**	06	कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान अपादान, अधिकरण।
9.	**विभक्ति**	07	प्रथमा (सम्बोधन), द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी षष्ठी, सप्तमी।
10.	**लकार**	10	लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लृङ्, लुङ्। ('लेट्' का प्रयोग प्रायशः वेदों में)

क्र.	व्याकरणपदावली	प्रकार	विवरणम्
11.	**धातु-गण**	10	भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि, चुरादिगण
12.	**सूत्र**	06	संज्ञा, परिभाषा, विधि, नियम, अतिदेश, अधिकार।
13.	**सन्धि**	05	स्वर (अच्) व्यञ्जन (हल्), विसर्ग, स्वादि, प्रकृतिभाव।
14.	**समास**	05	केवल समास (सुप्सुपा), अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि।
15.	**प्रत्यय**	05	सुप्, तिङ्, कृत्, तद्धित, स्त्रीप्रत्यय।
16.	**सुप्प्रत्यय**	21	सु औ जस्, अम् औट् शस्, टा भ्याम् भिस्, ङे भ्याम् भ्यस्, ङसि भ्याम् भ्यस्, ङस् ओस् आम्, ङि ओस् सुप्
17.	**तिङ्प्रत्यय**	18	**परस्मैपद-9** तिप् तस् झि, सिप् थस् थ, मिप् वस् मस् **आत्मनेपद-9** त आताम् झ, थास् आथाम् ध्वम्, इट् वहि महिङ्
18.	**स्त्रीप्रत्यय**	08	चाप्, टाप्, डाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति।
19.1	**पद (यास्क के अनुसार)**	04	नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात।
19.2	**पद (पाणिनि के अनुसार)**	02	सुबन्त, तिङन्त।
20.	**प्रयत्न**	02	आभ्यन्तर, बाह्य
21.	**आभ्यन्तर प्रयत्न**	05	स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, विवृत, ईषत्विवृत, संवृत।
22.	**बाह्यप्रयत्न**	11	विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।
23.	**स्पृष्टवर्ण (स्पर्शवर्ण)**	25	क से म तक
24.	**अन्तःस्थवर्ण**	04	य् व्, र्, ल्।
25	**ऊष्मवर्ण**	04	श्, ष्, स्, ह्।
26	**व्यञ्जन (हल्)**	33	स्पृष्ट + अन्तःस्थ + ऊष्मवर्ण
27.	**अल्पप्राण वर्ण**	19	क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, व, र, ल।
28.	**महाप्राणवर्ण**	14	ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, ह।
29.	**स्वर (अच्)**	09	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ।
30.	**मूलस्वर (ह्रस्वस्वर)**	05	अ, इ, उ, ऋ, लृ।
31.	**दीर्घस्वर (संयुक्तस्वर)**	04	ए, ओ, ऐ, औ
32.	**घोषवर्ण**	20	ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द
33.	**अघोषवर्ण**	13	ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स।
34.	**अनुनासिक (पञ्चमाक्षर)**	05	ङ, ञ, ण, न, म।
35.	**जिह्वामूलीय**	02	ᳵकᳵख
36.	**उपध्मानीय**	02	ᳶपᳶफ
37.	**पाणिनीय पञ्चाङ्गव्याकरण**	05	सूत्रपाठ, गणपाठ, उणादिपाठ, धातुपाठ लिङ्गानुशासनम्
38.	**उच्चारणस्थान**	08	शिरः, कण्ठः, तालु, उरः, जिह्वामूलम्, दन्ताः, नासिका, ओष्ठ, (पा. शि.)
39.	**माहेश्वरसूत्र**	14	अइउण् से हल् तक।
40.	**प्रत्याहार**	42/43	अण्, अक्, इक् यण् आदि।

1. संज्ञागङ्गा (भाग-एक)

1. 'नत्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्' यह किस ग्रन्थ का मङ्गलाचरण है–

(अ) सारसिद्धान्तकौमुदी (इ) मध्यसिद्धान्तकौमुदी

(उ) लघुसिद्धान्तकौमुदी (ऋ) ऋजुसिद्धान्तकौमुदी

2. ''पाणिनीयप्रवेशाय लघुसिद्धान्तकौमुदीम्'' यह कथन किसका है?

(अ) भट्टोजिदीक्षित (इ) वरदराज

(उ) कात्यायन (ऋ) पतञ्जलि

3. वरदराज ने लघुसिद्धान्तकौमुदी के मङ्गलाचरण में किस देवता की स्तुति की है ?

(अ) शिव की (इ) विष्णु की

(उ) लक्ष्मी की (ऋ) सरस्वती की

4. मङ्गलाचरण कितने प्रकार का होता है–

(अ) 5 (इ) 4

(उ) 6 (ऋ) 3

5. लघुसिद्धान्तकौमुदी में किस प्रकार का मङ्गलाचरण किया गया है–

(अ) नमस्कारात्मक (इ) वस्तुनिर्देशात्मक

(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) आशीर्वादात्मक

6. माहेश्वर सूत्रों (प्रत्याहार सूत्रों) की सङ्ख्या है–

(अ) 14 (इ) 16

(उ) 18 (ऋ) 15

7. 'अण्' आदि प्रत्याहारों की सिद्धि के लिए पाणिनीय-व्याकरण में कितने सूत्रों का प्रयोग हुआ है?

(अ) लगभग 4000 (इ) केवल एक

(उ) केवल 14 (ऋ) केवल 43

8. पाणिनि को चतुर्दश 'प्रत्याहार सूत्र' किससे प्राप्त हुए?

(अ) शिव (इ) ब्रह्मा

(उ) सरस्वती (ऋ) वृहस्पति

9. 'अइउण्' आदि सूत्रों का मुख्य प्रयोजन है–

(अ) धातुसिद्धि (इ) रूपसिद्धि

(उ) अण् आदि प्रत्याहारों की सिद्धि

(ऋ) केवल उच्चारणार्थ

10. चतुर्दश माहेश्वर सूत्रों में स्थित अन्त्य वर्ण की संज्ञा होती है–

(अ) लोपसंज्ञा (इ) इत् संज्ञा

(उ) हलन्त संज्ञा (ऋ) कोई संज्ञा नहीं

11. 'हयवरट्'- आदि सूत्रों के 'हकारादि' में स्थित 'अकार' का क्या प्रयोजन है?

(अ) उच्चारणार्थ (इ) दर्शनार्थ

(उ) मनोरञ्जनार्थ (ऋ) लेखनार्थ

12. 'लण्' सूत्र में पठित 'अकार' है–

(अ) प्लुतसंज्ञक (इ) इत्संज्ञक

(उ) प्रगृह्यसंज्ञक (ऋ) गुणसंज्ञक

13. भगवान् शंकर के डमरू से निकलकर पाणिनि को कितने सूत्र प्राप्त हुए?

(अ) 18 (इ) 14

(उ) 16 (ऋ) 20

14. 'अइउण्' आदि सूत्रों का नाम नहीं है–

(अ) चतुर्दश सूत्र (वर्णसमाम्नाय सूत्र)

(इ) शिवसूत्र (माहेश्वरसूत्र)

(उ) प्रत्याहार सूत्र (अक्षरसमाम्नाय)

(ऋ) धातु सूत्र

15. व्याकरणशास्त्र में स्वरों को कहते हैं–

(अ) हल् (इ) अच्

(उ) अल् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

16. व्याकरणशास्त्र में व्यञ्जनवर्णो को कहते हैं–

(अ) अच् (इ) आगम

(उ) हल् (ऋ) उपदेश

17. हल् अक्षरों की इत्संज्ञा किस सूत्र से होती है–

(अ) आदिरन्त्येन सहेता (इ) हलन्त्यम्

(उ) उपदेशेऽजनुनासिक इत् (ऋ) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्

उत्तरमाला - 1. (उ), 2. (इ), 3. (ऋ), 4. (ऋ), 5. (उ), 6. (अ), 7. (उ) 8. (अ), 9. (उ) 10. (इ), 11. (अ), 12. (इ), 13. (इ), 14. (ऋ),15.(इ) 16. (उ), 17. (इ)

18. 'हलन्त्यम्' सूत्र किन वर्णों की इत्संज्ञा करता है–
(अ) अच् (स्वरों) की
(इ) स्वर युक्त हल् वर्णों की
(उ) अच् और हल् दोनों की
(ऋ) अन्तिम हल् वर्णों की

19. पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि के प्रथम उच्चारण को क्या कहते हैं–
(अ) आगम (इ) आदेश
(उ) उपदेश (ऋ) लोप

20. 'उपदेश' के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) 'भू' आदि धातु पाठ एवं 'अइउण्' (अष्टाध्यायी) सूत्रपाठ
(इ) उणादिसूत्र, गणपाठ एवं लिङ्गानुशासन
(उ) आगम, प्रत्यय एवं आदेश
(ऋ) उपर्युक्त सभी

21. 'संहिता संज्ञा' किस सूत्र से होती है–
(अ) संहितायाम्
(इ) स्वरितात् संहितायामनुदात्तानाम्
(उ) परः सन्निकर्षः संहिता
(ऋ) तयोर्य्वावचि संहितायाम्

22. 'गुणसंज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) आद्गुणः (इ) अदेङ्गुणः
(उ) गुणो यङ्लुकोः (ऋ) मिदेर्गुणः

23. 'वृद्धिसंज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) मृजेर्वृद्धिः
(इ) वृद्धिरेचि
(उ) वृद्धिरादैच्
(ऋ) वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्

24. ''प्रातिपदिक'' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्
(इ) ङ्याप्प्रातिपदिकात्
(उ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(ऋ) प्रातिपदिकान्तनुँम्विभक्तिषु च

25. अष्टाध्यायी में प्रातिपदिकसंज्ञा विधायक सूत्र कितने हैं–
(अ) एक (इ) दो
(उ) तीन (ऋ) चार

26. ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' सूत्र से किस संज्ञा का विधान किया जाता है–
(अ) कृत् (इ) तद्धित
(उ) समास (ऋ) प्रातिपदिक

27. 'नदी संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) आण् नद्याः (इ) नद्यृतश्च
(उ) यू स्त्र्याख्यौ नदी
(ऋ) अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः

28. 'ङिति ह्रस्वश्च' सूत्र से किस संज्ञा का विधान होता है–
(अ) घि (इ) भ
(उ) नदी (ऋ) पद

29. 'घि' संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) द्वन्द्वे घि (इ) शेषो घ्यसखि
(उ) अच्च घेः (ऋ) घेर्ङिति

30. 'उपधा संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा (इ) अत उपधायाः
(उ) उपधायां च (ऋ) उपधायाश्च

31. 'अपृक्त संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) अस्तिसिचोऽपृक्ते (इ) अपृक्त एकाल् प्रत्ययः
(उ) वेरपृक्तस्य (ऋ) गुणोऽपृक्ते

32. 'गति संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) नित्यं कौटिल्ये गतौ (इ) गतिश्च
(उ) गतिर्गतौ (ऋ) गतिरनन्तरः

33. 'पदसंज्ञा' विधायक सूत्र कितने हैं–
(अ) 1 (इ) 2
(उ) 3 (ऋ) 4

34. इनमें कौन पदसंज्ञा विधायक सूत्र नहीं है–
(अ) सुप्तिङन्तं पदम् (इ) ''सिति च'' और ''नः क्ये''
(उ) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने (ऋ) अनुदात्तं पदमेकवर्जम्

उत्तरमाला - 18. (ऋ), 19. (उ), 20. (ऋ) 21. (उ), 22. (इ), 23. (उ), 24. (अ), 25. (इ) 26. (ऋ), 27. (उ), 28. (उ), 29. (इ), 30. (अ), 31. (इ), 32. (इ), 33. (ऋ), 34. (ऋ)

35. 'विभाषा संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ (इ)विभाषा छन्दसि
(उ) विभाषा जसि (ऋ) न वेति विभाषा

36. 'सवर्ण संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) अकः सवर्णे दीर्घः
(इ) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः
(उ) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्
(ऋ) झरो झरि सवर्णे

37. 'टि' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) टित आत्मनेपदानां टेरे
(इ) तच्च टेः
(उ) अचोऽन्त्यादि टि
(ऋ) अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक्टेः

38. 'प्रगृह्यसंज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् (इ) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्
(उ) ऋत्यकः (ऋ) अप्लुतवदुपस्थिते

39. 'निष्ठा संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) निष्ठा
(इ) क्तक्तवतू निष्ठा
(उ) निष्ठा च द्व्यजनात्
(ऋ) निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः

40. 'सम्प्रसारण संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) सम्प्रसारणस्य
(इ) इग्यणः सम्प्रसारणम्
(उ) ह्वः सम्प्रसारणं च न्यभ्युपविषु
(ऋ) न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम्

41. 'अ, ए, ओ'- इन तीन वर्णों की संज्ञा होती है–
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) अपृक्त (ऋ) सर्वनाम

42. 'आ, ऐ, औ'– इन तीनों वर्णों की संज्ञा होगी–
(अ) लघु (इ) गुण
(उ) संहिता (ऋ) वृद्धि

43. 'कृदन्त' की संज्ञा क्या है–
(अ) धातु (इ) प्रातिपदिक
(उ) प्रत्यय (ऋ) संयोग

44. इनमें से किसकी प्रातिपदिक संज्ञा नहीं है–
(अ) कृदन्त (इ) तद्धित
(उ) समास (ऋ) पठ्

45. क्रिया के योग में 'प्र' आदि की क्या संज्ञा होगी–
(अ) अपृक्त (इ) गति
(उ) निष्ठा (ऋ) सर्वनाम

46. 'सुबन्त और तिङन्त' को कहा जाता है–
(अ) धातु (इ) प्रातिपदिक
(उ) पद (ऋ) प्रत्यय

47. निषेध एवं विकल्प को क्या कहा जाता है–
(अ) विभाषा (इ) प्रत्यय
(उ) निष्ठा (ऋ) संयोग

48. 'अ–आ' तथा 'उ-ऊ' परस्पर क्या हैं–
(अ) संहिता (इ) संयोग
(उ) सवर्ण (ऋ) प्रातिपदिक

49. 'राजन्' में 'अन्' की क्या संज्ञा होगी–
(अ) निष्ठा (इ) गुण
(उ) लघु (ऋ) टि

50. 'क्त' एवं 'क्तवतु' प्रत्ययों की संज्ञा है–
(अ) उपधा (इ) अपृक्त
(उ) निष्ठा (ऋ) भ

51. 'यण्' के स्थान पर 'इक्' के विधान को क्या कहा जाता है–
(अ) संहिता (इ) संयोग
(उ) सम्प्रसारण (ऋ) लोप

52. ईकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचन की क्या संज्ञा होगी–
(अ) प्लुत (इ) टि
(उ) लघु (ऋ) प्रगृह्य

53. 'हरी एतौ'– यहाँ 'हरी' की कौन संज्ञा है–
(अ) प्लुत (इ) प्रगृह्य
(उ) गति (ऋ) गुरू

35. (ऋ), 36. (उ), 37. (उ), 38. (इ), 39. (इ), 40. (इ), 41. (इ), 42. (ऋ) 43. (इ), 44. (ऋ), 45. (इ), 46. (उ), 47. (अ) 48. (उ), 49. (ऋ), 50. (उ), 51. (उ), 52.(ऋ) 53. (इ)

54. ''आम्रेडितसंज्ञा'' विधायक सूत्र है–
(अ) तस्य परमाम्रेडितम् (इ) कानाम्रेडिते
(उ) आद्यन्तौ टकितौ (ऋ) उपर्युक्त सभी

55. ''दाधा घ्वदाप्'' यह सूत्र किस संज्ञा का विधान करता है–
(अ) 'भ' संज्ञा (इ) 'घु' संज्ञा
(उ) 'घि' संज्ञा (ऋ) 'घ' संज्ञा

56. 'भ' संज्ञा करने वाला सूत्र नहीं है–
(अ) यचि भम् (इ) तसौ मत्वर्थे
(उ) अयस्मयादीनिच्छन्दसि (ऋ) इनमें से कोई नहीं

57. ''यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम्'' यह सूत्र किस संज्ञा का विधान करता है–
(अ) सम्बुद्धि संज्ञा (इ) अङ्गसंज्ञा
(उ) अवसान संज्ञा (ऋ) 'भ' संज्ञा

58. 'अभ्यास' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) पूर्वोभ्यासः (इ) अभ्यासे चर्च
(उ) अभ्यासाच्च (ऋ) अभ्यासस्यासवर्णे

59. 'ऋ' और 'लृ' वर्णो की परस्पर 'सवर्ण संज्ञा' करने वाला वार्तिक है–
(अ) ऋवर्णान्निस्य णत्वं वाच्यम्
(इ) ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्
(उ) ऋते च तृतीया समासे
(ऋ) उपर्युक्त सभी

60. स्वरों (अचों) और व्यञ्जनों (हलों) की परस्पर ''सवर्ण संज्ञा'' का निषेध करने वाला सूत्र है–
(अ) नादिचि (इ) नश्छव्यप्रशान्
(उ) नश्च (ऋ) नाज्झलौ

61. 'घि' संज्ञा करने वाला सूत्र नहीं है–
(अ) शेषोघ्यसखि (इ) पतिः समास एव
(उ) षष्ठी युक्तश्छन्दसि वा (ऋ)घेर्ङिति

62. ''धातुसंज्ञा'' करने वाला सूत्र है–
(अ) भूवादयो धातवः (इ) सनाद्यन्ता धातवः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

63. 'अवसान' संज्ञा करने वाला सूत्र है–
(अ) विरामोऽवसानम् (इ) अवयवे च
(उ) आ सर्वनाम्नः (ऋ) खरवसानयोर्विसर्जनीयः

64. 'सर्वनामस्थान' करने वाला सूत्र है–
(अ) शि सर्वनामस्थानम् (इ) सुडनपुंसकस्य
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) केवल 'अ'

65. 'घ' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) घेर्ङिति (इ) द्वन्द्वे घि
(उ) घि च (ऋ) तरप्तमपौ घः

66. 'सार्वधातुक' संज्ञा का विधान किस सूत्र से होता है–
(अ) तिङ्शित्सार्वधातुकम् (इ) सार्वधातुकार्धधातुकयोः
(उ) सार्वधातुके यक् (ऋ) सार्वधातुकमपित्

67. 'आर्धधातुक' संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) सार्वधातुकार्द्धधातुकयोः (इ)आर्धधातुकं शेषः
(उ) आर्धधातुके (ऋ) आर्द्धधातुकस्येड् वलादेः

68. 'अव्यय' संज्ञा करने वाला सूत्र है–
(अ) स्वरादिनिपातमव्ययम् (इ) अव्ययादाप्सुपः
(उ) अव्ययात्त्यप् (ऋ) उपर्युक्त सभी

69. 'प्रत्याहार' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) आदिरन्त्येन सहेता (इ) प्रत्ययः
(उ) प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् (ऋ) सभी

70. 'गुरु' संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) संयोगे गुरु (इ) दीर्घं च
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

71. 'लघु' संज्ञा का विधान करता है–
(अ) ह्रस्वं लघु (इ) ह्रस्वः
(उ) अतो हलादेर्लघोः (ऋ) उपर्युक्त सभी

72. 'नदी' संज्ञा का निषेधक सूत्र है–
(अ) यू स्त्र्याख्यौ नदी (इ) ङिति ह्रस्वश्च
(उ) वाऽऽमि (ऋ) नेयङुवङ्स्थानावस्त्री

73. 'सुप्' और 'तिङ्' की ''विभक्ति संज्ञा'' करने वाला सूत्र है–
(अ) विभक्तिश्च (इ) न विभक्तौ तुस्माः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

54. (अ), 55. (इ), 56. (ऋ), 57. (इ) 58. (अ), 59. (इ), 60. (ऋ), 61. (ऋ), 62.(उ) 63. (अ), 64. (उ), 65. (ऋ), 66. (अ), 67.(इ), 68. (अ), 69. (अ), 70. (उ), 71. (अ),72. (ऋ), 73. (अ)

74. ''एकवचनं सम्बुद्धिः''– इस सूत्र से सम्बोधन में एकवचन की क्या संज्ञा होगी–
(अ) विभक्ति संज्ञा (इ) अव्यय संज्ञा
(उ) सम्बुद्धिसंज्ञा (ऋ) प्लुतसंज्ञा

75. स्वरों की ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत संज्ञा करने वाला सूत्र है–
(अ) ऊकालोऽज्झस्वदीर्घप्लुतः (इ) दीर्घं च
(उ) ह्रस्वः (ऋ) वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः

76. ''उच्चैरुदात्तः'' इस सूत्र से कण्ठ, तालु आदि उच्चारणस्थानों के ऊपरी भाग से उच्चरित 'अच्' की क्या संज्ञा होगी–
(अ) उदात्त संज्ञा (इ) अनुदात्त संज्ञा
(उ) स्वरित संज्ञा (ऋ) सभी

77. ''अनुदात्तसंज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) अनुदात्तङित आत्मनेपदम्
(इ) नीचैरनुदात्तः
(उ) अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम्
(ऋ) अनुदात्तं पदमेकवर्जम्

78. 'स्वरितसंज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले
(इ) समाहारः स्वरितः
(उ) उपर्युक्त दोनों
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

79. ''अल्पाक्षरमसान्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम् अस्तोभमनवद्यं च''– यह किसका लक्षण है–
(अ) वार्तिक का (इ) सूत्र का
(उ) भाष्य का (ऋ) उपर्युक्त सभी का

80. ''इत् संज्ञा' करने वाला सूत्र है–
(अ) ''षः प्रत्ययस्य' और ''चुटू''
(इ) ''हलन्त्यम्'' और ''लशक्वतद्धिते''
(उ) ''आदिर्ञिटुडवः'' ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्''
(ऋ) उपर्युक्त सभी

81. 'इत्संज्ञा' का निषेध करने वाला सूत्र है–
(अ) न विभक्तौ तुस्माः (इ) विभक्तिश्च
(उ) नश्च (ऋ) उपदेशेऽजनुनासिक इत्

82. 'माहेश्वराणि' इस पद में प्रत्यय है–
(अ) अण् (इ) इण्
(उ) ठक् (ऋ) ण्वुल्

83. ''आदिरन्त्येन सहेता'' इस सूत्र से किस संज्ञा का विधान किया जाता है–
(अ) उपधा (इ) प्रत्याहार संज्ञा
(उ) नदी (ऋ) टि

84. 'प्रत्याहार' कितने होते हैं–
(अ) 40 (इ) 41
(उ) 42-43 (ऋ) 45

85. 'श्री' शब्द की षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में कौन संज्ञा विकल्प से होती है–
(अ) घि (इ) नदी
(उ) पद (ऋ) प्रातिपदिक

86. 'भूपति' शब्द की 'घि' संज्ञा विधायक सूत्र क्या है–
(अ) शेषोघ्यसखि (इ) पतिः समास एव
(उ) घेर्ङिति (ऋ) अच्च घेः

87. समास में 'पति' शब्द की कौन संज्ञा होती है–
(अ) नदी (इ) भ
(उ) घ (ऋ) घि

88. 'पति' शब्द की 'घि' संज्ञा नहीं होगी क्योंकि–
(अ) यह इकारान्त है
(इ) यह समासयुक्त नहीं है
(उ) यह पुंलिङ्ग वाचक है
(ऋ) यह 'सखि' शब्द से भिन्न है

89. 'प्रत्याहार' संज्ञा करने वाले सूत्र कितने हैं–
(अ) 1 (इ) 3
(उ) 2 (ऋ) 4

90. इनमें से कौन 'पदसंज्ञा' विधायक (करने वाला) सूत्र है–
(अ) 'सुप्तिङन्तं पदम्'
(इ) 'सिति च' एवं 'नः क्ये'
(उ) 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने'
(ऋ) उपर्युक्त सभी

74.(उ), 75.(अ), 76.(अ), 77.(इ), 78.(इ), 79.(इ), 80.(ऋ), 81.(अ), 82.(अ), 83.(इ), 84.(उ), 85.(इ), 86.(इ), 87.(ऋ), 88.(इ), 89.(अ), 90.(ऋ)

91. ''भवत् + छ = भवदीयः'' में 'भवत्' शब्द की किस सूत्र से 'पद' संज्ञा होती है ?
(अ) सुप्तिङन्तं पदम् (इ) नः क्ये
(उ) सिति च (ऋ) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने

92. 'राजभ्याम्' में 'राजन्' की कौन संज्ञा होती है–
(अ) प्रातिपदिक (इ) भ
(उ) घि (ऋ) सर्वनामस्थान

93. अष्टाध्यायी में 'सर्वनामस्थान' संज्ञा विधायक (करने वाले) सूत्र कितने हैं–
(अ) 1 (इ) 2
(उ) 3 (ऋ) 4

94. 'सर्वनामस्थान' संज्ञा करने वाला सूत्र कौन है–
(अ) पथिमथोः सर्वनामस्थाने
(इ) सुडनपुंसकस्य
(उ) उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः
(ऋ) इतोऽत् सर्वनामस्थाने

95. 'स्वप् + क्त = सुप्तः' यहाँ 'स्वप्' धातु में कौन विधि हुई है–
(अ) संयोग (इ) सम्प्रसारण
(उ) संहिता (ऋ) लोप

96. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द की कौन संज्ञा होती है–
(अ) घि (इ) नदी
(उ) लघु (ऋ) वृद्धि

97. 'मुनि' शब्द की पाणिनिप्रदत्त संज्ञा क्या होगी–
(अ) घि (इ) नदी
(उ) इत् (ऋ) टि

98. 'वधू' शब्द की पाणिनिप्रदत्त संज्ञा क्या होगी–
(अ) अपृक्त (इ) तद्धित
(उ) नदी (ऋ) गुण

99. धात्वादि में अन्त्यवर्ण से पूर्व वर्ण की संज्ञा क्या होगी–
(अ) अपृक्त (इ) टि
(उ) उपधा (ऋ) निष्ठा

100. पुंलिङ्ग एवं स्त्रीलिङ्ग में सु, औ, जस्, अम् एवं औट् इन विभक्तियों की संज्ञा क्या होगी–
(अ) सर्वनामस्थान (इ) सर्वनाम
(उ) संयोग (ऋ) संहिता

101. 'राजन् + अम्' – यहाँ 'अम्' की क्या संज्ञा होगी–
(अ) निष्ठा (इ) तद्धित
(उ) सर्वनामस्थान (ऋ) सर्वनाम

102. प्रातिपदिक से किन प्रत्ययों का विधान किया जाता है–
(अ) तिङ् (इ) कृत्
(उ) सुप् (ऋ) तद्धित

103. मूलधातु से क्रियापद बनाने हेतु किन प्रत्ययों का विधान होता है–
(अ) कृत् (इ) तिङ्
(उ) सुप् (ऋ) तद्धित

104. किन वर्णों की 'उदात्त-अनुदात्त-स्वरित संज्ञा' होती है–
(अ) स्वरवर्णों की (इ) व्यञ्जनवर्णों की
(उ) दोनों की (ऋ) केवल संयुक्त वर्णों की

105. 'अ, इ, उ, ऋ'– इन प्रत्येक वर्णों के कितने भेद होते हैं–
(अ) सत्रह (इ) चौदह
(उ) अठारह (ऋ) नव

106. 'ए, ओ, ऐ, औ'– इनमें से प्रत्येक वर्ण कितने प्रकार का होता है–
(अ) अठारह (इ) चौदह
(उ) अडतालिस (ऋ) बारह

107. ''तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्'' इस सूत्र से कौन सी संज्ञा होगी–
(अ) पद संज्ञा (इ) प्रयत्न संज्ञा
(उ) सवर्ण संज्ञा (ऋ) संहिता संज्ञा

108. अ, आ, क वर्ग, ह, विसर्ग- इन वर्णों का उच्चारणस्थान है –
(अ) तालु (इ) दन्त
(उ) कण्ठ (ऋ) ओष्ठ

91. (उ), 92.(अ), 93. (इ), 94. (इ), 95. (इ), 96. (इ), 97. (अ), 98. (उ), 99. (उ), 100. (अ), 101. (उ), 102. (उ), 103. (इ), 104. (अ), 105. (उ), 106. (ऋ), 107. (उ), 108. (उ)

109. ऋ, ॠ, ट वर्ग, र, ष– इन वर्णों का उच्चारणस्थान है–

(अ) कण्ठ (इ) मूर्धा
(उ) दन्त (ऋ) ओष्ठ

110. ऌ, तवर्ग, ल, स– इन वर्णों का उच्चारणस्थान है–

(अ) कण्ठ (इ) मूर्धा
(उ) तालु (ऋ) दन्त

111. उ, ऊ, प वर्ग, ᳶप, ᳶफ उपध्मानीय– इन वर्णों का उच्चारण स्थान है–

(अ) ओष्ठ (इ) तालु
(उ) मूर्धा (ऋ) कण्ठ

112. ओ, औ– इन वर्णों का उच्चारणस्थान है–

(अ) कण्ठतालु (इ) कण्ठ-नासिका
(उ) कण्ठौष्ठम् (ऋ) कण्ठ-मूर्धा

113. ए, ऐ- इन वर्णों का उच्चारणस्थान होगा–

(अ) कण्ठ तालु (इ) कण्ठोष्ठम्
(उ) कण्ठ-मूर्धा (ऋ) कण्ठ-दन्त

114. ञ म ङ ण न– इन वर्णों का एक विशेष उच्चारणस्थान भी माना जाता है–

(अ) तालु (इ) कण्ठ
(उ) मूर्धा (ऋ) नासिका

115. ᳵक ᳵख– इन जिह्वामूलीय वर्णों का उच्चारणस्थान माना जाता है–

(अ) जिह्वामूलम् (इ) तालु
(उ) कण्ठ-तालु (ऋ) कण्ठतालु

116. पाणिनीय शिक्षा के अनुसार उच्चारणस्थान कितने होते हैं–

(अ) 7 (इ) 8
(उ) 6 (ऋ) 5

117. प्रयत्न कितने प्रकार का होता है–

(अ) 4 (इ) 8
(उ) 7 (ऋ) 2

118. आभ्यन्तर प्रयत्न कितने प्रकार का होता है–

(अ) 6 (इ) 5
(उ) 7 (ऋ) 4

119. बाह्यप्रयत्न कितने प्रकार का होता है–

(अ) 11 (इ) 14
(उ) 18 (ऋ) 15

120. आभ्यन्तर प्रयत्न का भेद नहीं है–

(अ) स्पृष्ट (इ) विवृत
(उ) संवृत (ऋ) संवार

121. बाह्य प्रयत्न का भेद नहीं है–

(अ) विवार, संवार, श्वास, नाद
(इ) घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण
(उ) उदात्त, अनुदात्त, स्वरित
(ऋ) स्पृष्ट, विवृत, संवृत

122. ''क से म'' तक के वर्णों को कहते हैं–

(अ) अन्तःस्थवर्ण (इ) ऊष्मवर्ण
(उ) स्पर्श वर्ण (ऋ) स्वर वर्ण

123. ''अन्तःस्थ वर्ण'' कहे जाते हैं–

(अ) श् ष् स् ह् (इ) य् व् र् ल्
(उ) ञ् म् ङ् ण् न् (ऋ) अ इ उ ऋ ऌ

124. ''ऊष्मवर्ण'' कहते हैं–

(अ) ए, ओ, ऐ, औ (इ) ज् ब् ग् ड् द्
(उ) श् ष् स् ह् (ऋ) य् व् र् ल्

125. वर्गों के द्वितीय चतुर्थ एवं शल् प्रत्याहार के वर्ण कहे जाते हैं–

(अ) अन्तस्थ वर्ण (इ) स्पर्श वर्ण
(उ) अल्पप्राण (ऋ) महाप्राण

126. वर्गों के प्रथम, तृतीय, पञ्चम एवं यण् प्रत्याहार के वर्ण कहे जाते हैं–

(अ) महाप्राण (इ) अल्पप्राण
(उ) उदात्त (ऋ) अनुदात्त

127. 'खर्' प्रत्याहार के वर्णों का बाह्य प्रयत्न होगा–

(अ) विवार श्वास अघोष (इ) संवार नाद घोष
(उ) विवार संवार घोष (ऋ) नाद, अघोष, विवार

128. 'हश्' प्रत्याहार के वर्णों का बाह्य प्रयत्न होगा–

(अ) विवार अघोष घोष (इ) संवार नाद घोष
(उ) विवार श्वास अघोष (ऋ) नाद, अघोष, विवार

109. (इ), 110. (ऋ), 111. (अ), 112. (उ), 113. (अ), 114. (ऋ), 115. (अ), 116. (इ), 117. (ऋ), 118. (इ),
119. (अ), 120. (ऋ), 121. (ऋ), 122. (उ), 123. (इ), 124. (उ), 125. (ऋ), 126. (इ), 127. (अ), 128. (इ)

129. 'हलन्त्यम्' सूत्र के अर्थ को पूरा करने के लिए किन पदों की अनुवृत्ति आती है–
(अ) उपदेशे (इ) इत्
(उ) दोनों की (ऋ) इनमें से कोई नहीं

130. 'लोपसंज्ञा' विधायक संज्ञा सूत्र है–
(अ) तस्य लोपः (इ) अदर्शनं लोपः
(उ) हलन्त्यम् (ऋ) आदिरन्त्येन सहेता

131. 'अइउण्, ऋलृक्' इत्यादि सूत्रों में 'ण्, क्, ङ्' इत्यादि हल् वर्णों की इत्संज्ञा किस सूत्र से होगी–
(अ) उपदेशेऽजनुनासिक इत्
(इ) अदर्शनं लोपः
(उ) हलन्त्यम्
(ऋ) तस्य लोपः

132. इत्संज्ञक वर्णों का लोप करने वाला विधिसूत्र है–
(अ) अदर्शनं लोपः (इ) तस्य लोपः
(उ) न वेति विभाषा (ऋ) हलन्त्यम्

133. 'अइउण्' आदि चौदह सूत्रों के अन्त्य में जो 'ण्' आदि वर्ण लगे हुए हैं, उनका क्या प्रयोजन है–
(अ) उच्चारणार्थ (इ) दर्शनार्थ
(उ) गणनार्थ (ऋ) प्रत्याहारनिर्माणार्थ

134. अच् प्रत्याहारस्थ वर्ण (स्वर वर्ण) कितने सूत्रों में कहे गए हैं–
(अ) 6 (इ) 14
(उ) 4 (ऋ) 5

135. हल् प्रत्याहारस्थ वर्ण (व्यञ्जन वर्ण) कितने सूत्रों में कहे गए हैं–
(अ) 10 (इ) 14
(उ) 11 (ऋ) 12

136. 'ञम्' (उणादिसूत्र में प्रयुक्त) प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण आते हैं–
(अ) वर्गों के प्रथम द्वितीय वर्ण
(इ) वर्गों के तृतीय चतुर्थ वर्ण
(उ) वर्गों के सभी पाँचवे वर्ण
(ऋ) ञ म च ट त

137. 'झष्' प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) वर्गों के चतुर्थ वर्ण (इ) वर्गों के तृतीय वर्ण
(उ) वर्गों के प्रथम वर्ण (ऋ) वर्गों के द्वितीय वर्ण

138. 'जश्' प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण आते हैं–
(अ) वर्गों के प्रथम वर्ण (इ) वर्गों के द्वितीय वर्ण
(उ) वर्गों के तृतीय वर्ण (ऋ) वर्गों के चतुर्थ वर्ण

139. वर्गों के दूसरे एवं पहले वर्ण किस प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) छव् (इ) झर्
(उ) खर् (ऋ) खय्

140. दीर्घ संज्ञक स्वर होते हैं–
(अ) एकमात्रिक (इ) द्विमात्रिक
(उ) त्रिमात्रिक (ऋ) इनमें से कोई नहीं

141. ह्रस्वसंज्ञक स्वरों की कितनी मात्रा होती है–
(अ) एकमात्रा (इ) द्विमात्रा
(उ) त्रिमात्रा (ऋ) अर्धमात्रा

142. प्लुतसंज्ञक स्वर होते हैं–
(अ) एकमात्रिक (इ) द्विमात्रिक
(उ) त्रिमात्रिक (ऋ) अर्धमात्रिक

143. व्यञ्जन (हल्) वर्णों की मात्रा होती है–
(अ) एकमात्रा (इ) द्विमात्रा
(उ) त्रिमात्रा (ऋ) अर्धमात्रा

144. ''प्रगृह्यसंज्ञा'' विधायक सूत्र है–
(अ) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्
(इ) अदसो मात्
(उ) ''निपात एकाजनाङ्'' तथा ''ओत्''
(ऋ) उपर्युक्त सभी

145. अ इ उ ऋ लृ– इन पाँच स्वरों को माना जाता है–
(अ) मूल स्वर (इ) ह्रस्व स्वर
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) संयुक्त स्वर

146. दीर्घ स्वर नहीं है–
(अ) आ, ई, ऊ (इ) ॠ, ए, ऐ
(उ) ओ, औ (ऋ) अ, इ, लृ

129. (उ), 130. (इ), 131. (उ), 132. (इ), 133. (ऋ), 134. (उ)135. (अ), 136. (उ), 137. (अ), 138. (उ)139. (ऋ), 140. (इ), 141. (अ), 142. (उ)143. (ऋ), 144. (ऋ), 145. (उ), 146. (ऋ)

147. ''ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः'' यह सूत्र किस संज्ञा का विधान करता है–

(अ) प्रत्याहार संज्ञा (इ) इत्संज्ञा
(उ) ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत संज्ञा (ऋ) लोप संज्ञा

148. उदात्तसंज्ञा विधायक ''उच्चैरुदात्तः'' सूत्र किस कोटि का सूत्र है–

(अ) संज्ञा सूत्र (इ) परिभाषा सूत्र
(उ) विधि सूत्र (ऋ) नियम सूत्र

149. 'अनुदात्त संज्ञा' करने वाला संज्ञासूत्र है–

(अ) उच्चैरुदात्तः (इ) नीचैरनुदात्तः
(उ) समाहारः स्वरितः (ऋ) अदर्शनं लोपः

150. ''समाहारः स्वरितः'' सूत्र से होती है–

(अ) उदात्त संज्ञा (इ) स्वरित संज्ञा
(उ) अनुदात्त संज्ञा (ऋ) समाहार संज्ञा

151. मुख और नासिका से एक साथ उच्चरित होने वाले वर्ण कहे जाते हैं–

(अ) अननुनासिक (इ) अनुनासिक
(उ) निरनुनासिक (ऋ) नासिक

152. किस स्वर वर्ण का दीर्घ नही होता–

(अ) ऋ (इ) लृ
(उ) अ (ऋ) उ

153. निम्न में कौन ह्रस्व स्वर हैं–

(अ) ए, ओ (इ) ऐ, औ
(उ) आ, ई (ऋ) ऋ, लृ

154. कण्ठ, तालु आदि उच्चारणस्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न जिन वर्णों का समान हो, वे आपस में होते हैं–

(अ) सवर्णी (इ) सवर्णसंज्ञक
(उ) सावर्ण्य (ऋ) उपर्युक्त सभी

155. 'सवर्णसंज्ञक' वर्ण नहीं हैं–

(अ) ऋ, लृ (इ) क् च्
(उ) क् घ् (ऋ) ज् झ्

156. ''ए, ऐ तथा ओ औ'' की आपस में सवर्ण संज्ञा कब होती है–

(अ) सर्वदा (इ) कभी नहीं
(उ) सन्धि में (ऋ) यदा-कदा

157. क से म तक स्पर्शवर्णों का आभ्यन्तर प्रयत्न होगा–

(अ) स्पृष्ट प्रयत्न (इ) ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न
(उ) विवृत प्रयत्न (ऋ) संवृत प्रयत्न

158. ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न होता है–

(अ) स्वरों का
(इ) श् ष् स् ह् ऊष्म वर्णों का
(उ) हल् वर्णों का
(ऋ) य् व् र् ल् अन्तःस्थ वर्णों का

159. स्वर वर्णों का प्रयत्न है–

(अ) विवृत (इ) ईषत्विवृत
(उ) संवृत (ऋ) स्पृष्ट

160. ईषत्विवृत प्रयत्न माना जाता है–

(अ) श् ष् स् ह् (शल्) (इ) य् व् र् ल् (यण्)
(उ) स्वरों का (अच्) (ऋ) इनमें से कोई नही

161. प्रक्रियावस्था (प्रयोगसिद्धि) में ह्रस्व अकार का प्रयत्न माना जाता है–

(अ) विवृत (इ) संवृत
(उ) स्पृष्ट (ऋ) ईषत्विवृत

162. प्रयोग अवस्था अर्थात् उच्चारणावस्था में संवृत प्रयत्न माना जाता है–

(अ) इ (इ) अ
(उ) ए (ऋ) ओ

163. ''जिह्वामूलीय'' वर्ण माने जाते हैं–

(अ) ×प ×फ (इ) अं अः
(उ) ×क ×ख (ऋ) ×क ×प

164. व्याकरणशास्त्र में ''उपध्मानीय'' वर्ण हैं–

(अ) ×क ×ख (इ) ×प ×फ
(उ) ×कु ×चु (ऋ) अं अः

165. ''कु चु टु तु पु'' की संज्ञा है–

(अ) घि (इ) नदी
(उ) उपधा (ऋ) उदित्

147. (उ), 148. (अ), 149. (इ), 150. (इ) 151. (इ), 152. (इ), 153. (ऋ), 154. (ऋ) 155. (इ), 156. (इ), 157. (अ), 158. (ऋ), 159. (अ), 160. (अ), 161. (अ), 162. (इ), 163. (उ), 164. (इ), 165. (ऋ)

166. ''अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः'' यह सूत्र बोध कराता है–
(अ) अपने सवर्णियों का
(इ) केवल ह्रस्व वर्णों का
(उ) केवल अ, इ, उ वर्णों का
(ऋ) केवल प्रत्ययों का

167. ''अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः'' इस पद में 'अण्' प्रत्याहारस्थ 'ण्' किससे सम्बद्ध है–
(अ) अइउण् के ण् से (पूर्व णकार)
(इ) लण् के ण् से (पर णकार)
(उ) यण् के ण् से
(ऋ) इनमें से कोई नही

168. ''हलोऽनन्तराः संयोगः'' सूत्र किस संज्ञा का विधान करता है–
(अ) पद संज्ञा (इ) संहिता संज्ञा
(उ) संयोग संज्ञा (ऋ) सवर्ण संज्ञा

169. व्याकरणशास्त्र में सूत्र कितने प्रकार के होते हैं–
(अ) 6 (इ) 14
(उ) 42 (ऋ) 5

170. ''स्थानेऽन्तरतमः'' सूत्र किस प्रकार का है–
(अ) संज्ञा सूत्र (इ) परिभाषा सूत्र
(उ) विधिसूत्र (ऋ) नियम सूत्र

171. ''इको यणचि'' सूत्र है–
(अ) संज्ञा सूत्र (इ) अतिदेश सूत्र
(उ) अधिकार सूत्र (ऋ) विधि सूत्र

172. ''पतिः समास एव'' किस कोटि का सूत्र है–
(अ) विधि सूत्र (इ) नियम सूत्र
(उ) अतिदेश सूत्र (ऋ) अधिकार सूत्र

173. ''अन्तादिवच्च'' सूत्र किस प्रकार का है–
(अ) संज्ञा सूत्र (इ) परिभाषा सूत्र
(उ) विधि सूत्र (ऋ) अतिदेश सूत्र

174. ''कारके''– यह सूत्र है–
(अ) अधिकार सूत्र (इ) विधि सूत्र
(उ) नियम सूत्र (ऋ) परिभाषा सूत्र

175. 'अहो ईशाः'– यहाँ 'अहो' इस पद की किस सूत्र से ''प्रगृह्यसंज्ञा'' हो गयी–
(अ) निपात एकाजनाङ् (इ) ओत्
(उ) अदसो मात् (ऋ) इदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्

176. ''सुप्तिङन्तं पदम्'' पद संज्ञा करने वाला यह सूत्र है–
(अ) विधिसूत्र (इ) नियम सूत्र
(उ) संज्ञा सूत्र (ऋ) अधिकार सूत्र

177. ''अदर्शनं लोपः'' इस सूत्र में 'अदर्शन' पद का व्याकरणिक अर्थ है–
(अ) नष्ट होना
(इ) अश्रवण (न सुनायी पड़े, न दिखायी पड़े)
(उ) उड़ जाना
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

178. ऋ और लृ वर्ण के परस्पर कुल कितने भेद माने गए हैं–
(अ) 18 (इ) 12
(उ) 30 (ऋ) 14

179. 'लण्' सूत्रस्थ लकारोत्तरवर्ती 'अकार' की किस सूत्र से इत्संज्ञा होती है–
(अ) हलन्त्यम्
(इ) तस्य लोपः
(उ) उपदेशेऽजनुनासिक इत्
(ऋ) उरण् रपरः

180. अ, इ, उ– इन प्रत्येक वर्णों के भेद माने गए हैं–
(अ) 19 (इ) 18
(उ) 17 (ऋ) 54

181. संज्ञाप्रकरण के सभी सूत्र अष्टाध्यायी के किस अध्याय के हैं–
(अ) प्रथम (इ) द्वितीय
(उ) तृतीय (ऋ) चतुर्थ

182. व्याकरण के त्रिमुनि के अन्तर्गत नहीं गिने जाते हैं–
(अ) पाणिनि (इ) कात्यायन
(उ) पतञ्जलि (ऋ) भट्टोजिदीक्षित

166. (अ), 167. (इ), 168. (उ), 169. (अ), 170. (इ) 171. (ऋ), 172. (इ), 173. (ऋ), 174. (अ) 175. (इ), 176. (उ), 177. (इ), 178. (उ) 179. (उ), 180. (इ), 181. (अ), 182. (ऋ)

183. पाणिनीय अष्टाध्यायी में लगभग कितने सूत्र हैं–
(अ) 4000 (इ) 5000
(उ) 7000 (ऋ) 9000

184. ''सुबन्त और तिङन्त'' को कहते हैं–
(अ) संयोग (इ) आगम
(उ) संहिता (ऋ) पद

185. सन्धि करने के पहले कौन-सी संज्ञा होती है–
(अ) पदसंज्ञा (इ) संयोगसंज्ञा
(उ) संहिता संज्ञा (ऋ) उपधा संज्ञा

186. ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' यह सूत्र किन वर्णों की इत्संज्ञा करता है–
(अ) हल् वर्णों की
(इ) अच् वर्णों की
(उ) संयुक्त वर्णों की
(ऋ) अनुस्वार युक्त वर्णों की

187. माहेश्वर सूत्रों में कौन सा वर्ण दो बार आया है–
(अ) अ (इ) क
(उ) ह (ऋ) ल

188. य् व् ल् – के कितने भेद हैं–
(अ) 5 (इ) 2
(उ) 3 (ऋ) केवल एक

189. माहेश्वर सूत्रों में कौन सा ''इत्संज्ञकवर्ण'' दो बार पठित है –
(अ) ङ् (इ) ण्
(उ) क् (ऋ) च्

190. इनमें से किसकी परस्पर ''सवर्ण संज्ञा'' नहीं होती–
(अ) अ-आ (इ) उ ऊ
(उ) ऋ-ऌ (ऋ) ए-ऐ

191. इनमें से किसकी परस्पर सवर्ण संज्ञा पाणिनीय व्याकरण को अभीष्ट नहीं है–
(अ) इ - ई (इ) ऋ - ॠ
(उ) ऋ - ऌ (ऋ) ओ – औ

192. इनमें से किसकी परस्पर सवर्णसंज्ञा होती है–
(अ) ए - ऐ (इ) ओ - औ
(उ) ऋ - ऌ (ऋ) अ - इ

193. माहेश्वर सूत्र में मूल स्वरवर्ण कितने हैं–
(अ) 6 (इ) 5
(उ) 9 (ऋ) 14

194. किस माहेश्वर सूत्र का अकार उच्चारणमात्र न होकर 'इत्संज्ञक' है ?
(अ) हयवरट् (इ) लण्
(उ) झभञ् (ऋ) घढधष्

195. ''लण्'' सूत्रस्थ अकार की इत्संज्ञा स्वीकार करने का प्रयोजन क्या है–
(अ) 'अण्' प्रत्याहार का निर्माण
(इ) 'र' प्रत्याहार का निर्माण
(उ) 'लण्' सूत्र का वैशिष्ट्यप्रतिपादन
(ऋ) स्वरों से भिन्नता प्रतिपादन

196. ''र'' प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन से दो वर्ण आते हैं–
(अ) ल् अ (इ) इ र्
(उ) र् ल् (ऋ) य् र्

197. सभी स्वरों और व्यञ्जनों का बोध कराने वाला प्रत्याहार है–
(अ) अच् (इ) हल्
(उ) झष् (ऋ) अल्

198. 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) सभी व्यञ्जन (इ) सभी दीर्घ स्वर
(उ) सभी स्वर (ऋ) केवल ह्रस्व स्वर

199. 'हल्' प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण आते हैं–
(अ) सभी स्वर और व्यञ्जन वर्ण
(इ) केवल स्वर वर्ण
(उ) सभी व्यञ्जन वर्ण
(ऋ) व्यञ्जन वर्णों के पञ्चमाक्षर

200. वर्णों के पञ्चमाक्षरों को कहा जाता है–
(अ) निरनुनासिक (इ) अननुनासिक
(उ) अनुनासिक (ऋ) मुखनासिक

183. (अ), 184. (ऋ), 185. (उ), 186. (इ) 187. (उ), 188. (इ), 189. (इ), 190. (ऋ) 191. (ऋ), 192. (उ), 193. (इ), 194. (इ) 195. (इ), 196. (उ), 197. (ऋ), 198. (उ) 199. (उ), 200. (उ),

201. माहेश्वर सूत्रों में 'हकार' का दो बार ग्रहण क्यों किया गया है–
(अ) ''अट्'' और ''शल्'' प्रत्याहार में 'ह' को शामिल करने के लिए
(इ) ''अर्हेण'' प्रयोग की सिद्धि
(उ) ''अधुक्षत'' प्रयोग की सिद्धि
(ऋ) उपर्युक्त सभी

202. किसको 'आदिवैयाकरण' माना जाता है–
(अ) इन्द्र (इ) बृहस्पति
(उ) वायु (ऋ) शिव

203. वृद्धिसंज्ञक वर्ण नहीं है–
(अ) आ (इ) ऐ
(उ) औ (ऋ) अर्

204. गुणसंज्ञक वर्ण नहीं है–
(अ) अ (इ) ए
(उ) ओ (ऋ) आर्

205. 'इ, ई, च वर्ग, य, श' – इन वर्णों का उच्चारण स्थान है–
(अ) तालु (इ) मूर्धा
(उ) कण्ठ (ऋ) ओष्ठ

206. ''उपधासंज्ञा'' होती है–
(अ) पदों के अन्तिम वर्ण की
(इ) पदों के आदि वर्ण की
(उ) स्वर सहित अन्तिम व्यञ्जन की
(ऋ) अन्तिम वर्ण से पूर्व वर्ण की

207. प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होती है–
(अ) धातु (इ) अधातु
(उ) अर्थवद् (ऋ) अप्रत्यय

208. प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होती है–
(अ) कृत (इ) तद्धित
(उ) समास (ऋ) ण्यन्त

209. 'सुप्'- प्रत्यय नहीं जोड़े जाते हैं–
(अ) समासान्त से (इ) तद्धित से
(उ) प्रातिपदिक से (ऋ) ण्यन्त से

210. सुप् प्रत्ययों की संख्या है–
(अ) 9 (इ) 18
(उ) 21 (ऋ) 24

211. तिङ् प्रत्ययों की संख्या होती है–
(अ) 9 (इ) 18
(उ) 27 (ऋ) 90

212. 'सर्वनामस्थान' कितने प्रत्यय कहलाते है–
(अ) 5 (इ) 6
(उ) 9 (ऋ) 21

213. 'घ' संज्ञा किन प्रत्ययों की होती है–
(अ) तरप् - तमप् (इ) सन् - यङ्
(उ) क्त - क्तवतु (ऋ) शतृ - शानच्

214. ''विभाषा'' का क्या अभिप्राय है–
(अ) परिभाषा (इ) संशय
(उ) निश्चय (ऋ) विकल्प

215. 'निष्ठा' संज्ञा किन प्रत्ययों की होती है–
(अ) अनीयर्-तव्यत् (इ) शतृ-शानच्
(उ) क्त-क्तवतु (ऋ) क्त्वा-ल्यप्

216. किसकी ''प्रगृह्यसंज्ञा'' नहीं होती है–
(अ) ईकारान्त द्विवचन (इ) ऊकारान्त द्विवचन
(उ) एकारान्त द्विवचन (ऋ) ओकारान्त द्विवचन

217. ''सार्वधातुक संज्ञा'' होती है–
(अ) तिङ् - शित् (इ) तिङ् - सुप्
(उ) तिङ् - तद्धित (ऋ) तिङ् - कृत्

218. ''अनुनासिक वर्णों'' का उच्चारणस्थान है–
(अ) कण्ठ (इ) ओष्ठ
(उ) दन्त (ऋ) मुखनासिका

219. वर्गों के कौन से वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं–
(अ) प्रथम (इ) द्वितीय
(उ) तृतीय (ऋ) पञ्चम

220. ''अपृक्त संज्ञा'' किस वर्ण की होती है–
(अ) प्रत्यय से शेष बचे एक स्वर या व्यञ्जन की
(इ) प्रत्यय से शेष बचे दो व्यञ्जनों की
(उ) प्रत्यय से शेष बचे दो स्वरों की
(ऋ) संयुक्त स्वर व्यञ्जन की

201.(ऋ), 202.(ऋ) 203.(ऋ), 204.(ऋ), 205.(अ), 206.(ऋ) 207.(अ), 208.(ऋ), 209.(ऋ), 210.(उ)
211.(इ), 212.(अ), 213.(अ), 214.(ऋ) 215.(उ), 216.(ऋ), 217.(अ), 218.(ऋ) 219.(ऋ), 220.(अ),

221. किस वैयाकरण के बनाये नियम वार्तिक कहलाते हैं–
(अ) पाणिनि (इ) वरदराज
(उ) भट्टोजिदीक्षित (ऋ) कात्यायन

222. ''उत्सर्ग'' किसे कहते हैं–
(अ) विशेष नियम (इ) साधारण नियम
(उ) वैकल्पिक नियम (ऋ) इनमें से कोई नहीं

223. 'ष' वर्ण को कहते हैं–
(अ) मूर्धन्य (इ) तालव्य
(उ) दन्त्य (ऋ) इनमें से कोई नहीं

224. दन्त्यवर्ण हैं–
(अ) ऋटुरष् (इ) इचुयश्
(उ) उपूपध्मानीय (ऋ) लृतुलस्

225. व्याकरण में गतिसंज्ञक कहे जाते हैं–
(अ) नाम (इ) आख्यात
(उ) उपसर्ग (ऋ) निपात

226. संस्कृत में उपसर्गों की संख्या कितनी मानी जाती हैं–
(अ) 20 (इ) 22
(उ) 24 (ऋ) 25

227. व्याकरणशास्त्र में ''उपदेश'' कहा जाता है–
(अ) आद्योच्चारणम् (इ) मध्योच्चारणम्
(उ) सर्वोच्चारणम् (ऋ) अन्त्योच्चारणम्

228. ''तस्य लोपः'' सूत्र में किसके लोप की बात कही गयी है–
(अ) कित् (इ) ञित्
(उ) णित् (ऋ) इत्

229. अनुनासिक चिह्नयुक्त वर्ण हैं–
(अ) कं (इ) कँ
(उ) कः (ऋ) र्क

230. क्रमशः अनुस्वार - विसर्ग हैं–
(अ) अं अः (इ) अँ अं
(उ) अः अँ (ऋ) अः अं

231. निम्न में से किस वर्ण के 18 भेद नहीं है–
(अ) इ (इ) उ
(उ) ऋ (ऋ) लृ

232. 'उपसर्जन' संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्
(इ) उपसर्जनं पूर्वम्
(उ) उपाच्च
(ऋ) उपसर्या काल्या प्रजने

233. क्रिया के योग में 'प्र' आदि होते हैं–
(अ) गति संज्ञक (इ) उपसर्गसंज्ञक
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

234. क्रियावाचक 'भू' आदि की 'धातुसंज्ञा' किस सूत्र से होती है–
(अ) उपसर्गादृति धातौ (इ) भूवादयो धातवः
(उ) धातोः (ऋ) धात्वादेः षः सः

235. 'अदस्' शब्द के मकार से परे ईकार और 'ऊकार' की क्या संज्ञा होगी–
(अ) प्रगृह्यसंज्ञा (इ) प्लुतसंज्ञा
(उ) दीर्घ संज्ञा (ऋ) वृद्धिसंज्ञा

236. 'अमी ईशाः' – यहाँ 'अमी' की किस सूत्र से प्रगृह्यसंज्ञा होगी–
(अ) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् (इ) दूराद्धूते च
(उ) अदसो मात् (ऋ) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्

237. ''अदसो मात्'' इस सूत्र से किसकी प्रगृह्यसंज्ञा होती है–
(अ) अमू (इ) अमी
(उ) दोनों की (ऋ) इनमें से कोई नहीं

238. ''प्रादयः''– इस सूत्र से कौन-सी संज्ञा होती है–
(अ) प्रगृह्यसंज्ञा (इ) निपातसंज्ञा
(उ) प्लुतसंज्ञा (ऋ) इनमें से कोई नहीं

239. ''निपात एकाजनाङ्''– इस सूत्र से एक अच् वाले निपात की कौन-सी संज्ञा होती है–
(अ) प्रगृह्यसंज्ञा (इ) निपात संज्ञा
(उ) प्लुत संज्ञा (ऋ) दीर्घ संज्ञा

240. ''निपातसंज्ञा'' विधायक सूत्र है–
(अ) प्रादयः (इ) चादयोऽसत्त्वे
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

221. (ऋ), 222. (इ) 223. (अ), 224. (ऋ), 225. (उ), 226. (इ) 227. (अ), 228. (ऋ), 229. (इ), 230. (अ)
231. (ऋ), 232. (अ), 233. (उ), 234. (इ) 235. (अ), 236. (उ), 237. (उ), 238. (इ) 239. (अ), 240. (उ)

संज्ञा–गङ्गा (भाग-दो)

1. किसमें संहिता नित्य नहीं मानी जाती है–
(अ) एकपद (इ) धातु-उपसर्ग
(उ) समास (ऋ) वाक्य

2. ''दैत्यानां अरिः = दैत्य + अरिः = दैत्यारिः'' में सवर्ण दीर्घ एकादेश हुआ, क्योंकि–
(अ) यहाँ संहिता विवक्षा के अधीन है
(इ) समास में संहिता नित्य है
(उ) 'दैत्य' पद अकारान्त है
(ऋ) यह अखण्ड पद है

3. ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र में किस सूत्र का अधिकार है–
(अ) स्त्रियाम् (इ) कारके
(उ) संहितायाम् (ऋ) ङ्याप्प्रातिपदिकात्

4. किसमें 'संहितायाम्' का अधिकार नहीं है–
(अ) एचोऽयवायावः (इ) आद्गुणः
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि

5. 'गण + ईशः = गणेशः' में कौन विधि है–
(अ) वृद्धि (इ) पूर्वरूप
(उ) पररूप (ऋ) गुण

6. 'गुण विधि' किसकी होती है–
(अ) अच् (इ) हल्
(उ) इक् (ऋ) अण्

7. 'चि + तव्यत् = चेतव्यम्' – यहाँ धातु में कौन-सी विधि हुई है–
(अ) वृद्धि (इ) दीर्घ
(उ) गुण (ऋ) पररूप

8. ''उप - भुज् + तुमुन् = उपभोक्तुम्'' में धातु के किस अंश को 'गुण' हुआ है–
(अ) आदि (इ) अन्त
(उ) उपधा (ऋ) उपसर्ग

9. ''भिद् + तव्य = भेतव्यम्'' में गुण विधायक सूत्र कौन है–
(अ) आद्गुणः (इ) अदेङ्गुणः
(उ) गुणोऽपृक्तेः (ऋ) पुगन्तलघूपधस्य च

10. ''स्मृ + अनीयर् = स्मरणीयम्'' में गुणविधि का सूत्र क्या है–
(अ) पुगन्तलघूपधस्य च (इ) आद्गुणः
(उ) गुणोऽपृक्तेः (ऋ) सार्वधातुकार्धधातुकयोः

11. हे प्रभो! – यहाँ 'प्रभो' शब्द में कौन विधि है–
(अ) दीर्घ (इ) गुण
(उ) वृद्धि (ऋ) सम्प्रसारण

12. ''हस् + ण्यत् = हास्यम्''– यहाँ धातु में कौन विधि हुई है–
(अ) वृद्धि (इ) दीर्घ
(उ) गुण (ऋ) लोप

13. ''पठ् + घञ् = पाठः'' यहाँ धातु में कौन विधि हुई है–
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) सम्प्रसारण (ऋ) पूर्वरूप

14. ''दशरथ + इञ् = दाशरथिः'' यहाँ दशरथ के आदिस्वर की वृद्धि किस सूत्र से हुई है–
(अ) तद्धितेष्वचामादेः (इ) किति च
(उ) अत उपधायाः (ऋ) वृद्धिरादैच्

15. ''संस्कृतगङ्गा + ओघः = संस्कृतगङ्गौघः'' में किस सूत्र से वृद्धि एकादेश हुआ है –
(अ) एचोऽयवायावः (इ) वृद्धिरादैच्
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) इको गुणवृद्धी

16. वृद्धिसंज्ञाविधायक सूत्र ''वृद्धिरादैच्'' में 'ऐच्' से किन दो वर्णों का बोध होता है–
(अ) ए ऐ (इ) ऐ औ
(उ) ए ओ (ऋ) ओ औ

1. (ऋ), 2. (इ), 3. (उ), 4. (ऋ), 5. (ऋ), 6. (उ), 7. (उ) 8. (उ), 9. (ऋ) 10. (ऋ), 11. (इ), 12. (अ), 13. (इ), 14. (अ),15.(उ) 16. (इ),

17. गुणसंज्ञाविधायक सूत्र 'अदेङ्गुणः' में 'एङ्' प्रत्याहार से किन दो वर्णों का बोध होता है–
(अ) ए, औ (इ) ए, ऐ
(उ) ओ, औ (ऋ) ए, ओ

18. 'अदेङ्गुणः' सूत्र में विद्यमान 'अत्' से ह्रस्व अकार का बोध किस सूत्र से होता है–
(अ) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः (इ) तस्मादित्युत्तरस्य
(उ) अचश्च (ऋ) तपरस्तत्कालस्य

19. 'वृद्धिरादैच्'' में स्थित 'आत्' से दीर्घ 'आ' का बोध किस सूत्र से होता है–
(अ) अकः सवर्णे दीर्घः (इ) तस्मादित्युत्तरस्य
(उ) तपरस्तत्कालस्य (ऋ) उरण् रपरः

20. ''उप + ऋच्छति = उपार्च्छति'' में विहित वृद्धि किस विधि का अपवाद है-
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) पररूप (ऋ) पूर्वरूप

21. 'सुखेन ऋतः = सुख + ऋतः = सुखार्तः' में कौन विधि है-
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) पररूप (ऋ) पूर्वरूप

22. 'दाशरथि' की प्रातिपदिक संज्ञा होती है, क्योंकि-
(अ) यह कृदन्त है (इ) यह तद्धितान्त है
(उ) यह समासान्त है (ऋ) यह सुबन्त है

23. ''कारक'' की प्रातिपदिक संज्ञा होती है, क्योंकि–
(अ) यह तद्धितान्त है (इ) यह कृदन्त है
(उ) यह समासान्त है (ऋ) यह सुबन्त है

24. 'पीताम्बरः' की प्रातिपदिक संज्ञा होती है, क्योंकि–
(अ) यह कृदन्त है (इ) यह समासान्त है
(उ) यह तद्धितान्त है (ऋ) यह तिङन्त है

25. 'डित्थ' की प्रातिपदिक संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) कृत्तद्धितसमासाश्च
(इ) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्
(उ) ङ्याप्प्रातिपदिकात्
(ऋ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा

26. प्रातिपदिक से किन प्रत्ययों का विधान होता है–
(अ) तिङ् (इ) सुप्
(उ) कृत् (ऋ) तद्धित

27. 'प्रातिपदिकार्थ' में कौन विभक्ति होती है–
(अ) द्वितीया (इ) सप्तमी
(उ) चतुर्थी (ऋ) प्रथमा

28. 'राजन्' से प्रथमा विभक्ति एकवचन में 'सु' विभक्ति आती है, क्योंकि–
(अ) 'राजन्' व्यञ्जनान्त है
(इ) 'राजन्' पुँल्लिङ्गवाचक है
(उ) 'राजन्' एक प्रातिपादिक है
(ऋ) 'राजन्' एक राजा का वाचक है

29. 'अस्मद्' से तृतीया एकवचन में 'टा' विभक्ति आती है, क्योंकि–
(अ) 'अस्मद्' - सर्वनाम है
(इ) 'अस्मद्' का रूप तीनों लिङ्गो में समान है
(उ) अस्मद् - व्यञ्जनान्त है
(ऋ) अस्मद् - प्रातिपदिक है

30. 'फल' से प्रथमा बहुवचन में 'जश्' विभक्ति आती है, क्योंकि–
(अ) 'फल' - अकारान्त है
(इ) 'फल' - प्रातिपदिक है
(उ) 'फल' - नपुंसकलिङ्ग है
(ऋ) 'फल' - आम आदि फलों का वाचक है

31. 'दशरथ' से ''अतइञ्'' सूत्र से अपत्यार्थ में 'इञ्' प्रत्यय आता है, क्योंकि–
(अ) 'दशरथ' - पुंलिङ्गवाचक है
(इ) 'दशरथ' - राम के पिता हैं
(उ) 'दशरथ' - प्रातिपदिक है
(ऋ) 'दशरथ' - अयोध्या के राजा हैं

32. 'अस्माकीनम्' में किस प्रातिपदिक से 'खञ्' प्रत्यय आया है–
(अ) अस्माकम् (इ) अस्मद्
(उ) अदस् (ऋ) एतद्

17. (ऋ), 18. (ऋ) 19. (उ),20. (अ) 21. (इ), 22. (इ), 23. (इ), 24. (इ), 25. (इ) 26. (इ), 27. (ऋ), 28. (उ), 29. (ऋ), 30. (इ), 31. (उ), 32. (इ),

33. **'राजकीयः' में किस प्रातिपदिक से 'छ' प्रत्यय आया है–**
(अ) राजक (इ) रजक
(उ) राजन् (ऋ) राजका

34. प्रातिपदिक से चतुर्थी एकवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) भ्यस् (इ) भ्याम्
(उ) ङसि (ऋ) ङे

35. प्रातिपदिक से सप्तमी एकवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) ङि (इ) ङे
(उ) ङसि (ऋ) ङस्

36. प्रातिपदिक से तृतीया बहुवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) भ्यस् (इ) भिस्
(उ) आम् (ऋ) शस्

37. प्रातिपदिक से पञ्चमी एकवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) भ्यस् (इ) भिस्
(उ) ङे (ऋ) ङसि

38. प्रातिपदिक से षष्ठी एकवचन में विभक्ति आती है–
(अ) ङि (इ) ङे
(उ) ङसि (ऋ) ङस्

39. प्रातिपदिक से चतुर्थी पञ्चमी के बहुवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) आम् (इ) भिस्
(उ) भ्यस् (ऋ) जश्

40. प्रातिपदिक से तृतीया, चतुर्थी एवं पञ्चमी के द्विवचन में विभक्ति आती है–
(अ) ओस् (इ) भ्याम्
(उ) भ्यस् (ऋ) भिस्

41. प्रातिपदिक से षष्ठी बहुवचन में कौन-सी विभक्ति आती है –
(अ) अम् (इ) आम्
(उ) भ्यस् (ऋ) भिस्

42. प्रातिपदिक से 'शस्' विभक्ति आती है–
(अ) द्वितीया एकवचन (इ) प्रथमा बहुवचन
(उ) द्वितीया बहुवचन (ऋ) तृतीया एकवचन

43. प्रातिपदिक से 'अम्' विभक्ति कहाँ आती है–
(अ) द्वितीया एकवचन (इ) प्रथमा द्विवचन
(उ) द्वितीया द्विवचन (ऋ) चतुर्थी एकवचन

44. प्रातिपदिक से षष्ठी एवं सप्तमी द्विवचन में कौन विभक्ति आती है–
(अ) भ्याम् (इ) औ
(उ) भ्यस् (ऋ) ओस्

45. प्रातिपदिक से 'सु' विभक्ति आती है–
(अ) प्रथमा द्विवचन (इ) प्रथमा बहुवचन
(उ) सप्तमी बहुवचन (ऋ) प्रथमा एकवचन

46. प्रातिपदिक से सप्तमी बहुवचन में विभक्ति आती है–
(अ) सु (इ) शस्
(उ) भ्याम् (ऋ) सुप्

47. ''यू स्त्र्याख्यौ नदी'' में 'यू' से किस वर्णद्वय का बोध होता है–
(अ) ई ऊ (इ) इ उ
(उ) इ अ (ऋ) ई उ

48. ''शेषो घ्यसखि'' सूत्र अष्टाध्यायी के किस अध्याय का है–
(अ) द्वितीय (इ) प्रथम
(उ) चतुर्थ (ऋ) सप्तम

49. समास में ही किस शब्द की 'घि' संज्ञा होती है–
(अ) सखि (इ) मति
(उ) पति (ऋ) सम्पति

50. इनमें से किसकी 'घि' संज्ञा नहीं है–
(अ) भूपति (इ) नरपति
(उ) वसुधापति (ऋ) सम्मति

51. ''रम् + घञ् = रामः''– यहाँ धातु के 'अकार' की कौन संज्ञा है–
(अ) पद (इ) टि
(उ) उपधा (ऋ) भ

33. (उ), 34. (ऋ), 35. (अ), 36. (इ), 37. (ऋ),38. (ऋ), 39. (उ), 40. (इ), 41. (इ), 42. (उ) 43. (अ), 44. (ऋ), 45. (ऋ), 46. (ऋ), 47. (अ) 48. (इ), 49. (उ), 50. (ऋ), 51. (उ),

52. 'पठ् + ण्वुल् = पाठकः' में धातु की उपधा को किस सूत्र से वृद्धि होती है–
(अ) अतो गुणे (इ) अत उपधायाः
(उ) पुगन्तलघूपधस्य च (ऋ) अचोञ्णिति

53. ''अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा'' में 'अल्' से किसका बोध है–
(अ) स्वरवर्ण (इ) व्यञ्जनवर्ण
(उ) अयोगवाह (ऋ) सम्पूर्ण वर्णसमाम्नाय

54. सभी 'उपधा' कार्य किससे सम्बद्ध हैं–
(अ) स्वर (इ) व्यञ्जन
(उ) संयुक्त वर्ण (ऋ) इनमें से कोई नहीं

55. 'राजन्' में उपधा कौन है–
(अ) अन् (इ) अ
(उ) आ (ऋ) जन्

56. 'गुणिन्' में उपधा कौन है–
(अ) इन् (इ) इ
(उ) उ (ऋ) णिन्

57. 'वस्' धातु का 'अकार' क्या है–
(अ) टि (इ) गुरु
(उ) भ (ऋ) उपधा

58. 'इ' वर्ण को वृद्धि से क्या होगा–
(अ) ऐ (इ) ओ
(उ) औ (ऋ) ए

59. 'उ' वर्ण को वृद्धि से क्या होगा–
(अ) ऐ (इ) ओ
(उ) औ (ऋ) ए

60. 'इ' वर्ण को गुण क्या होगा–
(अ) ए (इ) ऐ
(उ) ओ (ऋ) औ

61. 'उ' वर्ण को गुण क्या होगा–
(अ) ओ (इ) औ
(उ) ऐ (ऋ) ऐ

62. पाणिनीय व्यवस्था में 'उपधा' क्या है–
(अ) विधि (इ) निषेध
(उ) धातु (ऋ) संज्ञा

63. ''अपृक्त एकाल् प्रत्ययः'' में 'एकाल्' का क्या अर्थ है–
(अ) एक धातु (इ) एक वर्ण
(उ) एक प्रातिपदिक (ऋ) एक उपसर्ग

64. इनमें किस अव्यय की 'गति संज्ञा' होती है–
(अ) अहो (इ) पुरा
(उ) पुरः (ऋ) अर्थ

65. ''सुप्तिङन्तं पदम्'' अष्टाध्यायी के किस अध्याय का सूत्र है–
(अ) प्रथम (इ) द्वितीय
(उ) तृतीय (ऋ) चतुर्थ

66. ''न वेति विभाषा'' सूत्र के 'वा' से किसका बोध होता है–
(अ) विशेष (इ) बाधा
(उ) विकल्प (ऋ) विषय

67. इनमें से किन दोनों का सम्बन्ध 'विभाषा संज्ञा' से है–
(अ) च वा (इ) न वा
(उ) अथ वा (ऋ) न, एव

68. इनमें से सवर्ण संज्ञा का निषेध करने वाला सूत्र कौन है–
(अ) न विभक्तौ तुस्माः (इ) न यदि
(उ) नाऽज्झलौ (ऋ) न निर्धारणे

69. ''परि + ईक्षा = परीक्षा'' में ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र से दीर्घ एकादेश हुआ है, क्योंकि–
(अ) पूर्व 'इ' के बाद एक स्वर है
(इ) धातु एवं उपसर्ग में दीर्घ एकादेश अभीष्ट हैं
(उ) पूर्व 'इ' एवं पर 'ई' परस्पर सवर्ण है
(ऋ) परवर्ती 'ईक्षा' शब्द स्त्रीलिङ्ग में है।

70. 'क्' के सवर्णी कौन हैं –
(अ) अ, आ, इ (इ) च् ट् त् प्
(उ) ख् ग् घ् ङ् (ऋ) स् च् प् छ्

52. (इ) 53. (ऋ), 54. (अ), 55. (इ), 56. (इ), 57. (ऋ) 58. (अ), 59. (उ), 60. (अ), 61. (अ), 62.(ऋ) 63. (इ), 64. (इ), 65. (अ), 66. (उ), 67.(इ), 68. (उ), 69. (उ), 70. (उ),

71. 'अ' कार किस सूत्र से अपने सवर्णियों का ग्राहक होता है–
(अ) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्
(इ) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः
(उ) झरो झरि सवर्णे
(ऋ) अकः सवर्णे दीर्घः

72. इनमें कौन दो वर्ण परस्पर सवर्ण हैं–
(अ) थ् प् (इ) आ ई
(उ) अ ऋ (ऋ) च् ज्

73. इनमें कौन दो परस्पर सवर्ण नहीं हैं –
(अ) उ ऊ (इ) ऋ लृ
(उ) क् च् (ऋ) प् भ्

74. ''थ् - ध्'' परस्पर क्या हैं–
(अ) संयोग (इ) संहिता
(उ) सवर्ण (ऋ) प्रत्याहार

75. ''अचोऽन्त्यादि टि'' सूत्र अष्टाध्यायी के किस अध्याय में है–
(अ) प्रथम (इ) तृतीय
(उ) पञ्चम (ऋ) सप्तम

76. इनमें से कौन 'प्रगृह्य' है–
(अ) देवौ (इ) मुनिः
(उ) बालिके (ऋ) गुरुः

77. इनमें से कौन 'प्रगृह्य' नहीं है–
(अ) साधू (इ) मुनी
(उ) रामौ (ऋ) लते

78. ''अमी अत्र'' में 'अमी' की प्रगृह्य संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्
(इ) अदसो मात्
(उ) निपात एकाजनाङ्
(ऋ) प्लुतप्रगह्या अचि नित्यम्

79. अष्टाध्यायी के किस अध्याय में 'प्रगृह्यसंज्ञा' विधायक सूत्र हैं–
(अ) प्रथम (इ) द्वितीय
(उ) तृतीय (ऋ) चतुर्थ

80. इनमें से किसकी 'सर्वनामस्थान' संज्ञा होती है–
(अ) इन् (इ) शि
(उ) ऐस् (ऋ) य्

81. ''शि सर्वनामस्थानम्'' सूत्र के ''शि'' का किन दोनों विभक्तियों से सम्बन्ध है–
(अ) सु औ (इ) भिस् भ्यस्
(उ) आम् सुप् (ऋ) जस् शस्

82. किन दो कृत् प्रत्ययों की ''निष्ठा'' संज्ञा होती है–
(अ) शतृ-शानच् (इ) क्त-क्तवतू
(उ) ण्वुल्-तृच् (ऋ) तव्य-तव्यत्

83. ''छिद् + क्त = छिन्नः'' किस सूत्र से नत्व हुआ है–
(अ) रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः
(इ) झलां जशोऽन्ते
(उ) ल्वादिभ्यः
(ऋ) संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः

84. सम्प्रसारण में 'य् व् र् ल्' को क्या होगा–
(अ) अ आ ऊ ऋ (इ) इ उ ऋ ऌ
(उ) ए ओ ऐ औ (ऋ) ऋ लृ अ इ

85. निम्नलिखित में कौन पाँच अनुनासिक हैं–
(अ) ञ् म् ङ् ण् न् (इ) त् थ् द् ध् न्
(उ) ट् ठ् ड् ढ् ण् (ऋ) क् ख् ग् घ् ङ्

86. अनुनासिक में किन दोनों का साहचर्य रहता है–
(अ) नासिका एवं मूर्धा (इ) नासिका श्रोत्र
(उ) मुख एवं नासिका (ऋ) कण्ठ एवं नासिका

87. निम्नलिखित में स्वरों का 'बाह्य प्रयत्न' कौन नही है–
(अ) उदात्त (इ) अनुदात्त
(उ) स्वरित (ऋ) महाप्राण

88. संस्कृत में 'अन्तःस्थ वर्ण' कितने हैं–
(अ) 4 (इ) 6
(उ) 8 (ऋ) 10

89. संस्कृत में 'ऊष्मवर्ण' कितने हैं–
(अ) 6 (इ) 5
(उ) 4 (ऋ) 7

71. (इ), 72. (ऋ), 73. (उ), 74. (उ), 75. (अ), 76. (उ), 77. (उ), 78. (इ), 79. (अ), 80. (इ), 81. (अ), 82.(इ), 83. (अ), 84. (इ), 85. (अ), 86. (उ), 87. (ऋ), 88. (अ), 89. (उ),

90. 'स्पर्श वर्ण' कितने हैं–
(अ) 33 (इ) 25
(उ) 40 (ऋ) 39

91. इनमें से किस समूह की अल्पप्राण संज्ञा है–
(अ) क् द् प् (इ) ठ् ध् भ
(उ) भ् ख् क् (ऋ) ध् झ् ढ्

92. इनमें से किस समूह की अल्पप्राण संज्ञा नही है–
(अ) च् ट् त् (इ) द् ब् ग्
(उ) ख् थ् फ् (ऋ) म् न् ञ्

93. इनमें से 'तालव्यवर्ण' कौन है–
(अ) श् (इ) ब्
(उ) स् (ऋ) ह्

94. इनमें से 'दन्त्यवर्ण' कौन है–
(अ) ष् (इ) स्
(उ) श् (ऋ) ह्

95. इनमें से 'मूर्धन्यवर्ण' कौन है–
(अ) श् (इ) ष्
(उ) स् (ऋ) य्

96. इनमें से किसका ह्रस्व नहीं होता–
(अ) आ (इ) ई
(उ) ए (ऋ) ऊ

97. 'ऐ' का ह्रस्व स्वर कौन है–
(अ) ए (इ) इ
(उ) उ (ऋ) इनमें से कोई नही

98. ए, ओ, ऐ, औ– क्या हैं–
(अ) केन्द्रीय स्वर (इ) मूलस्वर
(उ) अर्धस्वर (ऋ) संयुक्तस्वर

99. 'अपृक्त'– कौन हैं–
(अ) एकाल् प्रत्यय (इ) तद्धितान्त
(उ) कृदन्त (ऋ) ईकारान्त शब्द

100. 'वृद्धिसंज्ञक वर्ण' कितने होते हैं–
(अ) 5 (इ) 4
(उ) 3 (ऋ) 5

101. 'गुणसंज्ञक वर्ण' कितने हैं–
(अ) 5 (इ) 4
(उ) 3 (ऋ) 2

102. पाणिनीय अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र है–
(अ) अदेङ् गुणः (इ) आद्गुणः
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) वृद्धिरादैच्

103. अष्टाध्यायी का अन्तिम सूत्र है–
(अ) वृद्धिरादैच् (इ) अ अ
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) तच्च टेः

104. ऋकार के स्थान पर प्राप्त 'अण्' में रपर का विधान करने वाला सूत्र है–
(अ) ऋत्यकः (इ) उरण् रपरः
(उ) ऋत उत् (ऋ) रो रि

105. 'उरण् रपरः' सूत्र में कितने पद हैं–
(अ) 2 (इ) 3
(उ) 6 (ऋ) 4

106. 'सन्धिः'– इस पद में कौन-सा लिङ्ग है–
(अ) स्त्रीलिङ्ग (इ) पुँल्लिङ्ग
(उ) उभयलिङ्गी (ऋ) नपुंसकलिङ्ग

107. अष्टाध्यायी प्रथम अध्याय का वर्ण्य विषय है–
(अ) संज्ञा, परिभाषा (इ) सन्धिः
(उ) समासः (ऋ) कारकम्

108. अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय में वर्णित है–
(अ) सन्धिः (इ) समास, कारक
(उ) संज्ञाप्रकरणम् (ऋ) कृत्प्रत्यय

109. अष्टाध्यायी के तृतीय अध्याय में वर्णित है–
(अ) तिङन्तप्रकरणम्
(इ) सन्धिः, स्वरनियम
(उ) कृत्यप्रत्यय, कृत् प्रत्यय
(ऋ) समास

110. अष्टाध्यायी के चतुर्थ और पञ्चम अध्यायों में वर्णित है–
(अ) कारकप्रकरण (इ) सन्धिप्रकरण
(उ) संज्ञाप्रकरण (ऋ) स्त्रीप्रत्यय एवं तद्धितप्रकरण

90.(इ), 91.(अ), 92.(उ), 93.(अ) 94.(इ), 95.(इ), 96.(उ), 97.(ऋ), 98.(ऋ), 99.(अ), 100.(उ), 101.(उ), 102.(ऋ), 103.(इ), 104.(इ), 105.(इ), 106.(इ), 107.(अ), 108.(इ), 109.(उ), 110.(ऋ),

111. अष्टाध्यायी के छठवें अध्याय में वर्णित है–
(अ) सन्धिप्रकरणम् (इ) सुबन्तप्रकरणम्
(उ) कारकप्रकरणम् (ऋ) समासप्रकरणम्

112. अष्टाध्यायी के सातवें अध्याय में वर्णित है–
(अ) स्वर वैदिक प्रक्रिया (इ) सुबन्त तिङन्त
(उ) समास, कारक (ऋ) संज्ञा परिभाषा

113.अष्टाध्यायी के अष्टम अध्याय का विवेच्य विषय है–
(अ) द्वित्त्व विधान, स्वरवैदिकी प्रक्रिया, बल, णत्व, विधान
(इ) सुबन्त तिङन्त
(उ) समास, सन्धि
(ऋ) तद्धित प्रकरण

2. सन्धि–गङ्गा (i) स्वरसन्धिः (अच्-सन्धिः)

1. 'पूर्व' शब्द के अन्त में अच् और पर शब्द के आदि में अच् हो, तो उस सन्धि को कहेंगे–
(अ) अच् सन्धि (इ) हल् सन्धि
(उ) विसर्ग सन्धि (ऋ) इनमें से कोई नही

2. प्रायशः सम्पूर्णसन्धि प्रकरण में किसका अधिकार रहता है–
(अ) ''हलोऽनन्तराः संयोगः'' का
(इ) ''संहितायाम्'' का
(उ) ''सुप्तिङन्तं पदं'' का
(ऋ) ''इको यणचि'' का

3. ''इको यणचि'' इस सूत्र में कुल कितने पद हैं–
(अ) पञ्चपदम् (इ) त्रिपदम्
(उ) द्विपदम् (ऋ) एकं पदम्

4. संहिता के विषय में अच् परे रहते 'इक्' के स्थान पर होगा–
(अ) अण् (इ) यर्
(उ) यण् (ऋ) इण्

5. ''इ उ ऋ लृ''- ये चार वर्ण किस प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) अण् (इ) इण्
(उ) इक् (ऋ) इच्

6. 'यण्' प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं–
(अ) ह् य् व् र् (इ) य् र् ल् श्
(उ) य् व् ल् ह् (ऋ) य् व् र् ल्

7. 'यण् सन्धि' में 'इ उ ऋ लृ' के स्थान पर क्रमशः आदेश होगा–
(अ) ह् य् व् र् (इ) य् व् ल् र्
(उ) य् र् ल् व् (ऋ) य् व् र् ल्

8. अनियम होने पर नियम करने वाले सूत्र को कहते हैं–
(अ) विधि सूत्र (इ) नियम सूत्र
(उ) परिभाषा सूत्र (ऋ) अधिकार सूत्र

9. सूत्र में सप्तमी विभक्ति के द्वारा निर्दिष्ट कार्य व्यवधान रहित किस वर्ण के स्थान पर होता है–
(अ) पूर्व वर्ण के (इ) पर वर्ण के
(उ) मध्य वर्ण के (ऋ) अन्त्य वर्ण के

10. परिभाषा सूत्र नहीं है–
(अ) तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य
(इ) स्थानेऽन्तरतमः
(उ) यथासंख्यमनुदेशः समानाम्
(ऋ) झलां जश् झशि

11. ''इको यणचि'' सूत्र के ''इकः'' पद में विभक्ति है–
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) प्रथमा (ऋ) द्वितीया

12. ''इको यणचि'' सूत्रस्थ 'यण्' और 'अचि' पद में क्रमशः विभक्ति हैं–
(अ) प्रथमा, सप्तमी (इ) द्वितीया, सप्तमी
(उ) प्रथमा, षष्ठी (ऋ) इनमें से कोई नही

111. (अ), 112. (इ), 113. (अ)। 1. (अ), 2. (इ), 3. (इ), 4. (उ), 5. (उ), 6. (ऋ), 7. (ऋ)
8. (उ), 9. (अ) 10. (ऋ), 11. (इ), 12. (अ)

13. ''द्वित्व'' विधायक विधि सूत्र हैं–
(अ) तच्च टेः (इ) अनचि च
(उ) अलोऽन्त्यस्य (ऋ) पूर्वत्रासिद्धम्

14. 'झश्' वर्ण परे रहने पर 'झल्' के स्थान पर आदेश होगा–
(अ) झष् (इ) जश्
(उ) झर् (ऋ) झय्

15. ''प्रसंग प्राप्त होने पर स्थानादि की समानता से सदृशतम आदेश हो'' यह बात किस सूत्र में कही गयी है–
(अ) यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम्
(इ) स्थानेऽन्तरतमः
(उ) अन्तादिवच्च
(ऋ) अनेकाल्शित्सर्वस्य

16. संयोग के अन्त में विद्यमान वर्णों का लोप करता है–
(अ) तस्य लोपः (इ) अदर्शनं लोपः
(उ) संयोगान्तस्य लोपः (ऋ) लोपः शाकल्यस्य

17. ''नद्यत्र'' में सन्धि है–
(अ) गुण (इ) यण्
(उ) अयादि (ऋ) प्रकृतिभाव

18. 'अस्त्यात्मा' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) अस्ती + आत्मः (इ) अस्ति + आतमा
(उ) अस्ति + आत्मा (ऋ) अस्ति + यात्मा

19. 'गुरु + आज्ञा' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) गौराज्ञा (इ) गुरुज्ञा
(उ) गुर्वाज्ञा (ऋ) गुरोज्ञा

20. 'अच्' परे होने पर 'एच्' के स्थान पर कौन-सा आदेश नहीं होगा–
(अ) अय् (इ) अव्
(उ) अत् (ऋ) आव्

21. संहिता की स्थिति में ''ए, ओ, ऐ, औ'' के स्थान पर क्रमशः आदेश होते हैं–
(अ) अय् अव् आय् आत् (इ) अव् अय् आय् आव्
(उ) अय् अव् आव् आय् (ऋ)अय् अव् आय् आव्

22. 'नायकः' में सन्धि है–
(अ) अयादि (इ) गुण
(उ) वृद्धि (ऋ) पूर्वरूप

23. 'पावकः' में किस सूत्र से सन्धिकार्य हुआ–
(अ) पूर्वत्रासिद्धम् (इ) एचोऽयवायावः
(उ) पदान्तस्य (ऋ) वान्तो यि प्रत्यये

24. 'हरये' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) हरि + ए (इ) हरे + ऐ
(उ) हरौ + ये (ऋ) हरे + ए

25. अयादि सन्धि का सूत्र है–
(अ) एच इग्घ्रस्वादेशे (इ) एको गोत्रे
(उ) एचोऽयवायावः (ऋ) एत्येधत्यूठ्सु

26. 'गुणसन्धि' का सूत्र है–
(अ) अदेङ् गुणः (इ) आद्गुणः
(उ) ओर्गुणः (ऋ) गुणो यङ्लुकोः

27. 'वृद्धिसन्धि' का सूत्र है–
(अ) वृद्धिरेचि
(इ) वृद्धिरादैच्
(उ) वृद्धाच्छः
(ऋ) वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्

28. 'दीर्घसन्धिः' का सूत्र है–
(अ) दीर्घ इणः किति (इ) अकः सवर्णे दीर्घः
(उ) दीर्घोऽकितः (ऋ) दीर्घं च

29. 'पूर्वरूपसन्धि' का सूत्र है–
(अ) एङि पररूपम् (इ) पूर्वत्रासिद्धम्
(उ) एङः पदान्तादति (ऋ) पूर्वपदात् सञ्ज्ञायामगः

30. 'पररूप' विधायक सूत्र है–
(अ) परश्च (इ) एङः पदान्तादति
(उ) परेर्मृषः (ऋ) एङि पररूपम्

31. 'यण्सन्धि' का सूत्र है–
(अ) इको झल्
(इ) इको यणचि
(उ) इकोऽचि विभक्तौ
(ऋ) इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च

13. (इ), 14. (इ),15.(इ) 16. (उ), 17. (इ), 18. (उ), 19. (उ), 20. (उ) 21. (ऋ), 22. (अ), 23. (इ), 24. (ऋ), 25. (उ) 26. (इ), 27. (अ), 28. (इ), 29. (उ), 30. (ऋ), 31. (इ),

32. 'प्रकृतिभाव' करने वाला सूत्र है–
(अ) सर्वत्र विभाषा गोः
(इ) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्
(उ) प्रकृत्यैकाच्
(ऋ) उपर्युक्त सभी

33. ''वान्तो यि प्रत्यये'' इस सूत्र का उदाहरण है–
(अ) गव्यम् (इ) नाव्यम्
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नही

34. 'उपेन्द्रः' और 'गङ्गोदकम्' किस सन्धि के उदाहरण हैं–
(अ) वृद्धिसन्धि के (इ) गुण सन्धि के
(उ) अयादि सन्धि के (ऋ) यण् सन्धि के

35. पूर्व में 'अवर्ण' तथा पर में 'अश्' प्रत्याहार हो, तो पदान्त य्-व् का वैकल्पिक लोप किस सूत्र से होता है–
(अ) तस्य लोपः (इ) संयोगान्तस्य लोपः
(उ) लोपः शाकल्यस्य (ऋ) अदर्शनं लोपः

36. अष्टाध्यायी में ''त्रिपादी'' कहा जाता है–
(अ) प्रथम अध्याय का प्रथम, द्वितीय तृतीय पाद
(इ) अष्टम अध्याय का प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पाद
(उ) सात अध्याय तथा अष्टम अध्याय का प्रथम पाद
(ऋ) अष्टम अध्याय का द्वितीय तृतीय चतुर्थ पाद

37. अवर्ण से एच् परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर आदेश होता है–
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) दीर्घ (ऋ) यण्

38. 'आद्गुणः' सूत्र का बाधक (अपवाद) सूत्र है–
(अ) एचोऽयवायावः (इ) इको यणचि
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) उरण् रपरः

39. ''एत्येधत्यूठ्सु'' सूत्र के उदाहरण है–
(अ) उपैति (इ) उपैधते
(उ) प्रष्ठौहः (ऋ) उपर्युक्त सभी

40. ''अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्'' इस वार्तिक से प्रयोग सिद्ध होता है–
(अ) अक्षोहिणी (इ) अक्षौहिणी
(उ) अक्षाहिणी (ऋ) अक्षैहिणी

41. ''अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी'' प्रयोग में आदेश हुआ है–
(अ) गुण (इ) दीर्घ
(उ) वृद्धि (ऋ) इनमें से कोई नहीं

42. ''सुख + ऋतः = सुखार्तः'' यहाँ किस वार्तिक से वृद्धि हुई है–
(अ) ऋते च तृतीया समासे
(इ) एत्येधत्यूठ्सु
(उ) ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्
(ऋ) सामान्ये नपुंसकम्

43. ''प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु'' इस वार्तिक के उदाहरण है–
(अ) प्रौहः, प्रौढः (इ) प्रौढिः
(उ) प्रैषः, प्रैष्यः (ऋ) सभी

44. वृद्धि विधान करने वाला वार्तिक है–
(अ) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु
(इ) ऋते च तृतीया समासे
(उ) प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे
(ऋ) उपर्युक्त सभी

45. 'प्रार्णम्', 'वसनार्णम्'– आदि में किस वार्तिक से वृद्धि का विधान किया गया है–
(अ) प्रवत्सतर-कम्बल-वसनार्णदशानामृणे
(इ) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु
(उ) प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्ये
(ऋ) प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया

46. ''प्रार्च्छति' में वृद्धि आदेश किस सूत्र से हुआ है–
(अ) वृद्धिरेचि (इ) वृद्धिरादैच्
(उ) उपसर्गादृति धातौ (ऋ) एत्येधत्यूठ्सु

47. ''उपसर्गादृति धातौ'' इस सूत्र द्वारा अवर्णान्त उपसर्ग से ऋकारादि धातु के परे होने पर क्या आदेश होता है–
(अ) गुण (इ) दीर्घ
(उ) वृद्धि (ऋ) पूर्वरूप

48. पदान्त एङ् से ह्रस्व अकार के परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर क्या आदेश होता है–
(अ) पूर्वरूप (इ) पररूप
(उ) वृद्धि (ऋ) गुण

32. (ऋ), 33. (उ), 34. (इ), 35. (उ), 36. (ऋ), 37. (इ), 38. (उ), 39. (ऋ), 40. (इ), 41. (उ), 42. (अ) 43. (ऋ), 44. (ऋ), 45. (अ), 46. (उ), 47. (उ) 48. (अ)

49. 'वृद्धिरेचि'' सूत्र का बाधक (अपवाद) सूत्र है–

(अ) एङः पदान्तादति (इ) एङि पररूपम्

(उ) एचोऽयवायावः (ऋ) इको यणचि

50. 'मनस्' में टिसंज्ञा होगी–

(अ) नस् (इ) अस्

(उ) स् (ऋ) मन

51. ''ओमाङोश्च'' सूत्र किसका विधान करता है–

(अ) पूर्वरूप (इ) पररूप

(उ) सवर्णसंज्ञा (ऋ) अव्यय (निपात)

52. ''अकः सवर्णे दीर्घः'' यह किन सूत्रों का अपवाद (बाधक) है –

(अ) ''आद्गुणः'' का (इ) ''इको यणचि'' का

(उ) दोनों का (ऋ) इनमें से किसी का नही

53. ''गो + अग्रम्''– इस स्थिति में रूप सिद्ध हो सकता है–

(अ) गवाग्रम् (इ) गोअग्रम्

(उ) गोऽग्रम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

54. 'अवङ्' आदेश के सन्दर्भ में पाणिनि ने किस ऋषि का नाम अपने सूत्र में उल्लेख करते हैं–

(अ) शाकटायन (इ) शाकल्य

(उ) स्फोटायन (ऋ) शार्ङ्गरव

55. 'गो' शब्द के बाद 'इन्द्र' शब्द के आने पर क्या आदेश होगा–

(अ) अवङ् (इ) अग्र

(उ) आ (ऋ) ए

56. 'प्लुत' वर्ण को समझने के लिए कौन सा चिह्न प्रयुक्त होता है–

(अ) ऽ (इ) 3

(उ) : (ऋ) ँ

57. ''दूराद्धूते च'' सूत्र से क्या आदेश होता है–

(अ) प्रकृतिभाव (इ) प्रगृह्य

(उ) प्लुत (ऋ) दीर्घ

58. ''प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्'' यह सूत्र 'अच्' के परे होने पर 'प्लुत' और 'प्रगृह्य' को क्या विधान करता है–

(अ) प्रकृतिभाव (इ) पूर्वरूप

(उ) पररूप (ऋ) इनमें से कोई नहीं

59. प्रकृतिभाव के उदाहरण है–

(अ) हरी एतौ (इ) विष्णू इमौ

(उ) गङ्गे अमू (ऋ) उपर्युक्त सभी

60. ''प्रगृह्यसंज्ञा'' विधायक सूत्र है–

(अ) ओत् (इ) निपात एकाजनाङ्

(उ) अदसो मात् (ऋ) उपर्युक्त सभी

61. 'ओकारान्त' निपात की कौन-सी संज्ञा होगी–

(अ) प्रगृह्यसंज्ञा (इ) उपसर्गसंज्ञा

(उ) निपातसंज्ञा (ऋ) प्लुतसंज्ञा

62. वैकल्पिक द्वित्त्व विधायक सूत्र है–

(अ) ऋत्यकः (इ) द्वितीयायां च

(उ) द्विर्वचनेऽचि (ऋ) अचोरहाभ्यां द्वे

63. ह्रस्व ऋकार के परे होने पर पदान्त 'अक्' को किस सूत्र से ह्रस्व होता है–

(अ) ऋत्यकः (इ) उपसर्गादृति धातौ

(उ) ह्रस्वस्य गुणः (ऋ) ऋत उत्

64. ''ब्रह्मा + ऋषिः'' यहाँ सन्धियुक्त पद होगा–

(अ) ब्रह्मर्षिः (इ) ब्रह्म ऋषिः

(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) केवल 'अ'

65. ''चक्री + अत्र = चक्रि अत्र'' – यहाँ पदान्त में विद्यमान 'ई' को किस सूत्र से ह्रस्व हुआ है–

(अ) इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च

(इ) ह्रस्वः

(उ) ह्रस्वस्य गुणः

(ऋ) ह्रस्वं लघु

66. ''गो + इन्द्रः'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–

(अ) गावेन्द्रः (इ) गो इन्द्रः

(उ) गवेन्द्रः (ऋ) गायेन्द्रः

49. (इ), 50. (इ), 51. (इ), 52. (उ) 53. (ऋ), 54. (उ), 55. (अ), 56. (इ), 57. (उ) 58. (अ), 59. (ऋ), 60. (ऋ), 61. (अ), 62. (ऋ), 63. (अ), 64. (उ), 65. (अ), 66. (उ)

67. ''आगच्छ कृष्ण 3 अत्र गौश्चरति'' यहाँ किस सूत्र से प्रकृतिभाव हुआ–
(अ) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्
(इ) सर्वत्र विभाषा गोः
(उ) निपात एकाजनाङ्
(ऋ) दूराद्धूते च

68. ''गो + अग्रम् = गो अग्रम्'' यहाँ किस सूत्र से प्रकृतिभाव हुआ–
(अ) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्
(इ) सर्वत्र विभाषा गोः
(उ) प्रकृत्यैकाच्
(ऋ) अवङ् स्फोटायनस्य

69. ''गो + अग्रम् = गोऽग्रम्'' किस सूत्र से सिद्ध होगा–
(अ) सर्वत्र विभाषा गोः (इ) एङः पदान्तादति
(उ) अवङ् स्फोटायनस्य (ऋ) एङि पररूपम्

70. ''गो + अग्रम् = गवाग्रम्''– यहाँ किस सूत्र से 'अवङ्' आदेश हुआ है–
(अ) अवङ् स्फोटायनस्य (इ) सर्वत्र विभाषा गोः
(उ) एचोऽयवायावः (ऋ) अवयवे च

71. ''हरे + अव = हरेऽव''– यहाँ क्या आदेश हुआ है–
(अ) पररूप (इ) पूर्वरूप
(उ) गुण (ऋ) दीर्घ

72. पूर्वरूप का उदाहरण है–
(अ) विष्णोऽव (इ) कोऽस्ति
(उ) नमोऽस्तु (ऋ) उपर्युक्त सभी

73. दीर्घ सन्धि के उदाहरण हैं–
(अ) दैत्यारिः (इ) श्रीशः
(उ) विष्णूदयः (ऋ) सभी

74. ''होतृ + ऋकारः = होतृकारः'' यहाँ सन्धि है–
(अ) यण् सन्धि (इ) अयादि सन्धि
(उ) दीर्घ सन्धि (ऋ) पूर्वरूप सन्धि

75. ''शिवायों नमः'' यहाँ पररूप का विधान किस सूत्र से हुआ है–
(अ) एङि पररूपम् (इ) ओमाङोश्च
(उ) शिवादिभ्योऽण् (ऋ) परश्च

76. ''शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्''– यह वार्तिक क्या आदेश करता है–
(अ) पूर्वरूप (इ) पररूप
(उ) दीर्घ (ऋ) गुण

77. ''शक + अन्धुः = शकन्धुः''– यहाँ पूर्वपद के किस वर्ण को पररूप हुआ–
(अ) टिसंज्ञक 'अ' को (इ) अन्त्य वर्ण 'क' को
(उ) उक्त दोनों को (ऋ) इनमें से कोई नहीं

78. ''शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्'' इस वार्तिक से पररूप आदेश हुआ है–
(अ) कर्कन्धुः (इ) मनीषा
(उ) मार्तण्डः (ऋ) उपर्युक्त सभी

79. 'मनीषा' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) मन + ईषा (इ) मनस् + ईषा
(उ) मनः + इषा (ऋ) मनी + ईषा

80. ''मार्तण्डः'' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) मृत + आण्डः (इ) मार्त + ण्डः
(उ) मार्त + अण्डः (ऋ) मर्त + अण्डः

81. क्रिया के योग में 'प्र'- आदि की 'उपसर्गसंज्ञा' किस सूत्र से होती है–
(अ) उपसर्गाः क्रियायोगे (इ) उपसर्गादृति धातौ
(उ) प्रादयः (ऋ) उपसर्गे घोः किः

82. ''प्र + एजते'' इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) प्रैजते (इ) प्रेजते
(उ) प्र एजते (ऋ) प्रऽजते

83. 'उपोषति' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) उप + औषति (इ) उप + ओषति
(उ) उपो + षति (ऋ) उप + ऐषति

84. पररूप सन्धि का उदाहरण नहीं है–
(अ) प्रेषयति (इ) अवेजते
(उ) प्रोषति (ऋ) नैजते

85. 'प्राच्छींति' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) प्र + ऋच्छति (इ) प्र + अर्च्छति
(उ) प्रा + र्च्छति (ऋ) प्रात् + छति

67.(अ), 68.(इ), 69.(इ), 70.(अ), 71.(इ), 72.(ऋ), 73.(ऋ), 74.(उ), 75.(इ), 76.(इ), 77.(अ), 78.(ऋ), 79. (इ), 80.(उ), 81.(अ), 82.(इ), 83.(इ), 84.(ऋ), 85.(अ)

86. 'कम्बल + ऋणम्' – सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) कम्बलार्णम् (इ) कम्बलृणम्
(उ) कम्बलेणम् (ऋ) कम्बलर्णम्

87. 'ऋणार्णम्' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) ऋण + अर्णम् (इ) ऋणार् + ऋर्णम्
(उ) ऋण + ऋणम् (ऋ) ऋण् +आर्णम्

88. 'दश + ऋणम्' = क्या होगा–
(अ) दशर्णम् (इ) दशार्णम्
(उ) दशृणम् (ऋ) दर्शाणम्

89. ''वसन + ऋणम् = वसनार्णम्'' यहाँ सन्धि है–
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) दीर्घ (ऋ) यण्

90. ''प्र + ऋणम्''= क्या होगा–
(अ) प्रर्णम् (इ) प्रैणम्
(उ) प्रोर्णम् (ऋ) प्रार्णम्

91. 'ऋणार्णम्' पद का क्या अर्थ है–
(अ) ऋण देने वाला (इ) ऋण लेने वाला
(उ) ऋण के लिए ऋण (ऋ) बहुत अच्छा ऋण

92. ''प्र + ऊहः =प्रौहः'' यहाँ सन्धि है–
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) दीर्घ (ऋ) इनमें से कोई नहीं

93. 'प्रौढः' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) प्र + ओढः (इ) प्र + औढः
(उ) प्र + ऊढः (ऋ) प्र + ऊहः

94. 'प्र + ऊढिः' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) प्रूढिः (इ) प्रौढिः
(उ) प्रोढिः (ऋ) प्राढिः

95. 'प्रैषः और 'प्रैष्यः'– यहाँ किस वार्तिक से वृद्धि का विधान किया गया है–
(अ) प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे
(इ) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु
(उ) प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया
(ऋ) प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो

96. ''कृष्ण + एकत्वम्''– यहाँ सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) कृष्णेकत्वम् (इ) कृष्णोकत्वम्
(उ) कृष्णैकत्वम् (ऋ) कृष्णौकत्वम्

97. 'देवैश्वर्यम्' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) देवे + ईश्वर्यम् (इ) देवै + ऐश्वर्यम्
(उ) देव + एर्श्यम् (ऋ) देव + ऐश्वर्यम्

98. ''कृष्ण + औत्कण्ठ्यम्= कृष्णौत्कण्ठ्यम्'' यहाँ 'अ + औ' इन दोनों वर्णों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक किस वर्ण का आदेश हुआ है–
(अ) ओ (इ) औ
(उ) ऐ (ऋ) आर्

99. ''आद्गुणः'' सूत्र का अपवाद सूत्र है–
(अ) इको यणचि (इ) एचोऽयवायावः
(उ) वृद्धिरेचि (ऋ) इनमें से कोई नही

100.''कृष्ण + ऋद्धिः = कृष्णर्द्धिः'' यहाँ कौन सन्धि है–
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) दीर्घ (ऋ) यण्

101. 'तवल्कारः' का सन्धि विच्छेद है–
(अ) तव + ऌकारः (इ) तव + लकारः
(उ) तव + अल्कारः (ऋ) तवल् + कारः

102. 'आद्गुणः' सूत्र में 'आत्' पद से क्या तात्पर्य है–
(अ) 'तपरस्तत्कालस्य' सूत्र से यहाँ तपरग्रहण है
(इ) 'अ' शब्द का पञ्चमी एकवचन है
(उ) 'आङ्' उपसर्ग का सूचक है
(ऋ) केवल दीर्घ 'आ' का बोधक है

103. ''किमु + उक्तम् = किम्वुक्तम्'' किस सूत्र से सन्धि हुई–
(अ) मय उञो वो वा
(इ) सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे
(उ) इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च
(ऋ) अचो रहाभ्यां द्वे

104. ''विष्णो + इति''– इसका सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) विष्ण + इति (इ) विष्णविति
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) कोई नहीं

86. (अ), 87. (उ), 88. (इ), 89. (अ), 90. (ऋ), 91. (उ), 92.(इ), 93. (उ) 94. (इ), 95. (इ), 96. (उ), 97. (ऋ), 98. (इ), 99. (उ), 100. (इ), 101. (अ), 102. (इ), 103. (अ), 104. (उ),

105. 'चक्री + अत्र'–इसका सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) चक्रि अत्र (इ) चक्र्यत्र
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

106. 'ब्रह्मा + ऋषिः'– इसका सन्धि होकर रूप बनेगा–
(अ) ब्रह्मर्षिः (इ) ब्रह्म ऋषिः
(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

107. ''इ इन्द्रः'' 'उ उमेशः''– यहाँ किस सूत्र से प्रगृह्यसंज्ञा होकर प्रकृतिभाव हो गया–
(अ) प्रादयः (इ) चादयोऽसत्त्वे
(उ) ओत् (ऋ) निपात एकाजनाङ्

108. हरे + इह'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) हरयिह (इ) हर इह
(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

109. ''विष्णाविह''–रूप का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) विष्णौ +इह (इ) विष्णौ + इह
(उ) विष्णो + विह (ऋ) विष्णो + इह

110. 'गव्यम्' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) गौ+ यम् (इ) गो + अम्
(उ) गौ + अम् (ऋ) गो + यम्

111. ''गो +यूतिः = गव्यूतिः'' – प्रयोग किस वार्तिक से सिद्ध होगा–
(अ) वान्तो यि प्रत्यये (इ) अध्वपरिमाणे च
(उ) एचोऽयवायावः (ऋ) गोपसयोर्यत्

112. अवर्णान्त उपसर्ग से एङादि धातु के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर क्या आदेश होता है-
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) पूर्वरूप (ऋ) पररूप

113. 'नौ +यम्' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) नाव्यम् (इ) नव्यम्
(उ) नौयम् (ऋ) नावम्

114. 'वान्तो यि प्रत्यये' – यहाँ 'यि' पद में कौन सी विभक्ति है –
(अ) द्वितीया (इ) सप्तमी
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

115. 'दीर्घ' एकादेश किसके स्थान में होता है –
(अ) पूर्व वर्ण के
(इ) परवर्ण के
(उ) पूर्व और पर दोनों वर्णों के
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

नोट - सन्धि के उदाहरणों की सूची पीछे परिशिष्ट भाग पेज नं. 177 में देखें।

- अल्पप्राण वर्ण हैं – 19 (उन्नीस) (वर्गों के प्रथम, तृतीय, पञ्चम वर्ण और यण्)
- महाप्राण वर्ण हैं – 14 (चौदह) (वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ वर्ण और शल्)
- अघोष वर्ण हैं – 13 (तेरह)
- घोष वर्ण हैं – 20 (बीस)
- स्पर्शवर्ण हैं – 25 (क से म तक)
- अन्तःस्थ वर्ण हैं – 04 **यण्** = य् व् र् ल्।
- ऊष्मवर्ण हैं– 04 **शल्** = श् ष् स् ह्।
- आभ्यन्तरप्रयत्न – 05 (i) स्पृष्ट, (ii) ईषत् स्पृष्ट, (iii) ईषत् विवृत, (iv) विवृत, (v) संवृत
- बाह्यप्रयत्न – 11
- स्वर वर्ण हैं– 09 **अच्** = अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ
- ह्रस्वस्वर हैं– 05 **अक्** = अ, इ, उ, ऋ, लृ
- दीर्घ या संयुक्तस्वर हैं– 04 **एच्** = ए, ओ, ऐ, औ
- संवार, नाद और घोष वर्ण हैं– 20 (**हश्**)
- विवार, श्वास, अघोष वर्ण हैं– 13 (**खर्**)
- जिह्वामूलीय वर्ण हैं– ᳵक ᳵख
- उपध्मानीयवर्ण हैं– ᳵप ᳵफ
- उदित् हैं– कु चु टु तु पु
- अनुस्वार (ं) यथा – अं
- हलन्त (्) यथा– क्
- विसर्ग (ः) यथा– अः

105. (उ), 106. (उ), 107. (ऋ), 108. (उ), 109. (ऋ), 110. (ऋ), 111. (इ), 112. (ऋ), 113. (अ), 114. (इ), 115. (उ)।

(ii) व्यञ्जनसन्धिः (हल्-सन्धिः)

1. ''हल् सन्धि'' कहलाती है–
(अ) हल् से हल् परे (इ) हल् से अच् परे
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

2. 'श्चुत्व' विधायक सूत्र है–
(अ) स्तोः श्चुना श्चुः (इ) ष्टुना ष्टुः
(उ) स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन
(ऋ) पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः

3. ''स्तोः श्चुना श्चुः''– यहाँ 'स्तोः' पद में विभक्ति है–
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) सप्तमी (ऋ) द्वितीया

4. ''स्तोः श्चुना श्चुः''– इस सूत्र में कुल कितने पद हैं–
(अ) द्विपदम् (इ) एकं पदम्
(उ) त्रिपदम् (ऋ) अपदम्

5. 'सकार' और 'तवर्ग' के स्थान पर 'शकार' और 'चवर्ग' का योग होने पर क्या आदेश होगा–
(अ) 'स' और चवर्ग (इ) 'स' और तवर्ग
(उ) 'श' और चवर्ग (ऋ) 'श' और तवर्ग

6. ''रामस् + शेते = रामश्शेते''– यहाँ किस सूत्र से सन्धिकार्य हुआ है–
(अ) पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः
(इ) स्तोः श्चुना श्चुः
(उ) स्वादिभ्यः श्नुः
(ऋ) ष्टुना ष्टुः

7. ''रामस् + चिनोति'' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) रामाचिनोति (इ) रामस्चिनोति
(उ) रामश्चिनोति (ऋ) रामं चिनोति

8. ''सच्चित्'' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) सत् + चित् (इ) सच् + चित्
(उ) सम् + चित् (ऋ) सञ् + चित्

9. ''शार्ङ्गिन् +जयः = शार्ङ्गिञ्जयः'' में सन्धि है–
(अ) ष्टुत्व सन्धि (इ) जश्त्व सन्धि
(उ) चर्त्व सन्धि (ऋ) श्चुत्व सन्धि

10. श्चुत्वनिषेधक सूत्र है–
(अ) न पदान्ताट्टोरनाम् (इ) शात्
(उ) नादिचि (ऋ) नश्च

11. ''विश् + नः''- सन्धियुक्त पद होगा-
(अ) विस्नः (इ) विशनः
(उ) विश्नः (ऋ) इनमें से कोई नही

12. 'प्रश्नः' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) प्रश् + नः (इ) प्रस् + नः
(उ) प्र + श्नः (ऋ) प्रशन् + ञः

13. ''विश्नः'' और ''प्रश्नः'' इत्यादि स्थानों में किस सूत्र से 'श्चुत्व' का निषेध किया जाता है–
(अ) नश्च (इ) नादिचि
(उ) स्तोः श्चुना श्चुः (ऋ) शात्

14. 'विश्नः' पद का अर्थ होगा–
(अ) सवाल (इ) गमन
(उ) शयन (ऋ) विष्णु

15. ष्टुत्व विधायक विधिसूत्र है–
(अ) तोः षि (इ) ष्टुना ष्टुः
(उ) ष्णान्ता षट् (ऋ) षः प्रत्ययस्य

16. ''रामस् + षष्ठः = रामष्षण्ठः''– यहाँ किस सूत्र से सन्धिकार्य हुआ है–
(अ) 'ष्टुना ष्टुः' से (इ) 'ष्णान्ता षट्' से
(उ) 'षष्ठी शेषे' से (ऋ) 'षः प्रत्ययस्य' से

17. 'रामष्टीकते' का अर्थ है–
(अ) राम सोता है (इ) राम देखता है
(उ) राम जाता है (ऋ) राम रुकता है

18. 'रामष्टीकते' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) रामष् + टीकते (इ) रामश् + टिकते
(उ) रामो + टीकते (ऋ) रामस् + टीकते

19. ''पेष् + ता'' – यहाँ सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) पेष्ता (इ) पेष्टा
(उ) पेष्ठा (ऋ) पेस्टा

1.(उ), 2.(अ), 3.(इ), 4.(उ), 5.(उ), 6.(इ), 7.(उ) 8.(अ), 9.(ऋ) 10.(इ), 11.(उ), 12.(अ), 13.(ऋ), 14.(इ),15.(इ) 16.(अ), 17. (उ), 18.(ऋ), 19.(इ),

20. ''तत् + टीका = तट्टीका''– यहाँ सन्धि है–
(अ) श्चुत्वसन्धि (इ) ष्टुत्व सन्धि
(उ) जश्त्व सन्धि (ऋ) चर्त्व सन्धि

21. ''चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे'' यहाँ 'ढौकसे' पद का अर्थ है–
(अ) जाना (इ) डाँटना
(उ) डरना (ऋ) छुपना

22. 'षट् सन्तः' और 'षट् ते' यहाँ ष्टुत्व का निषेध किस सूत्र से किया गया–
(अ) नेटि (इ) नेर्विशः
(उ) नस्तद्धिते (ऋ) न पदान्ताट्टोरनाम्

23. ''षड् + नाम्''– इसका सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) षट्नाम् (इ) षोणाम्
(उ) षण्णाम् (ऋ) षड्नाम्

24. ''षड् + नवतिः' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) षड्णवतिः (इ) षण्णवतिः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

25. ''षड् + नगर्यः = षण्णगर्यः'' यहाँ ''न पदान्ताट्टोरनाम्'' इस सूत्र से प्राप्त ष्टुत्व निषेध को किस वार्तिक से रोका गया–
(अ) अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्
(इ) नलोपश्च वा वाच्यः
(उ) न समासे (ऋ) पालकान्तान्न

26. ''सन् + षष्ठः = सन्षष्ठः'' यहाँ ''ष्टुना ष्टुः'' सूत्र से प्राप्त ष्टुत्व का निषेध किस सूत्र से किया गया–
(अ) न पदान्ताट्टोरनाम् (इ) शात्
(उ) तोः षि (ऋ) नलोपश्च वा वाच्यः

27. पद के अन्त में विद्यमान 'झल्' के स्थान पर ''झलां जशोऽन्ते'' सूत्र से क्या आदेश होगा–
(अ) झष् (इ) जश्
(उ) झर् (ऋ) झश्

28. 'वाक् + ईशः''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) वाकीशः (इ) वाग्धीशः
(उ) वागीशः (ऋ) वाक्ईशः

29. 'अजन्तः'– का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) अच् + अन्तः (इ) अज् + अन्तः
(उ) अज + अन्तः (ऋ) अच + अन्तः

30. ''जगत् + ईशः = जगदीशः''– में सन्धि है–
(अ) छत्व सन्धि (इ) चर्त्व सन्धि
(उ) जश्त्व सन्धि (ऋ) श्चुत्व सन्धि

31. ''जश्त्व सन्धि'' नही है–
(अ) वागत्र (इ) सुबन्तः
(उ) कृदन्तः (ऋ) तल्लयः

32. यदि पर में कोई अनुनासिक वर्ण हो और पूर्व पद के अन्त में 'यर्' प्रत्यहार के वर्ण हों, तो विकल्प से क्या आदेश होगा–
(अ) अननुनासिक (इ) अनुनासिक
(उ) अन्तःस्थ (ऋ) ऊष्म

33. ''एतत्+ मुरारिः = एतन्मुरारिः'' यहाँ किस सूत्र से सन्धि हुई है–
(अ) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा
(इ) अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः
(उ) अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा
(ऋ) मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः

34. ''तत् + मात्रम् = तन्मात्रम्'' – यहाँ अनुनासिक नकार का आदेश कैसा है–
(अ) वैकल्पिक (इ) नित्य
(उ) दोनों
(ऋ) कभी वैकल्पिक, कभी नित्य

35. 'यर्' के स्थान पर नित्य अनुनासिक आदेश कब होता है–
(अ) अनुनासिक वर्ण आदि में हो, ऐसे प्रत्ययों के परे होने पर
(इ) 'मात्रच्' 'मयट्' आदि प्रत्यय परे होने पर
(उ) ''प्रत्यये भाषायां नित्यम्'' इस वार्तिक के आधार पर
(ऋ) उपर्युक्त सभी

20. (इ) 21. (अ), 22. (ऋ), 23. (उ), 24. (उ), 25. (अ) 26. (उ), 27. (इ), 28. (उ), 29. (अ), 30. (उ), 31. (ऋ), 32. (इ) 33. (अ), 34. (इ), 35. (ऋ),

36. ''चित् + मयम्''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) चिद्मयम् (इ) चित्मयम्
(उ) चिन्मयम् (ऋ) चिदामयम्

37. 'वाङ्मयम्' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) वाक् + मयम् (इ) वाङ् + मयम्
(उ) वाक + मयम् (ऋ) वाङ्म + यम्

38. ''किञ्चित् + मात्रम्'' – सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) किञ्चित्मात्रम् (इ) किञ्चिन्मात्रम्
(उ) किञ्चिदमात्रम् (ऋ) किञ्चिल्मात्रम्

39. ''तोर्लि'' सूत्र से लकार के परे होने पर तवर्ग के स्थान पर क्या आदेश होता है–
(अ) अनुस्वार (इ) विसर्ग
(उ) परसवर्ण (ऋ) इनमें से कोई नहीं

40. ''तत् + लयः = तल्लयः'' यहाँ किस सूत्र से सन्धि का विधान किया गया है–
(अ) खरि च (इ) आदेः परस्य
(उ) झरो झरि सवर्णे (ऋ) तोर्लि

41. ''विद्वाल्लिँखति'' – इसका सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) विद्वान् + लिखति (इ) विद्वाल् + लिखति
(उ) विद्वाँन + लिखति (ऋ) विद्वान्र + लिखति

42. 'उत्थानम्' – का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) उत् + थानम् (इ) उद् + थानम्
(उ) उत् + स्थानम् (ऋ) उत्थ + आनम्

43. 'उत् + स्तम्भनम्' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) उत्तम्भनम् (इ) उत्स्तम्भनम्
(उ) उदस्तम्भनम् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

44. ''खरि च'' इस सूत्र से चर्त्व होने पर 'श् ष् स्' के स्थान पर क्या आदेश होंगे–
(अ) अ ब स (इ) च् ट् त्
(उ) श् ष् स् (ऋ) ह् य् व्

45. ''झयो होऽन्यतरस्याम्'' इस सूत्र से 'झय्' से परे हकार के स्थान पर विकल्प से क्या आदेश होता है–
(अ) विसर्ग (इ) पूर्वसवर्ण
(उ) परसवर्ण (ऋ) उपर्युक्त सभी

46. ''वाक् + हरिः'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) वाग्घरिः (इ) वाग्हरिः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) केवल 'इ'

47. 'समुद्धर्ता' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) समुद् + हर्ता (इ) समुद्ध + हर्ता
(उ) समृद्धि + हर्ता (ऋ) समुद् + आहर्ता

48. ''अच् + हीनम्'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) अच्हीनम् (इ) अद्घीनम्
(उ) अज्झीनम् (ऋ) अज्जीनम्

49. ''दूराद्धूते च''– इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) दूराद् + हूते च (इ) दूरात् + आहूते च
(उ) दूराद् + धूते च (ऋ) दूराध् + धूते च

50. पूर्व में 'झय्' प्रत्याहार का वर्ण हो और पर में 'अट्' प्रत्याहार का वर्ण हो, तथा मध्य में 'शकार' हो, तो ''शश्छोऽटि'' सूत्र से 'शकार' के स्थान पर क्या वैकल्पिक आदेश होगा–
(अ) छकार (इ) तकार
(उ) पञ्चमाक्षर (ऋ) सकार

51. ''तत् + शिवः'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) तच्छिवः (इ) तच्शिवः
(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

52. ''तच्छ्लोकेन'' इसका सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) तच् + श्लोकेन (इ) तत् + श्लोकेन
(उ) तत् + छ्लोकेन (ऋ) तत्च + लोकेन

53. 'अनुस्वार' विधायक सूत्र है–
(अ) मोऽनुस्वारः (इ) नश्चापदान्तस्य झलि
(उ) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः
(ऋ) केवल 'अ' और 'इ'

54. ''हरिम् + वन्दे''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) हरिः वन्दे (इ) हरिन् वन्दे
(उ) हरिं वन्दे (ऋ) उपर्युक्त सभी

55. ''मोऽनुस्वारः'' इस सूत्र के उदाहरण हैं–
(अ) शत्रुं जयति (इ) भारतं वन्दे
(उ) मातरं पृच्छसि (ऋ) उपर्युक्त सभी

36.(उ), 37.(अ), 38.(इ), 39.(उ), 40.(ऋ), 41.(अ), 42.(उ) 43.(अ), 44.(उ), 45.(इ), 46.(उ), 47.(अ) 48.(उ), 49.(अ), 50.(अ), 51.(उ), 52.(इ) 53.(ऋ), 54.(उ), 55.(ऋ),

56. ''यशान् + सि'' – ऐसी स्थिति में सन्धियुक्त रूप होगा–

(अ) यशांसि (इ) यशान्सि

(उ) यशोसि (ऋ) यशोंसिः

57. ''नश्चापदान्तस्य झलि'' – इस सूत्र का उदाहरण है–

(अ) नंस्यति, हंसि

(इ) मनांसि, पयांसि, यशांसि

(उ) आक्रंस्यते, श्रेयांसि

(ऋ) उपर्युक्त सभी

58. ''परसवर्ण'' विधायक विधि सूत्र है–

(अ) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः

(इ) मोऽनुस्वारः (उ) परश्च

(ऋ) अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः

59. 'शान्तः' – इस पद का ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः'' इस सूत्र से सन्धिविच्छेद होगा–

(अ) शाम् + तः (इ) शान् + तः

(उ) शान्त + अः (ऋ) शात् + तः

60. ''वा पदान्तस्य''– इस वैकल्पिक परसवर्णविधायक विधिसूत्र द्वारा 'त्वम् + करोषि'– ऐसी स्थिति में सन्धियुक्त रूप क्या होगा–

(अ) त्वं करोषि (इ) त्वङ्करोषि

(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

61. ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः'' इस सूत्र का उदाहरण नहीं है

(अ) अङ्कितः, अञ्चितः (इ) कुण्ठितः, गुम्फितः

(उ) दान्तः, गन्ता (ऋ) इनमें से कोई नहीं

62. ''सम् + राट्'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–

(अ) समराट् (इ) सम्राट

(उ) सम्राट (ऋ) सम्राट्

63. ''सम् + राट्'' – यहाँ 'सम्' के मकार के स्थान पर अनुस्वार न होकर 'मकार' ही रह जाता है। किस सूत्र से–

(अ) मो राजि समः क्वौ (इ) हे मपरे वा

(उ) मोऽनुस्वारः (ऋ) समः सुटि

64. 'वृक्षात् + लगुडम्'– यहाँ ''तोर्लि'' सूत्र से सन्धि होगी–

(अ) वृक्षादलगुडम् (इ) वृक्षाल्लगुडम्

(उ) वृक्षोलगुडम् (ऋ) वृक्षलगुडम्

65. ''उद् + कीर्णः'' का ससन्धिरूप होगा–

(अ) उद्कीर्णः (इ) उतकीर्णः

(उ) उन्कीर्णः (ऋ) उत्कीर्णः

66. ''सुहृत्क्रीडति''–इसका सन्धि विच्छेद होगा–

(अ) सुहृद् + क्रीडति (इ) सुहृत + क्रीडति

(उ) सुहद + अक्रीडति (ऋ) सुहृत् + अक्रीडत्

67. ''गम् + य + ते'' – इसका रूप होगा–

(अ) गंयते (इ) गम्यते

(उ) गंस्यते (ऋ) गच्छति

68. ''मन् + यते'' इसका रूप होगा–

(अ) मानयते (इ) मंस्यते

(उ) मन्यते (ऋ) मंयते

69. ''चतुर् + नाम्'' – इसका णत्व युक्तरूप होगा–

(अ) चतुर्णाम् (इ) चतुर्नाम्

(उ) चत्वारणाम् (ऋ) चतुरणाम्

70. ''पूष् + ना''– इसका णत्व विधान होकर रूप होगा–

(अ) पूस्ना (इ) पूश्णा

(उ) पूष्णा (ऋ) प्रुष्णा

71. ''पितृणाम्'' – इसका सन्धिविच्छेद होगा–

(अ) पितृ + णाम् (इ) पितृ + नाम्

(उ) पित + ऋणाम् (ऋ) पितृ + णाम्

72. व्याकरणशास्त्र में जो वर्ण किसी वर्ण को हटाकर, शत्रु की तरह बैठते हैं, वे कहे जाते हैं–

(अ) आदेश (इ) आगम

(उ) अनुबन्ध (ऋ) इत्संज्ञा

73. व्याकरणशास्त्र में जो वर्ण किसी वर्ण के पास मित्र की तरह आकर बैठते हैं, उन्हें कहते हैं–

(अ) आदेश (इ) इत्संज्ञक

(उ) आगम (ऋ) अनुबन्ध

56.(अ), 57.(ऋ) 58.(अ), 59.(अ), 60.(उ), 61.(ऋ), 62.(ऋ), 63.(अ), 64.(इ), 65.(ऋ), 66.(अ), 67.(इ), 68.(उ), 69.(अ), 70.(उ), 71.(इ), 72.(अ), 73.(उ),

74. समेलित करें–

(अ)	शत्रुवद्	(1)	आगमः
(ब)	मित्रवद्	(2)	अनुबन्धत्वम्
(स)	इत्संज्ञायोग्यत्वम्	(3)	आदेशः
(द)	उपदेशेऽजनुनासिक	(4)	इत्

(अ) अ-3 ब-1 स-2 द-4
(इ) अ-1 ब-2 स-3 द-4
(उ) अ-2 ब-1 स-4 द-3
(ऋ) अ-4 ब-2 स-3 द-4

75. ''सम् + स्कर्ता''– इसका शुद्ध रूप होगा–
(अ) सँस्कर्ता (इ) संस्स्कर्ता
(उ) संस्कर्ता (ऋ) उपर्युक्त सभी

76. 'सन् + शम्भुः – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) सञ्छम्भुः/सञ्च्छम्भुः
(इ) सञ्च्शम्भुः/सञ्शम्भुः
(उ) उपर्युक्त चारों रूप सही
(ऋ) केवल 'अ' सही है

77. 'शकार' के परे पदान्त 'नकार' को विकल्प से 'तुक्' का आगम होता है– यह बात किस सूत्र में कही गयी–
(अ) शि तुक् (इ) नश्च
(उ) तोः षि (ऋ) शात्

78. 'प्रत्यङ् + आत्मा'– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) प्रत्यगात्मा (इ) प्रत्यकात्मा
(उ) प्रत्यङ्ङात्मा (ऋ) उपर्युक्त सभी

79. ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्'' इस सूत्र से किसका आगम होता है–
(अ) 'ङमुट्' का (इ) 'ङ' का
(उ) ह्रस्व 'अ' का (ऋ) 'ङम्' का

80. 'सुगण्णीशः'– इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) सुगण् + णीशः (इ) सुगणु + ईशः
(उ) सुगण् + ईशः (ऋ) सुगण + इशः

81. ''सन् + अच्युतः= सन्नच्युतः''– यहाँ किसका आगम हुआ है–
(अ) 'नुट्' का (इ) 'सुट्' का
(उ) 'तुक्' का (ऋ) 'धुट्' का

82. 'खर्' परे रहते अथवा अवसान में स्थित 'रेफ' को ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः'' इस सूत्र से क्या आदेश होगा–
(अ) अनुस्वार (इ) विसर्ग
उ) अनुनासिक (ऋ) उपर्युक्त सभी

83. सिद्धान्तकौमुदी में ''सँस्स्कर्ता'' के कितने रूपों की सिद्धि दिखायी गयी है–
(अ) 100 (इ) 118
(उ) 111 (ऋ) 108

84. ''पुम् + कोकिलः'' इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) पुँस्कोकिलः (इ) पुंस्कोकिलः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

85. 'चक्रिन् + त्रायस्व' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) चक्रिँस्त्रायस्व (इ) चक्रिंस्त्रायस्व
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

86. 'कान् + कान्' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) कांस्कान् (इ) काँस्कान्
(उ) कान्कान् (ऋ) केवल 'अ' और 'इ'

87. ''शिव + छाया = शिवच्छाया'' – यहाँ किस सूत्र से 'तुक्' का आगम हुआ है–
(अ) छे च (इ) पदान्ताद्वा
(उ) शि तुक् (ऋ) समः सुटि

88. 'लक्ष्मी + छाया' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) लक्ष्मीछाया (इ) लक्ष्मीच्छाया
(उ) दोनों (ऋ) लक्ष्मिछाया

89. 'कान् + कान्' – ऐसी स्थिति में ''तस्य परमाम्रेडितम्'' इस सूत्र से किस पद की 'आम्रेडितसंज्ञा' हो गयी–
(अ) पूर्व 'कान्' की (इ) द्वितीय 'कान्' की
(उ) दोनों की (ऋ) केवल प्रथम 'कान्' की

90. हल् सन्धि युक्त पद नही है–
(अ) तच्छिवः (इ) तच्शिवः
(उ) तच्छ्लोकेन (ऋ) प्रार्णम्

74.(अ), 75.(ऋ), 76.(उ), 77.(अ), 78.(उ), 79.(अ), 80.(उ), 81.(अ), 82.(इ), 83.(ऋ), 84.(उ), 85.(उ), 86.(ऋ), 87.(अ), 88.(उ), 89.(इ), 90.(ऋ)

(iii) विसर्गसन्धिः

1. 'विष्णुः + त्राता' का ससन्धि रूप होगा–

(अ) विष्णुत्राता (इ) विष्णूत्राता

(उ) विष्णुःत्राता (ऋ) विष्णुस्त्राता

2. ''विसर्जनीयस्य सः'' इस सूत्र के अनुसार 'खर्' प्रत्याहार परे होने पर विसर्ग के स्थान पर क्या आदेश होता है–

(अ) रेफ (इ) सकार

(उ) उकार (ऋ) इनमें से कोई नहीं

3. रुत्वविधायक सूत्र है–

(अ) स-सजुषो रुः (इ) अतो रोरप्लुतादप्लुते

(उ) रो रि (ऋ) रोः सुपि

4. 'उकार' आदेश विधायक सूत्र है–

(अ) अतो रोरप्लुतादप्लुते (इ) हशि च

(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नही

5. विसर्ग सन्धि में यकार का लोप करने वाला सूत्र है–

(अ) रोऽसुपि (इ) हलि सर्वेषाम्

(उ) रो रि (ऋ) हशि च

6. ''भो भगोअघोअपूर्वस्य योऽशि'' इस सूत्र के अनुसार 'अश्' प्रत्याहार परे होने पर भो, भगो, अघो तथा अवर्ण पूर्व वाले 'रु' के स्थान पर क्या आदेश होता है–

(अ) यकार (इ) सकार

(उ) रेफ (ऋ) विसर्ग

7. 'अहन्' शब्द के अन्त्य 'नकार' के स्थान पर रेफ आदेश विधायक सूत्र है–

(अ) रो रि (इ) रोः सुपि

(उ) रोऽसुपि (ऋ) रि च

8. रेफ के परे रेफ होने पर किस सूत्र से पूर्व रेफ का लोप होता है–

(अ) रोः सुपि (इ) रि च

(उ) रोऽसुपि (ऋ) रो रि

9. ''ढो ढे लोपः'' सूत्र से किसका लोप होता है–

(अ) पूर्व ढकार का (इ) पर ढकार का

(उ) रेफ का (ऋ) सभी का

10. ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः'' यह सूत्र क्या विधान करता है–

(अ) गुण (इ) वृद्धि

(उ) दीर्घ (ऋ) लोप

11. ''हरिः + शेते'' का सन्धि रूप होगा–

(अ) हरिश्शेते (इ) हरिः शेते

(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) केवल 'अ'

12. 'शिवस् + अर्च्यः' – इसका ससन्धिरूप होगा–

(अ) शिवार्च्यः (इ) शिवरर्च्यः

(उ) शिवोचर्यः (ऋ) शिवोऽर्च्यः

13. ''शिवो वन्द्यः'' का सन्धि विच्छेद होगा–

(अ) शिव + वन्द्यः (इ) शिवः + वन्द्यः

(उ) शिवो + वद्यः (ऋ) शिवु + वन्द्यः

14. 'देवाः + इह' – इसका सन्धिरूप होगा–

(अ) देवा इह (इ) देवायिह

(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) कोई नहीं

15. 'भोः + देवाः' का ससन्धि रूप होगा–

(अ) भोः देवाः (इ) भोस देवाः

(उ) भोगदेवा (ऋ) भो देवाः

1. (ऋ), 2. (इ), 3. (अ), 4. (उ), 5. (इ), 6. (अ), 7. (उ) 8. (ऋ), 9. (अ) 10. (उ), 11. (उ), 12. (ऋ), 13. (इ), 14. (उ),15. (ऋ)

16. ''भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि'' इस सूत्र से 'यकार' आदेश तथा ''हलि सर्वेषाम्'' इस सूत्र से 'यकार' का लोप किन उदाहरणों में हुआ है–
(अ) भो देवाः (इ) भगो नमस्ते
(उ) अघो याहि (ऋ) उपर्युक्त सभी में

17. ''रो रि'' सूत्र से रेफ का लोप तथा ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः'' सूत्र से अण् को दीर्घ हुआ है–
(अ) पुना रमते (इ) हरी रम्यः
(उ) शम्भू राजते (ऋ) सभी में

18. ''पुना रमते' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) पुनः (र्) + रमते (इ) पुनो रमते
(उ) पुन + आरमते (ऋ) पुनस् + रमते

19. ''मनः (स्) + रथः = मनोरथः'' – यहाँ सन्धि है–
(अ) अच् सन्धि (इ) हल् सन्धि
(उ) विसर्ग सन्धि (ऋ) 'अ' और 'इ' दोनों

20. 'हरिर् + रम्यः' का सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) हरिर् रम्यः (इ) हरी रम्यः
(उ) हर्रिरम्यः (ऋ) हरिरम्यः

21. 'शम्भुर् + राजते' का ससन्धिरूप होगा–
(अ) शम्भू राजते (इ) शम्भु + राजते
(उ) शम्भुस्राजते (ऋ) शम्भुरु राजते

22. ''रो रि'' और 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' सूत्र का उदाहरण है–
(अ) कवी रचयति (इ) शिशू रोदिति
(उ) गुरू रुष्टः (ऋ) उपर्युक्त सभी

23. ''रामः + टङ्कारयति'' – इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) रामःटङ्कारयति (इ) रामष्टङ्कारयति
(उ) रामर्टङ्कारयति (ऋ) रामोटङ्कारयति

24. 'हरिश्चलति' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) हरिः + चलति (इ) हरि + चलति
(उ) हरौ + चलति (ऋ) हरे + चलति

25. 'नमः + करोति' – इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) नमस्करोति (इ) नमः करोति
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) केवल 'अ' सही

26. 'पुरः + करोति'– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) पुरस्करोति (इ) पुरःकरोति
(उ) पुरोकरोति (ऋ) पुरकरोति

27. 'तिरः + करोति' – इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) तिरस्करोति (इ) तिरःकरोति
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

28. 'सः + अपि' = क्या होगा–
(अ) साऽपि (इ) सस्ऽपि
(उ) सोऽपि (ऋ) सेऽपि

29. 'रामः + अस्ति'– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) रामाऽस्ति (इ) रामस्ति
(उ) रामेस्ति (ऋ) रामोऽस्ति

30. बालः + गच्छति'– क्या होगा–
(अ) बालो गच्छति (इ) बालर्गच्छति
(उ) बाल गच्छति (ऋ) सभी रूप

31. हरः + याति = क्या होगा–
(अ) हर याति (इ) हरो याति
(उ) हरौ याति (ऋ) हरोर्याति

32. 'वृक्षो वर्धते' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) वृक्षर् + वर्धते (इ) वृक्षः + वर्धते
(उ) वृक्ष + वर्धते (ऋ) वृक्षो + वर्धते

16. (ऋ), 17. (ऋ), 18. (अ), 19. (उ), 20. (इ) 21. (अ), 22. (ऋ), 23. (इ), 24. (अ), 25. (उ)
26. (अ), 27. (उ), 28. (उ), 29. (ऋ), 30. (अ), 31. (इ), 32. (इ),

33. 'नराः + आगच्छन्ति'– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) नरा आगच्छन्ति (इ) नरायागच्छन्ति
(उ) उक्त दोनों (ऋ) कोई नहीं

34. ''रामः + एति''= क्या होगा–
(अ) राम एति (इ) रामयेति
(उ) रामेति (ऋ) केवल 'अ' और 'इ'

35. ''जनः + इच्छति''– क्या होगा–
(अ) जन इच्छति (इ) जनयिच्छति
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) कोई नही

36. 'शत्रवः + आपतन्ति''= क्या होगा–
(अ) शत्रव आपतन्ति (इ) शत्रवयापतन्ति
(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

37. ''मुनयः + आप्नुवन्ति''– क्या होगा–
(अ) मुनय आप्नुवन्ति (इ) मुनययाप्नुवन्ति
(उ) दोनों (ऋ) कोई नहीं

38. ''ऋषयः + एते''– क्या होगा–
(अ) ऋषय एते (इ) ऋषययेते
(उ) दोनों (ऋ) कोई नही

39. ''अहन् + अहन्'' = क्या होगा–
(अ) अहोऽहः (इ) अहन्हः
(उ) अहरहः (ऋ) अहर्हः

40. ''अहर्गणः''– इसका सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) अहन् + गणः (इ) अहम् + गणः
(उ) अहर् + गणः (ऋ) अहो+ गणः

41. ''अहन् +भ्याम्'' = क्या होगा–
(अ) अहभ्यमि (इ) अहोभ्याम्
(उ) अहःभ्याम् (ऋ) अहोर्भ्याम्

42. ''अलिः + अयम्''– क्या होगा–
(अ) अलिः अयम् (इ) अलिरुयम्
(उ) अलिरयम् (ऋ) आलिरायम्

43. ''भानुः + उदेति'' = किम् ?
(अ) भानुरुदेति (इ) भानोदेति
(उ) भानूदेति (ऋ) भानवेदेति

44. ''सुधीः + एति'' = क्या होगा–
(अ) सुधीरैति (इ) सुधीरति
(उ) सुधीयैति (ऋ) सुधीरेति

45. ''गौः + अयम्'' = क्या होगा–
(अ) गौरुयम् (इ) गौरयम्
(उ) गौरोयम् (ऋ) गौऽयम्

46. ''कविः + वर्णयति'' = क्या होगा–
(अ) कविर्वर्णर्यति (इ) कवीवर्णयति
(उ) कविरावर्णयति (ऋ) कविर्वर्णयति

47. ''गुरुः + गच्छति'' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) गुरुगच्छति (इ) गुरोगच्छति
(उ) गुरुर्गच्छति (ऋ) गुरावगच्छति

48. ''नौः + याति''– इसका ससन्धि रूप क्या होगा–
(अ) नौःयाति (इ) नौयति
(उ) नौर्याति (ऋ) नौरोयाति

49. ''लक्ष्मीः + याति''– क्या होगा–
(अ) लक्ष्मीयाति (इ) लक्ष्मीरुयाति
(उ) लक्ष्मिर्याति (ऋ) लक्ष्मीर्याति

50. ''सः + शम्भुः'' = सन्धि होगी–
(अ) स शम्भुः (इ) सो शम्भुः
(उ) सस्शम्भुः (ऋ) सु शम्भुः

51. ''एषः + विष्णुः''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) एषो विष्णुः (इ) एष विष्णुः
(उ) एषय् विष्णुः (ऋ) कोई नहीं

52. ''सः + एष दाशरथी रामः''– इसका पद्य की पादशर्ति हेतु क्या रूप बनेगा–
(अ) सोष दाशरथी रामः (इ) सैष दाशरथी रामः
(उ) सेष दाशरथी रामः (ऋ) सौष दाशरथी रामः

53. 'श्रीः + एषा' = क्या होगा–
(अ) श्रीरैषा (इ) श्रीरेषा
(उ) श्रीर्षा (ऋ) श्रीरुषा

33. (उ), 34. (ऋ), 35. (उ), 36. (उ), 37. (उ), 38. (उ), 39. (उ), 40. (अ), 41. (इ), 42. (उ) 43. (अ), 44. (ऋ), 45. (इ), 46. (ऋ), 47. (उ) 48. (उ), 49. (ऋ), 50. (अ), 51. (इ), 52. (इ), 53. (इ)।

(iv) सन्धि-सङ्गमः

1. दीर्घसन्धि का उदाहरण है–
(अ) प्रत्येकम् (इ) एकैकः
(उ) उपेन्द्रः (ऋ) भानूदयः

2. ''इतोऽपि'' – इस पद में सन्धि है–
(अ) पूर्वरूपसन्धिः (इ) पररूपसन्धिः
(उ) प्रकृतिभावसन्धिः (ऋ) गुणसन्धिः

3. 'गुणसन्धि' का उदाहरण है–
(अ) दयार्थी (इ) यथैव
(उ) जलोर्मिः (ऋ) अद्यैव

4. वृद्धिसन्धि है–
(अ) प्रार्च्छति (इ) ऋणार्णम्
(उ) अक्षौहिणी (ऋ) सभी में

5. अयादिसन्धि का उदाहरण है–
(अ) भानुरुदेति (इ) सूर्योदयः
(उ) भवति (ऋ) यद्यपि

6. व्यञ्जनसन्धि का उदाहरण है–
(अ) वागीशः (इ) देवैश्वर्यम्
(उ) नायकः (ऋ) एकैकम्

7. विसर्गसन्धि का उदाहरण है–
(अ) विष्णोऽव (इ) बालो हसति
(उ) वाङ्महिमा (ऋ) देवर्णम्

8. पररूपसन्धि का उदाहरण है–
(अ) उपोषति (इ) कोऽपि
(उ) गङ्गैषा (ऋ) ममैव

9. ''चमू + उदधिः = चमूदधिः''– यहाँ सन्धि है–
(अ) गुणसन्धिः (इ) अयादिसन्धिः
(उ) पररूप सन्धिः (ऋ) दीर्घसन्धिः

10. ''तव + एव = तवैव'' में कौन सन्धि है–
(अ) गुणसन्धिः (इ) वृद्धिसन्धिः
(उ) यण् सन्धिः (ऋ) अयादिसन्धिः

11. ''पश्याम्यहम्''– इसका सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) पश्याम् + अहम् (इ) पश्यामि + अहम्
(उ) पश्याम + अहम (ऋ) पश्य + अहम्

12. ''ह्यासनम्''– इस यण्सन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) ह्य + आसनम्
(इ) ह्य + असनम्
(उ) हि + आसनम्
(ऋ) हि + आ + आसन

13. ''खल्वेषः'' – इस यण् सन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) खल्व् + एषः (इ) खलु + ऐषः
(उ) खल + एषः (ऋ) खलु + एषः

14. ''इवावभाति''– इस दीर्घसन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) इवाव् + अभाति (इ) इवावः + भाति
(उ) इव + अवभाति (ऋ) इव + आबभाति

15. ''तदैतदर्थम्''– इसका विच्छेद होगा–
(अ) तद् + ऐतदर्थम्
(इ) तत् + एतद् + अर्थम्
(उ) तत् + एतदर्थम्
(ऋ) तदा + एतत् + अर्थम्

16. ''मध्वास्वादनम्''– इस यण् सन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) मधु + वा + स्वादनम्
(इ) मध्व + स्वादनम्
(उ) मधु + आस्वादनम्
(ऋ) मध्वा + स्वादनम्

17. ''देवर्णम्'' – इस गुणसन्धि का विच्छेदः क्रियताम् ?
(अ) देव + ऋणम् (इ) देव + अर्णम्
(उ) देव + ॠणम् (ऋ) देवर् + णम्

18. ''दिक् + गजः''– इसका हल् सन्धि युक्त रूप होगा–
(अ) दिक्गजः (इ) दिग्गजः
(उ) दिध्गजः (ऋ) दिङ्गजः

1. (ऋ), 2. (अ), 3. (उ), 4. (ऋ), 5. (उ),6. (अ), 7. (इ) 8. (अ), 9. (ऋ) 10. (इ),
11. (इ), 12. (उ), 13. (ऋ), 14. (उ),15.(ऋ), 16. (उ), 17. (अ), 18. (इ),

19. ''कार्याणि + एव = कार्याण्येव'' यहाँ किस सूत्र से यण् सन्धि हुई है–

(अ) इको गुणवृद्धी

(इ) इग्यणः सम्प्रसारणम्

(उ) इको यणचि

(ऋ) इकोऽसवर्णे शाकल्यश्च

20. ''यावज्जीवम्''– इसका विच्छेद होगा–

(अ) यावद् + जीवम् (इ) यावन् + जीवम्

(उ) यावज् + जीवम् (ऋ) यावच् + जीवम्

21. ''भूयसोक्तम्''– इस गुणसन्धि का विच्छेद होगा–

(अ) भूयस् + ओक्तम् (इ) भूयसा + अक्तम्

(उ) भूय + सोक्तम् (ऋ) भूयसा + उक्तम्

22. ''महच्चित्रम्'' – इसका सन्धिविच्छेद करें–

(अ) महद् + चित्रम् (इ) महत् + चित्रम्

(उ) महस् + चित्रम् (ऋ) महच् + चित्रम्

23. ''मत्यायाशा''– इस अयादिसन्धि का विच्छेद करें–

(अ) मत्याय + आशा (इ) मत्यै + आशा

(उ) मत्यो + याशा (ऋ) मत्ये + आशा

24. ''विद्वज्जनः''– इसका सन्धिविच्छेद होगा–

(अ) विद्वज् + जनः (इ) विद्वस् + जनः

(उ) विद्वद् + जनः (ऋ) विद्वान् + जनः

25. ''हृदयौदार्यम्''– इस वृद्धि सन्धि का विच्छेद होगा–

(अ) हृदय + उदार्यम् (इ) हृदि + औदार्यम्

(उ) हृदय + औदार्यम् (ऋ) हृदयौ + दार्यम्

26. ''हरेश्शयनम्'' का विच्छेद होगा–

(अ) हरेश + शयनम् (इ) हरेश् + शयनम्

(उ) हरेः + शयनम् (ऋ) हरेः + श्यनम्

27. ''गोपी + उवाच''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–

(अ) गोपीवाच (इ) गोपोवाच

(उ) गोपीयवाच (ऋ) गोप्युवाच

28. 'देवौ + आसाते''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–

(अ) देवौसाते (इ) देवौ आसाते

(उ) देवावासतौ (ऋ) देवावासाते

29. ''अश्वः + तिष्ठति''– इसका सन्धिरूप होगा–

(अ) अश्वो तिष्ठति (इ) अश्वस्तिष्ठति

(उ) अश्व तिष्ठति (ऋ) अश्वः तिष्ठति

30. ''पयः + समुद्रः''– इसका सन्धिरूप होगा–

(अ) पयोसमुद्रः (इ) पयसमुद्रः

(उ) पयस्समुद्रः (ऋ) पयंसमुद्रः

31. ''शिष्यः + नमति''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–

(अ) शिष्यः नमति (इ) शिष्यस्नमति

(उ) शिष्य नमति (ऋ) शिष्यो नमति

32. ''रामम् + नमामि''– इसका ससन्धि रूप होगा–

(अ) रामम् नमामि (इ) रामं नमामि

(उ) रामाय नमामि (ऋ) राममन्मामि

33. ''कृष्णः + गच्छति''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–

(अ) कृष्णो गच्छति (इ) कृष्णः गच्छति

(उ) कृष्णस्गाच्छति (ऋ) कृष्ण गच्छति

34. ''रामः + इच्छति'' – इसका सन्धिरूप होगा–

(अ) रामो इच्छति (इ) रामेच्छति

(उ) रामः इच्छति (ऋ) राम इच्छति

35. ''कस्मात् + चित्''– इसका सन्धिरूप होगा–

(अ) कस्मिश्चित् (इ) कश्मश्चित्

(उ) कस्माच्चित् (ऋ) कस्मात्चित्

36. ''विभो + अवेहि''– इसका सन्धिरूप होगा–

(अ) विभोऽवेहि (इ) विभोवेहि

(उ) विभौवेहि (ऋ) विभावेहि

37. ''सम्राट् + गच्छति''– इसका सन्धिरूप होगा–

(अ) सम्राट्गच्छति (इ) सम्राटगच्छति

(उ) सम्राड्गच्छति (ऋ) सम्राडगच्छति

38. ''अमी + ईशाः''– यहाँ सन्धियुक्त पद होगा–

(अ) अमीशाः (इ) अमी ईशाः

(उ) अम्यीशाः (ऋ) अम्योशाः

39. ''महा + ऋषिः''– इसका सन्धियुक्त पद होगा–

(अ) महार्षिः (इ) महर्षिः

(उ) महाऋषिः (ऋ) महेर्षि

19. (उ),20. (अ) 21. (ऋ), 22. (इ), 23. (इ), 24. (उ), 25. (उ) 26. (उ), 27. (ऋ), 28. (ऋ), 29. (इ), 30. (उ), 31. (ऋ), 32. (इ), 33. (अ), 34. (ऋ), 35. (उ), 36. (अ), 37. (उ),38. (इ), 39. (इ),

40. ''तव + लृकारः'' इसका गुण सन्धिरूप होगा–
(अ) तवलृकारः (इ) तवोल्कारः
(उ) तवल्कारः (ऋ) तवालृकारः

41. 'प्र + एजते' – यहाँ पररूप होकर पद सिद्ध होगा–
(अ) प्रैजते (इ) प्रेजते
(उ) प्रोजते (ऋ) प्रयजते

42. ''सु + उक्तिः''– यहाँ दीर्घसन्धियुक्त पद होगा–
(अ) सुक्तिः (इ) सूक्तिः
(उ) स्वक्तिः (ऋ) स्वोक्तिः

43. 'गायकः' इस अयादि सन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) गो + अकः (इ) गौ + अकः
(उ) गै + अकः (ऋ) गे + अकः

44. 'वर्षर्तुः' – इस गुणसन्धि का सही विच्छेद होगा–
(अ) वर्षा + ऋतुः (इ) वर्षम् + ऋतु
(उ) वर्ष + अर्तुः (ऋ) वर्षु + ऋतु

45. ''संस्कृतगङ्गोर्मिः''– इस गुणसन्धि का विच्छेदः क्रियताम् ?
(अ) संस्कृगङ्ग + ओर्मिः
(इ) संस्कृत + गङ्गा + ओर्मिः
(उ) संस्कृतगङ्गा + ऊर्मिः
(ऋ) संस्कृत + गङ्गे + उर्मिः

46. ''द्वावपि''– इस अयादिसन्धि का समीचीनं सन्धिविच्छेदः किम् ?
(अ) द्वा + अपि (इ) द्वो + अपि
(उ) द्वाव् + अपि (ऋ) द्वौ + अपि

47. ''नमस्ते'' – इसका सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) नम + अस्ते (इ) नमः + ते
(उ) नम् + ते (ऋ) नम + नस्ते

48. 'अन्वयः' – इस यण् सन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) अनो + अयः (इ) अनु + इयः
(उ) अनु + अयः (ऋ) अनि + अयः

49. ''सुखार्तः''– इस वृद्धिसन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) सुख + आर्तः (इ) सुख + अर्तः
(उ) सुखो + ऋतः (ऋ) सुख + ऋतः

50. 'अनु + अभवत्'– इसका यणसन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) अन्वभवत् (इ) अनवाभवत्
(उ) अनुऽभवत् (ऋ) अन्वाभवत्

51. ''भू + ऊर्ध्वम्''– इसका दीर्घ सन्धि युक्त रूप होगा–
(अ) भूर्ध्वम् (इ) भूरुर्ध्वम्
(उ) भूर्धम् (ऋ) भोर्ध्वम्

52. 'सत् + आचारः'– इसका सन्धियुक्त रूप है–
(अ) सत्याचारः (इ) सदाचारः
(उ) सताचारः (ऋ) सद् आचारः

53. 'महा + औषधम्'– वृद्धिसन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) महोषधम् (इ) मह्योषधम्
(उ) महौषधम् (ऋ) महाषधम्

54. 'भो + अनम्'– इसका अयादि सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) भोवनम् (इ) भवनम्
(उ) भोऽनम् (ऋ) भावनम्

55. ''जगत् + जालम्''– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) जगतजालम् (इ) जगद्जालम्
(उ) जगज्जालम् (ऋ) जगत्जालम्

56. 'तत् + ज्ञानम्'– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) तत्ज्ञानम् (इ) तद्ज्ञानम्
(उ) तदज्ञानम् (ऋ) तज्ज्ञानम्

57. 'उत् + ज्वलः' – इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) उज्जवलः (इ) उत्ज्वलः
(उ) उद्जवलः (ऋ) उज्ज्वलः

58. 'आशीः + वादः'– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) आर्शिवादः (इ) आशीवादः
(उ) आशीर्वादः (ऋ) आशीरवादः

59. 'महत्' + लावण्यम्'– इसका ससन्धि रूप होगा–
(अ) महत्लावण्यम् (इ) महद्लावण्यम्
(उ) महालावण्यम् (ऋ) महल्लावण्यम्

40. (उ), 41. (इ), 42. (इ) 43. (उ), 44. (अ), 45. (उ), 46. (ऋ), 47. (इ) 48. (उ), 49. (ऋ), 50. (अ), 51. (अ), 52. (इ) 53. (उ), 54. (इ), 55. (उ), 56. (ऋ), 57. (ऋ) 58. (उ), 59. (ऋ),

60. 'चम् + चलः'– इसका सन्धियुक्तरूप होगा–
(अ) चंचलः (इ) चम्चलः
(उ) चन्चलः (ऋ) चञ्चलः

61. 'कस्मिन् + चित्' – इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) काश्मिश्चित् (इ) कस्मिस्चित्
(उ) कस्मिंश्चित् (ऋ) कस्मिन्शिचत्

62. ''लिढ् + ढः'' – इसका सन्धियुक्तरूप होगा–
(अ) लढ्ढिः (इ) लिढः
(उ) लीढः (ऋ) लीड्ढः

63. ''षट् + आननः''– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) षटाननः (इ) षोडाननः
(उ) षढाननः (ऋ) षडाननः

64. 'शोध + छात्रः'– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) शोधछात्रः (इ) शोधश्छात्रः
(उ) शोधच्छात्रः (ऋ) शोधस्छात्रः

65. प्रकृतिभाव सन्धि का उदाहरण है–
(अ) प्रत्येकम् (इ) मुनी इमौ
(उ) इन्द्राग्निः (ऋ) मुनि इमौ

66. 'पृथक् + विना'– इसका सन्धियुक्त रूप होगा–
(अ) पृथग्विना (इ) पृथक्बिना
(उ) पृथाविना (ऋ) पृथगविना

67. दीर्घसन्धि का उदाहरण है–
(अ) मातृणम् (इ) ऋणार्णम्
(उ) दशानार्णम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

68. 'तत्रैवोक्तम्'– इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) तत्र + एव + उक्तम्
(इ) तत्र + एव + ओक्तम्
(उ) तत्रै + वोक्तम्
(ऋ) तत्र + इव + उक्तम्

69. 'राज्याधिपतिः' – क्या यहाँ दीर्घसन्धि है–
(अ) न (इ) आम्
(उ) किञ्चित् अस्ति (ऋ) कदाचित् न भवति

70. 'संस्कृतोपयोगी''– यहाँ कौन सन्धि है–
(अ) अयादिसन्धि (इ) गुणसन्धि
(उ) दीर्घसन्धिः (ऋ) पूर्वरूप सन्धि

71. ''चैव''– इस वृद्धिसन्धि का विच्छेद होगा–
(अ) च + इव (इ) च + एव
(उ) चे + एव (ऋ) चि + एव

72. ''तत् + लिखति''– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) तद्लिखति (इ) तल्लिखति
(उ) तत्लिखति (ऋ) तंलिखति

73. 'यथाह'– इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) यथा + ह (इ) यथा + अह
(उ) यथ + आह (ऋ) यथा + आह

74. 'न + इमे = नेमे'– यहाँ सन्धि है–
(अ) वृद्धिसन्धि (इ) गुणसन्धि
(उ) यण् सन्धि
(ऋ) सन्धि नही, केवल संयोग है

75. 'पुनः + अपि'– इसका ससन्धि रूप होगा–
(अ) पुनाऽपि (इ) पुनोऽपि
(उ) पुनरपि (ऋ) पुनारपि

76. भ्रातृ + ऋद्धिः = भ्रातृद्धिः– यहाँ सन्धि है–
(अ) गुणसन्धि (इ) वृद्धिसन्धि
(उ) दीर्घसन्धि (ऋ) इनमें से कोई नही

77. 'एतांस्तथा'– इसका विच्छेद होगा–
(अ) एताः + तथा (इ) एताभि + तथा
(उ) एताम् + तथा (ऋ) एतान् + तथा

78. 'विधुरुदेति'– यहाँ कौन सी सन्धि है–
(अ) गुणसन्धि (इ) यण् सन्धि
(उ) विसर्गसन्धि (ऋ) हल् सन्धि

79. ''देवौ + अवलोक्य = देवावलोक्य'' यहाँ सन्धि है–
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) अयादि (ऋ) दीर्घ

80. 'गुरुः + आद्रियते'– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) गुर्वाद्रियते (इ) गुरुराद्रियते
(उ) गुरोऽर्द्रियते (ऋ) गुरूर्द्रियते

81. 'शक + अन्धुः = शकन्धुः'– अत्र किं वाच्यम्?
(अ) पूर्वरूपं वाच्यम् (इ) पररूपं वाच्यम्
(उ) दीर्घः वाच्यः (ऋ) गुणः वाच्यः

60. (ऋ), 61. (उ), 62.(उ) 63. (ऋ), 64. (उ), 65. (इ), 66. (अ), 67.(अ), 68. (अ), 69. (इ), 70. (इ), 71. (इ), 72. (इ), 73. (ऋ), 74. (इ), 75. (उ), 76. (उ), 77. (ऋ), 78. (उ), 79. (उ), 80. (इ), 81. (इ),

82. 'शुचावृषिः' – सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) शुचा + वृषिः (इ) शुचौ + ऋषिः
(उ) शुचौ + वृषिः (ऋ) शुचाव् + ऋषिः

83. 'नैवम् नैनम्'– यहाँ सन्धि है–
(अ) गुण (इ) वृद्धि
(उ) पररूप (ऋ) अयादि

84. ''एत्येधत्यूठ्सु'' – इस सूत्र से क्या आदेश होता है–
(अ) गुणादेशः (इ) अयादेशः
(उ) दीर्घादेशः (ऋ) वृद्ध्यादेशः

85. ''वद + इति = वदेति''– यहाँ सन्धि है–
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) पररूप (ऋ) पूर्वरूप

86 ''नील + उत्पलम्– नीलोत्पलम्'' यहाँ सन्धि है–
(अ) वृद्धि (इ) दीर्घ
(उ) यण् (ऋ) गुण

87. 'षड् + नवतिः – षण्णवतिः'– यहाँ सन्धि है–
(अ) विसर्ग सन्धि (इ) हल् सन्धि
(उ) यण् सन्धि
(ऋ) यान्तावान्तादेश सन्धि

88. वृद्धिसन्धि का उदाहरण है–
(अ) प्रथमैकवचनम् (इ) द्वितीयैकवचनम्
(उ) तृतीयैकवचनम् (ऋ) सभी

89. ''रमैक्यम्''– का सन्धि विच्छेद है–
(अ) रमा + ऐक्यम् (इ) रम + एक्यम्
(उ) रम् + ऐक्यम् (ऋ) राम + ऐक्यम्

90. अयादिसन्धि का उदाहरण है–
(अ) इत्यादि (इ) विष्णवे
(उ) सुध्युपास्यः (ऋ) इनमें से कोई नहीं

91. प्रकृतिभाव सन्धि का उदाहरण है–
(अ) इति अपि (इ) शिव इन्द्रः
(उ) बालकौ अत्र (ऋ) विष्णू इमौ

92. छत्वसन्धि का उदाहरण है–
(अ) संयमः (इ) तथैव
(उ) तच्छिवः (ऋ) सच्चित्

93. 'पुना रमते'– यहाँ कौन-सा सूत्र प्रयुक्त है–
(अ) रो रि (इ) हशि च
(उ) रोऽसुपि (ऋ) अनचि च

94. ''वटो + ऋक्षः = वटवृक्षः'' यहाँ सन्धि है–
(अ) अयादि सन्धि (इ) गुणसन्धि
(उ) वृद्धिसन्धि (ऋ) पूर्वरूप सन्धिः

95. 'शिवेहि'– का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) शिव + हि (इ) शिव + हि
(उ) शिव + आ + इहि (ऋ) शिवो + हि

96. ''सम् + यमः''– इसका ससन्धिरूप होगा–
(अ) संय्यमः (इ) संयमः
(उ) सोयमः (ऋ) सङ्गयमः

97. 'सञ्जयः + उवाच'– यहाँ ससन्धिरूप होगा–
(अ) सञ्जयोवाच (इ) सञ्जय उवाच
(उ) सञ्जयुवाच (ऋ) अत्र सन्धिः न भवति

98. 'संस्कृत + उदकम्'– संस्कृतोदकम् यहाँ सन्धि है–
(अ) वृद्धि (इ) गुण
(उ) दीर्घ (ऋ) अयादि

99. ''न + अत्र''– इसका सन्धियुक्तं पदं किम्–
(अ) नाऽत्र (इ) नत्र
(उ) नात्र (ऋ) नैत्र

100. 'भोज्योष्णम्' इसका सन्धि विच्छेदः क्रियताम् –
(अ) भोज्यु + उष्णम् (इ) भोजी + उष्णम्
(उ) भोजो + ओष्णम् (ऋ) भोज्य + उष्णम्

101. 'गृहेऽपि' – इसका सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) गृहे + अपि (इ) गृहे + पि
(उ) गृहा + अपि (ऋ) गृहम् + अपि

102. ''सन्धिः'' – इस पद में प्रत्यय है–
(अ) क्तिन् (इ) णिनि
(उ) क्विप् (ऋ) कि

103. वाक्य में सन्धिकार्य होता है–
(अ) अनिवार्य (इ) विवक्षाधीन
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नही

82.(इ), 83. (इ), 84. (ऋ), 85. (इ), 86. (ऋ), 87. (इ), 88. (ऋ), 89. (अ), 90. (इ), 91. (ऋ), 92.(उ), 93. (अ) 94. (अ), 95. (उ), 96. (इ), 97. (इ), 98. (इ), 99. (उ), 100. (ऋ), 101. (अ), 102. (ऋ), 103. (इ),

104. सन्धियाँ कितनी मानी जाती हैं–
(अ) 4 (इ) 3
(उ) 5 (ऋ) 6

105. सन्धि के भेदों में नही गिना जाता है–
(अ) अच् सन्धि, हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि
(इ) प्रकृतिभाव सन्धि
(उ) स्वादिसन्धि
(ऋ) उणादिसन्धि

106. छः प्रकार के व्याकरणिक सूत्रों में नहीं गिना जाता है–
(अ) संज्ञासूत्र, परिभाषा सूत्र
(इ) विधिसूत्र, नियम सूत्र
(उ) अतिदेशसूत्र, अधिकार सूत्रम्
(ऋ) कामसूत्र, रेखीय सूत्र

107. संहिता नित्य (अनिवार्य) मानी जाती है–
(अ) एक पद में (इ) धातूपसर्ग से
(उ) समास में (ऋ) उपर्युक्त सभी में

108. कौन-सा वेदाङ्ग वेद पुरुष का मुख माना जाता है–
(अ) निरुक्त (इ) कल्प
(उ) शिक्षा (ऋ) व्याकरण

109. 'लुक् संज्ञा' किसकी होती है–
(अ) प्रत्यय की (इ) प्रत्यय लोप की
(उ) प्रत्याहार की (ऋ) प्रयत्न की

110. 'पूर्वत्रासिद्धम्' अष्टाध्यायी के अष्टम अध्याय के किस पाद का कौन सा सूत्र है–
(अ) द्वितीय पाद का प्रथम सूत्र
(इ) द्वितीय पाद का द्वितीय सूत्र
(उ) प्रथम पाद का प्रथम सूत्र
(ऋ) तृतीय पाद का प्रथम सूत्र

111. "वां काल इव कालः" यहाँ वाम् पद में विभक्ति है–
(अ) तृतीया एकवचन (इ) द्वितीया एकवचन
(उ) षष्ठी एकवचन (ऋ) षष्ठी बहुवचन

112. 'अल्' प्रत्याहार में कितने वर्ण हैं–
(अ) 40 (इ) 41
(उ) 42 (ऋ) 43

113. अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय तथा यम वर्णो को क्या कहा जाता है –
(अ) यम (इ) विसर्ग
(उ) अयोगवाह (ऋ) इनमें से कोई नहीं

114. किस वर्ग के वर्णों के उच्चारण में जिह्वा का स्पर्श नही होता है–
(अ) तवर्ग (इ) टवर्ग
(उ) चवर्ग (ऋ) पवर्ग

115. दन्तस्थानीय और ओष्ठस्थानीय वर्ण माना जाता है–
(अ) ट (इ) व
(उ) ऐ (ऋ) ओ

116. निम्न में कौन सा आगम नित्य होता है–
(अ) कुक्-टुक् (इ) तुक्
(उ) धुट् (ऋ) ङमुट्

117. अन्तस्थ वर्ण 'र' को किस नाम से जाना जाता है–
(अ) रेफ (इ) रिफ्
(उ) रकार (ऋ) इनमें से कोई नहीं

118. ल, श और कवर्ग की इत्संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(अ) चुटू (इ) हलन्त्यम्
(उ) लशक्वतद्धिते (ऋ) अदर्शनं लोपः

104. (उ), 105. (ऋ), 106. (ऋ), 107. (ऋ), 108. (ऋ), 109. (इ), 110. (अ) 111. (ऋ), 112. (उ), 113. (उ), 114. (ऋ) 115. (इ), 116. (ऋ), 117. (अ), 118. (उ)

3. समास–गङ्गा (भाग-एक)

1. परार्थाभिधान क्या है–

(अ) वृत्ति (इ) विग्रह
(उ) कारक (ण्) क्रिया

2. 'वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं' क्या है–

(अ) प्रतिपदिक (इ) कारक
(उ) विग्रह (ण्) क्रिया

3. 'भूतपूर्वः' में कौन समास है–

(अ) तत्पुरुष (इ) कर्मधारय
(उ) अव्ययीभाव (ण्) सुप्सुपा

4. 'अधिहरि' का अलौकिक विग्रह क्या है–

(अ) हरि ङि अधि (इ) हरि सु अधि
(उ) हरि ङस् अधि (ण्) हरि अम् अधि

5. समास में 'प्रथमानिर्दिष्ट' की संज्ञा क्या है–

(अ) नपुंसक (इ) अव्ययीभाव
(उ) उपसर्जन (ण्) उपसर्ग

6. 'उपकृष्णम्' में 'उप' का अर्थ है–

(अ) विभक्ति (इ) समीप
(उ) समृद्धि (ण्) अत्यय

7. 'मद्राणां समृद्धिः' का सामासिक पद होगा–

(अ) मद्रम् (इ) मद्रसमृद्धिः
(उ) सुमद्रम् (ण्) सुमद्रायाम्

8. 'दुर्यवनम्' में कौन समास है–

(अ) कर्मधारय (इ) बहुव्रीहि
(उ) अलुक् (ण्) अव्ययीभाव

9. 'मक्षिकाणाम् अभावः' का सामासिक पद होगा–

(अ) मसिकाभावः (इ) निर्मक्षिकम्
(उ) निर्माक्षकाणाम् (ण्) निर्मक्षिका

10. 'अतिहिमम्' में 'अति' अव्यय का अर्थ होगा–

(अ) समीप (इ) समृद्धि
(उ) अभाव (ण्) अत्यय

11. ''विष्णोः पश्चात्'' = क्या होगा –

(अ) पश्चविष्णुः (इ) अनुविष्णु
(उ) अन्तविष्णू (ण्) अनुविष्णोः

12. 'प्रत्यर्थम्' में समास है-

(अ) केवल समास (इ) अव्ययीभाव
(उ) द्विगुसमास (ण्) तत्पुरुषसमास

13. 'शक्तिम् अनतिक्रम्य'– इसका सामासिक पद होगा–

(अ) यथाशक्तिः (इ) यथाशक्तिम्
(उ) यथाशक्ति (ण्) अनतिक्रान्तशक्तिः

14. ''हरेः सादृश्यम्'' = 'सहरि' में समासविधायक सूत्र है–

(अ) ''अव्ययीभावे चाकाले''
(इ) ''अव्ययीभावश्च''
(उ) ''अव्ययीभावः''
(ण्) ''अव्ययं विभक्ति-समीप------''

15. ''क्षत्राणां सम्पत्तिः = सक्षत्रम्'' में 'सह' को 'स' आदेश किस सूत्र से हुआ है –

(अ) ''अव्ययं विभक्तिसमीप....''
(इ) ''अव्ययीभावे चाकाले''
(उ) ''तृतीया सप्तम्योर्बहुलम्''
(ण्) ''अव्ययीभावः''

16. 'सचक्रम्' में अव्ययं का अर्थ क्या है–

(अ) समृद्धि (इ) अत्यय
(उ) यौगपद्य (ण्) पश्चात्

17. 'पञ्चगङ्गम्' में कौन समास है–

(अ) द्विगु (इ) अव्ययीभाव
(उ) तत्पुरुष (ण्) द्वन्द्व

18. 'द्वयोर्मुनयोः समाहारः द्वियमुनम्' यहाँ कौन समास है–

(अ) अव्ययीभाव (इ) तत्पुरुष
(उ) द्विगु (ण्) बहुव्रीहि

1. (अ), 2. (उ), 3. (ण्), 4. (अ), 5. (उ),6. (इ), 7. (उ) 8. (ण्), 9. (इ) 10. (ण्), 11. (इ), 12. (इ), 13. (उ), 14. (ण्),15.(इ) 16. (उ), 17. (इ), 18. (अ),

19. ''आत्मनि अधि'' का समस्तपद होगा–
(अ) अध्यात्मा (इ) अध्यात्मः
(उ) अध्यात्मम् (ण्) अध्यात्मनि

20. 'उपशरदम्' में समासान्त प्रत्यय क्या है–
(अ) अ (इ) टच्
(उ) ट (ण्) इनमें से कोई नहीं

21. 'उपराजम्' में 'टि' का लोप किस सूत्र से होता है–
(अ) अनश्च (इ) ऋयः
(उ) नस्तद्धिते (ण्) अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः

22. 'तत्पुरुषः' यह कैसा सूत्र है–
(अ) विधि (इ) परिभाषा
(उ) नियम (ण्) अधिकार

23. ''कृष्णश्रितः'' में कौन सा समास है–
(अ) द्वितीया तत्पुरुष (इ) तृतीया तत्पुरुष
(उ) चतुर्थीतत्पुरुष (ण्) षष्ठीतत्पुरुष

24. किसके साथ द्वितीयान्त का समास नहीं होता है–
(अ) श्रित (इ) पतित
(उ) भय (ण्) प्राप्त

25. ''शङ्कुलया खण्डः= शङ्कुलाखण्डः'' में समास विधायक सूत्र कौन है–
(अ) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(इ) तत्पुरुषः
(उ) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
(ण्) सह सुपा

26. 'हरिणा त्रातः – हरित्रातः' में समास विधायक सूत्र कौन है–
(अ) सह सुपा
(इ) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
(उ) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(ण्) तत्पुरुषः

27. 'नखभिन्नः' में कौन समास है–
(अ) पञ्चमी तत्पुरुष (इ) बहुव्रीहि
(उ) सप्तमी तत्पुरुष (ण्) तृतीया तत्पुरुष

28. चतुर्थ्यन्त का किसके साथ समास होता है–
(अ) अतीत (इ) बलि
(उ) भय (ण्) आपन्न

29. 'चतुर्थ्यन्त' पद का किसके साथ समास नहीं होता है–
(अ) हित (इ) सुख
(उ) अतीत (ण्) रक्षित

30. ''यूपदारु'' में कौन समास है–
(अ) चतुर्थी तत्पुरुष (इ) षष्ठी तत्पुरुष
(उ) पञ्चमी तत्पुरुष (ण्) कर्मधारय

31. इनमें 'चतुर्थी तत्पुरुष' समास किसमें है–
(अ) शङ्कुलाखण्डः (इ) कृष्णश्रितः
(उ) राजपुरुषः (ण्) गोरक्षितम्

32. इनमें 'चतुर्थी तत्पुरुष' समास किसमें नहीं है–
(अ) चोरभयम् (इ) भूतबलिः
(उ) गोहितम् (ण्) द्विजार्थः

33. 'पञ्चम्यन्त' पद का किसके साथ समास होता है–
(अ) हित (इ) भय
(उ) अतीत (ण्) पतित

34. 'चोरभयम्' में कौन समास है–
(अ) षष्ठी तत्पुरुष (इ) सप्तमी तत्पुरुष
(उ) पञ्चमी तत्पुरुष (ण्) बहुव्रीहि

35. ''राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः'' में समासविधायक सूत्र है–
(अ) प्राक्कडारात् समासः (इ) सह सुपा
(उ) तत्पुरुषः (ण्) षष्ठी

36. 'पूर्वं कायस्य' का समस्तपद होगा–
(अ) कायपूर्वम् (इ) पूर्वकायः
(उ) प्राक्कायम् (ण्) पूर्वकायम्

37. 'अर्धं पिप्पल्याः' = क्या होगा–
(अ) पिपल्ल्यर्धम् (इ) अधिपिप्पली
(उ) अर्धपिप्पली (ण्) पिपल्ल्यर्धः

38. 'सप्तम्यन्त' का किसके साथ समास होता है–
(अ) भय (इ) श्रित
(उ) सुख (ण्) शौण्ड

19. (उ),20. (इ) 21. (उ), 22. (ण्), 23. (अ), 24. (उ), 25. (उ) 26. (उ), 27. (ण्), 28. (इ), 29. (उ), 30. (अ), 31. (ण्), 32. (अ), 33. (इ), 34. (उ), 35. (ण्), 36. (इ), 37. (उ),38. (ण्),

39. 'अक्षशौण्डः' में कौन समास है–
(अ) षष्ठी तत्पुरुष (इ) सप्तमी तत्पुरुष
(उ) तृतीया तत्पुरुष (ण्) कर्मधारय

40. 'सप्तर्षयः' में कौन समास है–
(अ) तत्पुरुष (इ) अव्ययीभाव
(उ) बहुव्रीहि (ण्) द्वन्द्व

41. 'सप्त च ते ऋषयः = सप्तर्षयः' में समासविधायक सूत्र है–
(अ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(इ) तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः
(उ) दिक्संख्ये संज्ञायाम्
(ण्) तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च

42. 'पौर्वशालः' पद का विग्रह क्या होगा–
(अ) पौर्व एव शालः (इ) पूर्वशाला यस्य सः
(उ) शालायाः पूर्वम् (ण्) पूर्वस्यां शालायां भवः

43. 'पञ्चगवधनः' में समासविधायक सूत्र है–
(अ) दिक्संख्ये संज्ञायाम्
(इ) तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च
(उ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(ण्) तत्पुरुषः

44. 'पञ्चगवम्' में कौन समास है–
(अ) बहुव्रीहि (इ) द्विगु
(उ) द्वन्द्व (ण्) अव्ययीभाव

45. 'पञ्चगवम्' का विग्रह क्या है–
(अ) पञ्च गावः यस्य सः
(इ) पञ्चानां गवां समाहारः
(उ) पञ्च एव गावः
(ण्) पञ्चभिः गोभिः युक्तम्

46. 'नीलम् उत्पलम् = नीलोत्पलम्' में किस सूत्र से समास हुआ है–
(अ) तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः
(इ) तत्पुरुषः
(उ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(ण्) सह सुपा

47. 'नीलोत्पलम्' में कौन समास है–
(अ) द्विगु (इ) द्वन्द्व
(उ) कर्मधारय (ण्) बहुव्रीहि

48. 'घन इव श्यामः = घनश्यामः' में समास विधायक सूत्र कौन है–
(अ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(इ) तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः
(उ) तत्पुरुषः
(ण्) उपमानानि सामान्यवचनैः

49. 'घनश्यामः' में कौन समास है–
(अ) बहुव्रीहि (इ) कर्मधारय
(उ) द्वन्द्व (ण्) द्विगु

50. 'शाकपार्थिवः' का विग्रह क्या है–
(अ) शाकेन पार्थिवः (इ) शाके पार्थिवः
(उ) शाकस्य पार्थिवः (ण्) शाकप्रियः पार्थिवः

51. 'न ब्राह्मणः अब्राह्मणः' इसमें समास-विधायक सूत्र कौन है–
(अ) नञ्
(इ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(उ) बहुलम् (ण्) सह सुपा

52. ''अनश्वः'' में कौन समास है–
(अ) पञ्चमी तत्पुरुष (इ) षष्ठी तत्पुरुष
(उ) नञ् तत्पुरुष (ण्) कर्मधारय

53. यहाँ 'नञ् तत्पुरुष' समास है–
(अ) अनुदरा (इ) अनुगतः
(उ) अपकारः (ण्) अधिकृतम्

54. यहाँ 'नञ् तत्पुरुष' समास नहीं है–
(अ) अनागतः (इ) अनधिकारः
(उ) अमावस्या (ण्) अलक्षणम्

55. 'कुत्सितः पुरुषः' का समस्तपद होगा–
(अ) कुत्सितपुरुषः (इ) कुपुरुषः
(उ) पुरुषकुत्सा (ण्) पुरुषकुत्सनम्

39. (इ), 40. (अ), 41. (उ), 42. (ण्) 43. (इ), 44. (इ), 45. (इ), 46. (उ), 47. (उ) 48. (ण्), 49. (इ), 50. (ण्), 51. (अ), 52. (उ) 53. (अ), 54. (उ), 55. (इ),

56. ''प्राचार्यः'' में कौन सा समास होगा–
(अ) षष्ठी तत्पुरुष (इ) प्रादितत्पुरुष
(उ) चतुर्थीतत्पुरुष (ण्) बहुव्रीहि

57. 'अतिक्रान्तः मालाम्' का समस्त पद होगा–
(अ) अतिमालः (इ) अतिमाला
(उ) क्रान्तमाला (ण्) अतिमालम्

58. 'द्व्यङ्गुलम्' में कौन समास है–
(अ) कर्मधारय (इ) षष्ठीतत्पुरुष
(उ) द्विगु (ण्) द्वन्द्व

59. 'परमराजः' में कौन समासान्त प्रत्यय है–
(अ) अ (इ) क
(उ) ट (ण्) टच्

60. 'महाराजः' में कौन सा समास है–
(अ) द्विगु (इ) द्वन्द्व
(उ) कर्मधारय (ण्) बहुव्रीहि

61. 'कर्मधारयसमास' नही है–
(अ) अतिमालः (इ) परमराजः
(उ) महाराजः (ण्) नीलोत्पलम्

62. 'द्वादश' में कौन समास है–
(अ) बहुव्रीहि (इ) तत्पुरुष
(उ) द्वन्द्व (ण्) अव्ययीभाव

63. द्वन्द्व एवं तत्पुरुष समासों का लिङ्ग कैसा होता है–
(अ) पूर्ववत् (इ) परवत्
(उ) उभयवत् (ण्) अन्यवत्

64. प्राप्तोदकः (ग्रामः) का विग्रह होगा–
(अ) प्राप्तम् उदकम्
(इ) प्राप्तवान् उदकं यः सः
(उ) प्राप्ते उदके
(ण्) प्राप्तम् उदकं यं सः

65 'पीताम्बरः' में समासविधायक सूत्र कौन है–
(अ) शेषो बहुव्रीहिः (इ) अनेकमन्यपदार्थे
(उ) सह सुपा
(ण्) सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ

66. 'वीरपुरुषको (ग्रामः)' में कौन समास है–
(अ) तत्पुरुष (इ) द्वन्द्व
(उ) अव्ययीभाव (ण्) बहुव्रीहि

67. यह बहुव्रीहि समास नहीं है–
(अ) द्वादश (इ) कण्ठेकालः
(उ) चित्रगुः (ण्) ऊढरथः

68. बहुव्रीहि समास में किस पदार्थ की प्रधानता रहती है–
(अ) पूर्वपदार्थ (इ) उभयपदार्थ
(उ) परपदार्थ (ण्) अन्यपदार्थ

69. ''चित्रा गौर्यस्य = चित्रगुः'' में 'गो' को ह्रस्व किस सूत्र से होता है–
(अ) गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य
(इ) ह्रस्वः
(उ) ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य
(ण्) इनमें से कोई नहीं

70. ''रूपवती भार्या यस्य सः = रूपवद्भार्यः'' में पुंवद्भाव का सूत्र कौन है–
(अ) शेषो बहुव्रीहि
(इ) हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्
(उ) स्त्रियाः पुंवद्भाषित पुंस्कादनूङ्समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु
(ण्) अनेकमन्यपदार्थे

71. 'कल्याणी पञ्चमा (रात्रयः)' में समासान्त प्रत्यय कौन है–
(अ) ट (इ) टच्
(उ) अ (ण्) अप्

72. 'जलजाक्षी' में समासान्त प्रत्यय कौन है–
(अ) अप् (इ) अ
(उ) टच् (ण्) षच्

73. 'जलजाक्षी' का विग्रह वाक्य क्या है–
(अ) जलजम् इव अक्षि यस्याः सा
(इ) जलजे इव अक्षिणी यस्याः सा
(उ) अक्षिणी जलजे इव
(ण्) अक्षि जलजम् इव

56. (इ), 57. (अ) 58. (उ), 59. (ण्), 60. (उ), 61. (अ), 62.(उ) 63. (इ), 64. (ण्), 65. (इ), 66. (ण्), 67.(अ), 68. (ण्), 69. (अ), 70. (उ), 71. (ण्), 72. (ण्), 73. (इ),

74. बहुव्रीहि में 'अन्तर्' एवं 'बहिर्' से परे किस शब्द से समासान्त 'अप्' प्रत्यय होता है–
(अ) उरस् (इ) अहन्
(उ) लोमन् (ण्) सुहृद्

75. 'व्याघ्रस्येव पादौ अस्य'– सामासिक पद होगा–
(अ) व्याघ्रपादः (इ) व्याघ्रपदः
(उ) व्याघ्रपद् (ण्) व्याघ्रपात्

76. 'द्वौ पादौ यस्य सः' – समस्त पद होगा–
(अ) द्विपादः (इ) द्विपात्
(उ) द्विपदी (ण्) द्विपदः

77. 'सुहृत्' में कौन समास है–
(अ) बहुव्रीहि (इ) कर्मधारय
(उ) द्वन्द्व (ण्) अव्ययीभाव

78. किसमें बहुव्रीहि समास है–
(अ) अष्टाध्यायी (इ) यथाशक्ति
(उ) व्यूढोरस्कः (ण्) त्रयोदश

79 बहुव्रीहि में निष्ठा प्रत्ययान्त को क्या होता है–
(अ) पूर्वप्रयोग (इ) परप्रयोग
(उ) लोप (ण्) दीर्घविधि

80. 'महायशस्कः' का वैकल्पिक रूप क्या है–
(अ) महायशस्वी (इ) महायशी
(उ) महायशाः (ण्) महायशः

81. इस विग्रह में द्वन्द्वसमास होता है–
(अ) संज्ञा च परिभाषा च तयोः समाहारः
(इ) विशालम् उरो यस्य सः
(उ) कुत्सितः पुरषः
(ण्) पञ्चानां गङ्गानां समाहारः

82. 'अर्थधर्मौ' में कौन समास है–
(अ) बहुव्रीहि (इ) द्वन्द्व
(उ) द्विगु (ण्) कर्मधारय

83. द्वन्द्वसमास में इसका पूर्वप्रयोग होता है–
(अ) नदी संज्ञक (इ) निष्ठा संज्ञक
(उ) भ संज्ञक (ण्) घि संज्ञक

84. 'शिवश्च केशवश्च' इसका समस्तपद होगा–
(अ) शिवकेशवौ (इ) केशवशिवौ
(उ) शिवाकेशवौ (ण्) केशवाशिवौ

85. 'पितरौ' में किस सूत्र से समास हुआ–
(अ) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(इ) चाऽर्थे द्वन्द्वः
(उ) अनेकमन्यपदार्थे
(ण्) सह सुपा

86. 'पाणी च पादौ च एषां समाहारः' का समस्त पद होगा–
(अ) पाणिपादौ (इ) पाणिपादाः
(उ) पाणिपादम् (ण्) पाणीपादम्

87. 'रथिकाश्वारोहम्' में कौन-सा समास है–
(अ) द्वन्द्व (इ) कर्मधारय
(उ) बहुव्रीहि (ण्) षष्ठी तत्पुरुष

88. 'समास' पद में प्रकृति प्रत्यय है–
(अ) सम् + अस् + घञ् (इ) सम् + आस् + अप्
(उ) समा + आसु + सु (ण्) सम + आसु + धस्

89. 'समास' की सामान्य परिभाषा है–
(अ) समसनम् (इ) समास्यायते
(उ) समा आसते (ण्) समेन असनम्

90. ''अनेकस्य पदस्य एकपदीभवनं'' क्या होगा–
(अ) सन्धिः (इ) समासः
(उ) कारकम् (ण्) प्रातिपदिकम्

91. समासः भवति–
(अ) सुबन्तानाम् (इ) तिङन्तानाम्
(उ) प्रत्ययानाम् (ण्) सर्वेषां पदानाम्

92. बहुत से पदों का एक साथ समास होता है–
(अ) बहुव्रीहि समास में (इ) तत्पुरुष समास में
(उ) द्वन्द्व समास में (ण्) द्विगु समास में

93. 'समास विग्रह' कितने प्रकार का होता है–
(अ) 5 (इ) 2
(उ) 3 (ण्) 4

74. (उ), 75. (ण्), 76. (इ), 77. (अ), 78. (उ), 79. (अ), 80. (उ), 81. (अ), 82.(इ), 83. (ण्), 84. (अ), 85. (इ), 86. (उ), 87. (अ), 88. (अ), 89. (अ), 90. (इ), 91. (अ), 92.(उ), 93. (इ)

94. समास कितने प्रकार का होता है–

(अ) 4 (इ) 5
(उ) 6 (ण्) 7

95. केवल समास होता है–

(अ) उभयपदार्थप्रधानः (इ) पूर्वपदार्थप्रधानः
(उ) उत्तरपदप्रधानः (ण्) विशेषसंज्ञा-विनिर्मुक्तः

96. 'अन्यपदार्थप्रधानः' समास होगा –

(अ) द्वन्द्वः (इ) अव्ययीभावः
(उ) बहुव्रीहिः (ण्) द्विगुः

97. 'उत्तरपदार्थप्रधानः' समास है–

(अ) तत्पुरुषः (इ) बहुव्रीहिः
(उ) द्वन्द्वः (ण्) अव्ययीभावः

98. 'पूर्वपदार्थप्रधानः' समास होता है –

(अ) द्वन्द्वः (इ) तत्पुरुषः
(उ) अव्ययीभावः (ण्) कर्मधारयः

99. 'उभयपदार्थप्रधानः'– कौन-सा समास होगा–

(अ) अव्ययीभावः (इ) केवलसमासः
(उ) कर्मधारयः (ण्) द्वन्द्वः

100. तत्पुरुष समास के अन्तर्गत परिगणित है–

(अ) कर्मधारय (इ) द्विगु
(उ) द्वन्द्व (ण्) अ और इ दोनों

101. परार्थाभिधानं किं भवति–

(अ) वृत्तिः (इ) विग्रहः
(उ) समासः (ण्) कारकम्

102. वृत्तियाँ कितनी होती है–

(अ) 4 (इ) 5
(उ) 6 (ण्) 4

103. पूर्वपद यदि संख्यावाचक हो तो समास होता है–

(अ) द्वन्द्व (इ) द्विगु
(उ) कर्मधारय (ण्) बहुव्रीहि

104. सुबन्त का किसके साथ समास होता है–

(अ) सुबन्त के साथ (इ) तिङन्त के साथ
(उ) प्रत्ययों के साथ (ण्) धातु के साथ

105. 'केवल समास' का उदाहरण नहीं है–

(अ) वागर्थाविव (इ) भूतपूर्वः
(उ) नैकः (ण्) यथाशक्ति

106. समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है–

(अ) द्वन्द्व में (इ) अव्ययीभाव में
(उ) द्विगु में (ण्) कर्मधारय में

107. 'च' के अर्थ में किस समास का विधान किया जाता है–

(अ) बहुव्रीहि (इ) द्वन्द्व
(उ) द्विगु (ण्) तत्पुरुष

108. "प्राक्कडारात् समासः"- यह कैसा सूत्र है–

(अ) परिभाषा सूत्र (इ) संज्ञासूत्र
(उ) अधिकार सूत्र (ण्) विधिसूत्र

109. 'पूर्व अम् + भूत सु = भूतपूर्वः– यहाँ किस सूत्र से 'भूत' शब्द का पूर्वप्रयोग होता है–

(अ) समर्थः पदविधिः (इ) सह सुपा
(उ) भूतपूर्वे चरट् (ण्) प्राक्कडारात् समासः

110. 'एक सुबन्त दूसरे सुबन्त के साथ समस्त होता है'– यह बात किस सूत्र में कही गयी है–

(अ) समर्थः पदविधिः (इ) प्राक्कडारात् समासः
(उ) सह सुपा (ण्) उपसर्जनं पूर्वम्

111. 'अव्ययीभाव' कैसा समास है–

(अ) नित्यसमास (इ) वैकल्पिक समास
(उ) केवल समास (ण्) इनमें से कोई नहीं

94. (इ), 95. (ण्), 96. (उ), 97. (अ), 98. (उ), 99. (ण्), 100. (ण्), 101. (अ), 102. (इ), 103. (इ), 104. (अ), 105. (ण्), 106. (इ), 107. (इ), 108. (उ), 109. (उ), 110. (उ), 111. (अ)।

समास–गङ्गा (भाग-दो)

1. 'पितरौ' इस समस्त पद में कौन सा समास है ? *P.G.T.2010*

(अ) इतरेतरद्वन्द्वसमास (इ) समाहारद्वन्द्वसमास
(उ) एकशेषद्वन्द्वसमास (ऋ) केवलसमास

2. 'कम्बुकण्ठः' इस समस्त पद का सही विग्रह होगा–

(अ) कम्बु कण्ठः यस्य सः
(इ) कम्बोः कण्ठः
(उ) कम्बुश्चासौ कण्ठःश्च
(ऋ) कम्बु इव कण्ठो यस्य सः

3. कर्मधारय समास, किस समास का एक भेद है -

(अ) अव्ययीभाव (इ) तत्पुरुष
(उ) बहुव्रीहि (ऋ) द्विगु

4. 'परस्मैपदम्' में कौन समास है ?

(अ) अव्ययीभाव (इ) कर्मधारय
(उ) अलुक् समास (ऋ) केवलसमास

5. व्यधिकरण तत्पुरुष समास के कितने भेद हैं ?

(अ) चार (इ) पाँच
(उ) छः (ऋ) सात

6. 'कृताधिपत्याम्' में समास है ?

(अ) अव्ययीभाव (इ) बहुव्रीहि
(उ) समानाधिकरण तत्पुरुष (ऋ) व्यधिकरण तत्पुरुष

7. 'चन्द्रशेखरः' में कौन सा समास है ? *P.G.T.2009*

(अ) तत्पुरुष (इ) बहुव्रीहि
(उ) द्विगु (ऋ) कर्मधारय

8. 'चित्रगुः' का विग्रह वाक्य है ?

(अ) चित्रा चासौ गौः (इ) चित्रा गावो यस्य सः
(उ) चित्राणां गवां समाहारः (ऋ) चित्रायाः गौः

9. जिस समास में प्रथमपद प्रधान रहता है उसे कहते हैं–

(अ) तत्पुरुष समास (इ) बहुव्रीहि समास
(उ) अव्ययीभाव समास (ऋ) द्वन्द्व समास

10. 'पाणिपादम्' में समास है ? *P.G.T.2005*

(अ) इतरेतरद्वन्द्व (इ) समाहारद्वन्द्व
(उ) एकशेषद्वन्द्व (ऋ) अलुक्तत्पुरुष

11. 'हरिहरौ' में कौन सा समास है ? *P.G.T.2000*

(अ) तत्पुरुष (इ) बहुव्रीहि
(उ) द्वन्द्व (ऋ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

12. 'स्त्रीप्रमाणः' में समास है– *P.G.T.2005*

(अ) अव्ययीभाव (इ) द्विगु
(उ) द्वन्द्व (ऋ) बहुव्रीहि

13. 'नखभिन्नः' का लौकिकविग्रह है ?

(अ) नखः भिन्नः (इ) नखैः भिन्नः
(उ) नखे भिन्नः (ऋ) नखात् भिन्नः

14. 'अहिनकुलम्' में समास है ?

(अ) इतरेतरद्वन्द्व (इ) समाहारद्वन्द्व
(उ) एकशेषद्वन्द्व (ऋ) अलुक्तत्पुरुष

15. 'निर्मक्षिकम्' में समास है ? *P.G.T.2004*

(अ) तत्पुरुष (इ) अव्ययीभाव
(उ) द्वन्द्व (ऋ) बहुव्रीहि

16. 'रूपवद्भार्यः' में कौन सा समास है ?

(अ) अव्ययीभाव (इ) द्विगु
(उ) बहुव्रीहि (ऋ) द्वन्द्व

17. 'चक्रपाणिः' में समास है ? *P.G.T.2003*

(अ) तत्पुरुष (इ) बहुव्रीहि
(उ) द्विगु (ऋ) द्वन्द्व

18. 'हरिहरौ' शब्द का विग्रह होगा ?

(अ) हरि च हरौ च (इ) हरिश्च हरश्च
(उ) हरि च हरौ (ऋ) हरि हरौ च

1. (उ), 2. (ऋ), 3. (इ), 4. (उ), 5. (उ), 6. (इ), 7. (इ) 8. (इ), 9. (उ) 10. (इ), 11. (उ), 12. (ऋ), 13. (इ), 14. (इ),15.(इ), 16. (उ), 17. (इ), 18. (इ),

19. 'सहरि' में कौन सा समास है ?
(अ) अव्ययीभाव (इ) तत्पुरुष
(उ) बहुव्रीहि (ऋ) द्वन्द्व

20. 'उपराजम्' में कौन सा समास है ?
(अ) बहुव्रीहि (इ) तत्पुरुष
(उ) अव्ययीभाव (ऋ) द्वन्द्व

21. 'कुपुरुषः' में कौन सा समास है ?
(अ) नञ् तत्पुरुष (इ) प्रादि तत्पुरुष
(उ) गति तत्पुरुष (ऋ) उपपद तत्पुरुष

22. 'रामकृष्णौ' में कौन सा समास है ?
(अ) एकशेषद्वन्द्व (इ) समाहारद्वन्द्व
(उ) इतरेतरद्वन्द्व (ऋ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

23. 'चन्द्रमौलिः' में कौन सा समास है ?
(अ) समानाधिकरण बहुव्रीहि
(इ) व्यधिकरण बहुव्रीहि
(उ) तत्पुरुष (ऋ) द्वन्द्व

24. 'पितरौ' शब्द का विग्रह है ?
(अ) मातृ पिता च (इ) पितरौ मातरौ च
(उ) माता च पिता च (ऋ) माता पिताश्च

25. 'हरित्रातः' में कौन सा समास है ?
(अ) द्वितीयातत्पुरुष (इ) तृतीयातत्पुरुष
(उ) चतुर्थीतत्पुरुष (ऋ) षष्ठीतत्पुरुष

26. 'अब्राह्मणः' में कौन सा समास है ?
(अ) अव्ययीभाव (इ) बहुव्रीहि
(उ) द्वन्द्व (ऋ) नञ्तत्पुरुष

27. पीताम्बरः में समास है ?
(अ) द्विगु (इ) बहुव्रीहि
(उ) अव्ययीभाव (ऋ) द्वन्द्व

28. 'प्राप्तोदकः' में समास है ?
(अ) अव्ययीभाव (इ) बहुव्रीहि
(उ) तत्पुरुष (ऋ) द्वन्द्व

29. 'सुमद्रम्' में कौन सा समास है ?
(अ) कर्मधारय (इ) बहुव्रीहि
(उ) अव्ययीभाव (ऋ) षष्ठी तत्पुरुष

30. 'उपसर्जन संज्ञा' किसकी होती है ?
(अ) समास विधायक सूत्र के प्रथमान्त पद द्वारा निर्दिष्ट शब्द की
(इ) समास विधायक सूत्र के द्वितीय पद द्वारा निर्दिष्ट शब्द की
(उ) समास विधायक सूत्र के द्वारा निर्दिष्ट शब्द की
(ऋ) उपर्युक्त सभी की

31. 'उपसर्जन संज्ञा' विधायक सूत्र है–
(अ) उपसर्जनं पूर्वम्
(इ) प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्
(उ) उपसर्गे घोः किः (ऋ) उपसर्गस्यायतौ

32. 'उपसर्जन संज्ञक' का प्रयोग होता है–
(अ) पूर्व में (इ) पर में
(उ) दोनों ओर (ऋ) कहीं नहीं

33. 'सुमद्रम्' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) मद्राणां समृद्धिः (इ) सुन्दरं मुद्रम्
(उ) शोभनं समुद्रम् (ऋ) शुचं मुद्रणम्

34. 'अतिहिमम्' का अलौकिक विग्रह होगा–
(अ) अति हिम् सु (इ) हिम जस् अति
(उ) हिम ङस् अति (ऋ) अति हिम् औ

35. ''शीतस्य अत्ययः'' इस लौकिकविग्रह का सामासिक पद होगा–
(अ) शीतातीतः (इ) अतिशीतम्
(उ) शीतात्यः (ऋ) अतिशीतः

36. किस सूत्र से 'पञ्चगङ्गम्' में अव्ययीभाव समास होता है -
(अ) अव्ययं – विभक्ति - समीप - समृद्धि -------''
(इ) अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः
(उ) अव्ययीभावे चाकाले
(ऋ) नदीभिश्च

19. (अ),20. (उ), 21. (इ), 22. (उ), 23. (इ), 24. (उ), 25. (इ), 26. (ऋ), 27. (इ), 28. (इ), 29. (उ), 30. (अ), 31. (इ), 32. (अ), 33. (अ), 34. (उ), 35. (इ), 36. (ऋ),

37. 'उपराजम्' का अलौकिकविग्रह है–
(अ) राजन् सु उप (इ) उप राजन अम्
(उ) राजन् ङस् उप (ऋ) राजन जस् उप

38. 'द्विगुश्च' सूत्र में 'च' पद क्या है ?
(अ) संयोगसूचक (इ) सर्वनामपद
(उ) अव्ययपद (ऋ) इनमें कोई नहीं

39. 'कृष्णं श्रितः' में किस सूत्र से समास हुआ है ?
(अ) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
(इ) द्वितीया श्रितातीत – पतित – गतात्यस्त – प्राप्तापन्नैः
(उ) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(ऋ) प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्

40. शुद्ध पद का चयन करें–
(अ) नखभिन्नः (इ) नखनिर्भिन्नः
(उ) दोनों (ऋ) कोई भी नहीं

41. 'नखभिन्नः' में समास विधायक सूत्र क्या है ?
(अ) कर्तृकरणे कृता बहुलम्
(इ) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
(उ) कृद्ग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम्
(ऋ) पञ्चमी भयेन

42. 'गोहितम्' में कौन समास है ?
(अ) द्वितीया तत्पुरुष (इ) अव्ययीभाव
(उ) तृतीया तत्पुरुष (ऋ) चतुर्थी तत्पुरुष

43. 'वृकभीः' में किस सूत्र से समास हुआ है–
(अ) पञ्चम्या स्तोकादिभ्यः
(इ) स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन
(उ) पञ्चमी भयेन
(ऋ) उपर्युक्त में किसी से नहीं

44. 'राजपुरुषः' का अलौकिक विग्रह क्या होगा ?
(अ) राजन् सु पुरुष सु (इ) राजन् ङस् पुरुष सु
(उ) राजन् सु पुरुष ङस् (ऋ) राजन् ङस् पुरुष ङस्

45. 'कृच्छ्रादागतः' का क्या अर्थ है ?
(अ) कच्छ्र प्रदेश से आया हुआ
(इ) समीप से आया हुआ
(उ) दूर से आया हुआ
(ऋ) कष्ट से आया हुआ

46. 'मनोविकारः' का समास विधायक सूत्र है–
(अ) पञ्चमी भयेन (इ) षष्ठी
(उ) पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः (ऋ) अर्धं नपुंसकम्

47. 'अक्षशौण्डः' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) अक्षाणां शौण्डः (इ) अक्षात् शौण्डः
(उ) अक्षेषु शौण्डः (ऋ) अक्षस्य शौण्डः

48. 'निर्मलगुणाः' का लौकिक विग्रह है–
(अ) निर्मलस्य गुणाः (इ) निर्मलम् गुणाः
(उ) निर्मलाय गुणाः (ऋ) निर्मलश्च ते गुणाः

49. 'कर्पूरगौरः' का क्या अर्थ है–
(अ) सफेद कपूर
(इ) कपूर की तरह गौर (श्वेत) वर्ण वाला
(उ) कपूर से गोरा (ऋ) कपूर का चूर्ण

50. 'शाकपार्थिवः' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) शाकस्य पार्थिवः (इ) शाकात् पार्थिवः
(उ) शाकप्रियः पार्थिवः (ऋ) पार्थिवप्रियः शाकः

51. 'अब्राह्मणः' का अलौकिक विग्रह होगा -
(अ) अ ब्राह्मण सु (इ) न ब्राह्मण सु
(उ) अब्राह्मण सु (ऋ) अ ब्राह्मण जस्

52. 'ऊरीकृत्य' का क्या अर्थ है ?
(अ) उड़ा करके (इ) उपर करके
(उ) स्वीकार करके (ऋ) अस्वीकार करके

53. 'पटपटाकृत्य' में कृत्वा के योग में पटपटा की कौन सी संज्ञा हुई है ?
(अ) टि संज्ञा (इ) घि संज्ञा
(उ) गति संज्ञा (ऋ) नदी संज्ञा

37. (उ),38. (उ), 39. (इ), 40. (उ), 41. (अ), 42. (ऋ) 43. (उ), 44. (इ), 45. (ऋ), 46. (इ), 47. (उ) 48. (ऋ), 49. (इ), 50. (उ), 51. (इ), 52.(उ) 53. (उ),

54. ''ऊरीकृत्य'' में ऊरी पद की 'गतिसंज्ञा' किस सूत्र से होगी–

(अ) कुगतिप्रादयः (इ) ऊर्यादिच्विडाचश्च
(उ) प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

55. 'प्रादिसमास' का उदाहरण है–

(अ) सुपुरुषः (इ) वीरपुरुषः
(उ) स्त्रीपुरुषः (ए) युद्धपुरुषः

56. 'प्राचार्यः' का अर्थ है–

(अ) दूर गया हुआ आचार्य
(इ) श्रेष्ठ आचार्य
(उ) अपने विषय में दक्ष आचार्य
(ऋ) उपर्युक्त सभी

57. 'अवकोकिलः' का अलौकिक विग्रह है–

(अ) अव कोकिल सु (इ) कोकिला टा अव
(उ) कोकिला सु अव (ऋ) अव कोकिल जस्

58. 'सूत्रकारः' का लौकिक विग्रह होगा–

(अ) सूत्रस्य कर्त्ता (इ) सूत्रस्य कारः
(उ) सूत्रं करोति इति सूत्रकारः
(ऋ) उपर्युक्त सभी

59. 'निरङ्गुलम्' में किस सूत्र से समास होता है–

(अ) निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्याः
(इ) संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम्
(उ) 'रात्राह्नाहाः' पुंसि
(ऋ) तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः

60. 'सर्वरात्रः' का अलौकिक विग्रह है–

(अ) सर्वा जस् रात्रि सु (इ) सर्वा सु रात्रि जस्
(उ) सर्वा सु रात्रि सु (ऋ) सर्वा जस् रात्रि जस्

61. 'संख्यातरात्रः' में किस सूत्र से समास हुआ है–

(अ) संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम्
(इ) पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन
(उ) अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः
(ए) तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः

62. 'व्यधिकरणतत्पुरुष' कितने प्रकार का होता है ?

(अ) 5 (इ) 7
(उ) 6 (ऋ) 8

63. ''श्यामोज्ज्वलवपुः'' किस समास का उदाहरण है ?

(अ) अव्ययीभाव (इ) तत्पुरुष
(उ) बहुव्रीहि (ऋ) द्वन्द्व

64. 'वागर्थाविव' का लौकिक विग्रह है–

(अ) वागर्थाविव (इ) वागर्थौ इव
(उ) वाक् अर्थाविव (ऋ) वागर्था इव

65. 'वागर्थाविव' में कौन सा समास है ?

(अ) द्वन्द्व (इ) द्विगु
(उ) केवलसमास (ऋ) तत्पुरुष

66. 'अक्षतशरीरः' इत्यस्य विग्रहवाक्यं भविष्यति–

(अ) न क्षतं यस्य
(इ) अक्षतश्चासौ शरीरम्
(उ) अक्षतच्च शरीरच्च
(ऋ) अक्षतं शरीरं यस्य सः

67. ''त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम्'' कस्य समासस्य उदाहरणम् ?

(अ) द्वन्द्व (इ) अव्ययीभाव
(उ) द्विगु (ऋ) कर्मधारय

68. 'चोरभयम्' का लौकिकविग्रह होगा–

(अ) चोरस्य भयम् (इ) चोरेण भयम्
(उ) चोरात् भयम् (ऋ) चोराय भयम्

54. (इ), 55. (अ), 56. (ऋ), 57. (इ) 58. (ऋ), 59. (अ), 60. (उ), 61. (इ), 62.(उ) 63. (उ), 64. (इ), 65. (उ), 66. (ऋ), 67.(उ), 68. (उ)।

4. कारक-गङ्गा (भाग-एक)

1. 'प्रातिपदिकार्थमात्र' में विभक्ति होती है ?
(अ) प्रथमा (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ण्) षष्ठी

2. 'कृष्णः' में प्रथमाविभक्ति का कारण क्या है ?
(अ) लिङ्गमात्राधिक्य (इ) परिमाणमात्र
(उ) प्रातिपदिकार्थमात्र (ण्) वचनमात्र

3. 'परिमाणमात्र' में विभक्ति होती है–
(अ) पञ्चमी (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ण्) प्रथमा

4. अलिङ्ग ''उच्चैः'' आदि में प्रथमा विभक्ति का कारण क्या है ?
(अ) कर्तृकारक (इ) लिङ्गमात्राधिक्य
(उ) प्रातिपदिकार्थमात्र (ण्) वचनमात्र

5. 'तटः, तटी, तटम्' में प्रथमा विभक्ति का कारण क्या है–
(अ) लिङ्गमात्राधिक्य (इ) प्रातिपदिकार्थमात्र
(उ) वचनमात्र (ण्) परिमाणमात्र

6. किसमें 'वचनमात्र' में प्रथमा हुई है ?
(अ) श्रीः (इ) ज्ञानम्
(उ) द्रोणो व्रीहिः (ण्) द्वौ

7. 'नियतोपस्थितिक' क्या है ?
(अ) हेतु (इ) कर्त्ता
(उ) प्रातिपदिकार्थ (ण्) वचन

8. 'सम्बोधने च' सूत्र से विभक्ति होती है–
(अ) सप्तमी (इ) प्रथमा
(उ) चतुर्थी (ण्) षष्ठी

9. हे राम! में विभक्ति है ?
(अ) द्वितीया (इ) षष्ठी
(उ) प्रथमा (ण्) कोई विभक्ति नहीं

10. 'कारके' यह कैसा सूत्र है?
(अ) विधि (इ) अधिकार
(उ) नियम (ण्) परिभाषा

11. कर्त्ता का इष्टतम कारक कौन सा है–
(अ) कर्म (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ण्) अपादान

12. 'हरिं भजति' में ''हरि'' क्या है ?
(अ) कर्त्ता (इ) करण
(उ) कर्म (ण्) अधिकरण

13. 'माषेषु अश्वं बध्नाति'– यहाँ 'माष' कर्म नहीं है, क्योंकि–
(अ) यह कर्म को इष्ट नही है
(इ) यह निर्जीव है
(उ) यह सप्तमी बहुवचन में है
(ण्) यह कर्त्ता का इष्टतम कारक नहीं है

14. 'अनुक्त कर्म' में विभक्ति होती है–
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) षष्ठी (ण्) तृतीया

15. ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र में किस सूत्र का अधिकार है ?
(अ) स्वतन्त्रः कर्त्ता (इ) अनभिहिते
(उ) कर्मप्रवचनीयाः (ण्) इनमें से कोई नहीं

16. 'अभिहित कर्म' में विभक्ति होती है ?
(अ) तृतीया (इ) द्वितीया
(उ) षष्ठी (ण्) प्रथमा

17. 'अभिहित कर्म' में किस सूत्र से प्रथमा विभक्ति होती है ?
(अ) सम्बोधने च
(इ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(उ) स्वतन्त्रः कर्ता
(ण्) कारके

1. (अ), 2. (उ), 3. (ण्), 4. (उ), 5. (अ), 6. (ण्), 7. (उ) 8. (इ), 9. (उ) 10. (इ), 11. (अ), 12. (उ), 13. (ण्), 14. (इ),15.(इ) 16. (ण्), 17. (इ),

18. 'हरिः सेव्यते' में किससे कर्म का अभिधान किया गया है–

(अ) कृत् (इ) धातु

(उ) कर्त्ता (ण्) तिङ्

19. किसमें 'कृत्' से कर्म का अभिधान है–

(अ) लक्ष्म्या सेवितः

(इ) हरिः सेव्यते

(उ) शतेन क्रीतः शत्यः

(ण्) प्राप्तः आनन्दः यं सः प्राप्तानन्दः

20. कारक कितने होते हैं–

(अ) 4 (इ) 6

(उ) 5 (ण्) 8

21. 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' में 'तृण' की किस सूत्र से कर्मसंज्ञा हुई है –

(अ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म (इ) तथायुक्तं चानीप्सितम्

(उ) अकथितं च (ण्) कर्मप्रवचनीयाः

22. ''तथायुक्तं चानीप्सितम्'' सूत्र से कौन सी संज्ञा होती है–

(अ) करण (इ) सम्प्रदान

(उ) कर्त्ता (ण्) कर्म

23. ''ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते'' में 'ओदन' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–

(अ) तथायुक्तं चानीप्सितम्

(इ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म

(उ) कर्मणि द्वितीया

(ण्) अकथितं च

24. अकथित कर्म की गिनती में यह धातु नहीं है–

(अ) दुह् (इ) पच्

(उ) पठ् (ण्) दण्ड्

25. अकथित कर्म की परिगणना में किस धातु की गिनती है–

(अ) लिख् (इ) रम्

(उ) क्री (ण्) चि

26. 'गां दोग्धि पयः' में 'गो' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–

(अ) अकथितं च (इ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म

(उ) तथायुक्तं चानीप्सितम् (ण्) कर्मणि द्वितीया

27. ''बलिं याचते वसुधाम्'' में 'बलि' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–

(अ) तथायुक्तं चानीप्सितम् (इ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म

(उ) अकथितं च (ण्) कर्मणि द्वितीया

28. 'वृक्षमवचिनोति फलानि' में 'वृक्ष' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–

(अ) अकथितं च (इ) तथायुक्तं चानीप्सितम्

(उ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म (ण्) कर्मणि द्वितीया

29. ''अकथितं च'' यह कैसा सूत्र है–

(अ) विधि (इ) परिभाषा

(उ) नियम (ण्) संज्ञा

30. ''अकथितं च'' सूत्र में 'चकार' से किसका बोध होता है–

(अ) द्वितीया (इ) कर्म

(उ) करण (ण्) कर्त्ता

31. अकर्मक धातु के योग में 'देशवाचक' शब्द की क्या संज्ञा होगी–

(अ) कर्ता (इ) अधिकरण

(उ) कर्म (ण्) सम्बन्ध

32. ''मासम् आस्ते'' में 'मास' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–

(अ) अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम्

(इ) अकथितं च

(उ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म

(ण्) तथायुक्तं चानीप्सितम्

33. अकर्मक धातु के योग में 'अध्ववाचक' शब्द की क्या संज्ञा होती है–

(अ) करण (इ) अधिकरण

(उ) कर्म (ण्) कर्त्ता

18. (ण्), 19. (अ), 20. (इ) 21. (इ), 22. (ण्), 23. (इ), 24. (उ), 25. (ण्) 26. (अ), 27. (उ), 28. (अ), 29. (ण्), 30. (इ), 31. (उ), 32. (अ), 33. (उ),

34. 'शत्रून् अगमयत् स्वर्गम्' में 'शत्रु' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) अकथितं च
(इ) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(उ) गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थ-शब्द-कर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ
(ण्) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म

35. गत्यर्थक धातु के अणिजन्त के कर्त्ता की णिजन्त में कौन संज्ञा होती है–
(अ) कर्म (इ) करण
(उ) कर्त्ता (ण्) अधिकरण

36. ''गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ'' सूत्र से कौन सी संज्ञा होती है–
(अ) कर्त्ता (इ) कर्म
(उ) करण (ण्) अधिकरण

37. ''आसयत् सलिले पृथ्वीम्'' में 'पृथ्वी' में किस सूत्र से द्वितीया आयी है–
(अ) गतिबुद्धि..........स णौ
(इ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म
(उ) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(ण्) कर्मणि द्वितीया

38. ''हारयति भृत्यं कटम्'' में 'भृत्य' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) गतिबुद्धि.........स णौ
(इ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म
(उ) हृक्रोरन्यतरस्याम्
(ण्) तथायुक्तं चानीप्सितम्

39. ''कारयति भृत्येन कटम्'' में 'भृत्य' में तृतीया होने का कारण क्या है–
(अ) अनुक्ते करणे (इ) हेतौ
(उ) अपवर्गे (ण्) अनुक्ते कर्तरि

40. ''अधि + स्था'' धातु के आधार की क्या संज्ञा होगी–
(अ) अधिकरण (इ) कर्म
(उ) कर्ता (ण्) करण

41. ''अधितिष्ठति वैकुण्ठं हरिः'' में 'वैकुण्ठ' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है –
(अ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म
(इ) तथायुक्तं चानीप्सितम्
(उ) अकथितं च
(ण्) अधिशीङ्स्थासां कर्म

42. ''अधिशीङ्स्थासां कर्म'' सूत्र में किसका अनुवर्तन है ?
(अ) आधारः (इ) अन्यतरस्याम्
(उ) अकथितम् (ण्) अनीप्सितम्

43.''अभिनिविशश्च'' सूत्र से कौन संज्ञा होती है–
(अ) करण (इ) कर्म
(उ) अधिकरण (ण्) कर्त्ता

44. ''अभिनिविशते सन्मार्गम्'' में कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म (इ) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(उ) अकथितं च (ण्) अभिनिविशश्च

45. 'उप + वस्' के आधार की कौन संज्ञा होती है–
(अ) अधिकरण (इ) कर्म
(उ) सम्प्रदान (ण्) करण

46. 'आवसति वैकुण्ठं हरिः' में 'वैकुण्ठ' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) अकथितं च (इ) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(उ) कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म (ण्) उपान्वध्याङ्वसः

47. ''वने उपविशति'' में 'वन' की कर्मसंज्ञा का निषेध किस सूत्र से हुआ है–
(अ) आदिखाद्योर्न (इ) भक्षेरहिंसार्थस्य न
(उ) नीवह्योर्न (ण्) अभुक्त्यर्थस्य न

48. ''सर्वतः'' के योग में कौन सी विभक्ति आती है–
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ण्) पञ्चमी

49. ''अभितः'' के योग में कौन-सी विभक्ति आती है–
(अ) तृतीया (इ) प्रथमा
(उ) द्वितीया (ण्) चतुर्थी

34. (उ), 35. (अ), 36. (इ), 37. (ण्), 38. (उ), 39. (ण्), 40. (इ), 41. (ण्), 42. (अ) 43. (इ), 44. (ण्), 45. (इ), 46. (ण्), 47. (ण्) 48. (अ), 49. (उ),

50. 'अन्तरा' के योग में कौन-सी विभक्ति प्रयुक्त होगी–

(अ) पञ्चमी (इ) चतुर्थी
(उ) तृतीया (ण्) द्वितीया

51. ''जपमनु प्रावर्षत्'' में 'जप' में द्वितीया का विधान किस सूत्र से हुआ–

(अ) कर्मणि द्वितीया
(इ) उभसर्वतसोः कार्या
(उ) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया
(ण्) अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रति–योगेऽपि

52. अत्यन्तसंयोग में कालवाचक शब्द से कौन सी विभक्ति आती है –

(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ण्) प्रथमा

53. ''मासम् अधीते'' में 'मास' में द्वितीया विभक्ति का विधान किस सूत्र से हुआ है–

(अ) कर्मणि द्वितीया
(इ) उभसर्वतसोः कार्या
(उ) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया
(ण्) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे

54. ''मासस्य द्विः अधीते'' में 'मास' में द्वितीया नहीं है, क्योंकि–

(अ) 'मास' कालवाचक है
(इ) 'मास' एक वचन में है
(उ) 'अत्यंतसंयोग' अर्थ नही है
(ण्) यहाँ 'अपवर्ग' अर्थ नही है

55. अत्यन्त संयोग में अपवर्ग (फलप्राप्ति) द्योत्य होने पर कौन सी विभक्ति आती है–

(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) प्रथमा (ण्) सप्तमी

56. क्रियासिद्धि में प्रकृष्टोपकारक कारक कौन है–

(अ) कर्म (इ) कर्त्ता
(उ) करण (ण्) अधिकरण

57. 'रामेण बाणेन हतो बाली' में 'रामेण' में तृतीया किस कारण से हुई–

(अ) अनुक्ते करणे (इ) उक्ते करणे
(उ) अनुक्ते कर्तरि (ण्) उक्ते कर्त्तरि

58. 'रामेण बाणेन हतो बाली' में करण क्या है–

(अ) बाण (इ) राम
(उ) बाली (ण्) हनन

59. ''गोत्रेण गार्ग्यः'' में 'गोत्र' में तृतीया विभक्ति का विधान किस सूत्र से किया गया–

(अ) कर्तृकरणयोस्तृतीया (इ) हेतौ
(उ) अपवर्गे तृतीया (ण्) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्

60. ''अक्षान् दीव्यति'' में 'अक्ष' की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से हुई है–

(अ) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (इ) दिवः कर्म च
(उ) अकथितं च (ण्) तथायुक्तं चानीप्सितम्

61. 'अह्ना अनुवाकोऽधीतः'' यहाँ 'अहन्' में किस सूत्र से तृतीया आयी–

(अ) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्
(इ) अपवर्गे तृतीया
(उ) कर्तृकरणयोस्तृतीया
(ण्) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे

62. 'मासम् अधीतः नायातः'' यहाँ 'मास' पद में तृतीया नहीं लगी, क्योंकि–

(अ) 'मास' कालवाचक है
(इ) वाक्य में अत्यंत संयोग का अर्थ है
(उ) वाक्य में अपवर्ग द्योतित नही होता
(ण्) वाक्य अतीत काल में है

63. 'सह' अर्थ वाले शब्दों के योग में अप्रधान में कौन-सी विभक्ति लगेगी–

(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) प्रथमा (ण्) पञ्चमी

50. (ण्), 51. (उ), 52. (अ) 53. (ण्), 54. (उ), 55. (इ), 56. (उ), 57. (उ) 58. (अ), 59. (ण्), 60. (इ), 61. (इ), 62. (उ), 63. (इ),

64. ''अक्ष्णा काणः'' यहाँ 'अक्षि' पद में किस सूत्र से तृतीया विभक्ति आयी–
(अ) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् (इ) हेतौ
(उ) अपवर्गे तृतीया (ण्) येनाङ्गविकारः

65. ''इत्थंभूतलक्षणे'' इससे कौन-सी विभक्ति आती है–
(अ) तृतीया (इ) द्वितीया
(उ) पञ्चमी (ण्) प्रथमा

66. ''जटाभिः तापसः'' यहाँ 'जटा' में किस सूत्र से तृतीया विभक्ति आयी–
(अ) येनाङ्गविकारः (इ) अपवर्गे तृतीया
(उ) इत्थंभूतलक्षणे (ण्) हेतौ

67. यह द्रव्यादि साधारण और निर्व्यापार साधारण है–
(अ) करण (इ) हेतु
(उ) कारक (ण्) कर्मप्रवचनीय

68. ''दण्डेन घटः'' यहाँ 'दण्ड' में किस सूत्र से तृतीया विभक्ति आयी–
(अ) अपवर्गे तृतीया (इ) कर्तृकरणयोस्तृतीया
(उ) हेतौ (ण्) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्

69. ''कर्मणा यमभिप्रैति सः.........'' क्या है ?
(अ) कर्ता (इ) सम्प्रदानम्
(उ) अधिकरणम् (ण्) करणम्

70. ''विप्राय गां ददाति'' में 'विप्र' क्या है ?
(अ) कर्ता (इ) कर्म
(उ) सम्प्रदान (ण्) करण

71. 'उपपद विभक्ति' का उदाहरण नहीं है–
(अ) रामाय नमः (इ) अभितः ग्रामं नदी अस्ति
(उ) इन्द्राय स्वाहा (ण्) भक्तः हरिं भजति

72. 'रुच्यर्थ' धातु के योग में 'प्रीयमाण' की क्या संज्ञा होती है–
(अ) करण (इ) कर्ता
(उ) कर्म (ण्) सम्प्रदान

73. ''हरये रोचते भक्तिः'' में 'हरि' शब्द में किस सूत्र से चतुर्थी विभक्ति हुई–
(अ) चतुर्थी सम्प्रदाने
(इ) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(उ) नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-अलं-वषट्-योगाच्च
(ण्) तुमर्थाच्च भाववचनात्

74. ''धारेरुत्तमर्णः'' सूत्र से कौन-सी संज्ञा होती है–
(अ) अपादान (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ण्) कर्म

75. ''स्पृहेरीप्सितः'' सूत्र से कौन-सी संज्ञा होगी–
(अ) अपादान (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ण्) कर्म

76. ''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः'' इस सूत्र से किस संज्ञा का विधान होगा–
(अ) सम्प्रदान (इ) कर्म
(उ) करण (ण्) कर्ता

77. 'हरये क्रुध्यति' में ''हरि'' क्या है–
(अ) कर्त्ता (इ) सम्प्रदान
(उ) करण (ण्) इनमें से कोई नहीं

78. 'क्रुध धातु' के योग में जिसके प्रति कोप हो, उसकी क्या संज्ञा है–
(अ) सम्प्रदान (इ) कर्म
(उ) करण (ण्) अधिकरण

79. ''मुक्तये हरिं भजति''– 'मुक्ति' में चतुर्थी किस सूत्र से आयी–
(अ) चतुर्थी सम्प्रदाने
(इ) तुमर्थाच्च भाववचनात्
(उ) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या
(ण्) नमः–स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-अलं-वषट्-योगाच्च

80. ''उत्पातेन ज्ञापिते च'' इस वार्तिक से कौन-सी विभक्ति आती है–
(अ) तृतीया (इ) द्वितीया
(उ) पञ्चमी (ण्) चतुर्थी

64. (ण्), 65. (अ), 66. (उ), 67.(इ), 68. (उ), 69. (इ), 70. (उ), 71. (ण्), 72. (ण्), 73. (अ), 74. (उ), 75. (उ), 76. (अ), 77. (इ), 78. (अ), 79. (उ), 80. (ण्),

81. 'फलेभ्यो याति' यहाँ 'फल' में किस सूत्र से चतुर्थी विभक्ति हुई–
(अ) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या
(इ) क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः
(उ) तुमर्थाच्च भाववचनात्
(ण्) चतुर्थी सम्प्रदाने

82.''तुमर्थाच्च भाववचनात्'' इस सूत्र से किस विभक्ति का विधान किया जाता है–
(अ) द्वितीया (इ) पञ्चमी
(उ) तृतीया (ण्) चतुर्थी

83. 'स्वाहा' के योग में कौन सी विभक्ति होती है–
(अ) चतुर्थी (इ) द्वितीया
(उ) पञ्चमी (ण्) तृतीया

84. ''नमस्करोति देवान्'' में 'देव' पद में ''नमः स्वस्ति-स्वाहा.........'' इस वार्तिक से चतुर्थी विभक्ति नहीं हुई; क्योंकि–
(अ) देव से चतुर्थी विभक्ति आती ही नही
(इ) यहाँ 'नमः' पद का योग है ही नही
(उ) उपपद विभक्ति से कारक विभक्ति बलवती होती है
(ण्) देव शब्द बहुवचन में है।

85. अपाय में 'ध्रुव' की क्या संज्ञा होती है–
(अ) अधिकरण (इ) सम्प्रदान
(उ) करण (ण्) अपादान

86. ''गवां कृष्णा बहुक्षीरा''– यहाँ 'गो' पद में षष्ठी विभक्ति किस सूत्र से हुई–
(अ) षष्ठी शेषे (इ) षष्ठी चानादरे
(उ) यतश्च निर्धारणम् (ण्) षष्ठ्यतसर्थ प्रत्ययेन

87. 'ग्रामात् आयाति' यहाँ 'ग्राम' की अपादान संज्ञा किस सूत्र से हुई–
(अ) जनिकर्त्तुः प्रकृतिः (इ) ध्रुवमपायेऽपादानम्
(उ) भुवः प्रभवः (ण्) आख्यातोपयोगे

88. 'भयार्थक धातु' के प्रयोग में भय के हेतु की क्या संज्ञा होगी–
(अ) करण (इ) अधिकरण
(उ) अपादान (ण्) कर्म

89. ''अध्ययनात् पराजयते'' यहाँ 'अध्ययन' की अपादान संज्ञा किस सूत्र से हुई है–
(अ) पराजेरसोढः (इ) आख्यातोपयोगे
(उ) ध्रुवमपायेऽपादानम् (ण्) भुवः प्रभवः

90. ''मातुर्निलीयते कृष्णः'' यहाँ किस सूत्र से 'मातृ' की अपादान संज्ञा हुई –
(अ) जनिकर्त्तुः प्रकृतिः (इ) अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति
(उ) ध्रुवमपायेऽपादानम् (ण्) आख्यातोपयोगे

91. 'जायमान' के हेतु की क्या संज्ञा होगी–
(अ) करण (इ) सम्प्रदान
(उ) अपादान (ण्) कर्म

92. ''हिमवतो गङ्गा प्रभवति'' यहाँ 'हिमवत्' की अपादान संज्ञा किस सूत्र से हुई–
(अ) जनिकर्त्तुः प्रकृतिः (इ) ध्रुवमपायेऽपादानम्
(उ) वारणार्थानामीप्सितः (ण्) भुवः प्रभवः

93. 'भुवः प्रभवः' इस सूत्र से किसमें पञ्चमी विभक्ति का विधान किया गया है–
(अ) प्रयागात् संस्कृतगङ्गा प्रभवति
(इ) संस्कृतगङ्गातः गृहं गच्छति
(उ) संस्कृतबालः व्याकरणात् बिभेति
(ण्) संस्कृतज्ञः मल्लात् पराजयेत्

94. 'ऋते' 'आरात्' तथा 'अन्य' पद के योग में कौन-सी विभक्ति आती है–
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) सप्तमी (ण्) प्रथमा

95. ''जाड्यात् बद्धः'' यहाँ 'जाड्य' पद में पञ्चमी विभक्ति किस सूत्र से हुई है–
(अ) ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च
(इ) अन्यारादितरर्ते........युक्ते
(उ) विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्
(ण्) प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्

81. (इ), 82.(ण्), 83. (अ), 84. (उ), 85. (ण्), 86. (उ), 87. (इ), 88. (उ), 89. (अ), 90. (इ), 91. (उ), 92.(ण्), 93. (अ) 94. (अ), 95. (उ),

96. ''पृथक्, विना, नाना''– इन पदों के योग में कौन-सी विभक्ति नहीं आती–
(अ) पञ्चमी (इ) चतुर्थी
(उ) द्वितीया (ण्) तृतीया

97. ''अन्नस्य हेतोर्वसति'' यहाँ षष्ठी विभक्ति किस सूत्र से आयी है–
(अ) षष्ठी हेतुप्रयोगे (इ) षष्ठी शेषे
(उ) कर्तृकर्मणोः कृति (ण्) षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन

98. 'अतसर्थ प्रत्यय' के योग में कौन-सी विभक्ति आती है–
(अ) पञ्चमी (इ) चतुर्थी
(उ) षष्ठी (ण्) सप्तमी

99. 'इदम् एषाम् आसितम्''– यहाँ 'एतत्' में किस सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई है–
(अ) कर्तृकर्मणोः कृति (इ) क्तस्य च वर्तमाने
(उ) अधिकरणवाचिनश्च (ण्) षष्ठी शेषे

100. वर्तमानार्थ 'क्त' के योग में कौन-सी विभक्ति होती है–
(अ) तृतीया (इ) द्वितीया
(उ) प्रथमा (ण्) षष्ठी

101. 'कृत्' के योग में कर्त्ता में कौन-सी विभक्ति आती है–
(अ) द्वितीया (इ) षष्ठी
(उ) चतुर्थी (ण्) सप्तमी

102. 'जगतः कर्त्ता कृष्णः' यहाँ 'जगत्' में किस सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई–
(अ) षष्ठी शेषे (इ) षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन
(उ) षष्ठी हेतुप्रयोगे (ण्) कर्तृकर्मणोः कृति

103. 'कुर्वन् सृष्टिं हरिः'– यहाँ 'कुर्वन्' में षष्ठी का निषेध किस सूत्र से होता है–
(अ) न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम्
(इ) अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः
(उ) कमेरनिषेधः
(ण्) तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्याम् तृतीयान्यतरस्याम्

104. 'आधार' की क्या संज्ञा होती है–
(अ) कर्म (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ण्) अधिकरण

105. 'कटे आस्ते'– यहाँ 'कट' कैसा अधिकरण है–
(अ) वैषयिक (इ) अभिव्यापक
(उ) औपश्लेषिक (ण्) इनमें से कोई नहीं

106. यहाँ 'अभिव्यापक' अधिकरण है–
(अ) कटे आस्ते
(इ) मोक्षे इच्छा अस्ति
(उ) स्थाल्यां पचति
(ण्) सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति

107. 'मोक्षे इच्छा अस्ति' यहाँ कौन-सा आधार है–
(अ) अभिव्यापक (इ) वैषयिक
(उ) औपश्लेषिक (ण्) उपर्युक्त तीनों

108. अधिकरण (आधार) कितने प्रकार का होता है–
(अ) 4 (इ) 3
(उ) 5 (ण्) 7

109. 'चर्मणि द्वीपिनं हन्ति' - यहाँ 'चर्मन्' पद में किस सूत्र से सप्तमी विभक्ति हुई–
(अ) सप्तम्यधिकरणे च (इ) निमित्तात् कर्मयोगे
(उ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(ण्) साध्वसाधुप्रयोगे च

110. ''गोषु दुह्यमानासु गतः'' - यहाँ सप्तमी का विधान करने वाला सूत्र कौन है–
(अ) निमित्तात् कर्मयोगे (इ) सप्तम्यधिकरणे च
(उ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(ण्) साध्वसाधु प्रयोगे च

111. 'रुदति प्राव्राजीत्' यहाँ सप्तमी विभक्ति किस सूत्र से हुई–
(अ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(इ) षष्ठी चानादरे
(उ) निमित्तात् कर्मयोगे
(ण्) सप्तम्यधिकरणे च

96. (इ), 97. (अ), 98. (उ), 99. (उ), 100. (ण्), 101. (इ), 102. (ण्), 103. (अ), 104. (ण्), 105. (उ), 106. (ण्), 107. (इ), 108. (इ), 109. (इ), 110. (उ), 111. (इ)।

कारकगङ्गा (भाग-दो)

1. 'कारक' कहा जाता है-
(अ) क्रियां निर्वर्तयति करोतीति कारकम्
(इ) क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्
(उ) क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्
(ऋ) उपर्युक्त सभी

2. 'प्रातिपदिकार्थमात्र' का उदाहरण नहीं है-
(अ) उच्चैः, नीचैः (इ) कृष्णः, श्रीः
(उ) ज्ञानम्, फलम् (ऋ) तटः, तटम्

3. 'नियतलिङ्गक प्रातिपदिकार्थ' के उदाहरण हैं-
(अ) श्रीः (इ) कृष्णः
(उ) ज्ञानम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

4. 'अलिङ्ग प्रातिपदिकार्थमात्र' का उदाहरण है-
(अ) उच्चैः (इ) नीचैः
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

5. 'लिङ्गमात्राधिक्य' का उदाहरण नहीं है-
(अ) तटः (इ) तालः
(उ) तटी (ऋ) तटम्

6. 'परिमाणमात्र' का उदाहरण है-
(अ) द्रोणो व्रीहिः (इ) द्रोणाचार्यः
(उ) द्रोणी (द्रोणपुत्रः) (ऋ) द्रोणशिष्यः

7. 'वचनमात्र' का उदाहरण नहीं है-
(अ) एकलव्यः (इ) एकः
(उ) द्वौ (ऋ) बहवः

8. 'हे राजन् ! सार्वभौमो भव।' – यहाँ 'राजन्' पद में किस सूत्र से प्रथमा विभक्ति हई-
(अ) प्रातिपदिकार्थ-लिङ्ग परिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(इ) राजनि युधि-कृञः
(उ) सम्बोधने च
(ऋ) राल्लोपः

9. ''इत्याहुः कारकाणि षट्'' के अन्तर्गत परिगणित नहीं है-
(अ) सम्बोधन (इ) सम्बन्ध
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

10. 'प्रातिपदिकार्थमात्र' का उदाहरण कहा जाता है-
(अ) अलिङ्ग और नियतलिङ्ग
(इ) लिङ्गमात्राधिक्य
(उ) वचनमात्र (ऋ) उपर्युक्त सभी

11. ''नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः'' यह कथन किसका है-
(अ) पाणिनि का (इ) पतञ्जलि का
(उ) भट्टोजिदीक्षित का (ऋ) वरदराज का

12. ''प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा''- इस सूत्र में कितने पद हैं-
(अ) षड्पदम् (इ) पञ्चपदम्
(उ) त्रिपदम् (ऋ) द्विपदम्

13. प्रथमा विभक्ति विधायक सूत्र है-
(अ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(इ) सम्बोधने च (उ) उपर्युक्त दोनों
(ऋ) केवल 'अ' सही है

14. ''कर्तुरीप्सिततमं कर्म'' – यहाँ 'कर्तुः' पद में विभक्ति है-
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) सप्तमी (ऋ) चतुर्थी

15. ''विभक्तिः द्विविधा'' – इसके अन्तर्गत परिगणित है-
(अ) कारकविभक्तिः (इ) उपपदविभक्तिः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

16. अण्यन्त अवस्था के कर्त्ता की ण्यन्तावस्था में 'कर्मसंज्ञा' करने वाला सूत्र है-
(अ) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(इ) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(उ) दिवः कर्म च
(ऋ) गति–बुद्धि–प्रत्यवसानार्थ–शब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ

1. (ऋ), 2. (ऋ), 3. (ऋ), 4. (उ), 5. (इ),6. (अ), 7. (अ) 8. (उ), 9. (उ) 10. (अ), 11. (उ), 12. (ऋ), 13. (उ), 14. (इ),15. (उ), 16. (ऋ),

17. 'नी' और 'वह्' धातुओं के अण्यन्त कर्त्ता की ण्यन्तावस्था में 'कर्मसंज्ञा' का निषेध करने वाला वार्त्तिक है-
(अ) आदिखाद्योर्न (इ) नीवह्योर्न
(उ) भक्षेरहिंसार्थस्य न (ऋ) दृशेश्च

18. 'आधार' की कर्मसंज्ञा करने वाला सूत्र है-
(अ) अधिशीङ्स्थासां कर्म
(इ) अभिनिविशश्च
(उ) उपान्वध्याङ्वसः (ऋ) उपर्युक्त सभी

19. किस उपसर्ग के योग में 'शीङ्' 'स्था' और 'आस्' धातु के आधार की कर्मसंज्ञा हो जाती है-
(अ) उप (इ) परा
(उ) अधि (ए) अनु

20. 'अभि' और 'नि' उपसर्गपूर्वक किस धातु के आधार की 'कर्मसंज्ञा' होती है-
(अ) शीङ् (इ) विश्
(उ) स्था (ऋ) आस्

21. ''उपान्वध्याङ्वसः'' इस सूत्र में कितने उपसर्ग परिगणित हैं-
(अ) 3 (इ) 4
(उ) 5 (ऋ) 2

22. किन अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है-
(अ) अन्तरा (इ) अन्तरेण
(उ) धिक् (ऋ) उपर्युक्त सभी

23. अत्यन्त संयोग अर्थ होने पर कालवाचक तथा मार्गवाचक शब्दों से फलप्राप्ति न होने पर कौन विभक्ति होती है-
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

24. किस पद के योग में द्वितीया विभक्ति नहीं होती है-
(अ) अभितः, परितः (इ) समया, निकषा
(उ) हा, प्रति (ऋ) अयि, भोः

25. ''अभितः केशवं गोपाः,
गावस्तं परितः स्थिताः।
समया तं स्थिता राधा
निकषा तां सखीजनः॥''
यहाँ किस वार्तिक से द्वितीया विभक्ति हुई है-
(अ) उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु
(इ) अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रति-योगेऽपि
(उ) आदिखाद्योर्न
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

26. सह, साकम्, सार्धम्, समं, सत्रा आदि के योग में अप्रधान में किस विभक्ति का विधान किया जाता है-
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

27. ''येनाङ्गविकारः'' सूत्र का उदाहरण है-
(अ) अक्ष्णा काणः (इ) पादेन खञ्जः
(उ) पृष्ठेन कुब्जः (ऋ) उपर्युक्त सभी

28. ''इत्थम्भूतलक्षणे'' सूत्र से तृतीयाविभक्ति का विधान किया गया है-
(अ) 'जटाभिस्तापसः' में (इ) 'आकृत्या शूरः' में
(उ) 'वेषेण यतिः' में (ऋ) उपर्युक्त सभी

29. ''हेतौ'' सूत्र से हेतु अर्थात् कारण में कौन सी विभक्ति होती है-
(अ) तृतीया (इ) द्वितीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

30. 'पुण्येन दृष्टो हरिः' में किस सूत्र से तृतीया विभक्ति का विधान है-
(अ) अपवर्गे तृतीया (इ) इत्थंभूतलक्षणे
(उ) हेतौ (ए) कर्तृकरणयोस्तृतीया

31. ''अपवर्गे तृतीया'' – इस सूत्र का उदाहरण नहीं है-
(अ) मासम् अधीते
(इ) मासेन अधीतः अनुवाकः
(उ) क्रोशेन अधीतः अनुवाकः
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

17. (इ), 18. (ऋ), 19. (उ),20. (इ), 21. (इ), 22. (ऋ), 23. (इ), 24. (ऋ), 25. (इ), 26. (इ), 27. (ऋ), 28. (ऋ), 29. (अ) 30. (उ), 31. (अ),

32. ''हेतौ'' सूत्र से तृतीया विभक्ति का विधान नहीं हुआ है-

(अ) जटाभिस्तापसः (इ) दण्डेन घटः

(उ) पुण्येन दृष्टः हरिः (ऋ) अध्ययनेन वसति

33. ''प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्'' इस वार्तिक से तृतीया विभक्ति का विधान नहीं हुआ है-

(अ) प्रकृत्या चारुः (इ) गोत्रेण गार्ग्यः

(उ) सुखेन याति (ऋ) अक्षैः दीव्यति

34. ''पृथक् संस्कृतं नैव संस्कृतिः
विना संस्कृतिं नैव भारतम् ।
नाना भारतात् नेयं सृष्टिः,
अतः संस्कृतम्, अतः संस्कृतम् ॥''
यहाँ किन पदों के योग में द्वितीया और पञ्चमी विभक्ति का विधान किया गया है-

(अ) पृथक् (इ) विना

(उ) नाना (ऋ) उपर्युक्त सभी

35. ''धारेरुत्तमर्णः'' इस सूत्र में 'उत्तमर्ण' पद का क्या अर्थ है-

(अ) ऋण लेने वाला (इ) ऋण देने वाला

(उ) ऋण न देने वाला (ऋ) ऋण दिलाने वाला

36. 'उत्तमर्ण' की संज्ञा होती है-

(अ) करण (इ) अपादान

(उ) सम्प्रदान (ऋ) कर्म

37. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' – यहाँ 'पुष्प' में चतुर्थी विभक्ति किस सूत्र से हुई -

(अ) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (इ) स्पृहेरीप्सितः

(उ) धारेरुत्तमर्णः (ऋ) हेतौ

38. 'क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य, असूय' या इनके समानार्थक धातुओं के प्रयोग में, जिसके प्रति कोप किया जाय, उसकी क्या संज्ञा होगी -

(अ) सम्प्रदान (इ) करण

(उ) अपादान (ऋ) कर्म

39. ''तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या'' इस वार्तिक से किसमें चतुर्थी का विधान हुआ है-

(अ) काव्यं यशसे (इ) यूपाय दारु

(उ) मुक्तये हरिं भजति (ऋ) उपर्युक्त सभी में

40. जुगुप्सा, विराम और प्रमाद अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में जिससे घृणा की जाय, जिससे रोका जाय, और जहाँ प्रमाद किया जाय, उसकी क्या संज्ञा होगी-

(अ) करण (इ) कर्म

(उ) अपादान (ऋ) सम्प्रदान

41. ''जुगुप्सा-विराम-प्रमादार्थानामुपसंख्यानम्'' इस वार्त्तिक का उदाहरण है-

(अ) पापात् जुगुप्सते (इ) पापात् विरमति

(उ) धर्मात् प्रमाद्यति (ऋ) उपर्युक्त सभी

42. 'डरना' और 'रक्षा करना' अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में जिससे डरा जाय या जिससे रक्षा करनी हो, उसकी क्या संज्ञा होगी-

(अ) अपादानसंज्ञा (इ) सम्प्रदानसंज्ञा

(उ) करणसंज्ञा (ऋ) कर्मसंज्ञा

43. 'अपादानसंज्ञा' किस सूत्र से होगी-

(अ) भीत्रार्थानां भयहेतुः (इ) जनिकर्तुः प्रकृतिः

(उ) भुवः प्रभवः (ऋ) उपर्युक्त सभी

44. ''भीत्रार्थानां भयहेतुः'' इस अपादान-संज्ञक सूत्र का उदाहरण है-

(अ) चौरात् बिभेति (इ) चौरात् त्रायते

(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

45. ''वारणार्थानामीप्सितः'' इस सूत्र से 'रोकना' अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में ईप्सित् अर्थात् जिससे रोकना अभीष्ट है उसकी क्या संज्ञा होगी-

(अ) अपादान (इ) सम्प्रदान

(उ) करण (ऋ) कर्म

46. 'यवेभ्यो गां वारयति' – यहाँ 'यव' शब्द की अपादान संज्ञा किस सूत्र से हुई-

(अ) ध्रुवमपायेऽपादानम् (इ) जनिकर्तुः प्रकृतिः

(उ) भुवः प्रभवः (ऋ) वारणार्थानामीप्सितः

47. 'मातुर्निलीयते कृष्णः' – यहाँ ''मातुः'' में किस विभक्ति का प्रयोग है-

(अ) चतुर्थी (इ) सप्तमी

(उ) पञ्चमी (ऋ) द्वितीया

32. (अ), 33. (ऋ), 34. (ऋ), 35. (इ), 36. (उ), 37. (इ),38. (अ), 39. (ऋ), 40. (उ), 41. (ऋ), 42. (अ) 43. (ऋ), 44. (उ), 45. (अ), 46. (ऋ), 47. (उ)

48. ''अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति'' इस सूत्र से 'छिपने वाला जिससे अपना अदर्शन चाहता है', उसकी क्या संज्ञा होगी-

(अ) करण (इ) अधिकरण
(उ) सम्प्रदान (ऋ) अपादान

49. ''आख्यातोपयोगे'' सूत्र द्वारा नियमपूर्वक विद्याग्रहण के विषय में आख्याता पढ़ाने वाले व्याख्याता की क्या संज्ञा होगी -

(अ) करणसंज्ञा (इ) कर्मसंज्ञा
(उ) कर्त्ता संज्ञा (ऋ) अपादानसंज्ञा

50. ''आख्यातोपयोगे'' – यह कैसा सूत्र है -

(अ) विधिसूत्रम् (इ) संज्ञासूत्रम्
(उ) अधिकारसूत्रम् (ऋ) परिभाषासूत्रम्

51. ''आख्यातोपयोगे'' सूत्र का उदाहरण है -

(अ) उपाध्यायात् अधीते
(इ) गुरोः अधीते
(उ) संस्कृतभूषणात् अधीते
(ऋ) उपर्युक्त सभी

52. ''आख्यातोपयोगे'' सूत्र में 'आख्याता' पद का क्या अर्थ है-

(अ) अध्यापयिता (इ) व्याख्याता
(उ) प्रवक्ता (ऋ) उपर्युक्त सभी

53. ''जनिकर्तुः प्रकृतिः'' इस सूत्र का उदाहरण है-

(अ) ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते
(इ) गोमयात् वृश्चिकः जायते
(उ) कामात् क्रोधः अभिजायते
(ऋ) उपर्युक्त सभी

54. ''जनिकर्तुः प्रकृतिः'' – इस सूत्र के 'जनिकर्तुः' पद में किस विभक्ति का प्रयोग है-

(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) द्वितीया (ऋ) चतुर्थी

55. 'अपादानसंज्ञा' करने वाला सूत्र है-

(अ) जनिकर्तुः प्रकृतिः (इ) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(उ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

56. 'प्र + भू' धातु के कर्त्ता का 'प्रभव' अर्थात् प्रथम प्रकट होने के स्थान की क्या संज्ञा होगी-

(अ) अपादानसंज्ञा (इ) करणसंज्ञा
(उ) अधिकरण संज्ञा (ऋ) कर्मसंज्ञा

57. 'भुवः प्रभवः' इस अपादानसंज्ञक सूत्र का उदाहरण नहीं होगा -

(अ) हिमवतः गङ्गा प्रभवति
(इ) प्रयागात् संस्कृतगङ्गा प्रभवति
(उ) अमरकण्टकात् नर्मदा प्रभवति
(ऋ) पङ्कात् पङ्कजः जायते।

58. ''भुवः प्रभवः'' सूत्र में 'प्रभवः' पद का क्या अर्थ है -

(अ) जन्मदाता (उत्पत्तिस्थान) (इ) हिमालय
(उ) कारण (ऋ) उपर्युक्त सभी

59. ''भुवः प्रभवः'' सूत्र में 'भुवः' पद में किस विभक्ति का प्रयोग है -

(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) प्रथमा (ऋ) द्वितीया

60. किस पद के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होगा -

(अ) अन्य, आरात् (इ) इतर, ऋते
(उ) दिक्शब्द (ऋ) उपर्युक्त सभी

61. वर्जन (छोड़ना) अर्थ में 'अप' और 'परि' उपसर्गों की क्या संज्ञा होगी -

(अ) अपादानसंज्ञा (इ) कर्मप्रवचनीयसंज्ञा
(उ) गतिसंज्ञा (ऋ) धातुसंज्ञा

62. 'कर्मप्रवचनीयसंज्ञक' हैं -

(अ) अप (इ) आङ्
(उ) परि (ऋ) उपर्युक्त सभी

63. 'अप, परि, आङ्' – इन कर्मप्रवचनीयों के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होता है -

(अ) द्वितीया (इ) पञ्चमी
(उ) षष्ठी (ऋ) चतुर्थी

48. (ऋ), 49. (ऋ), 50. (इ), 51. (ऋ), 52.(ऋ) 53. (ऋ), 54. (इ), 55. (अ), 56. (अ), 57. (ऋ), 58. (अ), 59. (इ), 60. (ऋ), 61. (इ), 62.(ऋ) 63. (इ),

64. प्रतिनिधि (स्थानापन्न) या प्रतिदान (बदले में देना) अर्थों में 'प्रति' की कर्मप्रवचनीयसंज्ञा किस सूत्र से होगी -

(अ) प्रतिः प्रतिनिधि–प्रतिदानयोः
(इ) प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्
(उ) प्रतिजनादिभ्यः
(ऋ) प्रतिपथमेति

65. ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र द्वारा कृत् प्रत्ययान्त के साथ अर्थ द्वारा योग होने पर कर्त्ता या कर्म में किस विभक्ति का प्रयोग होता है -

(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) चतुर्थी (ऋ) तृतीया

66. ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति किसमें हुई है -

(अ) जगतः कर्त्ता कृष्णः (इ) कृष्णस्य कृतिः
(उ) सूत्रकारस्य कृतिः (ऋ) उपर्युक्त सभी में

67. ''क्तस्य च वर्त्तमाने'' सूत्र द्वारा वर्तमानकाल में विहित 'क्त प्रत्यय' के योग में किस विभक्ति का विधान किया जाता है -

(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) चतुर्थी (ऋ) तृतीया

68. राज्ञां मतः, राज्ञां बुद्धः, राज्ञां पूजितः - इन उदाहरणों में षष्ठी का विधान किस सूत्र से हुआ है -

(अ) कर्तृकर्मणोः कृति (इ) कृत्यानां कर्त्तरि वा
(उ) क्तस्य च वर्त्तमाने (ऋ) अधिकरणवाचिनश्च

69. ''हेतौ'' सूत्र द्वारा हेतु में प्राप्त तृतीया विभक्ति का बाधक/अपवाद सूत्र है -

(अ) षष्ठी हेतुप्रयोगे (इ) हेतुमति च
(उ) हेतुहेतुमतोर्लिङ् (ऋ) उपर्युक्त सभी

70. ''अन्नस्य हेतोर्वसति'' इस उदाहरण में 'अन्न' शब्द में षष्ठीविभक्ति का प्रयोग किस सूत्र से हुआ है -

(अ) हेतौ (इ) षष्ठी शेषे
(उ) षष्ठी हेतुप्रयोगे (ऋ) हेतुमति च

71. ''निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम्'' इस वार्तिक द्वारा किस विभक्ति का विधान किया गया है-

(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) षष्ठी (ऋ) सभी विभक्तियों का

72. जिसकी प्रसिद्ध क्रिया से किसी अन्य की दूसरी क्रिया लक्षित होती है, वहाँ किस विभक्ति का प्रयोग होता है

(अ) षष्ठी (इ) सप्तमी
(उ) पञ्चमी (ऋ) चतुर्थी

73. ''गोषु दुह्यमानासु गतः'' यहाँ 'गो' शब्द में सप्तमी का विधान किस सूत्र से हुआ -

(अ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(इ) यतश्च निर्धारणम्
(उ) आधारोऽधिकरणम्
(ऋ) यस्य विभाषा

74. ''यतश्च निर्धारणम्'' सूत्र से निर्धारण में समुदायवाचक शब्द से किस विभक्ति का विधान होता है -

(अ) षष्ठी (इ) सप्तमी
(उ) पञ्चमी (ऋ) केवल 'अ' और 'इ'

75. 'यतश्च निर्धारणम्'' सूत्र का उदाहरण है -

(अ) गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा ।
(इ) नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः ।
(उ) छात्राणां छात्रेषु वा राकेशः पटुः
(ऋ) उपर्युक्त सभी

76. मर्यादा और अभिविधि अर्थ में 'आङ्' की क्या संज्ञा होगी -

(अ) उपसर्जनसंज्ञा (इ) कर्मप्रवचनीयसंज्ञा
(उ) संहितासंज्ञा (ऋ) गतिसंज्ञा

77. अभिव्यापक आधार का उदाहरण है -

(अ) तिलेषु तैलम् (इ) सर्वस्मिन् आत्मा
(उ) पयसि घृतम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

78. 'वैषयिक आधार' का उदाहरण है -

(अ) मोक्षे इच्छा अस्ति
(इ) व्याकरणे रुचिः अस्ति
(उ) संस्कृते जिज्ञासा अस्ति
(ऋ) उपर्युक्त सभी

79. 'औपश्लेषिक आधार' का उदाहरण है -

(अ) कटे आस्ते (इ) स्थाल्यां पचति
(उ) गङ्गायां घोषः (ऋ) उपर्युक्त सभी

64. (अ), 65. (इ), 66. (ऋ), 67.(इ), 68. (उ), 69. (अ), 70. (उ), 71. (ऋ),72. (इ), 73. (अ), 74. (ऋ), 75. (ऋ), 76. (इ), 77.(ऋ), 78. (ऋ), 79. (ऋ),

80. 'अधिकरण' में किस विभक्ति का प्रयोग होता है -
(अ) पञ्चमी (इ) सप्तमी
(उ) षष्ठी (ऋ) द्वितीया

81. 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से पञ्चमीविभक्ति का विधान हुआ है -
(अ) ग्रामाद् आयाति (इ) वृक्षात् पर्णं पतति
(उ) धावतोऽश्वात् पतति (ऋ) उपर्युक्त सभी में

82. ''नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च'' इस सूत्र से किसमें चतुर्थी विभक्ति का विधान हुआ है -
(अ) हरये नमः, प्रजाभ्यः स्वस्ति
(इ) अग्नये स्वाहा, पितृभ्यः स्वधा
(उ) इन्द्राय वषट्, दैत्येभ्यो हरिः अलम्
(ऋ) उपर्युक्त सभी में

83. अपाय (विश्लेष/वियोग) में जो अवधि बना हो, वह कारक क्या कहलाता है -
(अ) अपादान (इ) सम्प्रदान
(उ) करण (ऋ) अधिकरण

84. अनुक्त सम्प्रदान में किस विभक्ति का प्रयोग होता है -
(अ) तृतीया (इ) चतुर्थी
(उ) पञ्चमी (ऋ) षष्ठी

85. 'विप्राय गां ददाति' में 'विप्र' शब्द से चतुर्थी का विधान क्यों किया गया -
(अ) क्योकि विप्र निर्धन है ।
(इ) क्योकि विप्र अकारान्त पुँल्लिङ्ग है ।
(उ) क्योंकि विप्र सम्प्रदान कारक है ।
(ऋ) क्योंकि विप्र गाय चाहता है ।

86. अनुक्त कर्त्ता और करण में किस विभक्ति का विधान होता है -
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

87. ''साधकतमम्'' किस कारक का लक्षण है -
(अ) सम्प्रदान (इ) करण
(उ) कर्म (ऋ) अधिकरण

88. जब किसी कारक की अपादान आदि विशेष संज्ञा न कहनी हो तो ''अकथितं च'' सूत्र से उसकी कौन सी संज्ञा होगी -
(अ) कर्मसंज्ञा (इ) करणसंज्ञा
(उ) सम्प्रदानसंज्ञा (ऋ) अधिकरणसंज्ञा

89. ''अकथितं च'' इस सूत्र के सन्दर्भ में कितनी द्विकर्मक धातुओं का परिगणन किया गया है -
(अ) 12 (इ) 16
(उ) 18 (ऋ) 20

90. द्विकर्मक धातुओं में प्रथम परिगणित धातु कौन है -
(अ) याच् (इ) पच्
(उ) दुह् (ऋ) दण्ड्

91. षोडश द्विकर्मक धातुओं में परिगणित नहीं है -
(अ) प्रच्छ (इ) पच्
(उ) व्रज (ऋ) ब्रू

92. ''विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्'' यहाँ 'विषवृक्ष' में द्वितीया विभक्ति क्यों नहीं हुई -
(अ) यहाँ 'असाम्प्रतम्' निपात के कारण कर्म उक्त है ।
(इ) 'विषवृक्ष' से द्वितीया होती ही नहीं है ।
(उ) क्योंकि वृक्ष विषैला है ।
(ऋ) 'विषवृक्ष' कर्म है ही नहीं।

93. तद्धित प्रत्यय द्वारा कर्म के उक्त हो जाने का उदाहरण है -
(अ) लक्ष्म्या सेवितो हरिः
(इ) शतेन क्रीतः शत्यः अश्वः
(उ) प्राप्तः आनन्दः यं सः प्राप्तानन्दो जनः
(ऋ) उपर्युक्त सभी

94. अभिहित (उक्त) कर्म में किस विभक्ति का विधान होता है -
(अ) द्वितीया (इ) प्रथमा
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

95. अनभिहित (अनुक्त) कर्म में किस सूत्र से द्वितीया विभक्ति होती है -
(अ) कर्तुरीप्सिततमं कर्म (इ) कर्मणि द्वितीया
(उ) द्वितीयायां च (ऋ) द्वितीया ब्राह्मणे

80. (इ), 81. (ऋ), 82.(ऋ), 83. (अ), 84. (इ), 85. (उ), 86. (उ), 87. (इ), 88. (अ), 89. (इ), 90. (उ), 91. (उ), 92.(अ), 93. (इ), 94. (इ), 95. (इ),

96. 'लक्ष्म्या हरिः सेव्यते' – इस उक्त कर्म 'हरि' में प्रथमा विभक्ति किस सूत्र से आयी -
(अ) प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्
(इ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(उ) प्रथमयोः पूर्वसवर्णः
(ऋ) प्रथमायाश्च

97. तिङ् के द्वारा कर्म के उक्त होने का उदाहरण है -
(अ) लक्ष्म्या हरिः सेव्यते
(इ) लक्ष्म्या सेवितः हरिः
(उ) शतेन क्रीतः शत्यः अश्वः
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

98. कृत् प्रत्यय द्वारा कर्म के उक्त होने का उदाहरण है -
(अ) प्राप्तम् आनन्दः यं सः प्राप्तानन्दो जनः
(इ) शतेन क्रीतः शत्यः अश्वः
(उ) लक्ष्म्या सेवितः हरिः
(ए) लक्ष्म्या हरिः सेव्यते

99. 'पयसा ओदनं भुङ्क्ते' यहाँ 'पयस्' की कर्मसंज्ञा क्यों नहीं हुई -
(अ) क्योंकि 'पयस्' कर्त्ता का ईप्सिततम नहीं है
(इ) क्योंकि 'पयस्' की कर्मसंज्ञा होती नहीं
(उ) क्योंकि 'पयस्' नपुंसकलिङ्ग है
(ऋ) क्योंकि 'पयस्' चावल के साथ मिला है

100. 'माषेषु अश्वं बध्नाति' – यहाँ 'माष' पद की कर्म संज्ञा क्यों नहीं हुई–
(अ) क्योंकि माष (उड़द) को खाकर घोड़ा बीमार हो जायेगा
(इ) क्योंकि 'बध्नाति' क्रिया के कर्त्ता को 'अश्व' अभीष्टतम है, 'माष' नहीं
(उ) क्योंकि अश्व उड़द खाना चाह रहा है
(ऋ) क्योंकि 'माष' पद की कर्मसंज्ञा होती ही नहीं

101. कर्त्ता क्रिया के द्वारा जिसे प्राप्त करना चाहता है उस कारक की क्या संज्ञा होगी -
(अ) करणसंज्ञा (इ) कर्मसंज्ञा
(उ) सम्प्रदानसंज्ञा (ऋ) अपादानसंज्ञा

102. 'द्रोणो व्रीहिः' इस उदाहरण में 'द्रोणः' पद का क्या अर्थ है -
(अ) गुरु द्रोणाचार्य (इ) एक माप विशेष
(उ) एक जंगली वृक्ष (ऋ) 'द्रोण' नामक औषधि

103. 'द्रोणो व्रीहिः' के 'व्रीहिः' पद में प्रथमाविभक्ति किस अर्थ में हैं -
(अ) 'परिमाण अर्थ' में (इ) 'प्रातिपदिकार्थ' में
(उ) 'वचनमात्र' में (ऋ) 'लिङ्गमात्राधिक्य' में

104. 'द्रोण' रूप विशेष परिमाण का 'सु' रूप सामान्य परिमाण से किस सम्बन्ध से अन्वय है -
(अ) अभेद सम्बन्ध से
(इ) सामान्य सम्बन्ध से
(उ) अविनाभाव सम्बन्ध से
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

105. 'द्रोण' का 'व्रीहि' के साथ किस सम्बन्ध से अन्वय है -
(अ) परिच्छेद्य–परिच्छेदक भाव सम्बन्ध
(इ) प्रतिपाद्य–प्रतिपादक सम्बन्ध
(उ) उपर्युक्त दोनों
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

106. 'द्रोणो व्रीहिः' इस उदाहरण में 'द्रोण' पद में प्रथमा विभक्ति किस अर्थ में हुई है -
(अ) लिङ्गमात्राधिक्ये (इ) प्रातिपदिकार्थमात्रे
(उ) परिमाणमात्रे (ए) वचनमात्रे

107. प्रथमा विभक्ति का विधान किया गया है-
(अ) प्रातिपदिकार्थमात्रे
(इ) लिङ्गमात्राधिक्ये
(उ) परिमाणमात्रे, वचनमात्रे
(ऋ) उपर्युक्त सभी में

108. लिङ्गमात्राधिक्य का उदाहरण है-
(अ) तटः तटी, तटम्
(इ) शुक्लः, शुक्ला, शुक्लम्
(उ) कृष्णः, कृष्णा, कृष्णम्
(ऋ) उपर्युक्त सभी

96. (इ), 97. (अ), 98. (उ), 99. (अ), 100. (इ), 101. (इ), 102. (इ), 103. (इ), 104. (अ), 105. (अ), 106. (उ), 107. (ऋ), 108. (ऋ),

109. ''सम्बोधने च'' सूत्र में 'सम्बोधन' पद का अर्थ है-
(अ) अभिमुखीकरणम् (इ) सम्यक् बोधनम्
(उ) आह्वानम् (ध्यानाकर्षणम्)
(ऋ) उपर्युक्त सभी

110. 'प्रातिपदिकार्थ' पद में समास है -
(अ) पञ्चमी तत्पुरुष (इ) षष्ठी तत्पुरुष
(उ) द्वन्द समास (ऋ) बहुव्रीहि

111. द्वितीया विभक्ति विधायक सूत्र है -
(अ) कर्मणि द्वितीया (इ) द्वितीयायां च
(उ) द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः
(ऋ) द्वितीयाटौस्स्वेनः

112. ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र में किस पद की अनुवृत्ति आ रही है -
(अ) अनभिहिते (इ) द्वितीया
(उ) आधारः (ऋ) कर्मप्रवचनीयाः

113. तृतीयाविभक्ति विधायक सूत्र है-
(अ) तृतीया सप्तम्योर्बहुलम्
(इ) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
(उ) कर्तृकरणयोस्तृतीया
(ऋ) उपर्युक्त सभी

114. चतुर्थी विभक्ति विधायक सूत्र है-
(अ) चतुर्थी सम्प्रदाने
(इ) चतुर्थी तदर्थार्थबलि-हित-सुखरक्षितैः
(उ) उपर्युक्त दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

115. षष्ठी विभक्ति का विधान करने वाला सूत्र है-
(अ) षष्ठी (इ) षष्ठी शेषे
(उ) ष्णान्ता षट् (ऋ) उपर्युक्त सभी

116. सप्तमी विभक्ति विधायक सूत्र है-
(अ) सप्तमी शौण्डैः (इ) सप्तम्यधिकरणे च
(उ) सप्तम्यास्त्रल् (ऋ) सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ

117. यदि कर्ता के ईप्सिततम की 'कर्मसंज्ञा' तो उसी तरह अनीप्सित की क्या संज्ञा होगी-
(अ) करणसंज्ञा (इ) सम्प्रदानसंज्ञा
(उ) अधिकरणसंज्ञा (ऋ) कर्मसंज्ञा

118. ''तथायुक्तं चानीप्सितम्'' इस सूत्र का उदाहरण है-
(अ) ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति
(इ) ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते
(उ) उपर्युक्त दोनों
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

119. ''नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषट्योगाच्च'' इस सूत्र से कौन सी विभक्ति होती है -
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) षष्ठी

120. 'कृते' शब्द के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होता है - ***T.G.T.-1999***
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) षष्ठी

121. 'धिक्' के योग में कौन सी विभक्ति होती है- ***T.G.T.-1999***
(अ) षष्ठी (इ) पञ्चमी
(उ) द्वितीया (ऋ) तृतीया

122. 'जटाभिस्तापसः' में तृतीया विभक्ति विधायक सूत्र है - ***T.G.T.-1999***
(अ) हेतौ (इ) अपवर्गे तृतीया
(उ) येनाङ्गविकारः (ऋ) इत्थंभूतलक्षणे

123. 'इत्थंभूतलक्षणे'' सूत्र से सम्बद्ध विभक्ति है -
(अ) पञ्चमी (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

124. ''अभितः संस्कृतं गङ्गा
वयं तां परितः स्थिताः।
मां समया स्थिता देवी
निकषा तां मे भारती ॥''
यहाँ किन पदों के योग में द्वितीया विभक्ति का विधान हुआ है -
(अ) अभितः (इ) परितः
(उ) समया, निकषा (ऋ) उपर्युक्त सभी

125. कर्ता का इष्टतमकारक है -
(अ) कर्म (इ) करण
(उ) सम्प्रदान (ऋ) अपादान

109. (ऋ), 110. (इ), 111. (अ), 112. (अ), 113. (उ), 114. (अ), 115. (इ), 116. (इ), 117. (ऋ), 118. (उ), 119. (उ), 120. (ऋ), 121. (उ), 122. (ऋ), 123. (उ), 124. (ऋ), 125. (अ),

126. ''छात्रेभ्यः स्वस्ति'' में चतुर्थी विभक्ति का कारण है -
(अ) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(इ) ''नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषट्योगाच्च''
(उ) चतुर्थी सम्प्रदाने
(ऋ) चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः

127. 'चौरात् बिभेति' में पञ्चमी विभक्ति का कारण है –
(अ) अपादाने पञ्चमी (इ) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(उ) आख्यातोपयोगे (ऋ) ध्रुवमपायेऽपादानम्

128. 'अनुक्त कर्म' में विभक्ति होती है -
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) पञ्चमी

129. ''पादेन खञ्जः'' में तृतीया विभक्ति है -
(अ) 'येनाङ्गविकारः' सूत्र से
(इ) 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र से
(उ) 'साधकतमं करणं' सूत्र से
(ऋ) 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से

130. ''गुरुं याचते विद्यां'' यहाँ 'गुरु' की कर्मसंज्ञा विधायक सूत्र है -
(अ) अकथितं च (इ) दिवः कर्म च
(उ) तथायुक्तं चानीप्सितम् (ऋ) अभिनिविशश्च

131. ''अन्तराऽन्तरेण युक्ते'' सूत्र है - *T.G.T.-1999*
(अ) अधिकरणकारक का (इ) कर्मकारक का
(उ) करणकारक का (ऋ) सम्प्रदानकारक का

132. 'स्पृहा' के योग में विभक्ति होती है -
(अ) द्वितीया (इ) तृतीया
(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

133. ''चर्मणि द्वीपिनं हन्ति'' यहाँ 'चर्मणि' पद में विभक्ति है - *T.G.T.-2004*
(अ) सप्तमी (इ) चतुर्थी
(उ) तृतीया (ऋ) प्रथमा

134. ''यस्य च भावेन भावलक्षणम्'' यह सूत्र है - *T.G.T-2004*
(अ) करणकारक में (इ) कर्मकारक में
(उ) अधिकरणकारक में (ऋ) अपादानकारक में

135. 'तस्मै श्रीगुरवे नमः' – इस वाक्य के 'श्रीगुरवे' पद में विभक्ति है -
(अ) द्वितीया (इ) पञ्चमी
(उ) षष्ठी (ऋ) चतुर्थी

136. ''भीत्रार्थानां भयहेतुः'' सूत्र है -
(अ) कर्मकारक का (इ) अपादानकारक का
(उ) करणकारक का (ऋ) सम्प्रदानकारक का

137. ''भीत्रार्थानां भयहेतुः'' सूत्र किस कारक का विधान करता है -
(अ) सम्प्रदान (इ) अपादान
(उ) करण (ऋ) अधिकरण

138. ''हनुमते नमः'' – यहाँ 'हनुमते' पद में किस विभक्ति का प्रयोग है -
(अ) चतुर्थी (इ) तृतीया
(उ) पञ्चमी (ऋ) सप्तमी

139. 'रामेण बाणेन हतो बाली' में 'बाली' कौन सा कारक है -
(अ) कर्त्ताकारक (इ) कर्मकारक
(उ) करणकारक (ऋ) सम्प्रदानकारक

140. चतुर्थी विभक्ति कहाँ होती है -
(अ) उभयतः योगे (इ) अङ्गविकार में
(उ) क्रुधद्रुह् आदि के योग में
(ऋ) जुगुप्सादौ

141. 'वयम् -------अधितिष्ठामः' उपयुक्त विकल्प का चयन करें -
(अ) आसने (इ) आसनात्
(उ) आसनेन (ऋ) आसनम्

142. 'पृथक्, विना, नाना' पदों के योग में विभक्ति होती है -
(अ) द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी
(इ) तृतीया, षष्ठी, सप्तमी
(उ) द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी
(ऋ) पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी

126. (इ), 127. (इ), 128. (इ), 129. (अ), 130. (अ), 131. (इ), 132. (उ), 133. (अ), 134. (उ), 135. (ऋ), 136. (इ), 137. (इ), 138. (अ), 139. (इ), 140. (उ), 141. (ऋ), 142. (उ)

143. दानस्य कर्मणः यम् अभिप्रैति सः किं स्यात्-

(अ) अपादानसंज्ञः (इ) सम्प्रदानसंज्ञः

(उ) करणसंज्ञः (ऋ) कर्मसंज्ञः

144. 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्, किन्तु क्रियया यम् अभिप्रैति सः किं भवति -

(अ) सम्प्रदानम् (इ) अपादानम्

(उ) करणम् (ऋ) कर्म

145. ''पत्ये शेते'' – यहाँ 'पति' की क्या संज्ञा होगी -

(अ) अपादान (इ) करण

(उ) अधिकरण (ऋ) सम्प्रदान

146. ''रुच्यर्थानां प्रीयमाणः'' सूत्र से रुच्यर्थक धातुओं के प्रयोग में 'प्रीयमाण' की क्या संज्ञा होगी -

(अ) अपादान (इ) करण

(उ) सम्प्रदान (ऋ) अधिकरण

147. श्लाघ्, ह्नुङ्, स्था, और शप् – इन चार धातुओं के प्रयोग में ज्ञीप्स्यमान की क्या संज्ञा होगी -

(अ) कर्म (इ) करण

(उ) सम्प्रदान (ऋ) अपादान

148. ''धारेरुत्तमर्णः'' सूत्र द्वारा 'धृ' धातु के प्रयोग में उत्तमर्ण (ऋणदाता) की क्या संज्ञा होगी -

(अ) सम्प्रदान (इ) करण

(उ) अपादान (ऋ) कर्म

149. ''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः'' यहाँ सूत्रस्थ 'असूया' पद का क्या अर्थ है -

(अ) गुणेषु दोषाविष्करणम्

(इ) दोषे अपि गुणान्वेषणम्

(उ) अपकारः

(ऋ) अमर्षः

150. ''क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य, असूय'' इन धातुओं के प्रयोग में जिसके प्रति कोप प्रदर्शित हो, उसकी क्या संज्ञा होगी-

(अ) करण (इ) सम्प्रदान

(उ) अधिकरण (ऋ) कर्त्ता

151. उपसर्गसहित 'क्रुध्, द्रुह्' इन धातुओं के प्रयोग में जिसके प्रति कोप किया जाय उसकी क्या संज्ञा होगी -

(अ) कर्मसंज्ञा (इ) करणसंज्ञा

(उ) सम्प्रदानसंज्ञा (ऋ) अधिकरणसंज्ञा

152. 'अनु' और 'प्रति' उपसर्गपूर्वक 'गृ' धातु के कारण जो पूर्वव्यापार प्रेरणा का कर्त्ता हो, उसकी ''अनुप्रतिगृणश्च'' सूत्र द्वारा क्या संज्ञा होगी -

(अ) करण (इ) कर्म

(उ) अधिकरण (ऋ) सम्प्रदान

153. 'मुक्तये हरिं भजति' यहाँ चतुर्थी का विधान किस वार्तिक से हुआ है -

(अ) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या

(इ) क्लृपि सम्पद्यमाने च

(उ) हितयोगे च

(ऋ) उत्पातेन ज्ञापिते च

154. ''उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी'' इस नियम का उदाहरण है -

(अ) नमस्करोति देवान् (इ) प्रजाभ्यः स्वस्ति

(उ) हरये नमः (ऋ) अग्नये स्वाहा

155. ''दानीयः विप्रः'' – यहाँ 'विप्र' पद में सम्प्रदान होने पर भी चतुर्थी क्यों नहीं हुई -

(अ) क्योंकि सम्प्रदान अनीयर् प्रत्यय से उक्त है ।

(इ) क्योंकि 'विप्र' पद में चतुर्थी होती ही नहीं ।

(उ) क्योंकि 'विप्र' पद में प्रातिपदिकार्थमात्र में प्रथमा हुई है ।

(ऋ) क्योंकि 'विप्र' दान लेता ही नहीं ।

156. 'पृथक्, विना, नाना' – इन पदों के योग में किस विभक्ति का प्रयोग नहीं होता है -

(अ) द्वितीया (इ) तृतीया

(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

157. 'दूर' एवं 'अन्तिक' (समीप) अर्थवाले शब्दों से कौन सी विभक्ति नहीं होगी-

(अ) द्वितीया (इ) तृतीया

(उ) चतुर्थी (ऋ) पञ्चमी

143. (इ), 144. (अ), 145. (ऋ), 146. (उ)147. (उ), 148. (अ), 149. (अ), 150. (इ) 151. (अ), 152. (ऋ), 153. (अ), 154. (अ), 155. (अ), 156. (उ), 157. (उ),

158. 'नटस्य गाथां श्रृणोति' यहाँ 'नट' पद में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग क्यों नहीं हुआ -
(अ) क्योंकि यहाँ नियमपूर्वक शिक्षाप्राप्ति नहीं है ।
(इ) क्योंकि 'नट' गुरु नहीं है ।
(उ) क्योंकि 'नट' में षष्ठीविभक्ति है ।
(ऋ) क्योंकि 'नट' नाटक करता है ।

159. 'वृक्षस्य पर्णं पतति' – यहाँ 'वृक्ष' शब्द से पञ्चमी विभक्ति क्यों नहीं हुई-
(अ) क्योंकि 'वृक्ष' का पतनक्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं, अपितु 'पर्ण' के साथ है ।
(इ) क्योंकि 'वृक्ष' अपादानसंज्ञक नहीं है ।
(उ) क्योंकि 'अपादान' के अभाव में पञ्चमी नहीं होती है ।
(ऋ) उपर्युक्त सभी सही हैं ।

160. गति और उपसर्ग संज्ञा का अपवाद (बाधक) सूत्र है -
(अ) अनुर्लक्षणे (इ) अन्तराऽन्तरेण युक्ते
(उ) कर्मप्रवचनीयाः (ऋ) आधारोऽधिकरणम्

161. किसकी कर्मप्रवचनीयसंज्ञा होती है -
(अ) अनु, उप, प्रति, परि
(इ) अभि, अधि, सु, अति
(उ) अपि, अप, आङ्
(ऋ) उपर्युक्त सभी की

162. ''सप्तम्यधिकरणे च'' – यहाँ सूत्रस्थ 'च' पद से गृहीत है -
(अ) सप्तमी (इ) दूर और अन्तिक अर्थ
(उ) अधिकरण (ऋ) इनमें से कोई नहीं

163. दूर और अन्तिक शब्दों से किस विभक्ति का विधान होता है -
(अ) द्वितीया, तृतीया (इ) पञ्चमी
(उ) सप्तमी (ऋ) उपर्युक्त सभी

164. ''नक्षत्रे च लुपि'' सूत्र से किस विभक्ति का विधान होता है -
(अ) तृतीया (इ) सप्तमी
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

165. कृत् प्रत्यय के योग में कर्त्ता और कर्म दोनों में यदि षष्ठी विभक्ति प्राप्त हो तो ''उभयप्राप्तौ कर्मणि'' इस सूत्र से किसमें षष्ठी का विधान होगा -
(अ) कर्त्ता में (इ) कर्म में
(उ) दोनों में (ऋ) किसी में नहीं

166. किस सूत्र द्वारा षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियों का प्रयोग होता है -
(अ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(इ) यतश्च निर्धारणम्
(उ) आधारोऽधिकरणम्
(ऋ) उभयप्राप्तौ कर्मणि

167. सिद्धान्तकौमुदी कारक प्रकरण का प्रथम सूत्र है -
(अ) कर्तुरीप्सिततमं कर्म
(इ) सम्बोधने च
(उ) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(ऋ) विभाषा कृञि

168. सिद्धान्तकौमुदी कारकप्रकरण का अन्तिम सूत्र है -
(अ) सप्तम्यधिकरणे च
(इ) आधारोऽधिकरणम्
(उ) यस्य च भावेन भावलक्षणम्
(ऋ) विभाषा कृञि

169. पञ्चमी विभक्ति विधायक सूत्र है -
(अ) पञ्चम्यास्तसिल्
(इ) अपादाने पञ्चमी
(उ) पञ्चमी भयेन
(ऋ) पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः

170. ''राध्'' और 'ईक्ष्' धातु के योग में जिसके विषय में शुभाशुभविषयक प्रश्न पूछा जाय, उसकी ''राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः'' इस सूत्र से क्या संज्ञा होती है -
(अ) करण (इ) सम्प्रदान
(उ) कर्म (ऋ) अधिकरण

158. (अ), 159. (ऋ), 160. (अ), 161. (ऋ), 162. (इ), 163. (ऋ), 164. (उ), 165. (इ) 166. (इ), 167. (उ), 168. (ऋ), 169. (इ), 170. (इ)।

5. प्रत्ययगङ्गा (भाग-1)

1. **'गच्छन्' इस पद में प्रत्यय है–**
(अ) तुमुन् (इ) शतृ
(उ) शानच् (ऋ) क्त

2. **'निक्षिप्य' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) नि+ क्षिप् + ल्यप्
(इ) नि + क्षिपु + ल्यप्
(उ) निक्षिप + ल्यप्
(ऋ) क्षिप् + ल्यप्

3. **'तापः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) तप् + घञ् (इ) ताप् + यञ्
(उ) तप् + ष्यञ् (ऋ) तप् + ण्यत्

4. **'एधनीयम्' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) तव्यत् (इ) यत्
(उ) अनीयर् (ऋ) ण्यत्

5. **'आदिष्टः' में प्रत्यय है–**
(अ) तुमुन् (इ) क्त्वा
(उ) ल्यप् (ऋ) क्त

6. **'पठनीयः में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) क्त्वा (इ) क्त
(उ) शतृ (ऋ) अनीयर्

7. **'चेयम्' में प्रत्यय जुड़ा है–**
(अ) छ (इ) यत्
(उ) ण्यत् (ऋ) टाप्

8. **'हस्तयितुम्' में प्रत्यय है–**
(अ) तुमुन् (इ) क्त्वा
(उ) क्त (ऋ) ल्यप्

9. **नाम के बाद जो प्रत्यय आते हैं, उन्हें क्या कहते हैं ?**
(अ) णिजन्त (इ) तद्धित
(उ) तिङ् (ऋ) कृदन्त

10. **'भू' धातु में 'क्त' प्रत्यय का योग करने पर बनेगा–**
(अ) भूत्वा (इ) भूतः
(उ) भूयः (ऋ) भूतिः

11. **'कृ' धातु में 'तव्यत्' प्रत्यय का योग करने पर रूप बनेगा–**
(अ) कर्त्तव्यम् (इ) कृतव्यम्
(उ) कृर्तव्यम् (ऋ) करणीयम्

12. **'पठित्वा' में प्रकृति एवं प्रत्यय है–**
(अ) पठ् + क्त (इ) पठ् + अनीयर्
(उ) पठ् + क्त्वा (ऋ) पठ् + शतृ

13. **'नयमानः' में प्रकृति एवं प्रत्यय है–**
(अ) नी + क्तिन् (इ) नी + शानच्
(उ) नी + शतृ (ऋ) नय + मानः

14. **'लभ्यः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) लभ् + यत् (इ) लभ् + शानच्
(उ) लाभ् + ल्यप् (ऋ) लभ + क्त्वा

15. **'करणीयम्' में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) कृ + अनीयर् (इ) कृ + शानच्
(उ) कृ + शतृ (ऋ) कृ + कत्वा

16. **'ज्ञातुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) ज्ञा + तुमुन् (इ) ज्ञान + तुमुन्
(उ) ज्ञा + ल्यप् (ऋ) ज्ञा + अनीयर्

17. **'ढक्' प्रत्यय का सूत्र है–**
(अ) स्त्रीभ्यो ढक् (इ) रसादिभ्यः च
(उ) शिवादिभ्योऽण् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

1. (इ), 2. (अ), 3. (अ), 4. (उ), 5. (ऋ), 6. (ऋ), 7. (इ) 8. (अ), 9. (इ) 10. (इ),
11. (अ), 12. (उ), 13. (इ), 14. (अ),15.(अ) 16. (अ), 17. (अ),

18. **निम्नलिखित तालिका–1 में उदाहरण तथा तालिका–2 में प्रत्ययों के नाम दिए गए हैं– सुमेलित कीजिए–**

तालिका–1	**तालिका–2**
a. भवनीयः	I. शतृ
b. चेयम्	II. क्तवतु
c. पठितवान्	III. अनीयर्
d. पठन्ती	IV. यत्

	(a)	**(b)**	**(c)**	**(d)**
(अ)	III	IV	II	I
(इ)	IV	II	III	I
(उ)	III	I	IV	II
(ऋ)	II	III	IV	I

19. **'गत्वा' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) गम् +क्त (इ) गम् + क्त्वा
(उ) गम् + अनीयर् (ऋ) गम् + क्तिन्

20. **'कुर्वाणः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) कृ + शतृ (इ) कृ + ल्यप्
(उ) कृ + क्त्वा (ऋ) कृ + शानच्

21. **'नेयः' में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) नी + ल्यप् (इ) नी + शानच्
(उ) नी + यत् (ऋ) नी + अनीयर्

22. **'अजा' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) अजा + ल्युट् (इ) अजा + टाप्
(उ) अज + अ (ऋ) अज + टाप्

23. **'ग्रहणम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) ग्रह + ल्यप् (इ) ग्रह + ल्युट्
(उ) ग्रह् + क्तिन् (ऋ) ग्रह + तुमुन्

24. **'लिख्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय के प्रयोग से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनता है–**
(अ) लिखत् (इ) लेखनम्
(उ) लिखन् (ऋ) लिखन्ती

25. **निम्नलिखित तालिका–1 में उदाहरण तथा तालिका–2 में प्रत्ययों के नाम दिए गए हैं– सुमेलित कीजिए–**

तालिका-1	**तालिका-2**
A. **आश्वः**	I. **अण्**
B. **विद्यावान्**	II. **ढक्**
C. **भागिनेयः**	III. **वतुप्**
D. **गार्ग्यायणः**	IV. **फक्**

	A	**B**	**C**	**D**
(अ)	I	II	III	IV
(इ)	I	III	II	IV
(उ)	III	II	I	IV
(ऋ)	IV	III	II	I

26. **'विहाय' में उपसर्ग प्रकृति एवं प्रत्यय है–**
(अ) वि + हा + क्तिन्
(इ) वि + हा + क्त
(उ) वि + हा + ल्यप्
(ऋ) वि + हा + शतृ

27. **'पा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय के योग से रूप बनता है–**
(अ) पीत्वा (इ) पायित्वा
(उ) पिबित्वा (ऋ) पात्वा

28. **'दानम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) दा + ल्युट् (इ) दा + ल्यप्
(उ) दा + शानच् (ऋ) दा + शतृ

29. **'पठितः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) पठ् + क्तवतु (इ) पठ् + ल्यप्
(उ) पठ् + क्त (ऋ) पठ् + क्त्वा

30. **'शयितुम्' शब्द में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) शि + तुमुन् (इ) शे + तुमुन्
(उ) शा + तुमुन् (ऋ) शी + तुमुन्

31. **'लब्धवान्' रूप किस प्रत्यय से बना है ?**
(अ) क्त्वा से (इ) शतृ से
(उ) क्त से (ऋ) क्तवतु से

18. (अ), 19. (इ), 20. (ऋ) 21. (उ), 22. (ऋ), 23. (इ), 24. (ऋ), 25. (इ) 26. (उ), 27. (अ), 28. (अ), 29. (उ), 30. (ऋ), 31. (ऋ),

32. **निम्नलिखित तालिका–1 में उदाहरण तथा तालिका–2 में प्रत्यय के नाम दिए गए हैं, सुमेलित कीजिए–**

तालिका–1	**तालिका–2**
A. आसीनः	I. यत्
B. हसितुम्	II. तृच्
C. हर्तृ	III. तुमुन्
D. शक्यः	IV. शानच्

	A	**B**	**C**	**D**
(अ)	IV	II	III	I
(इ)	I	II	III	IV
(उ)	IV	III	II	I
(ऋ)	I	IV	III	II

33. **'प्राप्य' में उपसर्ग प्रकृति एवं प्रत्यय है–**
(अ) प्र + आप् + क्त्वा
(इ) प्र + आप् + क्तिन्
(उ) प्र + आप् + ल्युट्
(ऋ) प्र + आप् + ल्यप्

34. **'नेतुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) नी + अनीयर् (इ) नी + शतृ
(उ) नी+ तुमुन् (ऋ) नी + क्त्वा

35. **'दर्शनीयः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) दृश + ल्युट् (इ) दृश + तुमुन्
(उ) दृश + अनीयर् (ऋ) दृश + ल्यप्

36. **'पतितम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) पा + क्तवतु (इ) पा + ल्युट्
(उ) पत् + क्त (ऋ) पा + क्त्वा

37. **'प्रच्छ्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय से बनता है–**
(अ) प्रछ्वा (इ) प्रष्ट्वा
(उ) प्रिछ्वा (ऋ) पृष्ट्वा

38. **'भवन्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) भू + क्त (इ) भू + ल्यप्
(उ) भू + शानच् (ऋ) भू + शतृ

39. **'भवितुम्' में प्रत्यय है–**
(अ) शानच् (इ) तुमुन्
(उ) शतृ (ऋ) क्त्वा

40. **पानीयम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) पा + ल्यप् (इ) पा + अनीयर्
(उ) पा + शानच् (ऋ) पा + क्त्वा

41. **'ज्ञा' धातु में 'ल्युट्' प्रत्यय लगने से बनता है–**
(अ) ज्ञातम् (इ) ज्ञानः
(उ) ज्ञानम् (ऋ) ज्ञातुम्

42. **'भोक्तुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) भुज् + तुमुन् (इ) भृज् + तुमुन्
(उ) भोग + तुमुन् (ऋ) भोज + तुमुन्

43. **'ग्रह' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय से बनता है–**
(अ) गहीत्वा (इ) ग्राहीत्वा
(उ) ग्रहीत्वा (ऋ) गृहीत्वा

44. **'धनवान्' में कौन सा प्रत्यय है–**
(अ) क्तवतु (इ) अण्
(उ) मतुप् (ऋ) क्त

45. **'दृश' धातु में 'तुमुन्' के योग से बनता है–**
(अ) दृष्ट्वा (इ) द्रष्टुम्
(उ) द्रष्टुतुम् (ऋ) पश्यितुम्

46. **'स्थातुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) स्था + शानच् (इ) स्था + तुमुन्
(उ) स्था + क्त्वा (ऋ) स्था + शतृ

47. **'नयनम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) ने + ल्युट् (इ) नयन + ल्युट्
(उ) नी + ल्युट् (ऋ) नय + ल्युट्

48. **'गुप् + ण्यत्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) गौप्यम् (इ) गोप्यम्
(उ) गोपनीयम् (ऋ) गोपनम्

49. **'सेव्' में शानच् प्रत्यय के योग से बनता है–**
(अ) सेवा (इ) सेवायमान
(उ) सेवमानः (ऋ) सेवकः

32. (उ), 33. (ऋ), 34. (उ), 35. (उ), 36. (उ), 37. (ऋ), 38. (ऋ), 39. (इ), 40. (इ), 41. (उ), 42. (अ)
43. (ऋ), 44. (उ), 45. (इ), 46. (इ), 47. (उ) 48. (इ), 49. (उ)

50. **'पातुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) पा + शानच् (इ) पा + शतृ
(उ) पा + क्त्वा (ऋ) पा + तुमुन्

51. **'यजमानाः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) यज् + शानच् (इ) यज् + क्तिन्
(उ) यज + मानः (ऋ) यजम् + आनः

52. **वे शब्दांश जो किसी शब्द या धातु के पीछे लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं, क्या कहलाते हैं–**
(अ) उपसर्ग (इ) प्रत्यय
(उ) वाच्य (ऋ) अव्यय

53. **'हन्' धातु से 'क्त' प्रत्यय लगाने पर क्या रूप बनता है ?**
(अ) हन्तः (इ) हतः
(उ) हम्तः (ऋ) हंतः

54. **'रक्षणीयः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) रक्ष + णीयः (इ) रक्ष् + अनीयः
(उ) रक्ष् + अनीयर् (ऋ) रक्ष + अणीयरी

55. **'प्र + विश् + ल्यप्' जोड़ने पर बनता है–**
(अ) पृविश्य (इ) प्रविशय
(उ) प्रविश्य (ऋ) प्राविश्य

56. **'हसित्वा' पद में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) हस् + क्त्वा (इ) हसि + क्त्वा
(उ) हस + क्त्वा (ऋ) हसित् + क्त्वा

57. **'भक्ष् + तुमुन्' जोड़ने पर रूप बनेगा–**
(अ) भक्षयितुम् (इ) भक्षितुम्
(उ) भक्षयतुम् (ऋ) भक्षतुम्

58. **'ज्ञातुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) ज्ञा + तुमुन् (इ) ज्ञा + तुम्
(उ) ज्ञात् + तुम् (ऋ) ज्ञान + तुमुन्

59. **'उत्थाय' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) उत् + थाय
(इ) उत् + स्थाय्
(उ) उत् + था + ल्यप्
(ऋ) उत् + स्था + ल्यप्

60. **'विलोक्य' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) वि + लोक् + ल्यप् (इ) वि + लोक्य
(उ) वी + लोक् + ल्यप् (ऋ) विलोक् + ल्यप्

61. **'प्र + नम् + ल्यप्' जोड़ने पर क्या रूप बनता है–**
(अ) प्रणम्य (इ) प्रणित्वा
(उ) प्रणत्वा (ऋ) प्रनत्वा

62. **'इह्' तद्धितान्त में मूल शब्द क्या है ?**
(अ) इदम् (इ) एतत्
(उ) अदस् (ऋ) तत्

63. **'विप्रयुक्तः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) वि + युक् +त
(इ) वि + युन् + क्त
(उ) वि + प्र + युज् + क्तिम्
(ऋ) वि + प्र + युज् + क्त

64. **'नी + शानच्' के योग से यह रूप बनेगा–**
(अ) नयानः (इ) नयमानः
(उ) नीयमानः (ऋ) नीयानः

65. **'ब्रूञ् + णिच्' के योग से यह रूप बनता है–**
(अ) वाचयति (इ) वक्तुम्
(उ) विवक्षति (ऋ) वचनम्

66. **प्रत्ययान्त पद को प्रत्यय से मिलान कीजिए–**

1. जग्ध्वा	A. सन्नतम्
2. प्रक्षाल्य	B. क्त्वान्तम्
3. दिदृक्षते	C. णिजन्तम्
4. ज्ञापयति	D. ल्यबन्तम्

	1	2	3	4
(अ)	B	D	A	C
(इ)	D	C	A	B
(उ)	C	A	B	D
(ऋ)	A	B	C	D

67. **प्रातिपदिक से किसका विधान होता है ?**
(अ) तिङ् (इ) कृत्
(उ) तद्धित (ऋ) णिच्

50. (ऋ), 51. (अ), 52. (इ) 53. (इ), 54. (उ), 55. (उ), 56. (अ), 57. (अ) 58. (अ), 59. (ऋ), 60. (अ), 61. (अ), 62. (अ), 63. (ऋ), 64. (इ), 65. (अ), 66. (अ), 67.(उ),

68. 'वद् + घञ्= वादः' में धातु के अकार की 'वृद्धि' किस सूत्र से होती है ?
(अ) अत उपधायाः (इ) तद्धितेष्वचामादेः
(उ) अचोञ्णिति (ऋ) किति च

69. 'नमयति-नाशयति-पाठयति' इनमें प्रत्यय है–
(अ) सन् प्रत्ययः (इ) तृच् प्रत्ययः
(उ) ल्युट् प्रत्ययः (ऋ) णिच् प्रत्ययः

70. 'रक्ष् + णिच्' के योग से यह रूप बनता है–
(अ) रिरक्षिषति (इ) रक्षयति
(उ) रक्ष्ययते (ऋ) रक्षिता

71. 'हस्' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय जोड़ने पर रूप बनता है–
(अ) हस्तुमु (इ) हस्तुम्
(उ) हसितुम् (ऋ) हसतुम्

72. 'क्री + तुमुन्' जोड़ने पर क्या बनता है–
(अ) क्रतुम् (इ) कर्तुम्
(उ) क्रीतुम् (ऋ) क्रेतुम्

73. 'वि + भज् + ल्यप्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) विभज्य (इ) विभाज्या
(उ) विभाज्य (ऋ) विभज्या

74. 'विलिख्य' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) वि + लिख् + यत्
(इ) वि + लेख् + ल्यप्
(उ) वि + लिख + ल्यु
(ऋ) वि + लिख् + ल्यप्

75. 'घ्राणीयः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) घ्रा + अनीयर् (इ) घ्रा + अवीयर्
(उ) घ्रा + अनीयः (ऋ) घ्रा + णीयः

76. 'पा + अनीयर्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) पानीयः (इ) पानीयुः
(उ) पाणीयः (ऋ) पानीयर्

77. 'गम् + तव्यत्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) गणयितव्यः (इ) गन्तव्यः
(उ) गणतव्यः (ऋ) गणितव्यः

78. 'गम्' धातु से 'तुमुन्' प्रत्यय लगने पर क्या रूप बनता है ?
(अ) गंनुम् (इ) गम्तुम्
(उ) गन्तुम् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

79. 'श्रोतुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) श्रो + तुमुन् (इ) श्रो + तुम्
(उ) श्रु + तुम् (ऋ) श्रु + तुमुन्

80. 'आ + दा + ल्यप्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) अदाप्य (इ) आदाल्य
(उ) अदाय (ऋ) आदाय

81. 'नृत् + अनीयर्' से क्या रूप बनता है–
(अ) नृनीयः (इ) नृतनीयः
(उ) नृर्तअनीयः (ऋ) नर्तनीयः

82. 'कृ + अनीयर्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) कृनीयः (इ) करणीयः
(उ) करनीयः (ऋ) कृणीयः

83. 'वि + कृ + ल्यप्' से क्या रूप बनता है ?
(अ) विक्रीय (इ) विकीर्य
(उ) विकृय (ऋ) विकार्य

84. 'नी + क्त' जोड़ने पर क्या रूप बनता है ?
(अ) नतः (इ) नितः
(उ) नीतः (ऋ) नेतः

85. 'नम् + क्त्वा' से रूप बनता है–
(अ) नेत्वा (इ) नत्वा
(उ) नमत्वा (ऋ) नीत्वा

86. 'आप्तः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) आप् + क्त (इ) आप + क्त
(उ) आप + ल्यप् (ऋ) आप् + यत्

87. 'हस्' धातु में 'क्त' प्रत्यय से कौन सा रूप बनता है ?
(अ) हस्तः (इ) हसतः
(उ) हसितः (ऋ) हसति

88. 'रक्ष् + क्त' से बनता है–
(अ) रक्षिक्तः (इ) रक्षितिः
(उ) रक्षतः (ऋ) रक्षितः

68. (अ), 69. (ऋ), 70. (इ), 71. (उ), 72. (ऋ), 73. (अ), 74. (ऋ), 75. (अ), 76. (अ), 77. (इ), 78. (उ), 79. (ऋ), 80. (ऋ), 81. (ऋ), 82.(इ), 83. (इ), 84. (उ), 85. (इ), 86. (अ), 87. (उ), 88. (ऋ),

89. **'नि + वस् + तिप्' जोड़ने पर क्या रूप बनता है ?**
(अ) निवसित (इ) निवसिति
(उ) निवसति (ऋ) निवास

90. **'श्रु + क्त' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) श्रूतः (इ) श्रुतः
(उ) श्रुतिः (ऋ) श्रुक्तः

91. **'प्रच्छ् + अनीयर्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) पृश्नीयः (इ) प्रश्नीयः
(उ) पृच्छनीयः (ऋ) प्रच्छनीयः

92. **'जि + क्तवतु' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) जितवतु (इ) जतवान्
(उ) जितवान् (ऋ) जीतवान्

93. **'मृ + क्त' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) मृक्तः (इ) मृतः
(उ) मर्त (ऋ) म्रतः

94. **'दातुम्' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) दा + तुम् (इ) दा +तुमुन्
(उ) दा +अतुम् (ऋ) दा + तुम

95. **'गै + क्तवतु' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) गैतवान् (इ) गतवान्
(उ) गैतवतु (ऋ) गीतवान्

96. **'लब्धव्यः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) लब् + तव्यत् (इ) लभु + तव्यत्
(उ) लभ् + तव्यत् (ऋ) लब्ध + तव्यत्

97. **'अनुभूय' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) अनु + भू + ल्यप्
(इ) अनु + भूय
(उ) अनु + भु + ल्यप्
(ऋ) अनु + भूय + ल्यप्

98. **'हस् + क्तवतु' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) हसितवान् (इ) हस्वान्
(उ) हस्तवान् (ऋ) हस्तवतु

99. **'वस् + तिप्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) वशति (इ) वसोति
(उ) वस्ति (ऋ) वसति

100. **'मोदितव्यः' में प्रकृति-प्रत्यय है ?**
(अ) मोद् + तव्यत् (इ) मोदी + तव्यत्
(उ) मुद् + तव्यत् (ऋ) मोदि + तव्यः

101. **'आग्रहीतुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) आग्रही + तुमुन्
(इ) आ + ग्रह् + तुमुन्
(उ) आ + गृह् + तुमुन्
(ऋ) आ + ग्रही + तुमुन्

102. **'प्रच्छ् + क्तवतु' के योग से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) पृच्छ्वान् (इ) प्रच्छवान्
(उ) पृष्टवान् (ऋ) प्रष्टवान्

103. **जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा संख्यावाचक शब्दों के साथ जुड़कर उनके अर्थ को बदल देते हैं, वे क्या कहलाते हैं ?**
(अ) कृत् (इ) तद्धित
(उ) कृदन्त (ऋ) तद्धितान्त

104. **'अग्निमत्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) अग्नि + मत् (इ) अग्नि + मतुप्
(उ) अग्नि + शानच् (ऋ) अग्नि + वतुप्

105. **'मधुर + त्व' के योग से क्या रूप बनता है ?**
(अ) मधुरता (इ) मधुरत्व
(उ) मधुरम् (ऋ) मधुरत्वम्

106. **'मासिक' पद में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) मास + इक् (इ) मास + त्व
(उ) मास + ठक् (ऋ) मास + ईक्

107. **'पण्डित + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) पण्डित्व (इ) पण्डितम्
(उ) पाण्डित्त्वम् (ऋ) पण्डितत्वम्

108. **सज्जन + तल्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) सज्जनता (इ) सज्जनतल्
(उ) सजनता (ऋ) सजन्ता

109. **'पौराणिक' में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) पौराण + इक् (इ) पौरा + णिक्
(उ) पौरान् + णिक् (ऋ) पुराण + ठक्

89. (उ), 90. (इ), 91. (ऋ), 92. (उ), 93. (इ) 94. (इ), 95. (ऋ), 96. (उ), 97. (अ), 98. (अ), 99. (ऋ), 100. (उ), 101. (इ), 102. (उ), 103. (इ), 104. (इ), 105. (ऋ), 106. (उ), 107. (उ), 108. (अ), 109. (ऋ)

110. 'दुष्ट + तल्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?
(अ) दुष्टता (इ) दुष्टम्
(उ) दुष्टतल् (ऋ) दुश्टता

111. 'नागरिक' में प्रकृति–प्रत्यय क्या है ?
(अ) नगर + इक् (इ) नागर + इक्
(उ) नगरि + ठक् (ऋ) नगर + ठक्

112. 'धीमत्' में प्रकृति-प्रत्यय है ?
(अ) धी + मतुप् (इ) धी + मत्
(उ) धी + वतुप् (ऋ) धी + शानच्

113. 'हीनता' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) हीन + ता (इ) हीन + ठक्
(उ) हीन + त्व (ऋ) हीन + तल्

114. 'मूर्खता' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) मूर्ख + तल् (इ) मूर्ख + त्व
(उ) मूर्ख + ता (ऋ) मूर्ख + टाप्

115. 'श्री + मतुप्' में कौन सा रूप बनता है ?
(अ) श्रीमान् (इ) श्रीमत्
(उ) श्रीवत् (ऋ) श्रीमतुप्

116. 'भानुमत्' में प्रकृति प्रत्यय है–
(अ) भानुः + मत् (इ) भानु + मतुप्
(उ) भानु + मत् (ऋ) भानू + मतुप्

117. 'वीरता' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) वीर + त्व (इ) वीर + टाप्
(उ) वीर + तल् (ऋ) वीर + ता

118. 'वर्ष + ठक्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?
(अ) वर्षठक् (इ) वर्षिक
(उ) वार्षिक (ऋ) इनमें से कोई नहीं

119. 'शब्द + ठक्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?
(अ) शाब्दकी (इ) शब्दकम्
(उ) शाब्दिकः (ऋ) शाब्दक

120. 'गो + मतुप्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?
(अ) गोवान् (इ) गोम्त
(उ) गोमत (ऋ) गोमत्

121. 'वार्षिकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) वार्ष + इक् (इ) वर्ष + शक
(उ) वर्ष + ठक् (ऋ) वर्षि + ठक्

122. 'दुर्जनता' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) दुर्जन + तल् (इ) दूर्जन + त्व
(उ) द्रुजन + ता (ऋ) दुर्जन + त्व

123. 'वैदिकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) वेद + इक् (इ) वैद + इक्
(उ) वेद + ठक् (ऋ) वेद + इक

124. 'कठोरता' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) कठोर + त्व (इ) कठोर + ता
(उ) कठोर + तल् (ऋ) कठोर + ठक्

125. 'प्रियता' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) प्रिय + त्व (इ) प्रिय + ता
(उ) प्रिय + तल् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

126. 'मात्रिकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) मात्रा + ठक् (इ) मात्री + इक्
(उ) मात्रा + इक् (ऋ) मात्रु + ठक्

127. 'स्थूल + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है–
(अ) स्थूलता (इ) स्थूलतव
(उ) स्थूल्तम् (ऋ) स्थूलत्वम्

128. 'ऐतिहासिकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) ऐतिहास + ठक् (इ) ऐतिहास + इक्
(उ) इतिहास + ठक् (ऋ) इति + हासिक

129. 'साप्ताहिकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–
(अ) सप्ता + हिक (इ) सप्ताह + ठक्
(उ) सप्ताह + इक् (ऋ) उपर्युक्त सभी

130. 'देव + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है ?
(अ) देवत्वम् (इ) देवता
(उ) देवीत्वम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

131. 'शूद्र + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है ?
(अ) शूद्रत्वम् (इ) शूद्रता
(उ) शूद्रत्व (ऋ) शूद्रतम्

110. (अ), 111. (ऋ) 112. (अ), 113. (ऋ), 114. (अ), 115. (इ), 116. (इ), 117. (उ), 118. (उ), 119. (उ), 120. (ऋ),
121. (उ), 122. (अ), 123. (उ) 124. (उ), 125. (उ), 126. (अ), 127. (ऋ), 128. (उ), 129. (इ), 130. (अ), 131. (अ),

132. **'नाविकः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) नो + इक् (इ) ना + वक्
(उ) नौ + ठक् (ऋ) नाव् + उक्

133. **'लिख् + तृच्' के योग से यह रूप बनता है–**
(अ) लेखिता (इ) लेखितव्यः
(उ) लेखितुम् (ऋ) लेखः

134. **'वैतनिक' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) वैतन + इक् (इ) वैतन + ठक्
(उ) वेतन + ठक् (ऋ) वेतन + ईक्

135. **'गुरुता' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) गुरु + त्व (इ) गुरुता + ता
(उ) गुरु + तल् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

136. **'बन्धु + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) बन्धुता (इ) बन्धुत्वाम्
(उ) बन्धुत्वम् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

137. **'दृढ + तल्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) दृढता (इ) दृढताम्
(उ) दृढतल् (ऋ) दृढत्व

138. **'हनुमत्' में प्रकृति-प्रत्यय है ?**
(अ) हनु + मतुप् (इ) हनु + त्व
(उ) हनु + मत् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

139. **'वधू + मतुप्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) वधूवत् (इ) वधूमान्
(उ) वधूमत् (ऋ) वधूवान्

140. **'रस + त्व' के योग से कौन सा रूप बनता है?**
(अ) रसतम् (इ) रस्त्वम्
(उ) रसत्वम् (ऋ) रसत्व

141. **'शक्ति + मतुप्' के योग से कौन रूप बनता है ?**
(अ) शक्तिवान् (इ) शक्तिमान्
(उ) शक्तिमत् (ऋ) शक्तिम्त्

142. **'पठितवत्' में प्रत्यय है–*P.G.T. –2000***
(अ) क्तवतु (इ) वतुप्
(उ) मतुप् (ऋ) क्त

143. **'कुम्भकार' में प्रत्यय है–*P.G.T. –2002***
(अ) ल्यप् (इ) शतृ
(उ) शानच् (ऋ) घञ्

144. **'देयः' में प्रत्यय है– *P.G.T. –2003***
(अ) शानच् (इ) तव्य
(उ) शतृ (ऋ) यत्

145. **'गणपति + अण्' का रूप होगा–**
P.G.T.–2000
(अ) गणपत्यण् (इ) गणपतिम्
(उ) गाणपत्यम् (ऋ) गाणपतम्

146. **'वैनतेयः' पद में किस प्रत्यय का विधान है ?**
(अ) मयट् (इ) वतुप्
(उ) मतुप् (ऋ) ढक्

147. **'मणिमयः' में प्रकृति-प्रत्यय है ?**
(अ) मणि + घञ् (इ) मणि + मयट्
(उ) मणि +ल्यप् (ऋ) मणि + शानच्

148. **'वर्णयन्तः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) वर्ण + णिच् + शतृ + प्रथमा बहुवचन
(इ) वर्ण + णिच् + क्त + प्रथमा बहुवचन
(उ) वर्ण + णिच् + शतृ + प्रथमा एकवचन
(ऋ) वर्ण + णिच् + शानच् + प्रथमा एकवचन

149. **'गूढः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) गुह् + क्तिन् (इ) गुह् + क्त
(उ) गुह + यत् (ऋ) गुह् + ण्यत्

150. **'पठ् + घञ् = पाठः' में कौन सी विधि है ?**
(अ) पूर्वरूप (इ) गुण
(उ) सम्प्रसारण (ऋ) वृद्धि

151. **'शुद्धिमत्तरः' में किस प्रत्यय का प्रयोग किया गया है ?**
(अ) तरप् प्रत्यय (इ) तुमुन् प्रत्यय
(उ) ण्युल् प्रत्यय (ऋ) यत् प्रत्यय

152. **'उद्धूय' का प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) उत् + धूम् + ल्यप्
(इ) उत् + धूम् + क्त्वा
(उ) उत् + धूम् + ण्यत्
(ऋ) उत् + धूम् + घञ्

132. (उ), 133. (अ), 134. (उ), 135. (उ) 136. (उ), 137. (अ), 138. (अ), 139. (अ), 140. (उ), 141. (उ), 142. (अ), 143. (ऋ), 144. (ऋ), 145. (ऋ), 146. (ऋ), 147. (इ) 148. (अ), 149. (इ), 150. (ऋ), 151. (अ), 152. (अ),

153. **'निर्माय' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) निर् + मा + ल्यप् (इ) निर् + मा + क्त्वा
(उ) निर् + मा +ण्यत् (ऋ) नि + मा + घञ्

154. **'प्रस्तावना' की प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) प्र + स्तु + णिच् + युच् + टाप्
(इ) प्र + स्तु + शानच्
(उ) प्र + स्तु + शत्
(ऋ) प्र + स्तु + णिच् + टाप्

155. **'विद्यावान्' में प्रत्यय है–**
(अ) वतुप् (इ) तल्
(उ) टाप् (ऋ) क्त्वा

156. **प्रत्यय क्या होते हैं ?**
(अ) अन्तसर्गाः (इ) मध्यसर्गाः
(उ) पूर्वसर्गाः (ऋ) संयोगसर्गाः

157. **'स्तवनीयम्' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) केलिमर् (इ) ल्युट्
(उ) अनीयर् (ऋ) तव्यत्

158. **'ग्रह्' धातु के 'ण्यत्' प्रत्यय से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) ग्राह्यम् (इ) ग्राह्यति
(उ) गृह्यः (ऋ) ग्रह्यम्

159. **'कृ + तृच्' के योग से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) कर्तृ (इ) कारकः
(उ) कारिका (ऋ) कृतः

160. **'जीनः' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) क्तवतु (इ) क्त
(उ) तव्य (ऋ) क्यच्

161. **'स्तोव्य' पद में कौन सा प्रत्यय है–**
(अ) क्त (इ) वः
(उ) क्तवतु (ऋ) तव्य

162. **'गै' धातु के अनीयर् से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) गानीयः (इ) गौनियम्
(उ) गौनीयः (ऋ) गनीयम्

163. **'दर्शकः' में प्रत्यय है–**
(अ) तव्यत् (इ) ण्वुल्
(उ) ल्युट् (ऋ) ण्यत्

164. **'शुष्' धातु में क्त प्रत्यय लगने से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) शुक्तः (इ) शुकः
(उ) शुष्कः (ऋ) शुस्तः

165. **'देयः- देया - देयम्' इन पदों में प्रत्यय है–**
(अ) ल्यप् (इ) यत्
(उ) क्यत् (ऋ) क्यप्

166. **'जि + अच्' के योग में पद निष्पन्न होगा–**
(अ) ज्यच् (इ) जियः
(उ) जेयः (ऋ) जयः

167. **'मृतवती' में कौन प्रत्यय है ?**
(अ) क्तवतु (इ) वतुप्
(उ) मतुप् (ऋ) क्त

168. **'कृ + तृच्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) कृतम् (इ) कृतृन्
(उ) कर्तुम् (ऋ) कर्ता

169. **'भावः' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) क (इ) घञ्
(उ) अच् (ऋ) अष्ट

170. **'भयम्' में प्रत्यय है–**
(अ) अण् (इ) क
(उ) अच् (ऋ) घञ्

171. **'जातिः' में प्रत्यय है–**
(अ) केलिमर् (इ) ल्यु
(उ) णिनि (ऋ) क्तिन्

172. **'केलिमर्' है–**
(अ) कृदन्तप्रत्ययः (इ) सुबन्तप्रत्ययः
(उ) तद्धितप्रत्ययः (ऋ) तिङन्तप्रत्ययः

173. **'शप्यम्' में 'शप्' धातु में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) ल्युट् (इ) ल्युप्
(उ) अच् (ऋ) यत्

153. (अ), 154. (अ), 155. (अ), 156. (अ), 157. (उ), 158. (अ), 159. (अ) 160. (इ), 161. (ऋ), 162. (अ), 163. (इ), 164. (उ), 165. (इ), 166. (ऋ), 167. (अ), 168. (ऋ), 169. (इ), 170. (उ), 171. (ऋ), 172. (अ), 173. (ऋ),

174. **'छिदेलिमः, छिदेलिमा, छिदेलिमम्' इन पदों में प्रत्यय है–**
(अ) एलिमर् (इ) केलिमर्
(उ) ण्यत् (ऋ) अनीयर्

175. **'स्थायी' में प्रत्यय है–**
(अ) णिनि (इ) क्विप्
(उ) शतृ (ऋ) ल्युट्

176. **'ईक्षमाणः' में प्रत्यय है–**
(अ) केलिमर् (इ) शानच्
(उ) कानच् (ऋ) शतृ

177. **'प्रियः' इसमें प्रत्यय है–**
(अ) अण् (इ) क
(उ) ल्यप् (ऋ) ष्ट्रन्

178. **'कुम्भं + कृ + अण्' से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) कुम्भकारः (इ) कुम्भिकः
(उ) कुम्भिन् (ऋ) कुम्भा

179. **'यू + क्तिन्' से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) यूतिः (इ) युवा
(उ) युवतिः (ऋ) यूवा

180. **'ईहा' में प्रत्यय है–**
(अ) अच् (इ) क
(उ) अ (ऋ) ल्यु

181. **'रामः' में प्रत्यय है–**
(अ) घञ् (इ) अण्
(उ) अच् (ऋ) क

182. **'अवतारः' में प्रत्यय है–**
(अ) क (इ) घञ्
(उ) क्विप् (ऋ) खश्

183. **'आश्वपत्यम्' अपत्यर्थ प्रत्यय कौन सा है ?**
(अ) यञ् (इ) रञ्
(उ) अण् (ऋ) ण्यत्

184. **'शयनम्' में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) युच् (इ) अच्
(उ) ण्वुल् (ऋ) ल्युट्

185. **'द्विमातृ + अण्' मिलकर रूप बनेगा–**
(अ) द्विमातृन् (इ) विमाता
(उ) द्वैमातुरः (ऋ) द्विमात

186. **'रेवती + ठक्' मिलकर रूप बनेगा–**
(अ) रैवतिकः (इ) रेवत्ठक
(उ) रैवतः (ऋ) ऐरावतः

187. **'दाक्षिः' में प्रत्यय है–**
(अ) इञ् (इ) घ
(उ) अण् (ऋ) घञ्

188. **'गुण + वतुप्' मिलकर रूप बनेगा–**
(अ) गुणवतु (इ) गुणज्ञः
(उ) गुणवत् (ऋ) गुणी

189. **'उत्स + अञ्' मिलकर रूप बनेगा–**
(अ) उत्सः (इ) उत्सवः
(उ) औत्सः (ऋ) उत्साहः

190. **'दैत्यः' में प्रत्यय है–**
(अ) ण्य (इ) घञ्
(उ) अञ् (ऋ) इञ्

191. **'खसुर्पः' में प्रत्यय है–**
(अ) ल्यप् (इ) ठक्
(उ) यञ् (ऋ) इञ्

192. **'कुरु + ण्य' से रूप बनेगा–**
(अ) कुर्यात् (इ) कौरवः
(उ) कौरव्यः (ऋ) कुरुव्यः

193. **'अनुभूय' में प्रत्यय है–**
(अ) ण्मुल् (इ) ण्यत्
(उ) णिनि (ऋ) ल्यप्

194. **'लिख् + णिच् + तिप्' से कौन सा रूप बनेगा–**
(अ) लिख्यते (इ) लेखयति
(उ) लिख्यतु (ऋ) लेखः

195. **'ज्ञा + सन् + तिप्' से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) ज्ञास्यन् (इ) ज्ञायते
(उ) ज्ञास्यति (ऋ) जिज्ञासते

174. (इ), 175. (अ), 176. (इ), 177. (इ), 178. (अ), 179. (अ), 180. (अ), 181. (अ), 182. (इ), 183. (उ), 184. (ऋ),
185. (उ), 186. (अ), 187. (अ), 188. (उ), 189. (उ), 190. (अ), 191. (उ), 192. (उ), 193. (ऋ), 194. (इ), 195. (ऋ),

196. **'शुष्कः' में प्रत्यय है–**
(अ) अक् (इ) कः
(उ) अण् (ऋ) क्त

197. **'हित्वा' में प्रत्यय है–**
(अ) क्त (इ) अण्
(उ) क्त्वा (ऋ) ल्यप्

198. **'पाकः' में प्रत्यय है–**
(अ) ण्वुल् (इ) क्त
(उ) ण्यल् (ऋ) घञ्

199. **'भोक्तुम्' में प्रत्यय है–**
(अ) तुमुन् (इ) क्तवतु
(उ) क्त (ऋ) अण्

200. **'अध्यायः' में प्रत्यय है–**
(अ) अक् (इ) घञ्
(उ) क (ऋ) क्त

201. **'वैयाकरणः' में प्रत्यय है–**
(अ) अ (इ) अण्
(उ) क (ऋ) अक्

202. **'बान्धवः' में प्रत्यय है–**
(अ) वुन (इ) व
(उ) अण् (ऋ) अक्

203. **'राष्ट्र +घ' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) राष्ट्रीयः (इ) राष्ट्रियः
(उ) राष्ट्रः (ऋ) राष्टम्

204. **'पण्डा + इतच्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) पिण्डः (इ) पण्डितः
(उ) पाण्डेयः (ऋ) पण्डा

205. **'पाणिनि + छ' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) पाणिनीयम् (इ) पाणिनियम
(उ) पाणिनेः (ऋ) पाणिनिः

206. **'दा + शानच्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) ददान् (इ) ददानः
(उ) दामानः (ऋ) देयः

207. **'मन् + क्त्वा' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) मन्तुम् (इ) मन्यमानः
(उ) मत्वा (ऋ) मत्तः

208. **'चि + तव्यत्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) चितव्याम् (इ) चयनीयम्
(उ) चेत्यम् (ऋ) चेतव्यम्

209. **'शी + तुमुन्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) शेतुम् (इ) शायनीयम्
(उ) शयितुम् (ऋ) शयानः

210. **'कृ + ण्यत्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) कारणम् (इ) कार्यम्
(उ) करणीयम् (ऋ) कारणीयम्

211. **'भिद् + अनीयर्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) भेदितव्यम् (इ) भेदनम्
(उ) भेद्यम् (ऋ) भेदनीयम्

212. **'त्यज् + क्त' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) त्यजितः (इ) त्यजतः
(उ) त्यक्त्वा (ऋ) त्यक्तः

213. **'श्रु + णमुल्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) श्रावम् (इ) श्रवणम्
(उ) श्रव्यम् (ऋ) श्रोवणम्

214. **'कृ + क्तिन्' मिलकर कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) कीर्तिः (इ) करोति
(उ) कृतिः (ऋ) कृत्वा

215. **'तिङ्' प्रत्ययों की संख्या है ?**
(अ) 90 (इ) 9
(उ) 36 (ऋ) 18

216. **'सर्वनामस्थान' कितने प्रत्यय कहलाते है ?**
(अ) 9 (इ) 5
(उ) 6 (ऋ) 21

217. **'सुप्' प्रत्ययों की संख्या कितनी है ?**
(अ) 21 (इ) 9
(उ) 24 (ऋ) 18

196. (ऋ), 197. (उ), 198. (ऋ), 199. (अ), 200. (इ), 201. (इ), 202. (उ), 203. (इ), 204. (इ), 205. (अ), 206. (इ), 207. (उ), 208. (ऋ), 209. (उ), 210. (इ), 211. (ऋ), 212. (ऋ), 213. (अ), 214. (उ), 215. (ऋ), 216. (इ), 217. (अ)

218. **'घ' संज्ञा किन प्रत्ययों की होती है ?**
(अ) क्त-क्तवतु (इ) सन्-यङ्
(उ) शतृ-शानच् (ऋ) तरप्-तमप्

219. **'णिच्' प्रत्यय जोड़ने से अकर्मक धातुएं हो जाती है–**
(अ) उभयविध (इ) सकर्मक
(उ) अकर्मक (ऋ) सेट्

220. **कौन सा पद शतृ प्रत्ययान्त नही है–**
(अ) गायन्ती (इ) गायन्
(उ) गायत् (ऋ) गायकः

221. **कौन सा तद्धितरूप अशुद्ध है–**
(अ) पृथिता (इ) पृथुत्वम्
(उ) प्रथिमन् (ऋ) पृथुता

222. **कौन सा रूप शतृ प्रत्यय की दृष्टि से अशुद्ध है–**
(अ) गर्जन्ती (इ) गर्जन्
(उ) गर्जन्ति (ऋ) गर्जत्

223. **'क्त्वा' के सम्बन्ध में असत्य है ?**
(अ) कित् है
(इ) क्त्वा प्रत्ययान्त अव्यय होते हैं
(उ) त्वा शेष रहता है
(ऋ) अपूर्वकालिक प्रत्यय है

224. **वायु में कौन सा प्रत्यय है ?**
(अ) यक् (इ) उण्
(उ) युच् (ऋ) यु

225. **कौन सा अशुद्ध है ?**
(अ) करिष्यमाणः (इ) करिष्यमाणा
(उ) करिष्यमाणम् (ऋ) करिष्यतः

226. **'णमुल्' प्रत्यय के सम्बन्ध में असत्य है–**
(अ) शब्द को द्वित्व होता है
(इ) पूर्व स्वर की वृद्धि होती है
(उ) अम् शेष होता है
(ऋ) पूर्व स्वर का गुण होता है

227. **'प्रयोजन'** (5-1-109) **इस सूत्र से किस तद्धित प्रत्यय का विधान होता है ?**
(अ) ठण् (इ) ठञ्
(उ) ठिन् (ऋ) ठक्

228. **किस प्रत्यय के जुड़ने पर, पद पुँल्लिङ्ग में होते हैं ?**
(अ) तल् (इ) टाप्
(उ) क्तिन् (ऋ) कि

229. **किस प्रत्यय के अन्त में होने पर, निर्मित पद पुँल्लिङ्ग में नही होते हैं–**
(अ) अच् (इ) घ
(उ) घञ् (ऋ) यत्

230. **'घ्रा + शतृ' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) जिघ्रायन् (इ) घ्रायन
(उ) घ्रान् (ऋ) जिघ्रन्

231. **'अधि + स्था + ल्यप्'– शुद्ध रूप है–**
(अ) अध्याय (इ) अध्यस्थाय
(उ) अधिस्थास (ऋ) अधिष्ठाय

232. **'पीडितः' में प्रत्यय है–**
(अ) शानच् (इ) शतृ
(उ) क्तवतु (ऋ) क्त

233. **इनमें 'यत्' प्रत्यय युक्त पद है–**
(अ) सह्यम् (इ) सोढव्यम्
(उ) हरणीयम् (ऋ) वृध्वम्

234. **'भवितव्यम्-कर्तव्यम्-जनितव्यम्' इनमें प्रत्यय है–**
(अ) अनीयर्प्रत्ययः (इ) तव्यत्प्रत्ययः
(उ) ल्यप्प्रत्ययः (ऋ) ण्यत्प्रत्ययः

235. **'गरीयान्-गरिष्ठः' इन दोनों में प्रत्यय है–**
(अ) ईयसुन् + इष्ठन् (इ) मतुप् + ष्ठन्
(उ) क्तवतु + क्त (ऋ) यत् + क्यच्

236. **'मृ + शानच्' से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) म्रियाणः (इ) म्रियमाणः
(उ) मरियमाणः (ऋ) मर्यमाणः

237. **'अधि + इ + शानच्' शुद्ध रूप है–**
(अ) अध्ययनमानः (इ) अधीयः
(उ) अधीयानः (ऋ) अधीयम्

218. (ऋ), 219. (इ), 220. (ऋ), 221. (ऋ), 222. (उ), 223. (ऋ), 224. (इ), 225. (ऋ), 226. (ऋ), 227. (इ), 228. (ऋ), 229. (ऋ), 230. (ऋ), 231. (ऋ), 232. (ऋ), 233. (अ), 234. (इ), 235. (अ), 236. (इ), 237. (उ),

238. **'मार्ग्यम्-ज्ञेयम्-गन्तव्यम् - पठनीयम्' इनमें यह प्रत्यय नहीं है–**
(अ) यत् (इ) ण्वुल्
(उ) तव्यत् (ऋ) अनीयर्

239. **'अर्च् + क्तवतु' रूप बनता है–**
(अ) अर्चकः (इ) अर्चितः
(उ) अर्च्यम् (ऋ) अर्चितवान्

240. **'जन + यत्' से रूप बनता है–**
(अ) जननम् (इ) जन्यम्
(उ) जन्यः (ऋ) जन्म

241. **'आ + चि + क्त' से रूप बनता है–**
(अ) अचितः (इ) अर्चितः
(उ) आचिताः (ऋ) अप्तः

242. **'प्रति + भा + ल्युट्' के योग से कौन सा रूप बनता है ?**
(अ) प्रतिभा (इ) प्रतिभानम्
(उ) प्रतिभाति (ऋ) प्रतिभेति

243. **'वृत्तिः - वृद्धिः - वृष्टिः' इनमें प्रत्यय है–**
(अ) क्तिन् प्रत्ययः (इ) इनि प्रत्ययः
(उ) ण्यत् प्रत्ययः (ऋ) क्त प्रत्ययः

244. **'स्वप् + क्त' के योग से बनता है–**
(अ) स्वपितः (इ) सुप्तवान्
(उ) सुप्तः (ऋ) स्वपितम्

245. **'अधि + स्था + तृच्' के योग से रूप बनता है–**
(अ) अधिष्टिः (इ) अध्ययस्थः
(उ) अधिष्ठाता (ऋ) अधिष्ठात्

246. **'प्र + वस् + ल्यप्' के योग से रूप बनता है–**
(अ) प्रोष्य (इ) प्रैष्य
(उ) प्रेष्य (ऋ) प्रौस्य

247. **'उप + पद + क्त' प्रत्यय के योग से बनता है–**
(अ) उपपन्नः (इ) उपाक्तः
(उ) उपपदः (ऋ) उपपक्तः

248. **'दा + शतृ' के योग से बनता है–**
(अ) ददत् (इ) ददन
(उ) दद्यन् (ऋ) ददानः

249. **'प्रतिहन्यमानाः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) प्रति + हन् + शानच्
(इ) प्रति + हिंस + शानच्
(उ) प्रति + हन् + क्त (बहुवचन)
(ऋ) प्रति + हन् + त (बहुवचन)

250. **'उत्प्लुत्य' - उपसर्ग-प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) उत् + प्लु + क्त्वा
(इ) उत् + प्लु + क्त
(उ) उत् + प्लु + ल्यप्
(ऋ) उत् + प्लु + यत्

251. **'उक्तवान्' - क्रियापद में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) गद् + क्तवतु (इ) वद् + क्तवत्
(उ) वच् + क्तवतु (ऋ) ब्रु + क्तवतु

252. **'अभि + षिच् + तुमुन्' के योग से कौन सा रूप बनता है–**
(अ) अभिविक्तुम् (इ) अभिषेकयितुम्
(उ) अभिषेक्तुम् (ऋ) अभिषपितुम्

253. **'स्मृ + णमुल्' से यह रूप बनता है–**
(अ) स्मारम् (इ) स्मरणम्
(उ) स्मरन् (ऋ) स्मर्तव्यम्

254. **'समुदाचारः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) सम् + उत् + चर् + क्त
(इ) समुद् + आचर् + खर्
(उ) सम् + उत् + आ + चर् + घञ्
(ऋ) समुत् + आ + चर् + त

255. **'समारूढः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) सम् + आ + रुह् + त
(इ) सम् + आ + रुह् + घञ्
(उ) सम् + आ + रुह् + घ
(ऋ) सम् + आ + रुह् + क्त

256. **'समुन्नतिम्' में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) सम् + उ + नति + क्त
(इ) सम् + उत् + नम् + क्तिन्
(उ) समु + न + क्त – (कर्म)
(ऋ) समु + न + क्त

238. (इ), 239. (ऋ), 240. (इ) 241. (उ), 242. (इ), 243. (अ), 244. (उ), 245. (उ), 246. (उ), 247. (अ), 248. (अ), 249. (अ), 250. (उ), 251. (उ), 252. (उ), 253. (अ), 254. (उ), 255. (ऋ), 256. (इ),

257. **'निधानम्' में प्रकृति प्रत्यय है–**
(अ) निधा + अम्
(इ) निधा + क्त
(उ) निध् + आ + घञ्
(ऋ) नि + धा + ल्युट्

258. **'श्रद्धधानः' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) श्रत् + धा + यम्
(इ) श्रत् + धा + शतृ
(उ) श्रत् + धा + शानच्
(ऋ) श्रत् + धा + क्त

259. **'सन्दीपनम्' में प्रत्यय है–**
(अ) क्तिन् (इ) अम्
(उ) ल्युट् (ऋ) शानच्

260. **'परिभ्रमन्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) परि + भ्रम् + क्तिन्
(इ) परि + भ्रम् + अन्
(उ) परि + भ्रम् + शतृ
(ऋ) परिभ्रम् + ल्युट्

261. **'परीक्षितुम्' में प्रत्यय है–**
(अ) क्त (इ) क्तवतु
(उ) क्तिन् (ऋ) तुमुन्

262. **'प्र + विश् + ण्वुल्' के योग से रूप बनता है–**
(अ) प्रवेशः (इ) प्रवेशयिता
(उ) प्रवेशकः (ऋ) प्रावेशिकः

263. **'दिश् + क्त्वा' के योग से यह रूप बनता है–**
(अ) दिशित्वा (इ) दिशेत्वा
(उ) दिष्ट्वा (ऋ) दिश्य

264. **'चुर् + तुमुन्' के योग से बनता है–**
(अ) चुरितुम् (इ) चुर्यतुम्
(उ) चोरयितुम् (ऋ) चोरितुम्

265. **'शक् + शतृ' से यह रूप बनता है–**
(अ) शकन् (इ) शक्नुवन्
(उ) शक्यत् (ऋ) शक्तवान्

266. **'भू + णिच्' के योग से रूप बनता है–**
(अ) भाययति (इ) भूयते
(उ) भावयति (ऋ) बभूयति

267. **'उन्मूलनम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–**
(अ) उत् + मूल् + ल्युट्
(इ) उत् + मूल् + अम्
(उ) उत् + मूल् + घञ्
(ऋ) उत् + मूल् + क्तिन्

268. **'प्र + हस् + ल्युट्' का शुद्ध रूप है–**
(अ) प्रासनम् (इ) प्रहासः
(उ) प्रहसनम् (ऋ) प्राहासनम्

269. **'प्र + भिद् + ल्यप्' के योग से यह रूप बनता है–**
(अ) प्रभौद्य (इ) प्रभिद्य
(उ) प्रभोद्य (ऋ) प्रभेद्य

257. (ऋ) 258. (उ), 259. (उ), 260. (उ), 261. (ऋ) 262. (उ), 263. (उ), 264. (उ), 265. (इ), 266. (उ), 267. (अ), 268. (उ), 269. (इ)

प्रत्ययगङ्गा (भाग-दो)

1. **किन प्रत्ययों की ''निष्ठा'' संज्ञा होती है–**
   (अ) शतृ-शानच् (इ) क्त-क्तवतू
   (उ) क्त्वा-ल्यप् (ऋ) उपर्युक्त सभी की
2. **निष्ठासंज्ञक 'क्त-क्तवतू' प्रत्यय किस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं–**
   (अ) वर्तमानकाल के अर्थ में
   (इ) भूतकाल के अर्थ में
   (उ) भविष्यकाल के अर्थ में
   (ऋ) सभी अर्थों में
3. **'क्तवतु'- प्रत्यय का कर्ता किस विभक्ति में होता है–**
   (अ) प्रथमा (इ) तृतीया
   (उ) दोनों में (ऋ) इनमें से कोई नही
4. **'भाव' और 'कर्म' में ''क्त'' प्रत्यय के होने से इसका कर्ता किस विभक्ति में होता है–**
   (अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
   (उ) तृतीया (ऋ) षष्ठी
5. **'भाव' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय का उदाहरण है–**
   (अ) स्तुतः त्वया विष्णुः
   (इ) पठितः मया पाठः
   (उ) स्नातं मया प्रातः
   (ऋ) उपर्युक्त सभी
6. **'विश्वं कृतवान् विष्णुः' - यहाँ 'कृतवान्' पद में धातु और प्रत्यय है–**
   (अ) क्री + क्तवतु
   (इ) कृ + क्तवतु
   (उ) क्रमु + क्तवतु
   (ऋ) कृञ् + क्तवतु
7. **''कृ + क्तवतु + ङीप्''– इसका रूप सिद्ध होगा–**
   (अ) कृतवति (इ) कृतवती
   (उ) कृतवन्नी (ऋ) कृतोवती
8. **''रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः'' इस सूत्र द्वारा 'रेफ' या 'दकार' से परे निष्ठा प्रत्यय के 'तकार' को क्या आदेश होगा–**
   (अ) णकार (इ) नकार
   (उ) धकार (ऋ) दकार
9. **''शृ + क्त''- इसका शुद्ध रूप होगा–**
   (अ) शीर्तः (इ) शृतः
   (उ) शीर्णः (ऋ) शृन्नः
10. **''छिद् + क्त'' – इसका रूप सिद्ध होगा–**
    (अ) छित्तः (इ) छिन्नः
    (उ) छिदः (ऋ) छिद्रः
11. **''भिद् + क्त''– इसका सही रूप होगा–**
    (अ) भिन्नः (इ) भित्तः
    (उ) भीतः (ऋ) भितः
12. **'क्तवतु'– प्रत्ययान्त रूप नहीं है–**
    (अ) शीर्णवान् (इ) भिन्नवान्
    (उ) छिन्नवान् (ऋ) धनवान्
13. **निष्ठा प्रत्ययों के 'तकार' के स्थान पर 'नकार' आदेश विधायक सूत्र नहीं है–**
    (अ) ''रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः''
    (इ) ''संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः''
    (उ) ''ल्वादिभ्यः'' और ''ओदितश्च''
    (ऋ) ''हलः'' और ''शुषः कः''
14. **'द्रा' धातु से निष्ठासंज्ञक 'क्त' और 'क्तवतु' प्रत्ययों के जुड़ने पर क्रमशः रूप होगा–**
    (अ) द्रातः, द्रातवान्
    (इ) द्रुतः, द्रुतवान्
    (उ) द्रानः, द्रानवान्
    (ऋ) द्राणः, द्राणवान्

1. (इ), 2. (इ), 3. (अ), 4. (उ), 5. (उ), 6. (इ), 7. (इ) 8. (इ), 9. (उ) 10. (इ), 11. (अ), 12. (ऋ), 13. (ऋ), 14. (ऋ),

15. ''ग्लै + क्त'' – इसका रूप होगा–
(अ) ग्लैतः (इ) ग्लातः
(उ) ग्लानः (ऋ) ग्लाणः

16. ''ग्लानवान्''– यहाँ 'ग्लै' धातु से किस प्रत्यय का विधान किया गया है–
(अ) क्त (इ) क्तवतु
(उ) वतुप् (ऋ) मतुप्

17. ''लूञ् + क्त = लूनः''– यहाँ 'क्त' प्रत्यय के 'तकार' के स्थान पर 'नकार' आदेश किस सूत्र से हुआ–
(अ) ल्वादिभ्यः (इ) ओदितश्च
(उ) रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः
(ऋ) रषाभ्यां नो णः समानपदे

18. 'ज्या' वयोहानौ धातु से 'क्त' प्रत्यय होने पर रूप सिद्ध होगा–
(अ) ज्यातः (इ) जीनः
(उ) जीतः (ऋ) ज्योतिः

19. ''ज्या + क्तवतु = जीनवान्''– यहाँ किस सूत्र से 'क्तवतु' प्रत्यय का विधान किया गया है–
(अ) क्तक्तवतू निष्ठा (इ) निष्ठा
(उ) क्त्वातोसुन्कसुनः (ऋ) क्यचि च

20. 'भुज्' धातु से ''निष्ठा'' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय होकर क्या रूप बनेगा–
(अ) भुक्तः (इ) भूग्नः
(उ) भुञ्तः (ऋ) भुग्नः

21. 'टुओश्वि गतिवृद्ध्योः' इस धातु से 'क्त' प्रत्ययान्त रूप होगा–
(अ) उच्छूनः (इ) टुओश्वः
(उ) ओश्नः (ऋ) ट्यूश्नः

22. ''शुष्'' धातु परे निष्ठा के 'तकार' के स्थान पर 'ककार' आदेश करने वाला सूत्र है–
(अ) शुषः कः (इ) शेषे प्रथमः
(उ) षढोः कः सि (ऋ) शि तुक्

23. ''शुष् + क्त'' इसका शुद्धरूप होगा–
(अ) शुष्तः (इ) शुष्कः
(उ) शुष्टः (ऋ) शुस्कः

24. 'पच्' धातु से परे 'क्त' प्रत्यय के 'तकार' के स्थान पर 'वकार' आदेश करने वाला सूत्र है–
(अ) पदान्तस्य (इ) पचो वः
(उ) पङ्क्तोश्च (ऋ) पदान्ताद्वा

25. 'पच् + क्त'' – इसका शुद्ध रूप होगा–
(अ) पचितः (इ) पक्तः
(उ) पक्वः (ऋ) पच्तः

26. 'पक्ववान्' में किस धातु से 'क्तवतु' प्रत्यय लगा है–
(अ) पूञ् (इ) पा
(उ) पद (ऋ) पच्

27. 'क्तवतु' प्रत्ययान्त पद नही है–
(अ) उच्छूनवान् (इ) शुष्कवान्
(उ) क्षामवान् (ऋ) क्षमावान्

28. ''क्षै'' धातु से परे निष्ठासंज्ञक 'क्त-क्तवतू' प्रत्यय के 'तकार' के स्थान पर मकार आदेश किस सूत्र से होता है–
(अ) क्षत्राद् घः (इ) मो नो धातोः
(उ) क्षुभ्नादिषु च (ऋ) क्षायो मः

29. 'क्षै + क्त' – इसका सही रूप होगा–
(अ) क्षितः (इ) क्षातः
(उ) क्षामः (ऋ) क्षैतः

30. 'धा' धातु के स्थान पर 'हि' आदेश विधायक सूत्र है–
(अ) दधातेर्हि (इ) दो दद् घोः
(उ) धि च (ऋ) दादेर्धातोर्घः

31. 'धा + क्त' – इसका सही रूप होगा–
(अ) धत्तः (इ) धातः
(उ) हितः (ऋ) धाक्तः

32. ''दा + क्त''– इसका रूप सिद्ध होगा–
(अ) दत्तः (इ) दात्तः
(उ) दातः (ऋ) दातुम्

15.(उ) 16. (इ), 17. (अ), 18. (इ), 19. (इ),20. (अ) 21. (अ), 22. (अ), 23. (इ), 24. (इ), 25. (उ) 26. (ऋ), 27. (उ), 28. (ऋ), 29. (उ), 30. (अ), 31. (उ), 32. (अ)।

6. वाच्य-गङ्गा

1. **'सः ग्रामं गच्छति' इसका कर्म-वाच्य होगा–**
   (अ) तेन ग्रामः गम्यते (इ) तेन ग्रामं गम्यते
   (उ) सः ग्रामं गम्यते (ऋ) सः ग्रामं गच्छते
2. **'त्वं किं पठसि' ? इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) त्वं पठ्यते (इ) त्वया पठ्यसे
   (उ) त्वया किं पठ्यते (ऋ) त्वया किं पठ्यसे
3. **'त्वं मां नमसि' – का कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) त्वां मां नम्यसे (इ) त्वया मां नम्यते
   (उ) त्वं अहं नम्ये (ऋ) त्वया अहं नम्ये
4. **'शिष्यः गुरून् वन्दते' इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) शिष्येण गुरवः वन्द्यन्ते
   (इ) शिष्येण गुरवः वन्द्यते
   (उ) शिष्येण गुरवः वन्दते
   (ऋ) शिष्येण गुरवः वन्दन्ते
5. **'गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति' इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) गुरुणा शिष्यं प्रश्न पृच्छयते
   (इ) गुरुणा शिष्यः प्रश्नं पृच्छ्यते
   (उ) गुरुणा शिष्ये प्रश्नं पृच्छ्यते
   (ऋ) गुरुणा शिष्यः प्रश्नः पृच्छ्यते
6. **'अहमस्मिन् गृहे वसामि' इसका भाववाच्य होगा–**
   (अ) अहम् अस्मिन् गृहे उष्ये
   (इ) मया अस्मिन् गृहे उष्यते
   (उ) मया अस्मिन् गृहे वस्यते
   (ऋ) मया अस्मिन् गृहे वसामि
7. **'गुरुः शिष्यं तत्त्वं ब्रूते' इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) गुरुणा शिष्यः तत्त्वं उच्यते
   (इ) गुरुणा शिष्यः तत्त्वं ब्रूयते
   (उ) गुरुणा शिष्यं तत्त्वं उच्यते
   (ऋ) गुरुणा शिष्यः तत्त्वः उच्यते
8. **'बालाः क्रीडन्ति' – इसका भाववाच्य होगा–**
   (अ) बालाः क्रीड्यन्ते (इ) बालैः क्रीड्यते
   (उ) बालैः क्रीड्यन्ते (ऋ) बालैः क्रीडन्ते
9. **'मया त्वं पाठ्यसे' इसका कर्तृवाच्य होगा–**
   (अ) मया त्वं पाठयामि (इ) अहं त्वं पठसि
   (उ) अहं त्वं पाठये (ऋ) अहं त्वां पाठयामि
10. **'त्वं चिरादिव चिन्तयन् दृश्यसे'– इसका कर्तृवाच्य होगा–**
   (अ) त्वं चिरादिव चिन्तयन् दृश्यसे
   (इ) त्वां चिरादिव चिन्तयन् पश्यसि
   (उ) त्वां चिरादिव चिन्तयन्तं पश्यामि
   (ऋ) त्वं चिरादिव चिन्तयन् पश्यामि
11. **'पिपासितैः काव्यरसो न पीयते' इसका कर्तृवाच्य होगा–**
   (अ) पिपासिताः काव्यरसः न पिबन्ति
   (इ) पिपासिताः काव्यरसं न पिबति
   (उ) पिपासितः काव्यरसः न पिबन्ति
   (ऋ) पिपासिताः काव्यरसं न पिबन्ति
12. **'अहं त्वां लेखनप्रकारं शिक्षयामि' का कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) अहेन त्वां लेखनप्रकारं शिक्ष्यसे
   (इ) मया त्वां लेखनप्रकारं शिक्षयते
   (उ) मया त्वां लेखनप्रकारं शिक्षयते
   (ऋ) मया त्वं लेखनप्रकारः शिक्ष्यसे
13. **'पिता पुत्रम् अनुगतवान्' इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) पिता पुत्रम् अनुगतः (इ) पिता पुत्रेण अनुगतः
   (उ) पितेन पुत्रः अनुगतः (ऋ) पित्रा पुत्रः अनुगतः
14. **'निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु साधवः दयां कुर्वन्ति' इसका कर्मवाच्य होगा–**
   (अ) निर्गुणेष्वपि सत्वेषु साधुभिः दया क्रियते
   (इ) निर्गुणेष्वपि सत्वेषु साधवैः दयां क्रियन्ते
   (उ) निर्गुणेष्वपि सत्वेषु साधैः दया क्रियते
   (ऋ) निर्गुणेषु सत्वेषु साधवः दयां क्रियन्ते

1. (अ), 2. (उ), 3. (ऋ), 4. (अ), 5. (इ), 6. (इ), 7. (अ) 8. (इ), 9. (ऋ) 10. (उ), 11. (ऋ), 12. (ऋ), 13. (ऋ), 14. (अ),

15. **'गजाः गुरुतरान् भारान् वहन्ति' इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) गजभिः गुरुतरा भारा उह्यन्ते
(इ) गजैः गुरुतराः भाराः उह्यन्ते
(उ) गजाभिः गुरुतरा भाराः वोह्यन्ते
(ऋ) गजैः गुरुतरा भाराः उक्ष्यन्ते

16. **'रामः वनम् अगच्छत्' – इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) रामेण वनं गम्यते (इ) रामेण वनोऽगम्यत्
(उ) रामेण वनः गम्यत (ऋ) रामेण वनम् अगम्यत

17. **'सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति'– का कर्मवाच्य होगा–**
(अ) सर्वं खलस्य चरितं मशकेन क्रियते
(इ) सर्वं खलस्य चरितः मशकेन क्रियते
(उ) सर्वः खलस्य चरितः मशकेन क्रियते
(ऋ) सर्वं खलस्य चरितं मशकेन कुर्वते

18. **'सा गीताम् अपठत्'– इसका कर्मणि प्रयोग होगा–**
(अ) तया गीता अपठ्यत (इ) तया गीतां पठितम्
(उ) तया गीता पठ्यते (ऋ) तया गीतां पठ्यत

19. **'गावः क्षीरं यच्छन्ति'– का कर्मणि प्रयोग होगा–**
(अ) गाभिः क्षीरः यच्छयन्ते
(इ) गोभिः क्षीरं यच्छते
(उ) गोभिः क्षीरः यच्छयते
(ऋ) गोभिः क्षीरं दीयते

20. **'मेषपालः मेषान् नयति'– का कर्मवाच्य होगा–**
(अ) मेषपालेन मेषाः नयन्ते
(इ) मेषपालेन मेषा नीयते
(उ) मेषपालेन मेषा नयते
(ऋ) मेषपालेन मेषाः नीयन्ते

21. **'त्वं पितरौ नमसि' – इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) त्वया पितरौ नम्येते (इ) त्वं पितरौ नम्यसे
(उ) त्वया पितरौ नम्यन्ते (ऋ) त्वया पितरौ नम्यन्ते

22. **'पिता पुत्रं पश्यति'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) पित्रा पुत्रः पश्यते (इ) पित्रेण पुत्रः पश्यते
(उ) पित्रा पुत्रः दृश्यते (ऋ) पित्रेण पुत्रः दृश्यते

23. **'बालाः वृक्षम् आरोहन्ति'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) बालैः वृक्षः आरुह्यते
(इ) बालैः वृक्षम् आरोह्यते
(उ) बालैः वृक्षः आरुहति
(ऋ) बालैः वृक्षम् आरुह्यति

24. **'कुम्भकारः कुम्भान् करोति'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) कुम्भकारैः कुम्भाः क्रियते
(इ) कुम्भकारेण कुम्भाः क्रियन्ते
(उ) कुम्भकारेण कुम्भान् क्रियन्ते
(ऋ) कुम्भकारेण कुम्भाः क्रियते

25. **'वयं क्षीरं पिबामः'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) वयं क्षीरः पीयते
(इ) अस्माभिः क्षीरं पीयते
(उ) वयं क्षीरं पास्यते
(ऋ) अस्माभिः क्षीरः पास्यते

26. **'येन विद्वांसः सेव्यन्ते तेन विद्या लभ्यते' इसका कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) यः विदुषः सेवते सः विद्यां लभते
(इ) यः विदुषः सेवते तेन विद्या लभति
(उ) यः विद्वान् सेवति सः विद्यां लभते
(ऋ) यः विद्वान् सेवते सः विद्यां लभते

27. **'सज्जनैः निन्दितं कर्म न क्रियते' इसका कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) सज्जनाः निन्दितं कर्मं न क्रियन्ते
(इ) सज्जनाः निन्दितं कर्मं न कुर्वन्ति
(उ) सज्जनाः निन्दितः कर्मः न कुर्वन्ति
(ऋ) सज्जनाः निन्दितं कर्म न कुर्वन्ति

28. **'सत्यं जयति' इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) सत्यं जीयति (इ) सत्येन जीयते
(उ) सत्येन जीयति (ऋ) सत्येन जयते

29. **'ईश्वरः अस्ति'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) ईश्वरेण भूयते (इ) ईश्वरेण आसते
(उ) ईश्वरेण स्थीयते (ऋ) ईश्वरेण सीयते

30. **'भयं नास्ति'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) भयेन न स्थीयते (इ) भयेन भूयते
(उ) भयेन न आसते (ऋ) भयेन न भूयते

15.(इ), 16. (ऋ), 17. (अ), 18. (अ), 19. (ऋ),20. (ऋ), 21. (अ), 22. (उ), 23. (अ), 24. (इ), 25. (इ), 26. (अ), 27. (ऋ), 28. (ऋ), 29. (अ), 30. (ऋ),

31. **'चन्द्रः रात्रौ शोभते'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) चन्द्रेण रात्रीः शुभ्यते (इ) चन्द्रेण रात्रौ शोभ्यते
(उ) चन्द्रेण रात्रिं शुभ्यते (ऋ) चन्द्रेण रात्रौ शुभ्यते

32. **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) सर्वैः भूयतां सुखिनः (इ) सर्वे भवन्तु सुखिभिः
(उ) सर्वैः भूयतां सुखिभिः (ऋ) सर्वेः भवन्तु सुखिभिः

33. **'बालिका फलं खादति'– इसका वाच्यपरिवर्तन होगा–**
(अ) बालिका फलेन खाद्यते
(इ) बालिकया फलेन खादति
(उ) बालिकया फलं खाद्यते
(ऋ) बालिकया फलेन खाद्यते

34. **'माता पुत्रे स्निह्यति'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) मात्रा पुत्रे स्निह्यति (इ) मात्रा पुत्रेण स्निह्यति
(उ) माता पुत्रे स्निह्यते (ऋ) मात्रा पुत्रे स्निह्यते

35. **'गच्छति'– इसका कर्मवाच्य में रूप होगा–**
(अ) गच्छति (इ) गच्छते
(उ) गम्यति (ऋ) गम्यते

36. **'अस्ति उत्तरस्यां दिशि देवतात्मा'– यह किस वाच्य का है ?**
(अ) कर्तृवाच्य (इ) भाववाच्य
(उ) कर्मवाच्य (ऋ) कर्मभाववाच्यम्

37. **'बिभेति सर्पादपि पक्षिराजः' कर्मवाच्य क्या होगा–**
(अ) भीयते सर्पादपि पक्षिराजः
(इ) बिभ्यते सर्पादपि पक्षिराजेन
(उ) भीयते सर्पादपि पक्षिराजेन
(ऋ) बिभ्यते सर्पादपि पक्षिराजा

38. **'के यूयम् ? इसका वाच्यपरिवर्तन होगा–**
(अ) कैर्युष्माभिः (इ) कैः यूयम्
(उ) युष्माभिः के (ऋ) के युष्माभिः

39. **'यानम् अस्मान् नयति'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) यानेन अस्माकं नीयामहे
(इ) यानेन वयं नीयामहे
(उ) यानेन अस्मान् नीयते
(ऋ) यानम् अस्मान् नीयते

40. **'रमेशः त्वां पाठयति'– इसका वाच्यपरिवर्तन होगा–**
(अ) रमेशेन त्वं पाठ्यते (इ) रमेशः त्वां पाठ्यसे
(उ) रमेशेन त्वं पाठ्यसे (ऋ) रमेशेन त्वं पाठयसे

41. **'कृतज्ञः केन हन्यताम्'– इसका कर्तृवाच्य है–**
(अ) कृतज्ञेन कः हन्यताम् (इ) कृतज्ञः कः हन्तु
(उ) कृतज्ञः कः हन्यात् (ऋ) कृतज्ञं कः हन्तु

42. **'भज गोविन्दम्'– इसका कर्मवाच्य होगा –**
(अ) भज्यतां गोविन्दम् (इ) भज गोविन्दः
(उ) भज्यतां गोविन्दः (ऋ) भज्येत गोविन्दः

43. **'शिशवः पित्रा चाल्यन्ते'– इसका कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) शिशून् पित्रा चाल्यन्ते
(इ) शिशून् पिता चालयति
(उ) शिशून् पिता चाल्यते
(ऋ) शिशवः पित्रा चालयन्ति

44. **'वसेम'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) वसन्तु (इ) उष्येत
(उ) वस्येत (ऋ) उष्येत्

45. **'विप्राय देहि'– इसका वाच्य परिवर्तन होगा–**
(अ) विप्राय देह्यताम् (इ) विप्राय दीयेत
(उ) विप्राय दायते (ऋ) विप्राय दीयताम्

46. **'सर्वैः अनुज्ञायताम्' इसका कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) सर्वे अनुज्ञायताम् (इ) सर्वे अनुज्ञायन्ताम्
(उ) सर्वैः अनुजानन्तु (ऋ) सर्वे अनुजानन्तु

47. **'रामः इव राजा भवेत्'– इसका वाच्यपरिवर्तन होगा–**
(अ) राम इव राजा भूयताम्
(इ) रामेण इव राजा भूयताम्
(उ) रामेण इव राज्ञा भूयेत
(ऋ) रामेण इव राज्ञा भवेत्

48. **'लता विलसेत्'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) लतया विलस्यताम् (इ) लतया विलस्येत
(उ) लतया विल्सयात् (ऋ) लतया विलस्यतात्

49. **निम्नलिखित पदों में कर्मवाच्य का कर्ता है–**
(अ) एतौ (इ) तौ
(उ) युष्माभिः (ऋ) एषः

50. **'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) लिप्यन्ते इव तमः अङ्गानि
(इ) लिम्पतीव तमोऽङ्गैः
(उ) लिप्यन्ते इव तमसा अङ्गानि
(ऋ) लिप्यन्ते इव तमसा अङ्गैः

31. (ऋ), 32. (उ), 33. (उ), 34. (ऋ), 35. (ऋ), 36. (अ), 37. (इ),38. (अ), 39. (इ), 40. (उ), 41. (ऋ), 42. (उ) 43. (इ), 44. (इ), 45. (ऋ), 46. (ऋ), 47. (उ) 48. (इ), 49. (उ), 50. (उ),

51. **'पुरोहितः सोमेन यजति'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) पुरोहितेन सोमेन यजते
(इ) पुरोहितेन सोमेन यजति
(उ) पुरोहितेन सोमः यजति
(ऋ) पुरोहितेन सोमेन इज्यते

52. **यूयं दूरभाषं श्रोष्यथ'– इसका वाच्य परिवर्तन है–**
(अ) युष्माभिः दूरभाषं श्रोष्यध्वे
(इ) युष्माभिः दूरभाषः श्रोष्यते
(उ) युष्माभिः दूरभाषः श्रोषिष्यते
(ऋ) युष्माभिः दूरभाषं श्रोष्यति

53. **'मम्मटः काव्यलक्षणं विहितवान्'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) मम्मटेन काव्यलक्षणं विहितम्
(इ) मम्मटेन काव्यलक्षणं विधेयम्
(उ) मम्मटः काव्यलक्षणं विदधाति
(ऋ) मम्मटेन काव्यलक्षणं विहितवान्

54. **'किरातः रामाय फलं ददौ'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) किरातेन रामाय फलम् अदीयत
(इ) किरातेन रामाय फलं दत्तम्
(उ) किरातेन रामाय फलं ददे
(ऋ) किरातः रामाय फलं दत्तः

55. **'निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) अनिन्द्यत रूपं हृदयेन पार्वत्या
(इ) निन्दिता रूपं हृदयेन पार्वती
(उ) निन्दितं रूपं हृदयेन पार्वती
(ऋ) निनिन्दे रूपं हृदयेन पार्वत्या

56. **'दिशो न जाने'– इसका कर्मवाच्य होगा–**
(अ) दिशो न ज्ञायन्ते (इ) दिशो न जानामि
(उ) दिशो न ज्ञायते (ऋ) दिशो न जान्यन्ते

57. **'गन्धवहः प्रयाति'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) गन्धवहेन प्रप्यते (इ) गन्धवहेन प्रयायते
(उ) गन्धवहेन प्रगम्यते (ऋ) गन्धवाहेन प्रययते

58. **कर्मवाच्य में किसकी प्रधानता रहती है ?**
(अ) कर्ता (इ) क्रिया
(उ) कर्म (ऋ) करण

59. **कर्तृवाच्य में किसकी प्रधानता रहती है–**
(अ) कर्ता (इ) कर्म
(उ) क्रिया (ऋ) करण

60. **भाववाच्य में किसकी प्रधानता रहती है–**
(अ) कर्ता (इ) कर्म
(उ) करण (ऋ) भाव

61. **कर्मवाच्य में कर्ता किस विभक्ति में होता है–**
(अ) तृतीया विभक्ति (इ) प्रथमा विभक्ति
(उ) चतुर्थी विभक्ति (ऋ) द्वितीया विभक्ति

62. **वाच्य कितने प्रकार का होता है ?**
(अ) 3 (इ) 2
(उ) 1 (ऋ) 7

63. **'मुकुन्दः युवां पाठयति'– इसका कर्मवाच्य क्या होगा–**
(अ) मुकुन्देन युवां पाठ्येथे
(इ) मुकुन्देन युवां पाठ्यते
(उ) मुकुन्दः त्वं पाठ्येथे
(ऋ) मुकुन्देनः युवां पाठ्येते

64. **'तेन अहं दृश्ये'– का कर्तृवाच्य होगा–**
(अ) सः अहं पश्यामि (इ) सः मां पश्यति
(उ) तेन अहं पश्ये (ऋ) सः मां दृश्यते

65. **'यूयं स्मरथ'– इसका भाववाच्य होगा–**
(अ) युष्माभिः स्मर्यसे (इ) त्वया स्मर्यते
(उ) युष्माभिः स्मर्यते (ऋ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

66. **कर्तृवाच्य में कर्ता किस विभक्ति में होता है ?**
(अ) प्रथमा (इ) तृतीया
(उ) द्वितीया (ऋ) चतुर्थी

67. **भाववाच्य में कौन-सी क्रियाएँ होती हैं–**
(अ) सकर्मक क्रिया (इ) अकर्मक क्रिया
(उ) द्विकर्मक क्रिया (ऋ) इनमें से कोई नहीं

68. **भाववाच्य के कर्ता में कौन सी विभक्ति आती है ?**
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) सम्बोधन

69. **कर्मवाच्य की क्रिया में कौन-सा प्रत्यय होता है ?**
(अ) यक् (इ) ण्यत्
(उ) घञ् (ऋ) क्त

51. (ऋ), 52.(इ) 53. (अ), 54. (उ), 55. (ऋ), 56. (अ), 57. (इ) 58. (उ), 59. (अ), 60. (ऋ), 61. (अ), 62.(अ) 63. (अ), 64. (इ), 65. (उ), 66. (अ), 67.(इ), 68. (उ), 69. (अ)

70. 'पठ्' धातु का लृट् लकार कर्मवाच्य में क्रिया होगी–
(अ) पठिष्यसि (इ) पठिष्यते
(उ) पठ्यते (ऋ) षठ्यमानः

71. 'दा' धातु में विधिलिङ्ग उत्तमपुरुष एकवचन में कर्मवाच्य की क्रिया होगी–
(अ) दीयताम् (इ) दास्यते
(उ) दीयेत (ऋ) दीयेय

72. निम्नलिखित में कर्मवाच्य का वाक्य है ?
(अ) सः पुस्तकानि पठति (इ) देवदत्तेन फलं खाद्यते
(उ) हरिः त्वां ताडयति (ऋ) सः ग्रामं गच्छति

73. निम्नलिखित में कौन सा वाक्य भाववाच्य में है–
(अ) सा हसति (इ) यूयं स्मरथ
(उ) गोविन्दः रोदिति (ऋ) मया स्थीयते

74. निम्नलिखित में कर्तृवाच्य का वाक्य कौन सा है ?
(अ) तौ फलानि खादतः
(इ) युष्माभिः कुत्र अगम्यत ?
(उ) तेन निबन्धः पठ्यते
(ऋ) तया पत्राणि गण्यताम्

75. निम्नलिखित में कर्तृवाच्य होगा–
(अ) तेन श्लोकः रच्यते (इ) सा शृणोति
(उ) तया कथा लिख्यते (ऋ) अनया दुग्धं पीयते

76. निम्नलिखित में कर्मवाच्य कौन-सा है?
(अ) भवान् गीतं गायतु (इ) गुरुः माम् उपदिशतु
(उ) भवता गीतं गीयताम् (ऋ) बालिका आवां पश्यतु

77. निम्नलिखित में कर्मवाच्य कौन-सा है ?
(अ) छात्रः विद्यालयं गमिष्यति
(इ) छात्रौ पत्रे पठिष्यतः
(उ) छात्रः मां चेष्यति
(ऋ) छात्रेण विद्यालयः गमिष्यते

78. निम्नलिखित में भाववाच्य होगा–
(अ) तया श्रूयते (इ) अहं जीवामि
(उ) सः हसति (ऋ) अहं तिष्ठामि

79. निम्नलिखित में भाववाच्य की धातु कौन सी है ?
(अ) पठ् (इ) लिख्
(उ) रुच् (ऋ) पच्

80. 'ते तत्र हसन्ति'– इसका भाववाच्य है–
(अ) तैः तत्र हस्यते (इ) तै तत्र हसते
(उ) तैः तत्रैः हस्यते (ऋ) ताभ्यां तत्र हस्यते

81. 'प्रणवः ग्रन्थं पठति'– इसका कर्मवाच्य होगा–
(अ) ग्रन्थः प्रणवः पठितः (इ) प्रणवेन ग्रन्थाः पठ्यन्ते
(उ) प्रणवेन ग्रन्थः पठ्येते (ऋ) प्रणवेन ग्रन्थः पठ्यते

82. अश्वेन भारः उह्यते – इसका कर्तृवाच्य होगा–
(अ) अश्वः भारं वहति (इ) अश्वेन भारं उह्यते
(उ) अश्वाः भारं वहन्ति (ऋ) अश्वः भारः उह्यते

83. 'त्वया भवनं गम्यते'– इसका कर्तृवाच्य होगा –
(अ) त्वया भवनः गच्छसि (इ) त्वया भवने गम्यते
(उ) त्वं भवनं गच्छसि (ऋ) त्वं भवनं गच्छथ

84. 'अस्माभिः स्मर्यते'– इसका कर्तृवाच्य होगा–
(अ) वयं स्मरामः (इ) अहं स्मरामि
(उ) अस्माभिः स्मर्यन्ते (ऋ) अहं स्मरामः

85. 'त्वं मां नमसि'– इसका कर्मवाच्य होगा–
(अ) त्वं मां नम्यसे (इ) त्वया अहं नम्ये
(उ) त्वया मां नम्यते (ऋ) त्वया मां नम्यसे

86. 'मया त्वं पाठ्यसे'– इसका कर्तृवाच्य होगा–
(अ) मया त्वं पाठ्यसि (इ) अहं त्वां पाठ्ये
(उ) अहं त्वां पाठयामि (ऋ) अहं त्वं पठसि

87. रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्'– इसका भाववाच्य होगा–
(अ) रात्रिर्गमिष्यन्ते भविष्यते सुप्रभातम्
(इ) रात्र्या गस्यन्ते भविष्यति सुप्रभातेन
(उ) रात्र्या गमिष्यति सुप्रभातेन भविष्यते
(ऋ) रात्र्या गंस्यते सुप्रभातेन भविष्यते

88. 'तेन सुप्यते'– किस वाच्य का वाक्य है ?
(अ) कर्तृवाच्य (इ) कर्मवाच्य
(उ) दोनों (ऋ) भाववाच्य

89. कर्तृवाच्य में 'कर्म' कौन सी विभक्ति में आता है ?
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

70. (इ), 71. (ऋ),72. (इ) , 73. (ऋ), 74. (अ), 75. (इ), 76. (उ), 77.(ऋ), 78. (अ), 79. (उ), 80. (अ), 81. (ऋ), 82.(अ), 83. (उ), 84. (अ), 85. (इ), 86. (उ), 87. (ऋ), 88. (ऋ), 89. (इ)

90. **कर्मवाच्य में 'कर्म' कौन सी विभक्ति में आता है ?**
(अ) प्रथमा (इ) द्वितीया
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

91. **जहाँ क्रिया कर्म का अनुसरण करे, उसे कहते हैं–**
(अ) कर्तृवाच्य (इ) कर्मवाच्य
(उ) भाववाच्य (ऋ) तीनों वाच्य

92. **'कृ' धातु का लृट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन में कर्मवाच्य में क्या होगा–**
(अ) करिष्यते (इ) करिष्यसे
(उ) करिष्येथे (ऋ) करिष्यध्वे

93. **'धृञ्' धातु का लोट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन कर्मवाच्य में रूप होगा–**
(अ) ध्रियताम् (इ) ध्रियेताम्
(उ) ध्रियन्ताम् (ऋ) इनमें से कोई नही

94. **'चुर्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का कर्मवाच्य में रूप होगा–**
(अ) अचोर्यत (इ) अचोर्येताम्
(उ) अचोर्यन्त (ऋ) चोरयिष्यन्ते

95. **अधोलिखित वाक्यों में कर्मवाच्य है–**
(अ) सः माम् अताडयिष्यत्
(इ) अमितः गीताम् अपठिष्यत्
(उ) अमितेन गीता अपठिष्यत
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

96. **'रामः पदवीम् अलभत'– इसका कर्मवाच्य में रूप होगा–**
(अ) रामेण पदवीं अलभ्यत
(इ) रामेण पदव्या अलभ्यत
(उ) रामः पदव्या अलभ्यत
(ऋ) रामेण पदवी अलभ्यत

97. **अधोलिखित वाक्यों में भाववाच्य का वाक्य हैं –**
(अ) सा श्रृणोति (इ) सः हसति
(उ) सीतया शीयते (ऋ) गोविन्दः रोदिति

98. **अधोलिखित वाक्यों में कर्मवाच्य का वाक्य है–**
(अ) रमेशः फलं खादति
(इ) मोहनः त्वां सूचयति
(उ) छात्राः अस्मान् स्मरन्ति
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

99. **निम्नलिखित वाक्यों में लोट् लकार में कर्मवाच्य का वाक्य है–**
(अ) बालकेन विद्यालयः गम्येत्
(इ) शिशुना चन्द्रः अदृश्यत
(उ) भवता गीतं गीयताम्
(ऋ) मुनिभिः तपः आचर्येत

100. **निम्नलिखित वाक्यों में लृट् लकार का कर्तृवाच्य है–**
(अ) अर्चकः पूजां करिष्यति
(इ) भवन्तौ आसन्दौ नयताम्
(उ) माता अस्मान् पालयतु
(ऋ) कविः काव्यानि रचयेत्

90. (अ), 91. (इ), 92.(उ), 93. (अ), 94. (उ), 95. (उ), 96. (ऋ), 97. (उ), 98. (ऋ), 99. (उ), 100. (अ)।

7. सङ्ख्यागङ्गा

1. 'आठ' को पुँल्लिङ्ग में क्या कहेंगे–
   (अ) अष्टम् (इ) अष्टौ
   (उ) अष्टाः (ऋ) इनमें से कोई नहीं
2. '99' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा–
   (अ) नवनवतिः (इ) नौनवतिः
   (उ) नवानवतिः (ऋ) नवतिः
3. संस्कृत में 'दस हजार' होगा–
   (अ) युतम् (इ) सहस्रम्
   (उ) अयुतम् /दशसहस्रम् (ऋ) लक्षम्
4. '91' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा–
   (अ) एकसप्ततिः (इ) एकनवतिः
   (उ) नवनवतिः (ऋ) एकाशीतिः
5. '96' का संस्कृत रूप होगा–
   (अ) षनवतिः (इ) षण्नवतिः
   (उ) षट्नवतिः (ऋ) षण्णवतिः
6. '25' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा–
   (अ) पविंशतिः (इ) पञ्चवती
   (उ) पञ्चाशत् (ऋ) पञ्चविंशतिः
7. '32' का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा–
   (अ) द्वित्रिंशत् (इ) द्वयंशत्
   (उ) द्वात्रिंशत् (ऋ) द्विंशत्
8. 'एकोनसप्ततिः' कौन सी संख्या है–
   (अ) 70 (इ) 71
   (उ) 79 (ऋ) 69
9. जिन शब्दों से वस्तुओं की संख्या का पता चलता है, वे क्या कहलाते हैं ?
   (अ) बहुवचन शब्द (इ) संख्यावाची शब्द
   (उ) क्रमवाची शब्द (ऋ) द्विवचन
10. कौन से संख्या शब्द के तीनों लिङ्गों में एक समान रूप चलते हैं–
   (अ) सप्त (इ) एक
   (उ) द्वि (ऋ) त्रि
11. '4' (चार) संख्या का पुँल्लिङ्ग में क्या शब्द बनता है ?
   (अ) चत्वारि (इ) चत्वारः
   (उ) चतस्रः (ऋ) चतुरम्
12. कौन सी संख्या सदा एकवचन में रहती है ?
   (अ) चतुर (इ) द्वि
   (उ) त्रि (ऋ) एक
13. '20' (बीस) का संस्कृत शब्दात्मक रूप होगा–
   (अ) विंशः (इ) विंशती
   (उ) विंशतिः (ऋ) विशत्
14. '100' का संस्कृत भाषा में रूप होगा–
   (अ) शततिः (इ) शततीः
   (उ) शतम् (ऋ) शतति
15. संस्कृत भाषा में '80' का वाचक शब्द है–
   (अ) आशीतिः (इ) अशीः
   (उ) अशीतिः (ऋ) अशीतीः
16. संस्कृत में '70' का संख्यावाचक शब्द है ?
   (अ) सप्तती (इ) सप्तिः
   (उ) सप्ततिः (ऋ) सप्ततः
17. 'एक' का नपुंसकलिङ्ग में शब्द बनता है–
   (अ) एकः (इ) एक
   (उ) एकम् (ऋ) एका
18. 'पचास' का संस्कृत शब्द होगा–
   (अ) पंचषत् (इ) पञ्चाशत्
   (उ) पञ्चासत (ऋ) पञ्चशत्
19. 'तीन' संख्या का स्त्रीलिङ्ग शब्द है–
   (अ) त्रि (इ) त्रीणि
   (उ) त्रयः (ऋ) तिस्रः
20. '3' (तीन) संख्या का पुँल्लिङ्ग शब्द है–
   (अ) त्रयः (इ) त्रि
   (उ) त्रीणि (ऋ) तिस्रः

1. (इ), 2. (अ), 3. (उ), 4. (इ), 5. (ऋ), 6. (ऋ), 7. (उ) 8. (ऋ), 9. (इ) 10. (अ), 11. (इ), 12. (ऋ), 13. (उ), 14. (उ),15.(उ), 16. (उ), 17. (उ), 18. (इ), 19. (ऋ),20. (अ),

21. **कौन सी संख्या सदा बहुवचन में होती है ?**
(अ) एक (इ) चतुर्
(उ) द्वि (ऋ) इनमें से कोई नहीं

22. **'60' का संस्कृत शब्द होगा–**
(अ) षष्टिः (इ) सष्टी
(उ) सष्टिः (ऋ) शष्टिः

23. **'95' का संस्कृत शब्द क्या होगा ?**
(अ) पंचानवतिः (इ) पञ्चनवः
(उ) पञ्चनविः (ऋ) पञ्चनवतिः

24. **'चार' संख्या का नपुंसकलिङ्ग शब्द होगा–**
(अ) चतुर (इ) चतस्रः
(उ) चत्वारः (ऋ) चत्वारि

25. **'नब्बे' का संस्कृत में शब्दात्मक रूप होगा–**
(अ) नवतिः (इ) नवितीः
(उ) नवितिः (ऋ) नवीतिः

26. **संस्कृत भाषा में '30' का वाचक शब्द है–**
(अ) त्रिंशत् (इ) त्रिंसत्
(उ) त्रिंषत् (ऋ) त्रिंशतिः

27. **'4' का स्त्रीलिङ्ग में क्या शब्द होगा–**
(अ) चतुर् (इ) चत्वारः
(उ) चत्वारि (ऋ) चतस्रः

28. **'तीन' का नपुंसकलिङ्ग में शब्द होगा–**
(अ) त्रि (इ) त्रयः
(उ) त्रीणि (ऋ) तिस्रः

29. **'चालीस का संस्कृत भाषा में शब्द है–**
(अ) चत्वारिः (इ) चत्वारिशत
(उ) चत्वारितिः (ऋ) चत्वारिंशत्

30. **'तैंतीस' का संस्कृत में शब्द क्या होगा–**
(अ) त्रित्रिंशत् (इ) त्रयितिंशत्
(उ) त्रयीत्रिशत् (ऋ) त्रयस्त्रिंशत्

31. **पञ्चन् से दशन् शब्द तक सभी शब्द किस वचन में होते हैं–**
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) उपर्युक्त सभी

32. **कौन सी संख्या सदा द्विवचन में रहती है ?**
(अ) एक (इ) त्रि
(उ) द्वि (ऋ) चतुर्

33. **'दो' का स्त्रीलिङ्ग शब्द क्या होगा–**
(अ) द्वि (इ) द्वौ
(उ) द्वा (ऋ) द्वे

34. **'दस' का संस्कृत में रूप होगा–**
(अ) दस (इ) दश
(उ) दष (ऋ) दशतिः

35. **'66' को संस्कृत में लिखते हैं–**
(अ) षटषष्टि (इ) सट्षष्टिः
(उ) षडषष्टिः (ऋ) षट्षष्टिः

36. **'दो' को पुँल्लिङ्ग में लिखते हैं–**
(अ) द्वे (इ) द्वौ
(उ) द्वि (ऋ) द्वा

37. **'एक लाख' को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) कोटिः (इ) लक्षम्
(उ) अयुतम् (ऋ) सहस्रम्

38. **'एक हजार' को संस्कृत में क्या कहेंगे ?**
(अ) सहस्त्रीः (इ) सहस्रतिः
(उ) सहस्रम् (ऋ) सहस्रिः

39. **'एक' का स्त्रीलिङ्ग में शब्द क्या होगा ?**
(अ) एक (इ) एकः
(उ) एका (ऋ) एकम्

40. **'89' का संस्कृत में संख्या शब्द क्या होगा–**
(अ) नवशीतिः (इ) नवाशीतिः
(उ) नवेशीतिः (ऋ) नवशीतीः

41. **'एक' का पुँल्लिङ्ग शब्द क्या होगा–**
(अ) एक (इ) एकः
(उ) एका (ऋ) एकम्

42. **'19' को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) एकोनविंशतिः (इ) एकोविंशतिः
(उ) एकनविंशतिः (ऋ) एकविंशतिः

43. **'दो' को नपुंसकलिङ्ग में कहते हैं–**
(अ) द्वे (इ) द्वौ
(उ) द्वा (ऋ) द्वि

21. (इ), 22. (अ), 23. (ऋ), 24. (ऋ), 25. (अ), 26. (अ), 27. (ऋ), 28. (उ), 29. (ऋ), 30. (ऋ), 31. (उ), 32. (उ), 33. (ऋ), 34. (इ), 35. (ऋ), 36. (इ), 37. (इ), 38. (उ), 39. (उ), 40. (इ), 41. (इ), 42. (अ)43. (अ),

44. **'एक करोड़' को संस्कृत भाषा में लिखते हैं–**
(अ) कोटितः (इ) अयुतम्
(उ) कोटिः (ऋ) कोटीः

45. **'53' का संस्कृत में रूप होगा–**
(अ) त्रिपञ्चाशत् (इ) त्रयपञ्चाशत्
(उ) त्रीणिपञ्चाशत् (ऋ) त्रीपञ्चाशत्

46. **'पहला' शब्द का नपुंसकलिङ्ग में क्रमवाची रूप क्या है ?**
(अ) प्रथमम् (इ) प्रथमतः
(उ) प्रथमः (ऋ) प्रथमा

47. **'चौथा' शब्द का स्त्रीलिङ्ग में क्रमवाची रूप क्या है ?**
(अ) चतुर्थः (इ) चतुर्थी
(उ) चतुर्था (ऋ) चतुर्थम्

48. **नपुंसकलिङ्ग में क्रमवाची शब्द बनाने में किस प्रत्यय का प्रयोग होता है–**
(अ) तमप् (इ) तमः
(उ) तमी (ऋ) तमन्

49. **'30 वें' क्रम का पुँल्लिङ्ग में संस्कृत क्रमवाची रूप क्या होता है ?**
(अ) त्रिंशत्तमः (इ) त्रिंशतत्मी
(उ) त्रिंशत्तः (ऋ) त्रिंशतिः

50. **'उन्नीसवाँ' शब्द का पुँल्लिङ्ग में क्रमवाची रूप क्या है ?**
(अ) नवदशतमम् (इ) नवदशतमी
(उ) नवदशतमा (ऋ) नवदशः

51. **'29' (उन्तीसवें) क्रम का पुँल्लिङ्ग में संस्कृत क्रमवाची रूप होगा–**
(अ) एकोनत्रिंशततमः (इ) एकोत्रिंशततमम्
(उ) एकोत्रिंशतीतमः (ऋ) एकोनत्रिंशत्तमः

52. **क्रमवाचक शब्द बनाने के लिए पुँल्लिङ्ग में कौन सा पद प्रयुक्त होता है ?**
(अ) तमम् (इ) तमी
(उ) तमीम् (ऋ) तमः

53. **'21वें' क्रम का स्त्रीलिङ्ग में संस्कृत क्रमवाची रूप क्या होगा–**
(अ) एकोविंशतमी (इ) एकविंशतितमी
(उ) एकविंशतमी (ऋ) एकाविंशीतमी

54. **'16वें' क्रम का नपुंसकलिङ्ग में संस्कृत भाषा में क्रमवाची शब्द होगा–**
(अ) षोडशम् (इ) षोडषम्
(उ) षोडसम् (ऋ) षोडशी

55. **क्रमवाचक शब्द बनाने के लिए स्त्रीलिङ्ग में कौन सा प्रत्यय लगता है ?**
(अ) तम (इ) तमम्
(उ) तमी (ऋ) तमीम्

56. **'24वें' क्रम का नपुंसकलिङ्ग में संस्कृत क्रमवाची रूप क्या होता है ?**
(अ) चतुविंशतितमम् (इ) चतुर्विंशतितमम्
(उ) चतुःविंशतितमः (ऋ) चतुर्विंशतितमः

57. **क्रमवाची शब्द किन-किन लिङ्गों में बनते हैं ?**
(अ) पुँल्लिङ्ग में (इ) नपुंसकलिङ्ग में
(उ) स्त्रीलिङ्ग में (ऋ) तीनों में

58. **'19वें' क्रम का स्त्रीलिङ्ग में संस्कृत में क्रमवाची रूप बनेगा–**
(अ) एकोनविंशि (इ) एकोनविंशिः
(उ) एकोनविंशः (ऋ) एकोनविंशी

59. **संस्कृत में 'चत्वारिंशत्' किस संख्या का वाचक है ?**
(अ) 400 (इ) 104
(उ) 40 (ऋ) 44

60. **'अष्टाविंशतिः' शब्द का क्या अर्थ है–**
(अ) 18 (इ) 38
(उ) 28 (ऋ) 48

61. **'55' संख्या का वाचक संस्कृत शब्द कौन सा है ?**
(अ) पञ्चपञ्चशत् (इ) पञ्चपञ्चाशत्
(उ) पञ्चापञ्चशत् (ऋ) पञ्चापञ्चाशत्

62. **संख्यावाची शब्द 'षण्णवतिः' किस अङ्क का वाचक है ?**
(अ) 69 (इ) 79
(उ) 96 (ऋ) 66

63. **'49' का शब्दात्मक रूप होगा–**
(अ) एकोनचत्वारिशत् (इ) नौचत्वारिंशत्
(उ) नवचत्वारिंशत् (ऋ) नवचत्वारिः

44. (उ), 45. (अ), 46. (अ), 47. (इ) 48. (अ), 49. (अ), 50. (ऋ), 51. (ऋ), 52.(ऋ) 53. (इ), 54. (अ), 55. (उ), 56. (इ), 57. (ऋ) 58. (ऋ), 59. (उ), 60. (उ), 61. (इ), 62.(उ) 63. (उ),

64. **'षट्सप्ततिः' का अर्थ है–**
(अ) 670 (इ) 607
(उ) 67 (ऋ) 76

65. **'तेरह' के लिए संस्कृत में शब्द है–**
(अ) त्रयदशम् (इ) त्रिदशः
(उ) त्रयोदश (ऋ) इनमें से कोई नहीं

66. **'त्रि' शब्द का स्त्रीलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप होगा–**
(अ) तिसृन् (इ) त्रीन्
(उ) तिस्रः (ऋ) तिष्टः

67. **'षट्' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है–**
(अ) षट्नाम (इ) षट्णाम्
(उ) षण्णाम् (ऋ) षटाणाम्

68. **'तीन' शब्द का स्त्रीलिङ्ग में षष्ठी विभक्ति बहुवचन का रूप है–**
(अ) तिसृणाम् (इ) त्रयाणाम्
(उ) तिसणाम् (ऋ) तिस्त्रणाम्

69. **'32' को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) द्वौत्रिंशत् (इ) द्वात्रिंशत्
(उ) द्वित्रिंशत् (ऋ) द्वेत्रिंशत्

70. **'चतुरशीतिः' किसे कहते हैं ?**
(अ) चालाक (इ) 84
(उ) 48 (ऋ) 480

71. **'अठारह' (18) को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) अष्टदश (इ) अष्टादस
(उ) अष्टादश (ऋ) अष्टदष

72. **'38' को संस्कृत में शब्दरूप होता है–**
(अ) अष्टत्रिंशत् (इ) अष्टत्रिंशम्
(उ) अष्टात्रिंशत् (ऋ) अष्टात्रिंसत्

73. **'तिरासी' (83) को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) त्रयशीतिः (इ) त्र्यशीतिः
(उ) त्रयशीतीः (ऋ) त्र्यशीतिः

74. **'त्रयोविंशतिः' को अङ्क में लिखा जाता है–**
(अ) 33 (इ) 63
(उ) 32 (ऋ) 23

75. **'एकोनपञ्चाशत्' को अङ्क में लिखा जाता है–**
(अ) 59 (इ) 39
(उ) 48 (ऋ) 49

76. **'84' को संस्कृत शब्द रूप में कहते हैं ?**
(अ) चतुराशीतिः (इ) चतुर्शीतिः
(उ) चतुशीतिः (ऋ) चतुरशीतिः

77. **'त्रिंशत्' को अङ्कों में लिखा जाता है–**
(अ) 30 (इ) 34
(उ) 33 (ऋ) 43

78. **'7' का सप्तमी विभक्ति बहुवचन का रूप होगा–**
(अ) सप्तानाम् (इ) सप्तसु
(उ) सप्त (ऋ) सप्तषु

79. **'3' का स्त्रीलिङ्ग में सप्तमी विभक्ति बहुवचन में रूप होगा–**
(अ) तिस्रः (इ) तिसृणाम्
(उ) तिसृषु (ऋ) त्रयाणाम्

80. **'6' (छह) को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) षट् (इ) षड्
(उ) षट (ऋ) षड

81. **'त्रि' शब्द किस वचन में प्रयोग किया जाता है ?**
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) इनमें से कोई नहीं

82. **`4' (चतुर्) शब्द का पुँल्लिङ्ग द्वितीया बहुवचन में रूप होगा ?**
(अ) चतुरान् (इ) चतुरः
(उ) चतुस्त्रः (ऋ) चत्वारि

83. **क्रमवाची संख्या का शुद्धतम रूप है-**
(अ) षष्ठः (इ) एकादशः
(उ) द्वादशः (ऋ) उपर्युक्त सभी

64. (ऋ), 65. (उ), 66. (उ), 67.(उ), 68. (अ), 69. (इ), 70. (इ), 71. (उ),72. (उ) , 73. (ऋ) 74. (ऋ), 75. (ऋ), 76. (ऋ), 77.(अ), 78. (इ), 79. (उ), 80. (अ), 81. (उ), 82. (इ), 83. (ऋ),

84. **'आठ' को संस्कृत में कहेंगे–**
(अ) अष्ट (इ) अष्टौ
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

85. **'पञ्च' शब्द किस वचन में प्रयोग किया जाता है-**
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) उपर्युक्त सभी गलत

86. **अधोलिखित संख्यावाची का शुद्धरूप–**
(अ) द्विचत्वारिंशत् (इ) द्वाचत्वारिंशत्
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

87. **'62' को संस्कृत में कहेंगे-**
(अ) द्विषष्टिः (इ) द्वाषष्टिः
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

88. **अधोलिखित में अशुद्ध रूप है-**
(अ) अष्टषष्टिः (68) (इ) एकोनसप्ततिः (69)
(उ) चतःसप्ततिः (74) (ऋ) षोडश (16)

89. **'69' को संस्कृत में कहा जाता है-?**
(अ) नवषष्टिः (इ) एकोनसप्ततिः
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

90. **'द्विपञ्चाशत्' को कहा जाता है-**
(अ) 25 (इ) 62
(उ) 52 (ऋ) 72

91. **अधोलिखित संख्यावाची शब्द का शुद्धतम रूप है–**
(अ) द्विनवतिः (इ) द्वानवतिः
(उ) इनमें से कोई नहीं (ऋ) 'अ' और 'इ' दोनों

92. **अधोलिखित में अशुद्धरूप है–**
(अ) त्रयाणाम् (इ) तिसृणाम्
(उ) तिसॄणाम् (ऋ) चतसृणाम्

93. **'त्रि से अष्टादशन्' तक के संख्या शब्दों का किस वचन में प्रयोग किया जाता है–**
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) तीनों वचनों में

94. **एकोनविंशतिः से नवविंशतिः तक की संख्या का किस लिङ्ग में प्रयोग किया जाता है–**
(अ) पुँल्लिङ्ग (इ) स्त्रीलिङ्ग
(उ) नपुंसकलिङ्ग (ऋ) तीनों लिङ्गों में

95. **अधोलिखित संख्यावाची शब्द का अशुद्धरूप है–**
(अ) सप्तानाम् (इ) पञ्चसु
(उ) चतसृषु (ऋ) षण्णाम्

96. **'नव' शब्द का षष्ठी बहुवचन में रूप बनता है–**
(अ) नवसु (इ) नवानाम्
(उ) नवभ्यः (ऋ) नवभिः

97. **`10 लाख' को संस्कृत में कहा जाता है–**
(अ) लक्षम् (इ) प्रयुतम्
(उ) नियुतम् (ऋ) इ और उ दोनों

98. **`53' को संस्कृत में कहते हैं–**
(अ) त्रिपञ्चाशत् (इ) त्रयःपञ्चाशत्
(उ) इनमें से कोई नहीं (ऋ) अ और इ दोनों

99. **अधोलिखित संख्यावाची का शुद्धरूप है–**
(अ) नवनवतिः (इ) एकोनशतम्
(उ) दोनों (ऋ) इनमें से कोई नहीं

100. **कौन से संख्या शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग में रूप बनता है–**
(अ) शतम्, सहस्रम् (इ) अयुतम्, लक्षम्
(उ) नियुतम्, प्रयुतम् (ऋ) उपर्युक्त सभी

101. **`102' को संस्कृत में कहेंगें–**
(अ) द्व्यधिकं शतम् (इ) द्विशतम्
(उ) शतद्वयम् (ऋ) उपर्युक्त में कोई नहीं

नोट– संख्याएँ पेज क्रमाङ्क 255 पर देखें।

84. (उ), 85. (उ),86. (उ), 87. (उ), 88. (उ), 89. (उ), 90. (उ), 91. (ऋ), 92. (उ), 93. (उ) 94. (इ), 95. (उ), 96. (इ), 97. (ऋ), 98. (ऋ), 99. (उ), 100. (ऋ), 101. (अ)।

8. धातुरूप-गङ्गा

1. 'भू' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भविष्यन्ति (इ) भवन्ति
(उ) भवति (ऋ) भवन्तु

2. 'भू' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भवावः (इ) भवामि
(उ) भवामः (ऋ) भवन्ति

3. 'भू' धातु का लृट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा-
(अ) भविष्यति (इ) भविष्यथः
(उ) भविष्यन्ति (ऋ) भविष्यसि

4. 'भू' धातु का लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भवाम (इ) भवानि
(उ) भवामः (ऋ) भवावः

5. 'भू' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भवन्तु (इ) भवन्ति
(उ) भवसि (ऋ) भवसि

6. 'भू' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भविष्यति (इ) भविष्यतः
(उ) भवसि (ऋ) भविष्यन्ति

7. 'भू' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) भवत (इ) भवतम्
(उ) भवतु (ऋ) भव

8. 'भू' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अभवतम् (इ) अभवः
(उ) अभवत् (ऋ) अभवताम्

9. 'पठ्' धातु का लृट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) पठिष्यामः (इ) पठिष्यावः
(उ) पष्ठियन्ति (ऋ) पठिष्यामि

10. 'भू' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) भवानि (इ) भवताम्
(उ) अभवन् (ऋ) अभवत्

11. 'पठ्' धातु का लृट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) पठिष्यसि (इ) पठिष्यन्ति
(उ) पठिष्यामि (ऋ) पठिष्यति

12. 'पठ्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) पठिष्यामि (इ) पठिष्यतः
(उ) पठिष्यन्ति (ऋ) पष्ठियसि

13. 'पठ्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अपठताम् (इ) अपठन्
(उ) अपठत् (ऋ) अपठाव

14. 'पठ्' धातु का विधिलिङ्लकार में प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) पठेत (इ) पठेत्
(उ) पठेतम् (ऋ) पठेयुः

15. 'पठ्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) पठाम (इ) पठताम्
(उ) पठ (ऋ) पठतम्

16. 'पठ्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अपठावः (इ) अपठाम
(उ) अपठः (ऋ) अपठन्

1. (इ), 2. (उ), 3. (इ), 4. (अ), 5. (अ), 6. (ऋ), 7. (ऋ), 8. (ऋ), 9. (ऋ), 10. (ऋ), 11. (अ), 12. (इ), 13. (अ), 14. (ऋ), 15. (ऋ), 16. (इ),

17. 'पठ्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अपठत (इ) अपठन्
(उ) अपठताम् (ऋ) अपठाम

18. 'पठ्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अपठावः (इ) अपठामि
(उ) अपठः (ऋ) अपठन्

19. 'पठ्' धातु का लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) पठत (इ) पठ
(उ) पठतु (ऋ) पठानि

20. 'पठ्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अपठम् (इ) अपठाव
(उ) अपठत (ऋ) अपठः

21. 'पठ्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अपठम् (इ) पठ
(उ) पठतम् (ऋ) पठन्तु

22. 'पठ्' धातु का उत्तमपुरुष विधिलिङ्लकार एकवचन का रूप होगा -
(अ) पठेः (इ) पठेत
(उ) पठेयम् (ऋ) पठेव

23. 'गम्' धातु का लट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गच्छावः (इ) गच्छन्ति
(उ) गच्छथ (ऋ) गच्छसि

24. 'गम्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) गच्छ (इ) गच्छताम्
(उ) गच्छतम् (ऋ) गच्छाव

25. 'वद्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) वदत (इ) वदन्तु
(उ) वद (ऋ) वदतु

26. 'गम्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अगच्छत् (इ) अगच्छः
(उ) अगच्छन् (ऋ) अगच्छताम्

27. 'गम्' धातु का विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) गच्छेयम् (इ) गच्छेतम्
(उ) गच्छेत् (ऋ) गच्छेः

28. 'गम्' धातु का लृट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गमिष्यथः (इ) गमिष्यसि
(उ) गमिष्यन्ति (ऋ) गमिष्यामः

29. 'वद्' धातु का विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) वदेयम् (इ) वदेः
(उ) वदेत् (ऋ) वदेम

30. 'हस्' धातु का उत्तमपुरुष लङ्लकार एकवचन का रूप होगा -
(अ) अहसतम् (इ) अहसम्
(उ) अहसः (ऋ) अहसाम्

31. 'तुद' धातु का लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) तुदथः (इ) तदुतः
(उ) तुदति (ऋ) तुदसि

32. 'वद्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अवदत् (इ) अवदन्
(उ) अवदाव (ऋ) अवदः

33. 'हस्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) हस (इ) हसत
(उ) हसताम् (ऋ) हसतु

34. 'हस्' धातु का उत्तमपुरुष विधिलिङ्लकार एकवचन का रूप होगा -
(अ) हसेयम् (इ) हसेः
(उ) हसेत् (ऋ) हसेव

17. (इ), 18. (उ), 19. (ऋ), 20. (अ), 21. (ऋ), 22. (उ), 23. (उ), 24. (उ), 25. (अ), 26. (अ), 27. (अ), 28. (ऋ), 29. (ऋ), 30. (इ), 31. (अ), 32. (ऋ), 33. (इ), 34. (अ),

35. 'वद्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -

(अ) अवदताम् (इ) अवदन्
(उ) अवदत् (ऋ) अवदाम्

36. 'हस्' धातु के लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -

(अ) अहसताम् (इ) अहसन्
(उ) अहसत् (ऋ) अहसः

37. 'खाद्' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) खादानि (इ) खादतम्
(उ) खादताम् (ऋ) खादतु

38. 'तुद्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -

(अ) तुदतम् (इ) तुदत
(उ) तुदाव (ऋ) तुदामि

39. 'तुद्' धातु का उत्तमपुरुष विधिलिङ्लकार द्विवचन का रूप होगा -

(अ) तुदेयम् (इ) तुदेम
(उ) तुदेव (ऋ) तुदेत

40. 'चुर्' धातु के लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) चोरयताम् (इ) चोरय
(उ) चोरयन्तु (ऋ) चोरयतु

41. 'चुर्' धातु का लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -

(अ) चोरयन्तु (इ) चोरयतु
(उ) चोरयताम् (ऋ) चोरयाम

42. 'तुद्' धातु के विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -

(अ) तुदेम (इ) तुदेयुः
(उ) तुदेताम् (ऋ) तुदेतम्

43. 'तुद्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -

(अ) अतुदन् (इ) अतुदाव
(उ) अतुदत (ऋ) अतुदः

44. 'चुर्' धातु का लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -

(अ) चोरयथः (इ) चोरयामि
(उ) चोरयति (ऋ) चोरयसि

45. 'चुर्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -

(अ) चोरय (इ) चोरयस्व
(उ) चोरयतम् (ऋ) चोरयताम्

46. 'चुर्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -

(अ) अचोरयताम् (इ) अचोरयन्
(उ) अचोरयः (ऋ) अचोरयाव

47. 'चुर्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -

(अ) अचोरयाव (इ) अचोरयाम
(उ) अचोरयः (ऋ) अचोरयत

48. 'चुर्' धातु का विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) चोरयेयुः (इ) चोरयेः
(उ) चोरयेव (ऋ) चोरयेत्

49. 'तुद्' धातु का मध्यमपुरुष लट्लकार बहुवचन का रूप होगा -

(अ) तुदसि (इ) तुदथ
(उ) तुदन्ति (ऋ) तुदति

50. 'चुर्' धातु के लङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -

(अ) अचोरयम् (इ) अचोरयत्
(उ) अचोरयः (ऋ) अचोरयत

51. 'चुर्' धातु के विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -

(अ) चोरयेः (इ) चोरयेव
(उ) चोरयेत् (ऋ) चोरयेयुः

35. (अ), 36. (इ), 37. (अ), 38. (अ), 39. (उ), 40. (ऋ), 41. (ऋ), 42. (उ), 43. (उ), 44. (अ), 45. (उ), 46. (इ), 47. (अ), 48. (ऋ), 49. (इ), 50. (ऋ), 51. (ऋ),

52. 'चुर्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) चोरयेतम् (इ) चोरयेयुः
(उ) चोरयेः (ऋ) चोरयेत्

53. 'तुद्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) तुदथ (इ) तुदथः
(उ) तुदावः (ऋ) तुदामः

54. 'तुद्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तुदन्तु (इ) तुदतु
(उ) तुदतम् (ऋ) तुद

55. 'तुद्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अतुदत् (इ) अतुदम्
(उ) अतुदः (ऋ) अतुदताम्

56. 'तुद्' धातु के विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तुदेताम् (इ) तुदेः
(उ) तुदेत् (ऋ) तुदेयुः

57. 'कृष्' धातु का लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षथ (इ) कृषथः
(उ) कर्षतः (ऋ) कर्षति

58. 'तुद्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) तुदतम् (इ) तुद्
(उ) तुदतु (ऋ) तुदन्तु

59. 'तुद्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अतुदत् (इ) अतुदत
(उ) अतुदन् (ऋ) अतुदः

60. 'तुद्' धातु का लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तुदावः (इ) तुदानि
(उ) तुदामः (ऋ) तुद

61. 'तुद्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अतुदः (इ) अतुदाव
(उ) अतुदतम् (ऋ) अतुदम्

62. 'तुद्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तुदेत (इ) तुदेयुः
(उ) तुदेत् (ऋ) तुदेव

63. 'कृष्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अकृषत् (इ) अकर्षः
(उ) अकर्षत (ऋ) अकर्षम्

64. 'कृष्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अकर्षम् (इ) अकृषः
(उ) अकर्षाव (ऋ) अकर्षत्

65. 'कृष्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षेव (इ) कर्षेत
(उ) कर्षेम (ऋ) कृषेतम्

66. 'कृष्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षावः (इ) कृषामि
(उ) कर्षसि (ऋ) कर्षति

67. 'कृष्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अकृषतम् (इ) अकर्षम्
(उ) अकर्षत् (ऋ) अकर्षः

68. 'कृष्' धातु का विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षेताम् (इ) कर्षेत
(उ) कर्षेयुः (ऋ) कृषेत्

69. 'कृष्' धातु का विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षेत् (इ) कर्षेत
(उ) कर्षेः (ऋ) कृषेयम्

52. (अ), 53. (उ), 54. (अ), 55. (अ), 56. (इ), 57. (इ), 58. (अ), 59. (इ), 60. (इ), 61. (ऋ), 62. (अ), 63. (अ), 64. (इ), 65. (ऋ), 66. (इ), 67. (अ), 68. (ऋ), 69. (ऋ),

70. 'कृष्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) कर्षताम् (इ) कर्ष
(उ) कर्षतु (ऋ) कृषत

71. 'कृष्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अकर्षन् (इ) अकर्षाव
(उ) अकृषाम् (ऋ) अकर्षत

72. 'वह्' धातु का लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) वहतु (इ) वहाव
(उ) वहन्तु (ऋ) वहाम

73. 'वह्' धातु का विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) वहेयुः (इ) वहेः
(उ) वहेत् (ऋ) वहेत

74. 'वह्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) वहति (इ) वहन्ति
(उ) वहसि (ऋ) वहामः

75. 'वह्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अवहाव (इ) अवहाम
(उ) अवहत् (ऋ) अवहः

76. 'वह्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) वहतम् (इ) वहः
(उ) वहन्तु (ऋ) वहत

77. 'वह्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) वहताम् (इ) वहतु
(उ) वहः (ऋ) वहन्तु

78. 'वह्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अवहताम् (इ) अवहत्
(उ) अवहत (ऋ) अवहन्

79. 'वह्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अवहतम् (इ) अवहत
(उ) अवहताम् (ऋ) अवहः

80. 'वह्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) वहेत् (इ) वहेः
(उ) वहेतम् (ऋ) वहेत

81. 'क्षिप्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपाणि (इ) क्षिप
(उ) क्षिपतम् (ऋ) क्षिपतु

82. 'क्षिप्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपेत (इ) क्षिपेतम्
(उ) क्षिपेः (ऋ) क्षिपेम

83. 'वह्' धातु का विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) वहेम (इ) वहेयुः
(उ) वहेत (ऋ) वहेयम्

84. 'क्षिप्' धातु का विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपेताम् (इ) क्षिपेम
(उ) क्षिपेयुः (ऋ) क्षिपेत्

85. 'वह्' धातु का विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) वहेत (इ) वहेयुः
(उ) वहेव (ऋ) वहेम

86. 'क्षिप्' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपति (इ) क्षिपथ
(उ) क्षिपन्ति (ऋ) क्षिपावः

87. 'क्षिप्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपत (इ) क्षिपति
(उ) क्षिपताम् (ऋ) क्षिपाव

70. (ऋ), 71. (उ), 72. (ऋ), 73. (उ), 74. (ऋ), 75. (इ), 76. (अ), 77. (इ), 78. (इ), 79. (ऋ), 80. (उ), 81. (इ), 82. (उ), 83. (ऋ), 84. (उ), 85. (ऋ), 86. (उ), 87. (अ),

88. 'क्षिप्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अक्षिपाव (इ) अक्षिपत
(उ) अक्षिपत् (ऋ) अक्षिपाम

89. 'क्षिप्' धातु के विधिलिङ्लकार में उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्षिपाणि (इ) अक्षिपम्
(उ) क्षिपेः (ऋ) क्षिपेयम्

90. 'गण्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गणयन्तु (इ) गणयताम्
(उ) गणय (ऋ) गणयतु

91. 'गण्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अगणयाव (इ) अगणयत
(उ) अगणयताम् (ऋ) अगणयतम्

92. 'गण्' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) गणयानि (इ) गणयति
(उ) गणयन्तु (ऋ) गणयत

93. 'गण्' धातु के विधिलिङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) गणयेत (इ) गणयेयम्
(उ) गणयेः (ऋ) गणयेत्

94. 'गण्' धातु के लङ्लकार में प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अगणयत (इ) अगणयत्
(उ) अगणयताम् (ऋ) अगणयाव

95. 'गण्' धातु का विधिलिङ्लकार में प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) गणयेताम् (इ) गणयेत्
(उ) गणयेः (ऋ) गणयेम

96. 'गण्' धातु का विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गणयेयुः (इ) गणयेत्
(उ) गणयेत (ऋ) गणयेः

97. 'दुह्' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) दोग्धि (इ) दुग्धः
(उ) धोक्षि (ऋ) दुहन्ति

98. 'दुह्' धातु का लोट्लकार में उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) दुग्धाम् (इ) दुहामि
(उ) दोहानि (ऋ) दोग्धु

99. 'दुह्' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) दुग्ध (इ) दुहन्तु
(उ) दुग्धाम् (ऋ) दोग्धु

100. 'दुह्' धातु का लट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) दुहन्ति (इ) दोग्धि
(उ) दुग्धः (ऋ) धोक्षि

101. 'दुह्' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) दोग्धु (इ) दुग्धाम्
(उ) दुधि (ऋ) दुग्धम्

102. 'दुह्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) दोग्धि (इ) धोक्षि
(उ) दुग्ध (ऋ) दोह्मि

103. 'दुह्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अधोक् (इ) अदुहन्
(उ) अदोहम् (ऋ) अदुग्ध

104. 'दुह्' धातु का लङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) दोग्धि (इ) अदोहम्
(उ) दुग्ध (ऋ) अदुग्ध

105. 'दुह्' धातु के लृटलकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) धोक्ष्यन्ति (इ) धोक्ष्यथ
(उ) धोक्ष्यति (ऋ) धोक्ष्यसि

88. (उ), 89. (ऋ), 90. (अ), 91. (अ), 92. (अ), 93. (इ), 94. (इ), 95. (इ), 96. (उ), 97. (ऋ), 98. (उ), 99. (ऋ), 100. (ऋ), 101. (ऋ), 102. (ऋ), 103. (अ), 104. (ऋ), 105. (इ),

106. 'दुह्' धातु के लङ्लकार में उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) दोग्धि (इ) दुहन्ति
(उ) अदोहम् (ऋ) दुग्ध

107. 'दुह्' धातु के लृट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -

(अ) धोक्ष्यतः (इ) धोक्ष्यन्ति
(उ) धोक्ष्यथ (ऋ) धोक्ष्यति

108. 'दुह्' धातु के लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) धोक्ष्यति (इ) धोक्ष्यथः
(उ) धोक्ष्यन्ति (ऋ) धोक्ष्यथ

109. 'गम्' धातु के लृट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) गमिष्यामि (इ) गमिष्यथः
(उ) गमिष्यसि (ऋ) गमिष्यति

110. 'गम्' धातु लङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -

(अ) अगच्छन् (इ) अगच्छ
(उ) अगच्छत् (ऋ) अगच्छताम्

111. 'दुह्' धातु का लृट्लकार में मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -

(अ) धोक्ष्यथ (इ) धोक्ष्यतः
(उ) धोक्ष्यथः (ऋ) धोक्ष्यन्ति

112. 'गम्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -

(अ) गच्छति (इ) गच्छामः
(उ) गच्छावः (ऋ) अगच्छत्

113. 'दुह्' धातु का लृट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) धोक्ष्यथः (इ) धोक्ष्यति
(उ) धोक्ष्यथ (ऋ) धोक्ष्यामि

114. 'दुह्' धातु का लृट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -

(अ) धोक्ष्यथ (इ) धोक्ष्यन्ति
(उ) धोक्ष्यथः (ऋ) धोक्ष्यामि

115. 'युज्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -

(अ) युनक्ति (इ) युञ्ज्मः
(उ) युञ्ज्वः (ऋ) युञ्जन्ति

116. 'अद्' धातु के मध्यमपुरुष लट्लकार एकवचन का रूप होगा -

(अ) अद्मः (इ) अत्तः
(उ) अद्वः (ऋ) अत्सि

117. 'अद्' धातु के लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -

(अ) अदन्ति (इ) अत्ति
(उ) असि (ऋ) अत्तः

118. 'अद्' धातु के विधिलिङ्लकार में उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) अद्याम (इ) अद्याव
(उ) अद्याम् (ऋ) अद्यात्

119. 'अद्' धातु के लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) अद्मि (इ) अत्थः
(उ) असि (ऋ) अद्मः

120. 'अद्' धातु का लङ्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) आद्व (इ) आदव
(उ) आदम् (ऋ) आत्ताम्

121. 'अद्' धातु के लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) अत्स्यथः (इ) अत्स्यसि
(उ) अत्स्यतः (ऋ) अत्स्यति

122. 'तन्' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -

(अ) तनु (इ) तनुवः
(उ) तनुमः (ऋ) तनोतु

123. 'तन्' धातु के लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -

(अ) तनुतः (इ) तनुथ
(उ) तनोति (ऋ) तनुथः

106. (उ), 107. (अ), 108. (अ), 109. (उ), 110. (अ), 111. (उ), 112. (उ), 113. (ऋ), 114. (अ), 115. (उ), 116. (ऋ), 117. (अ), 118. (उ), 119. (अ), 120. (उ), 121. (ऋ), 122. (अ), 123. (ऋ),

124. 'तन्' धातु के लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तनोतु/तनुतात् (इ) तनुथ
(उ) तनुमः (ऋ) तनुवः

125. 'तन्' धातु के लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तनुवः (इ) तनोमि
(उ) तनुमः (ऋ) तनुतः

126. 'युज्' धातु के लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) युनक्ति (इ) युञ्ज्वः
(उ) युनक्षि (ऋ) युनज्मि

127. 'तन्' धातु के लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तनिष्यति (इ) तनिष्यन्ति
(उ) तनिष्यथ (ऋ) तनिष्यामि

128. 'तन्' धातु के लृट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तनिष्यामि (इ) तनिष्यसि
(उ) तनिष्यथः (ऋ) तनिष्यति

129. 'तन्' धातु के विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तनुमः (इ) तनुयात
(उ) तनुवः (ऋ) तनुयुः

130. 'तन्' धातु के लङ्लकार में प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अनुतम् (इ) अतनुत
(उ) अतनोत् (ऋ) अतनोः

131. 'तन्' धातु के विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तनुयात् (इ) तनुयात
(उ) तनुयाव (ऋ) तनुयुः

132. 'तन्' धातु के लङ्लकार में मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तनुवः (इ) अतनुत
(उ) तनोतु (ऋ) तनुमः

133. 'तन्' धातु के विधिलिङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तनुयाः (इ) तनुयात
(उ) तनुयात् (ऋ) तनुयुः

134. 'हु' धातु के लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) जुहोति (इ) जुहूतः
(उ) जुहुमः (ऋ) जहोषि

135. 'क्री' धातु के लट्लकार में प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणाति (इ) क्रीणन्ति
(उ) क्रीणीतः (ऋ) क्रीणासि

136. 'हु' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) हुजुमः (इ) जुहुवः
(उ) जुहुत (ऋ) जुहोमि

137. 'क्री' धातु के लट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणीतः (इ) क्रीणीथः
(उ) क्रीणाति (ऋ) क्रीणीथ

138. 'हु' धातु के लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) जुहुवाम (इ) जुहुथि
(उ) जुहुत (ऋ) जुहोतु

139. 'क्री' धातु के लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणीवः (इ) क्रीणामि
(उ) क्रीणीथ (ऋ) क्रीणीमः

140. 'हु' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) जुहुवान (इ) हुहोतु
(उ) जुहवानि (ऋ) जुहुत

141. 'क्री' धातु के लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणानि (इ) क्रीणाम
(उ) क्रीणातु (ऋ) क्रीणाव

124. (अ), 125. (इ), 126. (अ), 127. (अ), 128. (इ), 129. (ऋ), 130. (उ), 131. (इ), 132. (इ), 133. (उ), 134. (अ), 135. (अ), 136. (ऋ), 137. (इ), 138. (ऋ), 139. (इ), 140. (उ), 141. (उ),

142. 'क्री' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणाव (इ) क्रीणीत
(उ) क्रीणीत् (ऋ) क्रीणाम

143. 'हु' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) जुहुधि (इ) जुहवान
(उ) जुहुत (ऋ) जुहोतु

144. 'क्री' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणाव (इ) क्रीणातु
(उ) क्रीणानि (ऋ) क्रीणाम

145. 'क्री' धातु के लोट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) क्रीणाव (इ) क्रीणातु
(उ) क्रीणानि (ऋ) क्रीणाम

146. 'क्री' धातु के लङ्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अक्रीणीताम् (इ) अक्रीणाः
(उ) अक्रीणीतम् (ऋ) अक्रीणाव

147. 'क्री' धातु के लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अक्रीणाम् (इ) अक्रीणम्
(उ) अक्रीणाः (ऋ) अक्रीणीत्

148. 'क्री' धातु के लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अक्रीणन (इ) अक्रीणाः
(उ) अक्रीणीत (ऋ) अक्रीणीम्

149. धातुओं में जुड़ने वाले प्रत्ययों को कहा जाता है-
(अ) तिङ् (इ) तद्धित
(उ) लकार (ऋ) सुप्

150. 'पच्' धातु लट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) पचन्ति (इ) पचसि
(उ) पचामि (ऋ) पचति

151. 'पिबन्तु' क्रियापद में कौन सी धातु है ?
(अ) पिब (इ) पा
(उ) पिब् (ऋ) पीब

152. निम्न में से कौन सी धातु आत्मनेपदी है ?-
(अ) लभ् (इ) लिख्
(उ) पा (ऋ) स्था

153. 'सेवते' क्रियापद लट्लकार के किस पुरुष में बनता है? -
(अ) उत्तमपुरुष (इ) प्रथमपुरुष
(उ) मध्यमपुरुष (ऋ) किसी में नही

154. 'पठिष्यति' क्रियापद में कौन सा लकार है ?
(अ) लट् (इ) लृट्
(उ) लोट् (ऋ) लङ्

155. 'पा' धातु को किस लकार में 'पिब्' आदेश नहीं होता-
(अ) लङ् (इ) लोट्
(उ) लट् (ऋ) लृट्

156. 'भवेत्' क्रियापद में कौन सी धातु है? -
(अ) भू (इ) भव्
(उ) भु (ऋ) भाव

157. 'पच्' धातु का लृट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का शुद्ध रूप क्या है ?
(अ) पचिष्यामि (इ) पचयिष्यामि
(उ) पक्ष्यामि (ऋ) पचष्यामि

158. 'अगच्छः' क्रियापद में कौन सा लकार है ?
(अ) लोट् (इ) लृट्
(उ) लङ् (ऋ) लट्

159. 'भक्षयतु' क्रियापद किस लकार में बनता है?
(अ) लोट् (इ) विधिलिङ्
(उ) लट् (ऋ) लृट्

160. 'प्रच्छ्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में शुद्ध रूप कौन सा है -
(अ) अपृच्छत (इ) अपृच्छत्
(उ) अप्रच्छत् (ऋ) अप्रिच्छत्

142. (इ), 143. (अ), 144. (ऋ), 145. (उ), 146. (उ), 147. (ऋ), 148. (इ), 149. (अ), 150. (उ), 151. (इ), 152. (अ), 153. (इ), 154. (इ), 155. (ऋ), 156. (अ), 157. (उ), 158. (उ), 159. (अ), 160. (इ),

161. 'नमेत्' क्रियापद किस लकार में बनता है ?
(अ) लट् (इ) लोट्
(उ) लृट (ऋ) विधिलिङ्

162. 'पठानि' क्रियापद में कौन सा पुरुष है ?
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) उत्तमपुरुष (ऋ) अन्यपुरुष

163. 'हसतु' क्रियापद में कौन सा लकार है ?
(अ) लट् (इ) लोट्
(उ) लङ् (ऋ) लृट्

164. 'नम्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) नंस्यति (इ) नमिष्यति
(उ) नमति (ऋ) नमेष्यति

165. 'अपचम्' क्रियापद लङ्लकार के किस पुरुष में बनता है ?
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) उत्तमपुरुष (ऋ) अन्यपुरुष

166. 'भू' धातु का लृट्लकार मध्यमपुरुष द्विवचन में उचित उत्तर क्या है ?
(अ) भविष्यथः (इ) भविष्यथ
(उ) भविष्यतः (ऋ) भविष्यावः

167. 'नंस्यति' क्रियापद में कौन सी धातु है ?
(अ) नाम् (इ) गम्
(उ) नम् (ऋ) नन्

168. 'सेवावहे' क्रियापद किस लकार में बनता है ?
(अ) लृट् (इ) लट्
(उ) लोट् (ऋ) लङ्

169. 'पठिष्यामि' क्रियापद में कौन सा पुरुष है?
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) उत्तमपुरुष (ऋ) अन्यपुरुष

170. 'प्रच्छ्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में शुद्ध रूप कौन सा है ? -
(अ) प्रच्छस्यति (इ) प्रक्षिस्यति
(उ) प्रच्छिष्यति (ऋ) प्रक्ष्यति

171. निम्न में से कौन सी धातु परस्मैपदी है?
(अ) सेव् (इ) पच्
(उ) वृत् (ऋ) लभ्

172. 'लिखेः' क्रियापद में कौन सा वचन है ? -
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) इनमें से कोई नही

173. 'तिष्ठति' क्रियापद में कौन सी धातु है ?
(अ) तिष्ठ् (इ) तिष्ठ
(उ) स्था (ऋ) इनमें से कोई नहीं

174. 'लेखिष्यसि' क्रियापद में कौन सा पुरुष है ? -
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) अन्यपुरुष (ऋ) उत्तमपुरुष

175. 'भविष्यति' क्रियापद में कौन सा पुरुष है ?
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) तत्पुरुष (ऋ) उत्तमपुरुष

176. 'स्था' धातु का लृट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) तिष्ठसि (इ) स्थायिष्यसि
(उ) स्थास्यसि (ऋ) स्थाष्यसि

177. 'पृच्छति' क्रियापद में कौन सी धातु है ?
(अ) पृच्छ् (इ) पृच्छ
(उ) प्रछ् (ऋ) प्रच्छ्

178. 'स्थास्यति' क्रियापद में कौन सा लकार है ?
(अ) लट् (इ) लृट्
(उ) लङ् (ऋ) लोट्

179. 'पच्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में शुद्ध रूप कौन सा है?
(अ) पचन्ति (इ) पचिष्यन्ति
(उ) पक्ष्यन्ति (ऋ) पचष्यन्ति

180. 'हसिष्यतः' क्रियापद में कौन सा पुरुष है ? -
(अ) प्रथमपुरुष (इ) तत्पुरुष
(उ) उत्तमपुरुष (ऋ) अन्यपुरुष

161. (ऋ), 162. (उ), 163. (इ), 164. (अ), 165. (उ), 166. (अ), 167. (उ), 168. (इ), 169. (उ), 170. (ऋ), 171. (इ), 172. (अ), 173. (उ), 174. (इ), 175. (अ), 176. (उ), 177. (ऋ), 178. (इ), 179. (उ), 180. (अ),

181. 'पास्यति' क्रियापद में कौन सी धातु है? -
(अ) पत् (इ) पच्
(उ) पिब् (ऋ) पा

182. 'अहसन्' क्रियापद में कौन सा वचन है ?
(अ) एकवचन (इ) द्विवचन
(उ) बहुवचन (ऋ) इनमें से कोई नहीं

183. 'स्था' धातु का लट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में शुद्ध रूप होता है -
(अ) स्थास्यति (इ) स्थास्यन्ति
(उ) तिष्ठन्ति (ऋ) तिष्ठति

184. 'लेखिष्यति' क्रियापद में कौन सी धातु है?
(अ) लेख (इ) लेख्
(उ) लख् (ऋ) लिख्

185. 'तिष्ठतु' क्रियापद में कौन सा लकार है?
(अ) लट् (इ) लोट्
(उ) लृट (ऋ) लङ्

186. 'जिघ्रति' क्रियापद में कौनसी धातु है ?-
(अ) घ्रा (इ) जिघ्र
(उ) जिघ्र् (ऋ) घ्राण्

187. 'पा' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में क्या रूप बनता है?
(अ) पिबिष्यन्ति (इ) पास्यन्ति
(उ) पासिष्यन्ति (ऋ) पाष्यन्ति

188. 'घ्रा' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में क्या रूप बनता है? -
(अ) जिघ्रन्ति (इ) जिघ्रिष्यन्ति
(उ) घ्राणन्ति (ऋ) घ्रास्यन्ति

189. 'गच्छति' क्रियापद में कौन सी धातु है?
(अ) गच्छ् (इ) गच्छ
(उ) गछ् (ऋ) गम्

190. 'पतिष्यन्ति' क्रियापद में कौन सा लकार है?
(अ) लृट् (इ) लोट्
(उ) लट् (ऋ) लङ्

191. 'पत्' धातु का लृट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में शुद्ध रूप क्या है ?
(अ) पतिष्यामि (इ) पतसि
(उ) पतिष्यति (ऋ) पतिष्यसि

192. 'पच्' धातु है?
(अ) आत्मनेपदी (इ) परस्मैपदी
(उ) उभयपदी (ऋ) इनमें से कोई नहीं

193. 'भू' धातु का लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में शुद्ध रूप कौन सा है? -
(अ) भवन्तु (इ) भवति
(उ) भवताम् (ऋ) भवन्ति

194. 'सेवै' क्रियापद में कौन सा लकार है? -
(अ) विधिलिङ् (इ) लट्
(उ) लोट् (ऋ) लृट्

195. 'हस्' धातु का विधिलिङ् प्रथमपुरुष बहुवचन में क्या रूप बनता है ? -
(अ) हसेयुः (इ) हसेयम्
(उ) हसेत् (ऋ) हसेः

196. 'घ्रास्यति' क्रियापद में कौन सा लकार है ?
(अ) लृट् (इ) लङ्
(उ) लट् (ऋ) लोट्

197. 'दृश्' धातु के लृट्लकार एकवचन प्रथमपुरुष में होगा-
(अ) पश्यति (इ) द्रक्ष्यति
(उ) दृश्यति (ऋ) पश्यामि

198. निम्न में से कौन सा रूप धातु का नही है?
(अ) भवति (इ) भवतः
(उ) भवन्तः (ऋ) भवताम्

199. 'तौ बालकौ हसतः' में लकार, पुरुष तथा वचन है-
(अ) लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन
(इ) विधिलिङ् प्रथमपुरुष द्विवचन
(उ) लट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन
(ऋ) लृट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन

181. (ऋ), 182. (उ), 183. (उ), 184. (ऋ), 185. (इ), 186. (अ), 187. (इ), 188. (ऋ), 189. (ऋ), 190. (अ), 191. (ऋ), 192. (उ), 193. (अ), 194. (उ), 195. (अ), 196. (अ), 197. (इ), 198. (उ), 199. (उ),

200. 'अवोचत्' में लकार है -
(अ) लङ् (इ) लिट्
(उ) लुङ् (ऋ) लृङ्

201. 'भ्वादिगण' की प्रतिनिधि धातु है-
(अ) चुर् (इ) दिव्
(उ) भू (ऋ) अद्

202. 'अकुरुथाः' का लकार पुरुष वचन है -
(अ) लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन
(इ) लट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन
(उ) लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन
(ऋ) लृट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन

203. 'अपठत्' रूप है -
(अ) लङ्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का
(इ) लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का
(उ) लोट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का
(ऋ) लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का

204. 'एधताम्' रूप है-
(अ) लङ्लकार का (इ) लोट्लकार का
(उ) लिट्लकार का (ऋ) लुङ्लकार का

205. 'हन्' धातु का लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है -
(अ) अहन् (इ) अवधः
(उ) अवधीत् (ऋ) वधः

206. 'भवानि' में लकार है -
(अ) लट् (इ) विधिलिङ्
(उ) लङ् (ऋ) लोट्

207. 'आसीत्' क्रिया का लकार है -
(अ) लुङ् (इ) लङ्
(उ) लिट् (ऋ) लृङ्

208. 'अस्' धातु का लृट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है-
(अ) भविष्यति (इ) असि
(उ) अस्मि (ऋ) सन्ति

209. श्यन्, शः तथा श्नुः प्राप्त होते है-
(अ) दिवादि, तुदादि एवं स्वादि में
(इ) तुदादि, जुहोत्यादि एवं दिवादि में
(उ) अदादि, चुरादि एवं स्वादि में
(ऋ) भ्वादि, दिवादि एवं तुदादि में

210. 'रुधिर्' आवरणे का लट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है-
(अ) रुणद्धि (इ) रून्धे
(उ) दोनों ही (ऋ) दोनों नहीं

211. 'दुह्' धातु के लट्लकार मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप है-
(अ) दुहथ (इ) दुहथः
(उ) दोहथ (ऋ) दुग्ध

212. विधिलिङ्लकार के रूप किस वर्ग में हैं-
(अ) भवतु, पठताम्,
(इ) भवेत्, भवेत
(उ) लभताम् , सेवन्ताम्
(ऋ) वुदते, रूणद्धि

213. 'हन्' धातु के लङ्लकार के प्रथमपुरुष एकवचन में क्या रूप होगा -
(अ) अहन्यात् (इ) अहत्
(उ) अहन् (ऋ) अहनन्

214. नीचे लिखे धातु रूपों में आत्मनेपद के रूप किस वर्ग में हैं-
(अ) लभै, लभावहै, लभामहै
(इ) पास्यामि, पास्यावः, पास्यामः
(उ) ब्रूयात्, ब्रूयाताम्, ब्रूयुः
(ऋ) गच्छेत्, गच्छेताम्, गच्छेयुः

215. 'दा' धातु के मध्यमपुरुष के रूप किस वर्ग में हैं ?-
(अ) ददाति, दत्तः, ददति (इ) दत्ते, ददाते, ददते
(उ) दद्याः, दद्यातम्, दद्यात (ऋ) ददे, ददावहे, ददामहे

216. 'चुर्' धातु का 'चोरयतम्' रूप होगा -
(अ) लट्लकार, मध्यमपुरुष, द्विवचन
(इ) लोट्लकार मध्यमपुरुष, द्विवचन
(उ) विधिलिङ्लकार मध्यमपुरुष, द्विवचन
(ऋ) लङ्लकार मध्यमपुरुष, द्विवचन

200. (उ), 201. (उ), 202. (अ), 203. (ऋ), 204. (इ), 205. (अ), 206. (ऋ), 207. (इ), 208. (अ), 209. (अ), 210. (अ), 211. (ऋ), 212. (इ), 213. (उ), 214. (अ), 215. (उ), 216. (इ),

217. संस्कृत में धातुरूप कहते है -
(अ) संज्ञा पद को (इ) कर्मपद को
(उ) क्रियापद को (ऋ) विशेषण पद को

218. इनमें से कौन सी धातु सकर्मक नहीं है -
(अ) पठ् (इ) हन्
(उ) अक्ष (ऋ) नृत्

219 'भू' धातु णिजन्त का लट्लकार, उत्तमपुरुष एकवचन में रूप होगा -
(अ) भावयामि (इ) भावयमि
(उ) भवयामि (ऋ) भवयमि

220. 'अस्' धातु का लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में रूप होगा -
(अ) स्मः (इ) अस्मः
(उ) असि (ऋ) अस्ति

221. 'अस्' धातु का लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन में रूप होगा-
(अ) असि (इ) एधि
(उ) स्तः (ऋ) स्थः

222. 'हन्ति' रूप कहाँ बनता है ?
(अ) प्रथमपुरुष बहुवचन में (इ) उत्तमपुरुष बहुवचन में
(उ) प्रथमपुरुष एकवचन में (ऋ) मध्यमपुरुष एकवचन में

223. 'ददति' रूप बनता है -
(अ) उत्तमपुरुष बहुवचन में (इ) प्रथमपुरुष एकवचन में
(उ) प्रथमपुरुष बहुवचन में (ऋ) प्रथमपुरुष द्विवचन में

224. 'भी' धातु परस्मैपद लट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है -
(अ) बिभीत (इ) बिभेतु
(उ) बिभेषि (ऋ) बिभेमि

225. 'चिकीर्षुः' किस धातु से बना है ?
(अ) चि (इ) कृष्
(उ) सु (ऋ) कृ

226. 'उवाच' किस लकार का रूप है? -
(अ) लिङ् (इ) लिट्
(उ) लङ् (ऋ) लट्

227. 'विघाताय' में कौन सी धातु है ? -
(अ) या (इ) धा
(उ) हन् (ऋ) तन्

228. 'अपजिहीर्षुः' में कौन सी धातु है?
(अ) हृ (इ) जि
(उ) आप् (ऋ) हृष्

229. 'उह्यते' में कौन सी धातु है? -
(अ) ऊह् (इ) या
(उ) हा (ऋ) वह्

230. 'भी' धातु के लोट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन का रूप होगा-
(अ) भयतु (इ) विभीतु
(उ) बिभेतु (ऋ) बभयतु

231. 'लभ्' धातु आत्मनेपदी का विधिलिङ् मध्यमपुरुष बहुवचन का रूप है -
(अ) लभेत् (इ) लभध्वम्
(उ) लभेध्वम् (ऋ) लभेः

232. 'ब्रू' धातु के लोट्लकार अन्यपुरुष एकवचन का रूप है-
(अ) ब्रवीतु (इ) ब्रूहि
(उ) ब्रवतु (ऋ) वदतु

233. 'जन्' धातु आत्मनेपदी के विधिलिङ्लकार, उत्तमपुरुष, एकवचन का रूप है -
(अ) जायेय (इ) जाये
(उ) जायेयम् (ऋ) जायेत

234. संस्कृत में कितने लकार हैं -
(अ) 17 (इ) 20
(उ) 10 (ऋ) 40

235. लट्लकार किस काल को कहा जाता है?
(अ) भूत (इ) वर्तमान
(उ) भविष्य (ऋ) इनमें से कोई नही

236. सकर्मक, अकर्मक, द्विकर्मक यह विभाजन किसका है-
(अ) धातुओं का (इ) पदों का
(उ) वाक्यों का (ऋ) सभी का

217. (उ), 218. (ऋ), 219. (अ), 220. (अ), 221. (इ), 222. (उ), 223. (उ), 224. (उ), 225. (ऋ), 226. (इ), 227. (उ), 228. (अ), 229. (ऋ), 230. (उ), 231. (उ), 232. (अ), 233. (अ), 234. (उ), 235. (इ), 236. (अ),

237. परस्मैपदी, आत्मनेपदी, उभयपदी- यह विभाजन किसका है-
(अ) सुबन्ध का (इ) तिङ्न्त का
(उ) लकार का (ऋ) धातु का

238. सेट्, अनिट्, वेट् - इसप्रकार का विभाजन कहाँ मिलता है-
(अ) लकारों में (इ) पुरुषों में
(उ) वचन में (ऋ) धातु में

239. भ्वादिगण, अदादिगण, तनादिगण - इसप्रकार 10 गणों में विभाजित हैं -
(अ) धातुयें (इ) सुबन्त
(उ) वाक्य (ऋ) इनमें से कोई भी

240. पाणिनीय धातुपाठ में कुल कितनी धातुयें है -
(अ) लगभग 4000 (इ) लगभग 2000
(उ) लगभग 5000 (ऋ) लगभग 10,000

241. 'गण्' धातु के लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) गणय (इ) गणयाम
(उ) गणयतु (ऋ) गणयत

242. 'अद्' धातु के लोट्लकार प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अदाम (इ) अन्तु
(उ) अदाव (ऋ) अदन्तु

243. 'अद्' धातु के लङ्लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) आदः (इ) आत्तम्
(उ) आत्ताम् (ऋ) आदत्

244. 'अद्' धातु के लृट्लकार उत्तमपुरुष एकवचन का रूप होगा -
(अ) अत्स्यसि (इ) अत्स्यामः
(उ) अत्स्यामि (ऋ) अत्स्यावः

237. (ऋ), 238. (ऋ), 239. (अ), 240. (इ), 241. (अ), 242. (ऋ), 243. (ऋ), 244. (उ)।

9. शब्दरूप-गङ्गा

1. सर्वनाम शब्द 'इदम्' स्त्रीलिङ्ग षष्ठी विभक्ति, बहुवचन का रूप होगा -
(अ) एषाम् (इ) एतेसाम्
(उ) एतासाम् (ऋ) आसाम्

2. 'सखि' शब्द द्वितीया विभक्ति, एकवचन का रूप है -
(अ) सखिम् (इ) सखीन्
(उ) सखी (ऋ) सखायम्

3. 'युष्मद्' सर्वनाम शब्द, पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन का रूप होगा -
(अ) युष्मत् (इ) युष्मभ्यम्
(उ) युष्माभिः (ऋ) युष्मात्

4. 'असौ, अमू, अमी' ये किस प्रातिपदिक के रूप हैं -
(अ) 'इदम्' शब्द पुँल्लिङ्ग (इ) 'अदस्' शब्द पुँल्लिङ्ग
(उ) 'इदम्' शब्द स्त्रीलिङ्ग
(ऋ) 'इदम्' शब्द के नपुंसकलिङ्ग

5. निम्नलिखित वर्गों में केवल पुँल्लिङ्ग शब्द किस वर्ग में हैं?
(अ) सखा, हरि, दारा (इ) महिमा, सविता, अञ्जलिः
(उ) राम, भार्या, सीता (ऋ) मधुरम्, आम्र, फलम्

6. निम्नलिखित में चतुर्थी विभक्ति एकवचन का कौन सा रूप है ?
(अ) भानौ (इ) ज्ञाने
(उ) दध्ने (ऋ) हरे

7. निम्नलिखित वर्गों में चतुर्थी विभक्ति के रूप किस वर्ग में है-
(अ) कः, का (इ) तम्, ताम्
(उ) तस्याम्, तस्याः (ऋ) तस्मै, ताभ्यः

8. 'माता' रूप का मूल शब्द है ?
(अ) आकारान्त है (इ) अकारान्त है
(उ) इकारान्त है (ऋ) ऋकारान्त है

9. निम्नलिखित में से स्त्रीलिङ्ग तृतीयाविभक्ति का रूप कौन सा है ?
(अ) नद्यः (इ) रमया
(उ) धेनोः (ऋ) स्त्रियै

10. 'अप्' (जल) शब्द के रूप कितने वचनों में चलते हैं?
(अ) केवल एकवचन (इ) केवल बहुवचन
(उ) केवल द्विवचन (ऋ) एकवचन और द्विवचन

11. सर्वनाम शब्द 'तद्' पुँल्लिङ्ग , प्रथमा विभक्ति बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तानि (इ) ताः
(उ) ते (ऋ) तैः

12. 'सखि' शब्द का प्रथमा बहुवचन का रूप है -
(अ) सखयः (इ) सख्यः
(उ) सख्याः (ऋ) सखायः

13. 'भूपति' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है -
(अ) भूपत्याः (इ) भूपत्युः
(उ) भूपतेः (ऋ) भूपतयः

14. 'विश्वा' (स्त्री) शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है -
(अ) विश्वायाम् (इ) विश्वस्याम्
(उ) विश्वये (ऋ) विश्वयौ

15. 'तद्' शब्द का पुँल्लिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप है -
(अ) तौ (इ) ते
(उ) तान् (ऋ) तेषाम्

16. 'तद्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग षष्ठी बहुवचन का रूप बनता है-
(अ) तेषाम् (इ) तस्याम्
(उ) तासाम् (ऋ) ताषाम्

17. 'नदी' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है -
(अ) नदीः (इ) नद्यः
(उ) नदीन् (ऋ) नदीभिः

1. (ऋ), 2. (ऋ), 3. (अ), 4. (इ), 5. (अ), 6. (उ), 7. (ऋ), 8. (ऋ), 9. (इ), 10. (इ), 11. (उ), 12. (ऋ), 13. (उ), 14. (इ), 15. (उ), 16. (उ), 17. (अ),

18. 'सर्व' शब्द का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप है-
(अ) सर्वस्मिन् (इ) सर्वासम्
(उ) सर्वायै (ऋ) सर्वस्याम्

19. 'गो' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गोनाम् (इ) गोवाम्
(उ) गवाम् (ऋ) गवानाम्

20. 'युष्मद्' शब्द के षष्ठी एकवचन का रूप होगा -
(अ) तव (इ) युष्मस्य
(उ) युष्मत् (ऋ) त्वत्

21. 'अस्मद्' शब्द चतुर्थी बहुवचन में रूप चलता है -
(अ) अस्मभ्यम् (इ) अस्माभ्यः
(उ) असमभ्यः (ऋ) अस्मेभ्यः

22. 'बालक' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है -
(अ) बालकाः (इ) बालकान्
(उ) बालकेन (ऋ) बालकैः

23. 'षष्ठी विभक्ति' में 'दधि' का सही रूप होगा -
(अ) दध्नोः (इ) दधीनि
(उ) दधनस्य (ऋ) दध्न

24. 'स्वयम्भुवि' किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) तृतीया (इ) चतुर्थी
(उ) षष्ठी (ऋ) सप्तमी

25. 'कवि' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप है -
(अ) कवेः (इ) कवयः
(उ) कवये (ऋ) कवीन्

26. 'फलानाम्' किस विभक्ति का रूप है -
(अ) चतुर्थी (इ) षष्ठी
(उ) पञ्चमी (ऋ) सप्तमी

27. 'सुधियम्' किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) द्वितीया (इ) पञ्चमी
(उ) तृतीया (ऋ) चतुर्थी

28. 'पञ्चमी' विभक्ति में 'भानु' का सही रूप है -
(अ) भानवे (इ) भानोः
(उ) भानू (ऋ) भानुना

29. 'तत्' सर्वनाम का षष्ठी विभक्ति का रूप है -
(अ) तेन (इ) तस्मात्
(उ) तस्य (ऋ) तत्

30. 'त्वत्' किस सर्वनाम का रूप है ?
(अ) युष्मद् (इ) तत्
(उ) अस्मद् (ऋ) इदम्

31. 'मह्यम्' किस सर्वनाम का रूप है ?
(अ) अदस् (इ) युष्मद्
(उ) अस्मद् (ऋ) इदम्

32. तृतीया विभक्ति में 'कवि' शब्द का सही रूप होगा -
(अ) कविना (इ) कवीनाम्
(उ) कवौ (ऋ) कवये

33. 'मधुनी' किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) चतुर्थी (इ) षष्ठी
(उ) पञ्चमी (ऋ) द्वितीया

34. 'नदीः' किस विभक्ति का रूप है -
(अ) तृतीया (इ) प्रथमा
(उ) पञ्चमी (ऋ) द्वितीया

35. 'मालायाम्' किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) पञ्चमी (इ) षष्ठी
(उ) सप्तमी (ऋ) द्वितीया

36. 'पति' का चतुर्थी विभक्ति में रूप होगा -
(अ) पतये (इ) पत्यै
(उ) पत्या (ऋ) पत्ये

37. 'जलमुच्' शब्द का प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है-
(अ) जलमुचि (इ) जलमुक्
(उ) जलमुचे (ऋ) जलमुचौ

38. 'अस्मद्' शब्द का चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप होगा-
(अ) आवाम् (इ) अस्मभ्यम्
(उ) मे/मह्यम् (ऋ) मयि

18. (ऋ), 19. (उ), 20. (अ), 21. (अ), 22. (इ), 23. (अ), 24. (ऋ), 25. (अ), 26. (इ), 27. (अ), 28. (इ), 29. (उ), 30. (अ), 31. (उ), 32. (अ), 33. (ऋ), 34. (ऋ), 35. (उ), 36. (ऋ), 37. (इ), 38. (उ),

39. 'हन्' धातु का रूप लोट्लकार मध्यमपुरुष एकवचन होगा -
(अ) हन्ति (इ) हतवान्
(उ) जहि (ऋ) हतः

40. 'विद्वस्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप होगा -
(अ) विद्वषः (इ) विद्वत्सु
(उ) विद्वांसु (ऋ) विद्यासु

41. 'युवन्' शब्द का षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप होगा -
(अ) युने (इ) युवनि
(उ) युनानि (ऋ) यूनः

42. 'द्याम्' 'द्यो' शब्द की किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) प्रथमा (इ) चतुर्थी
(उ) द्वितीया (ऋ) तृतीया

43. 'गुणिन्' किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) पञ्चमी (इ) तृतीया
(उ) द्वितीया (ऋ) सम्बोधन

44. 'अदस्' (नपुंसकलिङ्ग) शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अमूनि (इ) असौ
(उ) अदः (ऋ) असूनि

45. 'युष्मद्' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप होता है-
(अ) युष्मत्सु (इ) युष्माकम्
(उ) युष्मासु (ऋ) त्वयि

46. 'पति' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है -
(अ) पत्यौ (इ) पत्युः
(उ) पतीन् (ऋ) पत्ये

47. 'बालक' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है -
(अ) बालकेभ्यः (इ) बालकान्
(उ) बालकैः (ऋ) बालकानाम्

48. 'अक्षिषु' किस विभक्ति का रूप है? -
(अ) चतुर्थी (इ) सप्तमी
(उ) षष्ठी (ऋ) तृतीया

49. 'महीभुजे' किस विभक्ति का रूप है ? -
(अ) सप्तमी (इ) षष्ठी
(उ) चतुर्थी (ऋ) प्रथमा

50. 'बालक' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है -
(अ) बालकात् (इ) बालकान्
(उ) बालकाय (ऋ) बालके

51. 'अस्मद्' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है-
(अ) मया (इ) मम
(उ) मयि (ऋ) मत्

52. 'पितृ' शब्द का सप्तमी एकवचन में रूप क्या होगा ?
(अ) पितरि (इ) पित्रौ
(उ) पितुः (ऋ) पित्रे

53. 'राजन्' शब्द का सप्तमी एकवचन में रूप होगा -
(अ) राजि (इ) राजौ
(उ) राज्ञि एवं राजनि (ऋ) राज्ञौ

54. 'युष्मद्' शब्द के चतुर्थी बहुवचन का रूप होगा -
(अ) युष्मेभ्यः (इ) वः/युष्मभ्यम्
(उ) तुभ्यः (ऋ) युष्मेभ्यम्

55. 'अस्मद्' के स्त्रीलिङ्ग में क्या रूप बनता है ?
(अ) अहम् (इ) मया
(उ) अहमा
(ऋ) कोई लिङ्ग नहीं होता; तीनों लिङ्गों में समान रूप होगा।

56. 'श्री' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) श्री (इ) श्रियः
(उ) श्रीन् (ऋ) श्रियम्

57. 'मति' शब्द का चतुर्थी एकवचन है -
(अ) मतौ (इ) मतायै
(उ) मत्यै तथा मतये दोनों
(ऋ) मत्यै तथा मतये ये दोनों नहीं

58. 'पितुः' 'पितृ' शब्द का कौन सा रूप है ? -
(अ) सप्तमी एकवचन (इ) षष्ठी एकवचन
(उ) द्वितीया बहुवचन (ऋ) प्रथमा बहुवचन

39. (उ), 40. (इ), 41. (ऋ), 42. (उ), 43. (ऋ), 44. (अ), 45. (उ), 46. (अ), 47. (ऋ), 48. (इ), 49. (उ), 50. (उ), 51. (उ), 52. (अ), 53. (उ), 54. (इ), 55. (ऋ), 56. (इ), 57. (उ), 58. (इ),

59. 'सरित्' शब्द का सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है-
(अ) सरितोः (इ) सरिति
(उ) सरिताम् (ऋ) सरिते

60. 'मातृ' शब्द के सप्तमी विभक्ति एकवचन में रूप होगा -
(अ) मातरि (इ) मातुः
(उ) मातरम् (ऋ) मातोः

61. 'हनुमते नमः' हनुमते किस विभक्ति का रूप है ?
(अ) चतुर्थी (इ) सप्तमी
(उ) द्वितीया (ऋ) पञ्चमी

62. 'फल' के द्वितीया विभक्ति का तीनों वचनों के रूप हैं -
(अ) फलम्, फले, फलानि
(इ) फलेन, फलाभ्याम्, फलैः
(उ) फलाय, फलाभ्याम्, फलैः
(ऋ) इनमें से कोई नहीं

63. 'अस्माकम्' का मूल प्रातिपदिक है -
(अ) राम (इ) युष्मद्
(उ) अदस् (ऋ) अस्मद्

64. 'साधु' शब्द का सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप होगा-
(अ) साधुषु (इ) साधुभ्याम्
(उ) साधूनाम् (ऋ) साधौ

65. 'एतत् एने एनानि' किस शब्द के वैकल्पिक रूप हैं -
(अ) इदम् (इ) यत्
(उ) एतत् (ऋ) अदस्

66. किस शब्द का रूप द्विवचन में नही चलता है -
(अ) उभ (इ) अधर
(उ) पूर्व (ऋ) उभय

67. 'भवत्' के साथ किस पुरुष की क्रिया प्रयुक्त होती है -
(अ) प्रथमपुरुष (इ) मध्यमपुरुष
(उ) उत्तमपुरुष (ऋ) प्रथम तथा मध्यम

68. अत्यधिक समीपस्थ वस्तु के लिए प्रयुक्त होता है -
(अ) इदम् (इ) अदस्
(उ) एतद् (ऋ) तद्

69. 'चन्द्रमस्' शब्द का प्रथमा द्विवचन में रूप होगा -
(अ) चन्द्रमाः (इ) चन्द्रमसौ
(उ) चन्द्रमसम् (ऋ) चन्द्रमस्सु

70. 'विद्वस्' शब्द का तृतीया एकवचन में रूप होगा -
(अ) विदुषि (इ) विदुषा
(उ) विद्वांसौ (ऋ) विद्वान्

71. 'राजन्' शब्द का द्वितीया बहुवचन में रूप बनेगा -
(अ) राज्ञः (इ) राजानः
(उ) राजा (ऋ) राज्ञाम्

72. 'वारि' शब्द का षष्ठी द्विवचन में रूप है ?
(अ) वारिणोः (इ) वारिषु
(उ) वारि (ऋ) वारिणी

73. 'भानु' शब्द का प्रथमा बहुवचन में रूप होगा -
(अ) भानवः (इ) भानुषु
(उ) भानू (ऋ) भान्वोः

74. 'पति' शब्द का षष्ठी द्विवचन में रूप होगा ?
(अ) पतयः (इ) पत्या
(उ) पत्योः (ऋ) पतीन्

75. 'धेनु' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप इनमें से कौन है?
(अ) धेनुम् (इ) धेनुभ्यः
(उ) धेन्वाः (ऋ) धेनु

76. 'राजन्' शब्द का तृतीया एकवचन का रूप इनमें से कौन है -
(अ) राज्ञा (इ) राज्ञाम्
(उ) राजानः (ऋ) राजभिः

77. 'नदी' शब्द का प्रथमा बहुवचन में रूप निम्न में से कौन है?
(अ) नद्यः (इ) नद्याः
(उ) नद्या (ऋ) नदीः

78. 'भवत्' शब्द का षष्ठी बहुवचन में रूप होगा -
(अ) भवन्तौ (इ) भवन्तः
(उ) भवताम् (ऋ) भवतः

59. (इ), 60. (अ), 61. (अ), 62. (अ), 63. (ऋ), 64. (ऋ), 65. (उ), 66. (ऋ), 67. (अ), 68. (उ), 69. (इ), 70. (इ), 71. (अ), 72. (अ), 73. (अ), 74. (उ), 75. (उ), 76. (अ), 77. (अ), 78. (उ),

79. 'भानु' शब्द का षष्ठी बहुवचन में रूप होगा -
(अ) भानुभिः (इ) भानूनाम्
(उ) भानून् (ऋ) भानोः

80. 'रमा' शब्द का तृतीया बहुवचन में रूप होगा -
(अ) रमाणाम् (इ) रमासु
(उ) रमाभिः (ऋ) रमाः

81. 'मति' शब्द का तृतीया एकवचन में रूप होगा -
(अ) मत्याः (इ) मतया
(उ) मतिना (ऋ) मत्या

82. 'आत्मन्' शब्द का प्रथमा द्विवचन में रूप होगा -
(अ) आत्मभिः (इ) आत्मानो
(उ) आत्मनौ (ऋ) आत्मानौ

83. 'भवत्' शब्द का तृतीया एकवचन में रूप होगा -
(अ) भवतोः (इ) भवन्तः
(उ) भवतः (ऋ) भवता

84. 'कवि' शब्द का तृतीया द्विवचन में रूप होगा -
(अ) कवयः (इ) कविभ्याम्
(उ) कवीभ्याम् (ऋ) कवभ्याम्

85. 'युष्मद्' शब्द का चतुर्थी द्विवचन में रूप होगा -
(अ) यूयम् (इ) युवोभ्याम्
(उ) युवाभ्याम् (ऋ) यूभ्याम्

86. 'एतद्' का चतुर्थी एकवचन में रूप होगा -
(अ) एतेभ्यः (इ) एतायै
(उ) एताय (ऋ) एतस्मै

87. 'पितृ' शब्द का प्रथमा द्विवचन का रूप होगा -
(अ) पितौ (इ) पितरौ
(उ) पितरम् (ऋ) पितरः

88. 'युष्मद्' शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप होगा -
(अ) युष्माषु (इ) त्वम्
(उ) असौ (ऋ) अहम्

89. 'अस्मद्' शब्द का प्रथमा एकवचन में रूप होगा -
(अ) असौ (इ) आवाम्
(उ) अहम् (ऋ) अयम्

90. 'एतद्' शब्द का पुँलिङ्ग में द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) एषः (इ) एतान्
(उ) एतत् (ऋ) एते

91. 'युष्मद्' का प्रथमा द्विवचन में रूप होगा -
(अ) त्वाम् (इ) युष्मान्
(उ) युवाम् (ऋ) यूयम्

92. 'एतद्' नपुंसकलिङ्ग में तृतीया एकवचन का रूप होगा -
(अ) एतानि (इ) एतैः
(उ) एतत् (ऋ) एतेन

93. 'पति' शब्द का सम्बोधन का रूप होगा -
(अ) हे पते ! (इ) हे पितः !
(उ) हे पत्यौ ! (ऋ) हे पतिः!

94. 'वारि' शब्द का तृतीया बहुवचन में रूप होगा -
(अ) वारिभिः (इ) वारिषु
(उ) वारिभ्याम् (ऋ) वारीणि

95. 'राजन्' शब्द का षष्ठी द्विवचन में रूप होगा -
(अ) राजानः (इ) राज्ञोः
(उ) राजभ्याम् (ऋ) राज्ञे

96. 'आत्मन्' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप होगा -
(अ) आत्मानाम् (इ) आत्मने
(उ) आत्मनौ (ऋ) आत्मानाय

97. 'सर्व' शब्द का प्रथमा द्विवचन का रूप होगा -
(अ) सर्वयोः (इ) सर्वान्
(उ) सर्वौ (ऋ) सर्वैः

98. 'सर्व' शब्द का (स्त्री.) प्रथमा बहुवचन का रूप होगा-
(अ) सर्वासु (इ) सर्वाः
(उ) सर्वे (ऋ) सर्वाणि

99. 'सर्व' शब्द (नपु.) का तृतीया एकवचन का रूप है -
(अ) सर्वया (इ) सर्वाम्
(उ) सर्वा (ऋ) सर्वेण

100. 'तत्' शब्द (स्त्री.) का पञ्चमी विभक्ति एकवचन का रूप होगा-
(अ) तस्यै (इ) तेभ्यः
(उ) तस्याः (ऋ) तस्मात्

101. 'तत्' शब्द (पुँ.) द्वितीया एकवचन का रूप होगा -
(अ) तस्मात (इ) तेन
(उ) तत् (ऋ) तम्

79. (इ), 80. (उ), 81. (ऋ), 82. (ऋ), 83. (ऋ), 84. (इ), 85. (उ), 86. (ऋ), 87. (इ), 88. (इ), 89. (उ), 90. (इ), 91. (उ), 92. (ऋ), 93. (अ), 94. (अ), 95. (इ), 96. (इ), 97. (उ), 98. (इ), 99. (ऋ), 100. (उ), 101. (ऋ),

102. 'तत्' शब्द (नपुं.) का चतुर्थी बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तस्याः (इ) तेभ्यः
(उ) ताम् (ऋ) तयोः

103. 'किम' (पुँ.) शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप होगा -
(अ) केन (इ) काम्
(उ) कस्याः (ऋ) कस्मात्

104. 'किम् (स्त्री.) का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) केभ्यः (इ) कस्मै
(उ) काः (ऋ) कान्

105. 'किम्' (नपुं.) शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा-
(अ) काभ्याम् (इ) कानि
(उ) कयोः (ऋ) काः

106. 'रवि' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है -
(अ) रवेः (इ) रवे
(उ) रवये (ऋ) रवै

107. 'नृ' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है -
(अ) नारूणाम् (इ) नृणाम्
(उ) नाराणाम् (ऋ) नराणाम्

108. 'अक्षि' शब्द के इकारान्त नपुंसकलिङ्ग के तृतीया एकवचन होगा -
(अ) अक्ष्णा (इ) अक्षणा
(उ) अक्षिणा (ऋ) अक्षेन

109. 'दधि' शब्द का सप्तमी विभक्ति का रूप होगा -
(अ) दध्नि-दध्न्योः-दधीसु (इ) दध्नि-दध्न्योः-दधिसु
(उ) दध्नि, दधनि-दध्नोः-दधिषु
(ऋ) दध्नि-दध्योः-दधीषु

110. 'एनाम् - एने - एनाः' यह किस सर्वनाम का वैकल्पिक रूप है-
(अ) इदम् शब्द पुँल्लिङ्ग (इ) इदम् शब्द स्त्रीलिङ्ग
(उ) एतत् शब्द स्त्री. (ऋ) अयम् शब्द

111. 'अदस्' शब्द के (स्त्री.) चतुर्थी एकवचन का रूप होगा-
(अ) अमायै (इ) अमुने
(उ) अमुष्यै (ऋ) अमुष्मै

112. 'अदस्' शब्द का नपुंसकलिङ्ग में रूप होगा-
(अ) अदः - अमू -अमूनि (इ) असौ - अमू - अमूनि
(उ) असौ - अमू - अमी (ऋ) असौ - अमू- अमूः

113. 'अस्मद्' शब्द में 'नः' कितने बार आया है-
(अ) चतुर्वारम् (इ) त्रिवारम्
(उ) द्विवारम् (ऋ) इनमें से कोई नहीं

114. 'विद्वस्' शब्द का 'विदुषः' रूप कितनी विभक्तियों में आया है?
(अ) द्वितीया - पञ्चमी - षष्ठी
(इ) प्रथमा - तृतीया - पञ्चमी
(उ) द्वितीया - तृतीया -चतुर्थी
(ऋ) द्वितीया - पञ्चमी - सप्तमी

115. 'भवत्' शब्द का पुँल्लिङ्ग में 'भवतः' रूप कितनी बार और कहाँ आया है -
(अ) त्रिवारम् -द्वि. बहु., च. प. एकवचन
(इ) त्रिवारम् - द्वि. बहु., प. ष. एकवचन
(उ) द्विवारम् - द्वि. बहु., ष. एकवचन
(ऋ) चतुर्वारम् - प्र. द्वि. बहु., च. ष. एकवचन

116. 'केषाम् , कासाम् , केषाम्' यह रूप नहीं है -
(अ) 'यत्' शब्द का (इ) किं शब्द (नपु.)
(उ) किं शब्द पु. (ऋ) किं शब्द त्रिलिङ्गेषु

117. इकारान्त 'मति' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) मतयः (इ) मत्यः
(उ) मतीः (ऋ) मतीन्

118. 'वधू' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप होगा-
(अ) वध्वायै (इ) वध्वै
(उ) वध्वे (ऋ) वध्वौ

102. (इ), 103. (ऋ), 104. (उ), 105. (इ), 106. (उ), 107. (इ), 108. (अ), 109. (उ), 110. (उ), 111. (उ), 112. (अ), 113. (इ), 114. (अ), 115. (इ), 116. (अ), 117. (उ), 118. (इ),

119. 'आत्मन्' शब्द का लिङ्ग क्या है ?
(अ) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग
(इ) नकारान्त पुँल्लिङ्ग
(उ) नकारान्त नपुंसकलिङ्ग
(ऋ) नकारान्त स्त्रीलिङ्ग

120. 'चन्द्रमस्' शब्द किस लिङ्ग में है ?
(अ) सकारान्तपुँल्लिङ्गे (इ) अकारान्तनपुंसके
(उ) सकारान्तस्त्रीलिङ्गे (ऋ) सकारान्तनपुंसके

121. 'चन्द्रमस्' शब्द का तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी द्विवचन का रूप है -
(अ) चन्द्रमोभ्याम्, चन्द्रमोभ्याम्, चन्द्रमोभ्याम्
(इ) चन्द्राभ्याम्, चन्द्राभ्याम्, चन्द्राभ्याम्
(उ) चनद्रमाभ्याम्, चन्द्रमाभ्याम्, चन्द्रमाभ्याम्
(ऋ) चन्द्रमाभ्याम्, चन्द्रोभ्याम्, चन्द्रभ्याम्

122. क्या 'नाम' शब्द नपुंसकलिङ्ग में है -
(अ) स्त्रीलिङ्गे अस्ति (इ) पुँल्लिङ्गे अस्ति
(उ) नास्ति (ऋ) सत्यम्

123. 'कति' शब्द किस लिङ्ग में है -
(अ) नित्यमेकवचनान्तः (इ) नित्यं बहुवचनान्तः
(उ) नित्यं द्विवचनान्तः (ऋ) त्रिवचनान्तः

124. 'मातृ' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप होगा-
(अ) मातॄः (इ) मातरः
(उ) मातृन् (ऋ) मातॄन्

125. 'रवि' शब्द का सप्तमी द्विवचन होगा-
(अ) रव्योः (इ) रविभ्याम्
(उ) रवियोः (ऋ) रवो

126. 'शिशु' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा -
(अ) शिशवे (इ) शिशौ
(उ) शिशे (ऋ) शिशो

127. 'नभस्' शब्द के द्वितीया द्विवचन का रूप होगा -
(अ) नभसी (इ) नभः
(उ) नभौ (ऋ) नभे

128. 'अदस्' शब्द के (स्त्री.) तृतीया विभक्ति बहुवचन का रूप होगा -
(अ) अमुष्यै (इ) अमाभिः
(उ) अमीभिः (ऋ) अमूभिः

129. 'इदम्' शब्द के (स्त्री.) चतुर्थी बहुवचन का रूप होगा-
(अ) अस्यै (इ) अस्मात्
(उ) अमीभ्यः (ऋ) आभ्यः

130. 'पथिन्' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) पन्थाः (इ) पन्थान्
(उ) पथीन् (ऋ) पथः

131. 'आत्मन्' शब्द का द्वितीया द्विवचन का रूप होगा -
(अ) आत्मनम् (इ) आत्मानौ
(उ) आत्मनौ (ऋ) आत्मने

132. 'चन्द्रमस्' शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप होगा -
(अ) चन्द्राः (इ) चन्द्रमाः
(उ) चन्द्रमसः (ऋ) चन्द्रः

133. 'जन्म' शब्द का प्रथमा बहुवचन का रूप होगा -
(अ) जन्मानि (इ) जन्म
(उ) जन्माः (ऋ) जन्मः

134. 'कर्मन्' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप होगा -
(अ) कर्माणः (इ) कर्मस्याः
(उ) कर्मात् (ऋ) कर्मणः

135. 'भवत्' शब्द का पुंसि द्वितीया विभक्ति का बहुवचन रूप होगा -
(अ) भवन्तान् (इ) भवता
(उ) भवतः (ऋ) भवता

136. 'नारी' शब्द का सम्बोधन प्रथमा एकवचन का रूप होगा -
(अ) हे नार्यः! (इ) हे नारीन्!
(उ) हे नारी! (ऋ) हे नारि!

137. 'गौरी' शब्द के द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) गौरीम् (इ) गौरीः
(उ) गौरीन् (ऋ) गौरी

138. 'कर्तृ' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होगा -
(अ) कर्त्रा (इ) कर्त्रौ
(उ) कर्त्रे (ऋ) कर्तरि

119. (इ), 120. (अ), 121. (अ), 122. (ऋ), 123. (इ), 124. (अ), 125. (अ), 126. (इ), 127. (अ), 128. (ऋ), 129. (ऋ), 130. (ऋ), 131. (इ), 132. (इ), 133. (अ), 134. (ऋ), 135. (उ), 136. (ऋ), 137. (इ), 138. (ऋ),

139. 'तपस्' शब्द का तृतीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) तपसाभ्याम् (इ) तपोभ्यः
(उ) तपसा (ऋ) तपोभिः

140. 'दधि' शब्द का प्रथमा द्विवचन का रूप होगा -
(अ) दध्ना (इ) दधीनि
(उ) दधिनि (ऋ) दधिनी

141. 'करिन्' शब्द का षष्ठी द्विवचन का रूप होगा -
(अ) करिणौ (इ) करिणोः
(उ) करिभ्याम् (ऋ) करिणौः

142. 'राजन्' शब्द का 'राज्ञः' रूप कितनी विभक्तियों में आता है? -
(अ) द्वितीया, षष्ठी, सप्तमी
(इ) द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी
(उ) द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी
(ऋ) द्वितीया, पञ्चमी, षष्ठी

143. 'इदम्' शब्द का (स्त्री.) पञ्चमी एकवचन का रूप होगा-
(अ) अस्यै (इ) अस्मात्
(उ) अस्याम् (ऋ) अस्याः

144. 'मर्माणि' इस शब्दरूप का 'मूल शब्द' क्या है?
(अ) मर्म (इ) मर्मत्
(उ) मर्मन् (ऋ) मर्मा

145. 'जन्मन्' शब्द के प्रथमा, द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) जन्मनि, जन्मानि (इ) जन्मानि, जन्मानि
(उ) जन्मानि, जन्मनः (ऋ) जन्म, जन्मानि

146. 'महत्' शब्द का सम्बोधन एकवचन का रूप होगा -
(अ) महान्तः (इ) महत्!
(उ) महन्! (ऋ) महान्!

147. 'भानु' शब्द का तृतीया एकवचन का रूप होगा -
(अ) भानेन (इ) भानुना
(उ) भान्वा (ऋ) भानुभिः

148. 'शम्भु' शब्द का सम्बोधन द्विवचन का रूप होगा -
(अ) हे शम्भौ (इ) हे शम्भू
(उ) हे शम्भ्वौ (ऋ) हे शम्भो

149. 'सन्धि' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) सन्ध्यः (इ) सन्धीन्
(उ) सन्धीः (ऋ) सन्धयः

150. 'अग्नि' शब्द का सप्तमी द्विवचन का रूप होगा -
(अ) अग्निभ्याम् (इ) अग्नेः
(उ) अग्नियोः (ऋ) अग्न्योः

151. 'भूपति' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप होगा -
(अ) भूपतयः (इ) भूपतेः
(उ) भूपत्युः (ऋ) भूपत्या

152. 'नदी' शब्द का तृतीया बहुवचन का रूप होगा -
(अ) नदीन् (इ) नदीभिः
(उ) नद्यः (ऋ) नदीः

153. 'मातुः' किस विभक्ति का रूप है-
(अ) पञ्चमी विभक्ति (इ) चतुर्थी विभक्ति
(उ) प्रथमा विभक्ति (ऋ) द्वितीया विभक्ति

154. 'पति' शब्द का तृतीया एकवचन का रूप होगा -
(अ) पत्या (इ) पतौ
(उ) पताम् (ऋ) पतिना

155. 'धातृ' शब्द का षष्ठी द्विवचन का रूप है -
(अ) धात्रा (इ) धात्रोः
(उ) धात्रयोः (ऋ) धातरोः

156. 'मति' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा -
(अ) मत्याम् (इ) मतीणाम्
(उ) मतीनाम् (ऋ) मतिनाम्

157. 'श्री' शब्द का प्रथमा एकवचन का रूप है -
(अ) श्री (इ) श्रीः
(उ) श्रियः (ऋ) श्रिः

158. 'युष्मद्' शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप होगा -
(अ) युष्मस्य (इ) तव
(उ) त्वत् (ऋ) युष्मत्

159. 'भवत्' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप होगा-
(अ) भवान् (इ) भवन्तः
(उ) भवतान् (ऋ) भवतः

160. 'भगवत्' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होगा -
(अ) भगवानानाम् (इ) भगवतानाम्
(उ) भगवताम् (ऋ) भगवानाम्

139. (ऋ), 140. (ऋ), 141. (इ), 142. (ऋ), 143. (ऋ), 144. (उ), 145. (इ), 146. (उ), 147. (इ), 148. (इ), 149. (इ), 150. (ऋ), 151. (इ), 152. (इ), 153. (अ), 154. (अ), 155. (इ), 156. (उ), 157. (इ), 158. (उ), 159. (ऋ), 160. (उ)।

10. अशुद्धिपरिमार्जन-गङ्गा

निर्देश - कृपया प्रश्न क्र. 01 से 102 तक शुद्धवाक्य का चयन करें -

1. शुद्धवाक्य का चयन करें -
(अ) त्वं मे मित्रोऽस्ति (इ) त्वं मे मित्रमस्ति
(उ) त्वं मे मित्रमसि (ऋ) त्वं मे मित्रोऽसि

2. शुद्धवाक्य का चयन करें-
(अ) वृद्धः प्राणान् अत्यजत् (इ) वृद्धाः प्राणं अत्यजन्
(उ) वृद्धं प्राणं अत्यजन् (ऋ) वृद्धः प्राणान् अत्यजन्

3. शुद्धवाक्यस्य चयनं करोतु -
(अ) मातरः बालिकान् पोषयन्ति
(इ) मात्रः बालिकाः पोषयन्ति
(उ) मातरः बालिकाः पोषयन्ति
(ऋ) मातरः बालिकाः पोषयति

4. किं शुद्धम्?
(अ) बालकेन चन्द्रमाः पश्यते
(इ) बालकः चन्द्रमाः दृश्यते
(उ) बालकेन चन्द्रमसं दृश्यते
(ऋ) बालकेन चन्द्रमाः दृश्यते

5. शुद्धतमं वाक्यं किम् ?
(अ) जानकी तस्य दारा (इ) जानकी तस्य दाराः
(उ) जानकी तेषां दारा (ऋ) जानकी तेषां दारः

6. शुद्ध वाक्य का चयनं करोतु ?
(अ) खाद्यं देहि बुभुक्षुम् (इ) खाद्य ददातु बुभुक्षुम्
(उ) खाद्यं देहि बुभुक्षवे (ऋ) खाद्यं देहि बुभुक्षिणे

7. किमस्ति शुद्धम् ?
(अ) आपृच्छस्व प्रियसखममुम्
(इ) आपृच्छस्व प्रियसखाममुम्
(उ) आपृच्छस्व प्रियसखामिमम्
(ऋ) आपृच्छस्व प्रियसखमिदम्

8. एकं शुद्धं वाक्यं चिनोतु ?
(अ) शशिनः सह याति कौमुदी
(इ) शशिनि सह याति कौमुदी
(उ) शशिना सह याति कौमुदी
(ऋ) शशेः सह याति कौमुदी

9. सही वाक्य का चयन करें -
(अ) दैवायत्तं कुले जन्म (इ) दैवायत्तं कुले जन्मम्
(उ) दैवायतः कुले जन्मः (ऋ) दैवायत्तः कुले जन्मः

10. कौन सा वाक्य सही है -
(अ) पश्य देवस्य महिमानम् (इ) पश्य देवस्य महिमाम्
(उ) पश्य देवस्य महिम्नम् (ऋ) पश्य देवस्य महिमम्

11. सोचो तो जानें, कौन सही है -
(अ) पश्य लीलां महात्मस्य (इ) पश्य लीलां महात्मनः
(उ) पश्य लीलां महात्मायाः (ऋ) पश्य लीलां महात्मोनम्

12. क्या आप सही वाक्य पहचानते हैं -
(अ) बालकोऽसौ श्रिया हीनः
(इ) बालकोऽसो श्रीया हीनः
(उ) बालकोऽसो श्रीणा हीनः
(ऋ) बालकोऽसो श्रीसा हीः

13. बताओ तो सही -
(अ) प्रसादय मनानि नः (इ) प्रसादय मनास्तु नः
(उ) प्रसादय मनांसि नः (ऋ) प्रसादय मनं तु नः

14. ''सीतापति को नमस्कार'' तो करो, पर वाक्य शुद्ध हो -
(अ) सीतापतये नमः (इ) सीतापत्यै नमः
(उ) सीतापत्ये नमः (ऋ) सीतापतिने नमः

15. सौ रुपये चाहिए, तो शुद्धवाक्य बताओ -
(अ) शतं रुप्यकम् (इ) शतं रुप्यकाणि
(उ) शतानि रुप्यकम् (ऋ) शताः रुप्यकानि

1. (उ), 2. (अ), 3. (उ), 4. (ऋ), 5. (इ), 6.(ऋ), 7. (अ), 8. (उ), 9. (अ) 10. (अ), 11. (इ), 12. (अ), 13. (उ), 14. (अ), 15. (इ),

16. 'आपका क्या नाम है' इसी वाक्य को शुद्ध संस्कृत में क्या कहोगे जी -
(अ) किम् अभिधानं भवानस्य?
(इ) किमं अभिधानं भवास्य?
(उ) किम् अभिधानं भवतस्य?
(ऋ) किम् अभिधानं भवतः?

17. 'इस पुस्तक को पढो'- लेकिन सही वाक्य तो बोलो -
(अ) इयं पुस्तकं पठतु (इ) इदं पुस्तकं पठतु
(उ) अयं पुस्तकं पठतु (ऋ) इयं पुस्तक पठतु

18. ''तुम्हारे द्वारा लिखा जाता है'' परन्तु सही लिखा जाय-
(अ) त्वया लिख्यसे (इ) त्वया लिख्यते
(उ) त्वं लिख्यते (ऋ) त्वां लिख्यते

19. शुद्ध वाक्य का चयन करें -
(अ) ब्रह्मणः प्रजा प्रजायते (इ) ब्रह्मणा प्रजा प्रजायन्ते
(उ) ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते (ऋ) ब्रह्मण प्रजाः प्रजायन्ते

20. 'श्रीशुकदेव बोले'- इसका सही वाक्य होगा-
(अ) श्रीशुक उवाच। (इ) श्री शुकोवाच।
(उ) श्रीशुकयोवाच। (ऋ) श्रीशुकयुवाच।

21. 'ये घोड़े दौड़ते हैं' - जरा आप भी अपना दिमागी घोडे दौड़ायें और सही वाक्य ढूँढें-
(अ) अम्यश्वाः धावन्ति (इ) अम्यः अश्वाः धावन्ति
(उ) अमी अश्वाः धावन्ति (ऋ) अम् अश्वाः धावन्ति

22. 'राम! आयेंगें'- पर वाक्य तो सही खोजो -
(अ) राम! आयाहि (इ) रामयाहि
(उ) रामाः आयाहि (ऋ) रामो आयहि

23. सही वाक्य बोलो, तो जानें-
(अ) दशरथः रामम् अविसृजत्
(इ) दशरथः रामम् अविसर्जत्
(उ) दशरथः रामं व्यसृजत्
(ऋ) दशरथः राम व्यसर्जयत्

24. 'वाह! क्या बात है '- '' बालक संस्कृत बोलता है'' आप भी बोलो-
(अ) सो बालः संस्कृतं वदति
(इ) सः बालः संस्कृतेन वदति
(उ) सो बालो सर्वदा वदति
(ऋ) सर्बालः संस्कृतं वदति

25. अरे मित्र! वाक्य तो सही करो-
(अ) हे विभा! इहागच्छ (इ) हे विभेहागच्छ
(उ) हे विभे! इह आगच्छ (ऋ) हे विभयेहागच्छ

26. तीन गलत है, एक सही है, ढूढ़ो तो जानें -
(अ) वधूः पितृवालयं गच्छति
(इ) वधूः पित्रालयं गच्छति
(उ) वधूः पितरालयं गच्छति
(ऋ) वधूः पित्र्यालयं गच्छति

27. सही वाक्य को खोजा क्या -
(अ) सर्वाणां प्रियो माधवः (इ) सर्वणां प्रियो माधवः
(उ) सर्वेषां प्रियो माधवः (ऋ) सर्वेसां प्रियो माधवः

28. 'तीन लड़कियों का परिचय बोलो'- पर वाक्य सही हो -
(अ) त्रयाणां बालिकानां परिचयं वद
(इ) तिसृणां बालिकानां परिचयं वद
(उ) तिसृणां बालिकानां परिचयं वद
(ऋ) त्रीणां बालिकानां परिचयं वद

29. चलो, सुन्दर अबला समूह को ही खोजो; पर दृष्टि गलत न हो-
(अ) सुन्दरः अबलासमूहः याति
(इ) सुन्दरी अबलासमूहः याति
(उ) सुन्दरः अबलासमूहा याति
(ऋ) सुन्दरी अबलासमूहा याति

30. 'कर्म का महान् फल होता है'- पर जब काम सही हो तो -
(अ) कर्मस्य इदं महान् फलम्
(इ) कर्मणः इदं महत् फलम्
(उ) कर्मणः अयं महत् फलः
(ऋ) कर्मणः अयं महान् फलः

31. 'वह महान् विपत्ति में है' क्योंकि संस्कृत नही पढाता-
(अ) सः महति विपदि वर्तते
(इ) सः महति विपदे वर्तते
(उ) सः महत्यां विपदे वर्तते
(ऋ) सः महत्यां विपदि वर्तते

32. सच बताओ; - क्या ये सही है -
(अ) मां जननी वृद्धा (इ) मम जननी वृद्धा
(उ) मे जननी वृद्धाः (ऋ) मया जननी वृद्धः

16. (ऋ), 17. (इ), 18. (इ), 19. (उ), 20. (अ), 21. (उ), 22. (अ), 23. (उ), 24. (इ), 25. (उ), 26. (इ), 27. (उ), 28. (उ), 29. (अ), 30. (इ), 31. (ऋ), 32. (इ),

33. ''बालक झूठ बोलता है'' पर क्या आप सही बोलोगे -
(अ) बालः मिथ्या वदति (इ) बालः मिथ्याया वदति
(उ) बालः मिथ्यां वदति (ऋ) बालः मित्यायां वदति

34. क्या सच में 'तुम धन देते हो' - तो सही बोलो न -
(अ) त्वया धनं दीयसे (इ) त्वया धनं दीयते
(उ) त्वया धनं दीये (ऋ) त्वया धनं दायसे

35. 'मैं तो पुस्तक पढ़ता हूँ' - सच बोलो तुम क्या करती हो -
(अ) अहं पुस्तकं पठनं करोमि
(इ) अहं पुस्तकः पठनं करोमि
(उ) अहं पुस्तकस्य पठनं करोमि
(ऋ) अहं पुस्तकस्य पठनस्य करोमि

36. अपनी नाराज पत्नी को भोजन करने को संस्कृत में बोलो - क्या कहोगे -
(अ) भोजनं खादतु (इ) भोजनं खादनं करोतु
(उ) भोजनं खाद्यतु (ऋ) भोजनं करोतु

37. शुद्धं वाक्यं चयनीयम्-
(अ) सिंहेन बालः बिभ्यति (इ) सिंहात् बालः बिभ्यति
(उ) सिंहाय बालः बिभ्यति (ऋ) सिंहात् बालः बिभेति

38. 'यह आत्मा शाश्वत है'- क्या सत्य है -
(अ) इयम् आत्मा शाश्वती अस्ति
(इ) इयम् आत्माः शाश्वतम् अस्ति।
(उ) अयम् आत्मन् शाश्वतः अस्ति
(ऋ) अयम् आत्मा शाश्वतोऽस्ति

39. क्या सचमुच कृष्ण का वस्त्र पीला है -
(अ) कृष्णस्य अम्बरं पीतम् अस्ति
(इ) कृष्णस्य अम्बरः पीतः अस्ति
(उ) कृष्णस्य अम्बरः पीता अस्ति
(ऋ) कृष्णस्य अम्बरः पीतोमोऽस्ति

40. ''चार पुस्तके वहाँ हैं''- जरा देखो तो सही -
(अ) चत्वारः पुस्तकानि तत्र सन्ति
(इ) चत्वारि पुस्तकानि तत्र सन्ति
(उ) चतस्रः पुस्तकानि तत्र सन्ति
(ऋ) चत्वारि पुस्तकं तत्र अस्ति

41. ''बच्चा अम्मा को याद करता है''- क्या सत्य है-
(अ) मातरं स्मरति शिशुः (इ) शिशुः मातुः स्मरति
(उ) मात्रे स्मरति शिशुः (ऋ) मातः शिशुः स्मरति।

42. ''काम से ही क्रोध पैदा होता है''- बोलो तो सही-
(अ) कामं क्रोधः जायते (इ) कामात् क्रोधः जायते
(उ) कामाय क्रोधः जायते (ऋ) कामस्य जायते क्रोधः

43. क्या सही है कि - ''शिष्य गुरु का अनुसरण करता है''-
(अ) शिष्यः गुरुम् अनुगच्छति
(इ) शिष्येण गुरौ अनुगच्छति
(उ) शिष्येण गुरुः अनुगच्छति
(ऋ) शिष्यः गुरोः अनुगच्छति

44. ''वह कलम से लिखती है''- जरा सही वाक्य ढूढ़ों -
(अ) सा लेखनिना लिखति (इ) सा लेखनिना लिखति
(उ) सा लेखनीं लिखति (ऋ) सा लेखन्या लिखति

45. बड़ा मजा आता है जब '' बालक बड़ों के साथ खेलता है''
(अ) बालकः ज्येष्ठैः सह क्रीडति
(इ) बालकाः ज्येष्ठेभ्याः सह क्रीडति
(उ) बालकाः ज्येष्ठानां सह क्रीडति
(ऋ) बालकाः ज्येष्ठात् सह क्रीडति

46. पुस्तक का लेन देन तो होना ही चाहिए -
(अ) राकेशः महेन्द्रात् पुस्तकं ददाति
(इ) वीरेन्द्रः रामप्रसादं पुस्तक ददाति
(उ) श्यामः चन्दनाय पुस्तकं ददाति
(ऋ) अञ्जू सुमनां पुस्तकं दादाति

47. ''तुम्हें क्या अच्छा लगता है'' - बोलो तो सही -
(अ) तव किं रोचते (इ) त्वत् किं रोचते
(उ) तुभ्यं किं रोचते (ऋ) त्वया किं रोचते

48. सोचो जरा क्या 'गुरु से छात्र डरते हैं -
(अ) गुरुः छात्राः बिभेति (इ) गुरोः छात्राः बिभेति
(उ) गुरुभ्यः छात्राः बिभ्यति (ऋ) गुरुभ्यः छात्राः बिभेति

49. 'पिता पुत्र पर क्रोधित होता है'-लेकिन जमाना उलट गया है-
(अ) पिता पुत्रात् क्रध्यति (इ) पिताः पुत्राय क्रुध्यति
(उ) पिता पुत्रं क्रध्यति (ऋ) पिता पुत्राय क्रुध्यति

33. (उ), 34. (इ), 35. (उ), 36. (ऋ), 37. (ऋ), 38. (ऋ), 39. (अ), 40. (इ), 41. (इ), 42. (इ), 43. (अ), 44. (ऋ), 45. (अ), 46. (उ), 47. (उ), 48. (उ), 49. (ऋ)

50. 'लालच करना चाहिए' कि नहीं आप बताओ-
(अ) लोभे कर्त्तव्य (इ) लोभम् कर्त्तव्यः
(उ) लोभः कर्त्तव्यः (ऋ) लोभः कर्त्तव्यम्

51. 'उनके बड़े-बड़े घर हैं'- भई ये तो वही जानें -
(अ) तयोः गृहे विशालौ स्तः (इ) तयोः गृहे विशाले स्तः
(उ) तयोः गृहौ विशालौ स्तः (ऋ) तयोः गृहाणि विशालौ स्तः

52. अजी, अब तो भिखारी दान लेते नहीं, दान करने लगे -
(अ) भिक्षुकाय धनं वस्त्रं च ददाति
(इ) भिक्षुके धनं वस्त्रं च ददाति
(उ) भिक्षुकात् धनं वस्त्रं च ददाति
(ऋ) भिक्षुकेन धनं वस्त्रं च दादाति

53. ''दुष्ट सज्जन से द्रोह करता है'' पर सज्जन भी कुछ कम नही वो भी चुपचाप रहता है-
(अ) दुष्टः सज्जनात् द्रुह्यति (इ) दुष्टेन सज्जनात् दुह्यति
(उ) दुष्टः सज्जनाय द्रुह्यति (ऋ) दुष्टाय सज्जानाय द्रुह्यति

54. 'मनुष्य ज्ञान के बिना पशु है, तब तो पशु की जनसंख्या बढ जायेगी
(अ) मनुष्यः ज्ञानस्य विना पशुः
(इ) मनुष्यः ज्ञाने विना पशुः
(उ) मनुष्यः ज्ञानेन विना पशुः
(ऋ) मनुष्यः ज्ञानाय विना पशुः

55.. 'उद्यान के चारो ओर वृक्ष हैं' और वृक्षों के चारों ओर युगल जोडे हैं-
(अ) उद्यानस्य सर्वतः वृक्षाणि सन्ति
(इ) उद्यानं सर्वतः वृक्षाणि सन्ति
(उ) उद्यानात् सर्वतः वृक्षा सन्ति
(ऋ) उद्यानं सर्वतः वृक्षाः सन्ति

56. 'मैं देव को नमस्कार करता हूँ ' क्योंकि उसने मुझे संस्कृत पढाया-
(अ) अहं देवं नमस्करोमि (इ) अहं देवं नमः
(उ) अहं देवं नमः (ऋ) अहं देवाय नमस्करोमि

57. पिताजी आज भी पत्र लिखते हैं, मै तो sms करता हूँ -
(अ) पिता लेखन्यैः पत्राणि लिखति
(इ) पिता लेखन्याभिः पत्राणि लिखति
(उ) पिता लेखनीः पत्राणि लिखति
(ऋ) पिता लेखनीभिः पत्राणि लिखति

58. प्रिये! मैं आपके साथ चलता हूँ, पर आपके साथ कौन चलता है?
(अ) अहं भवताभिः सह चलामि
(इ) अहं भवतैः सह चलाभि
(उ) अहं भवतीभिः सह चलामि
(ऋ) अहं भवतीः सह चलानि

59. 'पं. माठागुरु को क्या अच्छा लगता है'- चलो पूछते हैं -
(अ) पं. माठागुरुः भक्तिः रोचते
(इ) पं. माठागुरुं संस्कृतं रोचते
(उ) पं. माठागुरवे सत्यनारायणकथा रोचते
(ऋ) पं.माठागुरोः ताम्बूलं रोचते

60. 'एक महीने पहले आना'- क्यों जी ससुराल चलना है क्या?
(अ) मासेन पूर्वम् आगन्तव्यम्
(इ) मासाय पूर्वम् आगन्तव्यम्
(उ) मासात् पूर्वम् आगन्तव्यम्
(ऋ) मासस्य पूर्वम् आगन्तव्यम्

61. पं. ननकू जी! क्या यह सच है कि आप सूर्योदय से ही काम शुरु कर देते हैं ।
(अ) पं. ननकू! सूर्योदयस्य आरभ्य कार्यं करोति?
(इ) पं. ननकू! सूर्यादयम् आरभ्य कार्यं करोति?
(उ) पं. ननकू! सूर्योदयात् आरभ्य कार्यं करोति?
(ऋ) पं. ननकू! सूर्योदयाय आरभ्य कार्यं करोति?

62. 'संस्कृतगङ्गा के बाहर क्या है' यह तो वहीं चलकर देखो -
(अ) संस्कृतगङ्गां बहिः उद्यानम् अस्ति
(इ) संस्कृतगङ्गा बहिः माघमेला अस्ति
(उ) संस्कृतगङ्गायाः बहिः गङ्गानदी अस्ति
(ऋ) संस्कृतगङ्गायां बहिः वाटिका अस्ति

63. संस्कृत कोयल अब केवल वृक्षों में नही घर मे कूजेगी-
(अ) तासु वृक्षासु ते संस्कृतकोकिलाः कूजान्ति
(इ) तेषु वृक्षेषु ताः संस्कृतकोकिलाः कूजन्ति
(उ) तासु वृक्षेसु ते संस्कृतकोकिलाः कूजन्ति
(ऋ) तेषु वृक्षाषु तान् संस्कृतकोकिलाः कूजन्ति

50. (उ), 51. (इ), 52. (अ), 53. (उ), 54. (उ), 55. (ऋ), 56. (अ), 57. (ऋ), 58. (उ), 59. (उ), 60. (उ), 61. (उ), 62. (उ), 63. (इ),

64. 'भौरा कमलों से मधु पीता है' संस्कृत का भौंरा तो शकुन्तला का रस पीता है -
(अ) भ्रमराः कमलैः मधुं पिबन्ति
(इ) भ्रमराः कमलेषु मधुं पिबन्ति
(उ) भ्रमराः कमलेभ्यः मधुं पिबन्ति
(ऋ) भ्रमराः कमलेभ्यः मधु पिबन्ति

65. 'हाथी को दूर से देखता हूँ' - बहुत डरपोक हो क्या?
(अ) अहं दूरेण गजं पश्यामि
(इ) अहं दूरात् गजं पश्यामि
(उ) अहं दूरस्य गजं पश्यामि
(ऋ) अहं दूरः गजं पश्यामि

66. 'बालक हाथ से पुस्तक लाते हैं' तो क्या तुम पैर से लाते हो -
(अ) बालौ हस्तैः पुस्तकानि आनयति
(इ) बालौ हस्ताभ्यां पुस्तकानि आनयतः
(उ) बालौ हस्तयोः पुस्तकानि आनयन्ति
(ऋ) बालौ हस्तौ पुस्ताकानि आनयथः

67. 'ब्रह्मानन्द ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं'- और गुरूजी ब्रह्मानन्द का अनुभव करते हैं-
(अ) ब्रह्मानन्दः सदा ग्रन्थान् परिशीलनं करोति
(इ) ब्रह्मानन्दः सदा ग्रन्थेभ्यः परिशीलनं करोति
(उ) ब्रह्मानन्दः सदा ग्रन्थानां परिशीलनं करोति
(ऋ) ब्रह्मानन्दः सदा ग्रन्थैः परिशीलनं करोति

68. पाठक जी! शत्रु का गला पकडते है; किसी मित्र का नहीं -
(अ) पाठकः शत्रोः कण्ठं गृहीतवान्
(इ) पाठकः शत्रुभ्यः कण्ठं ग्रहीतवान्
(उ) पाठकः शत्रुणा कण्ठ गहीतवान्
(ऋ) पाठकः शत्रुं कण्ठं गहितवान्

69. 'पं. चम्मच मुझको बहुत मानते हैं' तो चमचाइन को कौन मानता है-
(अ) पं. चम्मचः महतं वात्सल्यं प्रदर्शयति
(इ) पं. चम्मचः मयि वात्सल्यं प्रदर्शयति
(उ) पं. चम्मचः मया वात्सल्यं प्रदर्शयति
(ऋ) पं. चम्मचः मम वात्सल्यं प्रदर्शति

70. 'छात्र संस्कृत का आदर करते हैं? क्योंकि छात्रों का आदर भी तो संस्कृत से ही है-
(अ) छात्राः संस्कृते आदरं प्रदर्शयन्ति
(इ) छात्राः संस्कृतेन आदरं प्रदर्शयति
(उ) छात्राः संस्कृतेभ्यः आदरं प्रदर्शयति
(ऋ) छात्राः संस्कृतम् आदरं प्रदर्शयन्ति

शुद्ध वाक्यानि परशीलयतु

71. PGT-2000
(अ) त्वया सह अहं चित्रं द्रक्षिष्यामि।
(इ) तव सह अहं चित्रं द्रक्षष्यामि।
(उ) त्वया सह अहं चित्रं द्रक्ष्यामि।
(ऋ) त्वया सः अहं चित्रं पश्यिष्यामि।

72. PGT-2000
(अ) नमस्कृत्वा हरि गच्छति।
(इ) नमस्कृत्य हरये गच्छति।
(उ) नमस्कृत्य हरिः गच्छति।
(ऋ) नमस्कृत्वा हरिं गच्छति।

73. PGT-2000
(अ) रामाः दीनाय धनं ददन्ति।
(इ) रामः दीनान् धनं ददन्ति।
(उ) रामः दीनाय धनं ददति।
(ऋ) रामः दीनाय धनं ददाति।

74. PGT-2000
(अ) अध्ययनात् पराजयते ।
(इ) अध्ययनां पराजयते।
(उ) अध्ययनाय पराजये।
(ऋ) अध्ययनस्य पराजयते।

75. PGT-2004
(अ) आवां पठावः (इ) अहं पठावः
(उ) वयं पठावः (ऋ) यूयं पठावः

76. PGT-2004
(अ) अध्ययनं हेतु काश्यां तिष्ठति ।
(इ) अध्ययनं हेतोः काश्यां तिष्ठति।
(उ) अध्ययनस्य हेतोः काश्यां तिष्ठति।
(ऋ) अध्ययनस्य हेतु काश्यां तिष्ठति।

64. (ऋ), 65. (इ), 66. (इ), 67. (उ), 68. (अ), 69. (इ), 70. (अ), 71. (उ), 72. (उ), 73. (ऋ), 74. (अ), 75. (अ), 76. (उ),

77. PGT-2004
(अ) मया चन्द्रः पश्यति।
(इ) मया चन्द्रः पश्यते।
(उ) मया चन्द्रः दृश्यते।
(ऋ) मया चन्द्रः पश्यामि।

78. TGT-1999
(अ) ग्रामस्य बहिः विद्यालयः अस्ति।
(इ) ग्रामात् बहिः विद्यालयः अस्ति।
(उ) ग्रामेण बहिः विद्यालयः अस्ति।
(ऋ) ग्रामम् बहिः विद्यालयः अस्ति।

79. TGT-1999
(अ) उभयतः कृष्णस्य गोपालाः सन्ति।
(इ) उभयतः कृष्णं गोपालाः सन्ति।
(उ) उभयतः कृष्णेन गोपालाः सन्ति।
(ऋ) उभयतः कृष्णात् गोपालः सन्ति।

80. TGT-1999
(अ) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः ।
(इ) कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।
(उ) कविभ्यः कालिदासः श्रेष्ठः।
(ऋ) केवल 'अ' और 'इ' सही है।

81. TGT-1999
(अ) मातरं स्मरति। (इ) मातुः स्मरति।
(उ) मातरि स्मरति। (ऋ) मात्रा स्मारति।

82. TGT-1999
(अ) उपरोक्त (इ) उपर्युक्त
(उ) उपरियुक्त (ऋ) इनमें से कोई नही

83. TGT-1999
(अ) महानता (इ) महान्ता
(उ) महनता (ऋ) महोनता

84. TGT-1999
(अ) गुरुः शिष्याय क्रुध्यति
(इ) गुरुः शिष्यं क्रुध्यति
(उ) गुरुः शिष्ये क्रुध्यति
(ऋ) गुरुः शिष्यस्य क्रुध्यति

85.
(अ) राजीवः मम मित्रम् अस्ति
(इ) राजीवः मां मित्रोमोस्ति
(उ) राजीवः मम मित्रोऽस्ति
(ऋ) राजीवः मे मित्रः अस्ति

86. TGT-1999
(अ) अचिराय देवदत्तः गमिस्यति ।
(इ) अचिरे देवदत्तो गमिष्यति।
(उ) अचिरात् देवदत्तः गमिष्यति।
(ऋ) अचिरेण देवदत्तः गमिस्यति।

87. TGT-1999
(अ) एकविंशतयः छात्राः कक्षायाम् ।
(इ) एकविंशतिः छात्राः कक्षायाम् ।
(उ) एकविंशताः छात्राः कक्षायाम् ।
(ऋ) एकविंशतानि छात्राः कक्षायाम् ।

88. TGT-1999
(अ) तत्र पञ्च जनाः निवसन्ति।
(इ) तत्र पञ्चाः जनाः निवसन्ति।
(उ) तत्र पञ्चाः जनानां निवसन्ति।
(ऋ) तत्र पञ्चसु जनेभ्यः निवसन्ति।

89. TGT-1999
(अ) अष्टानि फलानि आनय।
(इ) अष्टौ फलानि आनय।
(उ) अष्टाः फलानि आनय।
(ऋ) अष्टे फलानि आनय।

90. TGT-1999
(अ) विपदि ददातु मे धनं भवान् ।
(इ) विपदे देहि में धनं भवान।
(उ) धनं यच्छतु विपन्नेभवान ।
(ऋ) ददनु मां धनं विपदौ ।

91. TGT-2009
(अ) युवां पुस्तकं पठथ। (इ) यूयं पुस्तकं पठथ।
(उ) आवां पुस्तकं पठथ । (ऋ) त्वं पुस्तकं पठथ।

77. (उ), 78. (इ), 79. (इ), 80. (ऋ), 81. (इ), 82. (इ), 83. (अ), 84. (अ), 85. (अ), 86. (उ), 87. (इ), 88. (अ), 89. (इ), 90. (अ), 91. (इ),

92. TGT-2009
(अ) बालिका जलात् मुखं प्रक्षालयति।
(इ) बालिका जले मुखं प्रक्षालयति।
(उ) बालिका जलेन मुखं प्रक्षालयति।
(ऋ) बालिका जलं मुखं प्रक्षालयति।

93. TGT-2010
(अ) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयन्ते।
(इ) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शेरते।
(उ) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयन्ति।
(ऋ) श्रान्ताः जनाः शीघ्रं शयनन्ति।

94. TGT-2010
(अ) सः कोचित् साधूं पश्यति।
(इ) सः कोञ्चित् साधूं पश्यति।
(उ) सः कञ्चित् साधून् पश्यति।
(ऋ) सः कञ्चन साधुं पश्यति।

95.
(अ) बालकः अध्यापकेन पुस्तकं पठति।
(इ) बालकः अध्यापकात् पुस्तकं पठन्ति।
(उ) बालकः अध्यापकात् पुस्तकं पठति।
(ऋ) बालकाः अध्यापकेन पुस्तकानि पठन्ति।

96. TGT-2010
(अ) अम्बरीसः (इ) अम्बरीशः
(उ) अम्बरिशः (ऋ) अम्बरीषः

97.
(अ) बालः चित्रम् अवलोकति
(इ) चिन्तकः आलोचति
(उ) तरुणः वस्त्रं धरति
(ऋ) सा स्वयं लेपयति

98. TGT-2010
(अ) सहोदरा (इ) सहोदरी
(उ) सहदरा (ऋ) उपर्युक्त सभी

99.
(अ) सः पुष्पं चितवान् ।
(इ) सः पुष्पाणि चयितवान् ।
(उ) सः पुष्पं चेतवान् ।
(ऋ) सः पुष्पं चैतवान् ।

100.
(अ) सः वस्त्रं प्रक्षाययित्वा पठति।
(इ) सः वस्त्रं प्रक्षाल्य पठति।
(उ) सः वस्त्राणि प्रक्षाल्य पठन्ति।
(ऋ) सः वस्त्रे प्रक्षाल्य पठतः।

101.
(अ) किम् प्रच्छितुम् इच्छति।
(इ) किं प्रष्टुम् इच्छति।
(उ) किं प्रच्छयितुम् इच्छति।
(ऋ) किं प्राष्टुम् इच्छति।

102. TGT-1999
(अ) मयि मोदकं रोचते
(इ) मां मोदकं रोचते
(उ) मया मोदकं रोचते
(ऋ) मह्यं मोदकं रोचते।

92. (उ), 93. (इ), 94. (ऋ), 95. (उ), 96. (ऋ), 97. (उ), 98. (अ), 99. (अ), 100. (इ), 101. (इ), 102. (ऋ)।

'तुमुन्'-प्रत्ययगत-दोषाः

अधोनिर्दिष्टानां क्रियापदानां शुद्धं तुमुनन्तरूपं चेतव्यम् -

1. उत्तिष्ठति -
(अ) उत्थिष्ठितुम् (इ) उत्थातुम्
(उ) उत्थितुम् (ऋ) उत्थयितुम्

2. उपन्यस्यति -
(अ) उपन्यस्तुम् (इ) उपन्यसितुम्
(उ) उपन्यासितुम् (ऋ) उपन्यस्यतुम्

3. इच्छति -
(अ) इच्छितुम् (इ) एच्छितुम्
(उ) एष्टुम् (ऋ) ऐच्छितुम्

4. आकर्षति -
(अ) आक्रष्टुम् (इ) आकर्ष्टुम्
(उ) आकर्षितुम् (ऋ) आकर्षतुम्

5. गिलति -
(अ) गिलितुम् (इ) गलितुम्
(उ) गीर्णितुम् (ऋ) गलतुम्

6. चिनोति -
(अ) चिनोतुम् (इ) चयितुम्
(उ) चेतुम् (ऋ) चयतुम्

7. तरति -
(अ) तरितुम् (इ) तर्तुम्
(उ) तर्तितुम् (ऋ) ततर्तुम्

8. दशति -
(अ) दंष्टुम् (इ) दष्टुम्
(उ) दशितुम् (ऋ) दंशितुम्

9. सन्तुष्यति -
(अ) सन्तुष्यितुम् (इ) सन्तोष्टुम्
(उ) सन्तोषितुम् (ऋ) सन्तोषतुम्

10. गृह्णाति -
(अ) ग्रहीतुम् (इ) गृहीतुम्
(उ) ग्रह्णीतुम् (ऋ) गृह्णीतुम्

11. पृच्छति -
(अ) प्रष्टुम् (इ) पृष्टुम्
(उ) पृच्छितुम् (ऋ) प्रच्छतुम्

12. मिलति -
(अ) मिलितुम् (इ) मेलितुम्
(उ) मिलेतुम् (ऋ) मिलतुम्

13. प्रयतते -
(अ) प्रयतितुम् (इ) प्रयत्तुम्
(उ) प्रयत्तितुम् (ऋ) प्रयततुम्

14. वसति -
(अ) वसितुम् (इ) उषितुम्
(उ) वस्तुम् (ऋ) वसतुम्

15. स्पृशति -
(अ) स्प्रष्टुम् (इ) स्पर्षितुम्
(उ) स्पृष्टुम् (ऋ) स्पर्शतुम्

16. बध्नाति -
(अ) बध्नातुम् (इ) बद्धुम्
(उ) बन्धुम् (ऋ) बन्धतुम्

17. सृजति -
(अ) सृजितुम् (इ) सृष्टुम्
(उ) स्रष्टुम् (ऋ) सर्जितुम्

18. आह्वयति -
(अ) आह्वयितुम् (इ) आह्वातुम्
(उ) आह्वानितुम् (ऋ) आह्वतुम्

19. निर्वहति -
(अ) निर्वोढुम् (इ) निर्वर्हितुम्
(उ) निरूढम् (ऋ) निरोढुम्

20. विमृशति -
(अ) विमर्शितुम् (इ) विम्रष्टुम्
(उ) विमृष्टुम् (ऋ) विमर्शतुम्

1. (इ), 2. (इ), 3. (उ), 4. (अ), 5. (इ), 6. (उ), 7. (अ), 8. (अ), 9. (इ), 10. (अ), 11. (अ), 12. (इ), 13. (अ), 14. (उ), 15. (अ), 16. (इ), 17. (उ), 18. (इ), 19. (अ), 20. (इ)

21. जपति -
(अ) जप्तुम् (इ) जपितुम्
(उ) जम्पतुम् (ऋ) जपतुम्

22. जिघ्रति -
(अ) जिघ्रितुम् (इ) घ्रणितुम्
(उ) घ्रातुम् (ऋ) जिघातुम्

23. भक्षयति -
(अ) भक्षितुम् (इ) भक्षयितुम्
(उ) भक्षीतुम् (ऋ) भक्षतुम्

24. शेते -
(अ) शयितुम् (इ) शय्यितुम्
(उ) शेतुम् (ऋ) शोतुम्

25. विवृणोति -
(अ) विवरीतुम् (इ) विवृतुम्
(उ) विवृणोतुम् (ऋ) विवर्तुम्

26. भिनत्ति -
(अ) भेदितुम् (इ) भन्तुम्
(उ) भेन्तुम् (ऋ) भेतुम्

शुद्ध पदों को छाँटियें -

27.
(अ) शते जनेषु (इ) शतं जनेषु
(उ) शतेषु जनेषु (ऋ) शतासु जनेषु

28.
(अ) शतं सन्ति (इ) शतं स्तः
(उ) शतानि सन्ति (ऋ) शताः सन्ति

29.
(अ) पञ्च अस्ति (इ) पञ्च स्तः
(उ) पञ्च सन्ति (ऋ) पञ्चाः सन्ति

30.
(अ) पञ्चदशतमे (इ) पञ्चदशे
(उ) पञ्चे (ऋ) पञ्चदशौ

31.
(अ) विंशतितमा (इ) विंशतितमी
(उ) विंशतितम्या (ऋ) विंशती

32.
(अ) षष्ट्यब्दिः (इ) षष्ट्यब्दः
(उ) षष्ट्याब्दः (ऋ) षष्ट्यब्दी

33.
(अ) चतुःपञ्चेषु (इ) चतुःपञ्चे
(उ) चतुःपञ्चषु (ऋ) चतुर्पञ्चे

34.
(अ) परसहस्त्रम् (इ) परस्सहस्त्रम्
(उ) परस्साहस्त्री (ऋ) परस्सहस्त्राः

35.
(अ) उपचत्वारिंशाः (इ) उपचत्वारिंशः
(उ) उपचत्वारिंशत् (ऋ) उपचत्वारिंशतः

36.
(अ) कतिसमये (इ) कतिवादने
(उ) कतिबजे (ऋ) कस्मिन् समये

37.
(अ) विंशतिः जनैः (इ) विंशत्या जनैः
(उ) विंशतिभिः जनैः (ऋ) विशत् जनैः

21. (इ), 22. (उ), 23. (इ), 24. (अ), 25. (अ), 26. (ऋ), 27. (अ), 28. (अ), 29. (उ), 30. (इ), 31. (इ), 32. (इ), 33. (अ), 34. (ऋ), 35. (अ), 36. (ऋ), 37. (इ)।

समासगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. अर्जुनः भगवतः **विराट्रूपं** दृष्टवान्।	1. अर्जुनः भगवतः **विराड्रूपम्** दृष्टवान्।
2. कक्ष्यायां **षड्सप्ततिः** जनाः सन्ति।	2. कक्ष्यायां **षट्सप्ततिः** जनाः सन्ति।
3. **सार्धं एकादशवादने** मम विद्यालयस्य आरम्भः।	3. **सार्धैकादशवादने** मम विद्यालयस्य आरम्भः।
4. रघुः **मृण्मयेन** पात्रेण कौत्साय अर्घ्यं दत्तवान् ।	4. रघुः **मृन्मयेन** पात्रेण कौत्साय अर्घ्यं दत्तवान्।
5. रमेशः **संशोधन तथा अभिवृद्धिविभागे** कार्यं करोति।	5. रमेशः **संशोधनाभिवृद्धिविभागे** कार्यं करोति।
6. **मासपर्यन्तम्** एतत् कार्यं समाप्तं भविष्यति।	6. **मासाभ्यन्तरे** एतत् कार्यं समाप्तं भविष्यति।
7. विकासः मातरं **न उक्त्वा** विद्यालयं गतवान् ।	7. विकासः मातरम् **अनुक्त्वा** विद्यालयं गतवान्।
8. कटम् इदानीं **पुटी न करोतु**।	8. कटम् इदानीं **न पुटीकरोतु**।
9. **शास्त्रीमहोदयः** अद्य अस्माकं गृहम् आगच्छति।	9. **शास्त्रिमहोदयः** अद्य अस्माकं गृहम् आगच्छति।
10. **महात्मागान्धिवर्येण** श्रेष्ठः आचारः दर्शितः।	10. **महात्मगान्धिवर्येण** श्रेष्ठः आचारः दर्शितः।
11. विकाशः **शास्त्रीपरीक्षाम्** उत्तीर्णः अस्ति।	11. विकाशः **शास्त्रिपरीक्षाम्** उत्तीर्णः अस्ति।
12. संस्कृतस्य केवलेन **महिमावर्णनेन** न किमपि प्रयोजनम्	12. संस्कृतस्य केवलेन **महिमवर्णनेन** न किमपि प्रयोजनम्।
13. अद्य **संस्कृतछात्राः** नाटकं प्रदर्शयन्ति।	13. अद्य **संस्कृतच्छात्राः** नाटकं प्रदर्शयन्ति।
14. गीतायाः **पतये** मया धनं दत्तम् ।	14. गीतायाः **पत्ये** मया धनं दत्तम् ।
15. **सीतापत्ये** मया धनं दातव्यम् ।	15. **सीतापतये** मया धनं दातव्यम्
16. त्रिविक्रमः **मध्यरात्रौ** श्मशानभूमौ सञ्चरित स्म।	16. त्रिविक्रमः **मध्यरात्रे** श्मशानभूमौ सञ्चरित स्म।
17. **नवरात्र्यसवदिने** सर्वे आनन्दम् अनुभवन्ति।	17. **नवरात्रोत्सवदिने** सर्वे आनन्दम् अनुभवन्ति।
18. अहश्च रात्रिश्च इति विग्रहे **अहोरात्रम्** इति रूपम् ।	18. 'अहश्च रात्रिश्च' इति विग्रहे **अहोरात्रः** इति रूपम्
19. भवता **महदुपकारः** अनुष्ठितः।	19. भवता **महोपकारः** अनुष्ठितः
20. **देवशर्मराज्ञः** शासनम् अत्युत्तमम् आसीत्।	20. **देवशर्मराजस्य** शासनम् अत्युत्तमम् आसीत्।
21. वत्स **पाणिपादान्** प्रक्षाल्य भोजनार्थम् आगच्छ।	21. वत्स! **पाणिपादम्** प्रक्षाल्य भोजनार्थम् आगच्छ।
22. **पिताकार्यकर्तारौ** इह न आगतौ।	22. **पितृकार्यकर्तारौ** इह न आगतौ।
23. कार्यक्रमे संस्कृतज्ञाः आसन् **तदितराः** अपि आसन्।	23. कार्यक्रमे संस्कृतज्ञाः आसन् **तदितरे** अपि आसन्।
24. एतत् **सविवरं** ज्ञातुम् इच्छामि अहम्।	24. एतत् **सविवरणं** ज्ञातुम् इच्छामि अहम् ।
25. तस्य कृषिकस्य **गोविन्दः इति नामकः** पुत्रः आसीत् ।	25. तस्य कृषिकस्य **गोविन्दनामकः** पुत्रः आसीत्।
26. सर्वे कार्यकर्तारः **सोत्साहेन** कार्यं कृतवन्तः।	26. सर्वे कार्यकर्तारः **सोत्साहं** कार्यं कृतवन्तः।
27. **उदारचेतः** सः दीनानां साहाय्यं करोति।	27. **उदारचेताः** सः दीनानां साहाय्यं करोति।
28. **बहुदिनारभ्य** एतत् एवमेव प्रचलति।	28. **बहुभ्यः दिनेभ्यः** आरभ्य एतत् एवमेव प्रचलति।
29. **पतिपत्नी** नगरम् अगच्छताम्।	29. **पतिपत्न्यौ** नगरम् अगच्छताम्।
30. अहं **व्याख्यातारूपेण** कार्यं करोमि।	30. अहं **व्याख्यातृरूपेण** कार्यं करोमि।
31. **महामना मालवीयस्य** कार्यम् असाधारणम् ।	31. **महामनसः मालवीयस्य** कार्यम् असाधारणम्।
32. वत्स! अलं त्वरया **उदरपूर्णं** भोजनं कुरु।	32. वत्स! अलं त्वरया **पूर्णोदरं** भोजनं कुरु।
33. सः **अर्शव्याधिना** ग्रस्तः अस्ति।	33. सः **अर्शोव्याधिना** ग्रस्तः अस्ति।
34. अत्र उपस्थितस्य **प्रत्येकस्यापि** जनस्य परिचयः मम नास्ति।	34. अत्र उपस्थितस्य **एकैकस्य** जनस्य परिचयः मम नास्ति।

अशुद्धम्	शुद्धम्
35. एषः **निरपराधी** अस्ति	35. एषः **निरपराधः** अस्ति।
36. पतिपत्न्यौ गृहं **प्रत्यागतवन्तौ ।**	36. पतिपत्न्यौ गृहं **प्रत्यागतवत्यौ**।
37. **दशमकक्ष्योत्तीर्णः** सः उद्योगान्वेषणं करोति	37. **दशमकक्ष्याम् उत्तीर्णः** सः उद्योगान्वेषणं करोति।

सङ्ख्यागत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. षष्ठकक्ष्यायां **विंशतयः** जनाः सन्ति।	1. षष्ठकक्ष्यायां **विंशतिः** जनाः सन्ति।
2. **शतं जनेभ्यः** भोजनं व्यवस्थापनीयम् अस्ति।	2. **शतजनेभ्यः** भोजनं व्यवस्थापनीयम् अस्ति।
3. अहं **पञ्चदिनात्** भवतः प्रतीक्षां कुर्वन् अस्मि ।	3. अहं **पञ्चदिनेभ्यः** भवतः प्रतीक्षां कुर्वन् अस्मि।
4. **अष्टादशतमे** सर्गे एतं श्लोकं पश्यतु।	4. **अष्टादशे** सर्गे एतं श्लोकं पश्यतु।
5. भोः **षष्ठम!** त्वं उत्तिष्ठ	5. भोः **षष्ठ!** त्वम् उत्तिष्ठ।
6. **चतुर्थायां पङ्क्तौ** कश्चन मुद्रणदोषः अस्ति।	6. **चतुर्थ्यां पङ्क्तौ** कश्चन मुद्रणदोषः अस्ति।
7. **एतस्मिन् शताब्दे** सर्वे अर्थपराः एव दृश्यन्ते।	7. **एतस्यां शताब्द्यां** सर्वे अर्थपराः एव दृश्यन्ते।
8. अद्य विद्यालये **शताब्दीकार्यक्रमः** अस्ति।	8. अद्य विद्यालये **शताब्दकार्यक्रमः** अस्ति।
9. एतस्मिन् **शतमाने** बहवः संस्कृतकवयः अभूवन् ।	9. एतस्मिन् **शतके** बहवःसंस्कृतकवयः अभूवन्
10. **द्वित्रिक्षणान्तरं** सः ततः निर्जगाम।	10. **द्वित्राः क्षणानन्तरं** सः ततः निर्जगाम।
11. मम गृहे **पञ्चषड्यानानि** सन्ति।	11. मम गृहे **पञ्चषाणि यानानि** सन्ति।
12. **त्रिचतुर्वारं** सः माम् आहूतवान् ।	12. **त्रिचतुरवारं** सः माम् आहूतवान् ।
13. अद्य कार्यक्रमे **उपविंशतिः जनाः** आसन् ।	13. अद्य कार्यक्रमे **उपविंशाः जनाः** आसन् ।
14. अद्य कार्यक्रमः **कतिवादने** अस्ति ?	14. अद्य कार्यक्रमः **कस्मिन् समये** अस्ति।
15. **कति गुरुदक्षिणा** देया।	15. **कियती गुरुदक्षिणा** देया।
16. **चतसृणाम्** अपि बालिकानां नाम अहं जानामि।	16. **चतसृणाम्** अपि बालिकानां नाम अहं जानामि।
17. अनीता **प्रथमापङ्क्तौ** स्थितवती।	17. अनीता **प्रथमपङ्क्तौ** स्थितवती।
18. कार्यक्रमः **पञ्चजूनदिनाङ्के** भविष्यति।	18. कार्यक्रमः **जूनमासस्य पञ्चमे दिनाङ्के** भविष्यति।
19. **एकशतदश** = 110	19. **दशाधिकशतम्** = 110
20. **सार्धैकसहस्रवर्षात्** पूर्वं एषा घटना प्रवृत्ता।	20. **सार्धैकसहस्रवर्षेभ्यः** पूर्वं एषा घटना प्रवृत्ता।

लिङ्गगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. दीपचन्द्रः **मम मित्रः** अस्ति।	1. दीपचन्द्रः **मम मित्रम्** अस्ति।
2. मूषकः गणेशस्य **वाहनः** अस्ति।	2. मूषकः गणेशस्य **वाहनम्** अस्ति।
3. सः **व्याध्या ग्रस्तः** अस्ति।	3. सः **व्याधिना ग्रस्तः** अस्ति।
4. संस्कृतस्य **परिधिः का**?	4. संस्कृतस्य **परिधिः कः** ?
5. कुत्रचित् **सन्धिः न कृता**।	5. कुत्रचित् **सन्धिः न कृतः**।
6. मया **ध्वनिः श्रुता**।	6. मया **ध्वनिः श्रुतः**।
7. वानरैः **सेतुः निर्मिता**	7. वानरैः **सेतुः निर्मितः**।
8. बीजेभ्यः **अङ्कुराणि** उत्पद्यन्ते।	8. बीजेभ्यः **अङ्कुराः** उत्पद्यन्ते।

अशुद्धम्	शुद्धम्
9. यथा **बीजः** तथा अङ्कुरः।	9. यथा **बीजं** तथा अङ्कुरः।
10. प्रयागः विदुषाम् **आगारः** अस्ति।	10. प्रयागः विदुषाम् **आगारम्** अस्ति।
11. **कारागारः** एव श्रीकृष्णस्य जन्मस्थानम् आसीत् ।	11. **कारागारम्** एव श्रीकृष्णस्य जन्मस्थानम् आसीत्।
12. संस्कृतगङ्गायाः **पुस्तकभण्डारः** अत्युत्तमः अस्ति।	12. संस्कृतगङ्गायाः **पुस्तकभाण्डारम्** अत्युत्तमः अस्ति।
13. संस्कृतस्य **महिमा** वर्णयितुं न **शक्या**।	13. संस्कृतस्य **महिमा** वर्णयितुं न **शक्यः**।
14. दर्पणं **भग्नम्**।	14. दर्पणः **भग्नः**।
15. कालिदासः **कविरत्नः** अस्ति।	15. कालिदासः **कविरत्नम्** अस्ति।
16. **'अहोरात्रं'** दिनम् इति उच्यते।	16. **'अहोरात्रः'**- दिनम् इति उच्यते।
17. हिमालये सर्वत्र **हिमः** एव दृश्यते।	17. हिमालये सर्वत्र **हिमम्** एव दृश्यते।
18. संस्कृताध्यापने **बहूनि विघ्नानि** आगतानि।	18. संस्कृताध्यापने **बहवः विघ्नाः** आगताः।
19. राजीवस्य **एकमात्रः पुत्रः** अस्ति।	19. राजीवस्य **एकमात्रं पुत्रः** अस्ति।
20. सरोवरं **सुन्दरम्** अस्ति।	20. सरोवरः **सुन्दरः** अस्ति।
21. सः अद्यैव **प्राणम्** अत्यजत्।	21. सः अद्यैव **प्राणान्** अत्यजत्।
22. प्रजाः राजानं स्वकष्टं **निवेदितवन्तः**।	22. प्रजाः राजानं स्वकष्टं **निवेदितवत्यः**।
23. दशरथस्य **दारा** कौशल्या।	23. दशरथस्य **दाराः** कौशल्या।
24. **इयम् आपः**।	24. **इमाः आपः**।
25. **वर्षायां** बालाः क्रीडन्ति।	25. **वर्षासु** बालाः क्रीडन्ति।
26. अहं **पादेन** गच्छामि।	26. अहं **पादाभ्यां** गच्छामि।
27. अद्य संस्कृतं पठितुं **दम्पती आगता** आसीत्।	27. अद्य संस्कृतं पठितुं **दम्पती आगतौ** आस्ताम्।

सुबन्तगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. ''आतङ्कवादः''-एका **राष्ट्रीया** समस्या अस्ति।	1. 'आतङ्कवादः'- एका **राष्ट्रिया** समस्या अस्ति।
2. श्यामः **अत्रतः** तत्र गतवान्।	2. श्यामः **इतः** तत्र गतवान्।
3. राकेशः **तत्रतः** अन्यत्र गतवान्।	3. राकेशः **ततः** अन्यत्र गतवान्।
4. प्रदीपः **उपरितः** पतितः।	4. प्रदीपः **उपरिष्टात्** पतितः।
5. अजयं **बहिस्तात्** अन्तः आनय।	5. अजयं **बहिर्भागतः** अन्तः आनय।
6. **पाश्चिमात्याः** अपि संस्कृतगङ्गाम् आगच्छन्ति।	6. **पाश्चात्त्याः** अपि संस्कृतगङ्गाम् आगच्छन्ति।
7. **औत्तरेयाः** संस्कृतं पठन्ति।	7. **औत्तराहाः** संस्कृतं पठन्ति।
8. **महाराष्ट्रियाः** मराठीभाषया वदन्ति।	8. **महाराष्ट्रीयाः** मराठीभाषया वदन्ति।
9. आतङ्कवादिना जनानां **हत्या कृता**।	9. आतङ्कवादिना जनानां **हननं कृतम्**।
10. कृपया संस्कृतस्य **सहायं** करोतु मित्र!	10. कृपया संस्कृतस्य **साहाय्यं** करोतु मित्र!
11. राकेशः मम **सहाय्यकः**।	11. राकेशः मम **सहायकः**।
12. अद्यतनं **गायनम्** अत्युत्तमम् आसीत्।	12. अद्यतनं **गानम्** अत्युत्तमम् आसीत्।
13. अद्य **शारीरिकाध्यापकः** अनुपस्थितः।	13. अद्य **शारीरकाध्यापकः** अनुपस्थितः।
14. भवता **कतमं पुस्तकम्** इष्यते।	14. भवता **कतमत् पुस्तकम्** इष्यते।
15. विकाशमहोदयः **उदारी अस्ति**।	15. विकाशमहोदयः **उदारः अस्ति**।
16. केनचित् **'सीतायणम्'** इति ग्रन्थः लिखितः।	16. केनचित् **'सीतायनम्'** इति ग्रन्थः लिखितः।

अशुद्धम्	शुद्धम्
17. **कार्यक्रमोपरान्तम्**।	17. **कार्यक्रमानन्तरम्**।
18. संस्कृतगङ्गायां छात्राणां **आवागमनं** विशेषतः दृश्यते।	18. संस्कृतगङ्गायां छात्राणां **गमनागमनं** विशेषतः दृश्यते।
19. **पत्रवितरकः** पत्रं वितरति।	19. **पत्रवितारकः** पत्रं वितरति।
20. **दुर्वासः** कोपशीलः मुनिः।	20. **दुर्वासाः** कोपशीलः मुनिः।
21. अस्माकं **माताश्री** सम्यक् पाठयति।	21. अस्माकं **मातृश्रीः** सम्यक् पाठयति।
22. भाषाक्षेत्रे संस्कृतस्य **महत्त्वं स्थानम्** अस्ति।	22. भाषाक्षेत्रे संस्कृतस्य **महत्त्वभूतं स्थानम्** अस्ति।
23. निरुद्योगः भारतस्य **ज्वलन्तसमस्या** अस्ति।	23. निरुद्योगः भारतस्य **महती समस्या** अस्ति।
24. ह्यः मम मित्रम् **आगतवान्** आसीत्।	24. ह्यः मम मित्रम् **आगतवत्** आसीत्।

विभक्तिगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. मम **छात्रः पण्डितः** भवितव्यः।	1. मम **छात्रेण पण्डितेन** भवितव्यम्।
2. त्वया **सतीशः इव** पण्डितेन भवितव्यम्।	2. त्वया **सतीशेन इव** पण्डितेन भवितव्यम्।
3. **अनुजः इव** चन्दनाय अपि दुग्धं देहि।	3. **अनुजाय इव** चन्दनाय अपि दुग्धं देहि।
4. दुष्टानां **नाशः भाव्यः**।	4. दुष्टानां **नाशेन भाव्यम्**।
5. केषाञ्चित् **दिनानन्तरं** सः प्रयागात् प्रत्यागतः।	5. केषाञ्चित् **दिनानाम् अनन्तरम्** सः प्रयागात् प्रत्यागतः।
6. **सः मित्रं नगरं** प्रेषयित्वा आगतवान्।	6. सः **मित्रं नगरं प्रति** प्रेषयित्वा आगतवान्।
7. यदि सन्देहः तर्हि **मां प्रष्टव्यम्** आसीत्।	7. यदि सन्देहः तर्हि **अहं प्रष्टव्यः** आसम्।
8. एतानि वाक्यानि **संस्कृतभाषायाम्** अनुवदत।	8. एतानि वाक्यानि **संस्कृतभाषया** अनुवदत।
9. **लोकयाने** प्रयागं गच्छामि वा?	9. **लोकयानेन** प्रयागं गच्छामि वा?
10. **मह्यं** महती शिरोवेदना।	10. **मम** महती शिरोवेदना।
11. सः मां **मूर्खमिति** भावयति।	11. सः मां **मूर्ख इति** भावयति।
12. **विकाशं विपिनम्** इत्यादीन् आह्वय।	12. **विकाशः विपिनः** इत्यादीन् आह्वय।
13. **रामे कृष्णे** इत्यादिषु मम स्नेहः।	13. **रामः कृष्णः** इत्यादिषु मम स्नेहः।
14. एषः **महान्** सन्तोषस्य विषयः।	14. एषः **महतः** सन्तोषस्य विषयः।
15. **विश्वाशभ्रात**! अत्र आगच्छ।	15. **विश्वासभ्रातः**! अत्र आगच्छ।
16. सन्धिः समासः **इत्यादिनाम्** अर्थः तेन बोधितः।	16. सन्धिः समासः **इत्यादीनाम्** अर्थः तेन बोधितः।
17. अध्यापिका **विद्यार्थिन्यः** आहूतवती।	17. अध्यापिका **विद्यार्थिनीः** आहूतवती।
18. करुणाशङ्करः **लेखन्यः** क्रीतवान्।	18. करुणाशङ्करः **लेखनीः** क्रीतवान्।
19. प्रियङ्का **अङ्कन्यः** दत्तवती।	19. प्रियङ्का **अङ्कनीः** दत्तवती।
20. महेन्द्रः **मातरः** नमस्कृतवान्।	20. महेन्द्रः **मातॄः** नमस्कृतवान्।
21. रामप्रसादः **चत्वारः बालिकाः** आहूतवान्।	21. रामप्रसादः **चतस्रः बालिकाः** आहूतवान्
22. वीरेन्द्रः **भगिन्यः** सूचितवान्	22. वीरेन्द्रः **भगिनीः** सूचितवान्।
23. ह्यः श्यामस्य सखी **मां** मिलितवती।	23. ह्यः श्यामस्य सखी **मया** मिलितवती।
24. 'संस्कृतगङ्गा' इति पुस्तकम् आपणे **मिलति**।	24. 'संस्कृतगङ्गा' इति पुस्तकम् आपणे **प्राप्यते**।
25. राकेशः श्वः **मिलिष्यति**।	25. राकेशः श्वः **मेलिष्यति**।
26. कपूरः पत्रं **लिखिष्यति**।	26. कपूरः पत्रं **लेखिष्यति**।

अशुद्धम्	शुद्धम्
27. प्रिये! आवयोः पुनः **मिलनं** कदा भवेत्।	27. प्रिये! आवयोः पुनः **मेलनं** कदा भवेत्।
28. श्रमः एव **जयते**।	28. श्रमः एव **जयति**।
29. कृषकः कूपं **खनितवान्**।	29. कृषकः कूपं **खातवान्**।
30. अञ्जूः वस्त्रं **प्रक्षालयित्वा** पठति।	30. अञ्जूः वस्त्रं **प्रक्षाल्य** पठति।

मकारलेखने-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. चन्दनः **गृहं** आगच्छति।	1. चन्दनः **गृहम्** आगच्छति।
2. राकेशः **फलं** इच्छति।	2. राकेशः **फलम्** इच्छति।
3. अनुजेन कार्यं **कृतं** ।	3. अनुजेन कार्यं **कृतम्** ।
4. गोविन्देन पत्रं **पठितं** ।	4. गोविन्देन पत्रं **पठितम्** ।

परसवर्णलेखने-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. अंगणम्	**1. अङ्गणम्**
2. चंचूः	**2. चञ्चूः**
3. अंडम्	**3. अण्डम्**
4. शांतः	**4. शान्तः**
5. पंपा	**5. पम्पा**

अनुस्वार-गत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. सन्यासी	**1. संन्यासी**
2. पुल्लिङ्गः	**2. पुँल्लिङ्गः**
3. पुंल्लिङ्गः	**3. पुंलिङ्गः**
4. संगठनम्	**4. सङ्घटनम् / संघटनम्**
5. संग्या	**5. संज्ञा**

द्वित्त्वलेखने-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. महत्वम्	**1. महत्त्वम्**
2. सत्वम्	**2. सत्त्वम्**
3. तत्वम्	**3. तत्त्वम्**
4. सात्विकम्	**4. सात्त्विकम्**
5. उज्वलः	**5. उज्ज्वलः**
6. पाश्चात्यः	**6. पाश्चात्त्यः**
7. कार्तिकमासः	**6.कार्त्तिकमासः**
8. तज्ञः	**8. तज्ज्ञः**
9. कित्वम्	**9. कित्त्वम्**
10. प्रवृत्या	**10. प्रवृत्त्या**

पदगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. प्राधान्यता	**1. प्राधान्यम्**
2. वैशिष्ट्यता	**2. वैशिष्ट्यम्**
3. ऐक्यता	**3. ऐक्यम्**
4. दार्ढ्यता	**4. दार्ढ्यम्**
5. मौर्ख्यता	**5. मौर्ख्यम्**
6. काठिन्यता	**6. काठिन्यम्**
7. शौर्यता	**7. शौर्यम्**
8. वैरस्यता	**8. वैरस्यम्**
9. नैपुण्यता	**9. नैपुण्यम्**
10. प्रामुख्यता	**10. प्रामुख्यम्**
11. वैविध्यता	**11. वैविध्यम्**
12. साफल्यता	**12. साफल्यम्**
13. प्रावीण्यता	**13. प्रावीण्यम्**
14. नावीन्यता	**14. नावीन्यम्**
15. प्रामाण्यता	**15. प्रामाण्यम्**
16. कोसः	**16. कोषः/कोशः**
17. कृसकः	**17. कृषकः/कृषिकः**
18. मूसकः	**18. मूषकः/ मूषिकः**
19. नारियलः	**19. नारिकेलः/नालिकेरः**
20. प्रतकारः	**20. प्रतिकारः/प्रतीकारः**
21. हनुमान	**21. हनूमान् /हनुमान्**
22. अंगुली	**22. अङ्गुलिः/अङ्गुली**
23. प्रतिनित्यम्	**23. प्रतिदिनम्**
24. कनीयः	**24. कनीयान्**
25. प्रश्नोत्तरीस्पर्धा	**25. प्रश्नोत्तरस्पर्धा**

शब्दरूप-गत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. ग्यानम्।	**1. ज्ञानम्**
2. उट्टङ्कणम् ।	**2. उट्टङ्कनम्**
3. प्रकटणम् ।	**3. प्रकटनम्**
4. मनम्	**4. मनः**
5. दुखम्	**5. दुःखम्**
6. ब्रम्हा	**6. ब्रह्मा**
7. आल्हादः	**7. आह्लादः**
8. लक्ष्मी	**8. लक्ष्मीः**
9. श्री	**9.श्रीः**
10. चञ्चू	**10. चञ्चूः**
11. वधू	**11. वधूः**
12. दधिः	**12. दधि**
13. श्मश्रुः	**13. श्मश्रु**
14. जानुः	**14. जानु**
15. स्यालः	**15.श्यालः**
16. स्वशुरः	**16. श्वसुरः**
17. स्वश्रू	**17. श्वश्रूः**
18. स्मशानम्	**18. श्मशानम्**
19. ह्रस्वः	**19. ह्रस्वः**
20. बहुर्वीहिः	**20. बहुव्रीहिः**
21. प्रभोदनम्	**21. प्रबोधनम्**
22. अघादः	**22. अगाधः**
23. घर्जनम्	**22. गर्जनम्**
24. निश्वस्य	**24. निःश्वस्य**
25. शत्रुप्रत्ययः	**25. शतृप्रत्ययः**
26. नाण्यकम्	**26. नाणकम्**
27. कोट्याधिपतिः	**27. कोट्यधिपतिः**
28. भानुमतिः	**28. भानुमती**
29. सुमती	**29. सुमतिः**
30. सन्मानः	**30. सम्मानः**
31. मध्यन्तरम्	**31. मध्यान्तरम्**
32. उच्छाटनम्	**32. उच्चाटनम्**
33. उच्चिष्टम्	**33. उच्छिष्टम्**
34. कलियुगः	**34. कलियुगम्**
35. दोषाणि	**35. दोषाः**
36. तालुः	**36. तालु**
37. साम्राट्	**37. सम्राट्**
38. फलितकेशः	**38. पलितकेशः**
39. पारितोषकम्	**39. पारितोषिकम्**
40. पित्थम्	**40. पित्तम्**
41. जञ्झावातः	**41. झञ्झावातः**
42. जर्झरितः	**42. झर्झरितः/जर्जरितः**
43. मार्ताण्डः	**43. मार्तण्डः**
44. अक्षोहिणी सेना	**44. अक्षौहिणी सेना**
45. जोतिषिकः	**45. ज्यौतिषिकः/ज्योतिषिकः**
46. वैय्याकरणः	**46. वैयाकरणः**
47. जनार्धनः	**47. जनार्दनः**
48. सिन्धूरम्	**48. सिन्दूरम्**
49. अम्बरीशः	**49. अम्बरीषः**
50. पौर्णिमा	**50. पूर्णिमा**

धातुरूप-गत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. श्रुणोति/श्रृणोति	**1. शृणोति**
2. गृहीष्यति	**2. ग्रहीष्यति**
3. रुदति/रोदति	**3. रोदिति**
4. लिखिष्यति	**4. लेखिष्यति**
5. मिलिष्यति	**5. मेलिष्यति**
6. जानति	**6. जानाति**
7. जानतु	**7. जानातु**
8. प्रतिजानाति	**8. प्रतिजानीते**
9. क्रयति	**9. क्रीणाति**
10. विक्रयति	**10. विक्रीणीते**
11. बन्धयति	**11. बध्नाति**
12. मन्थति	**12. मथ्नाति**
13. तनति	**13. तनोति**
14. तनतु	**14. तनोतु**
15. भोजते	**15. भुङ्क्ते**
16. भोजसे	**16. भुङ्क्षे**
17. भोजति	**17. भुनक्ति**
18. रोधति	**18. रुणद्धि**
19. रोधेत्	**19. रुन्ध्यात्**
20. छेदति	**20. छिनत्ति**
21. भेदति	**21. भिनत्ति**

अशुद्धम्	शुद्धम्
22. मरति	**22. म्रियते**
23. मरिष्यते	**23. मरिष्यति**
24. उड्डयति	**24. उड्डीयते/उड्डयते**
25. जिज्ञासति	**25. जिज्ञासते**
26. शुश्रूषति	**26. शुश्रूषते**
27. दिदृक्षति	**27. दिदृक्षते**
28. गामयति	**28. गमयति**
29. घनयति	**29. घातयति**
30. हनति	**30. हन्ति**
31. हनामि	**31. हन्मि**
32. हंस्यति	**32. हनिष्यति**
33. दायते	**33. दीयते**
34. पायते	**34. पीयते**
35. कृयते	**35. क्रियते**
36. वच्यते	**36. उच्यते**
37. दोहति/दुहति	**37. दोग्धि**
38. दोहिष्यति	**38. धोक्ष्यति**
39. ब्रवसि	**39. ब्रवीषि**
40. ब्रव	**40. ब्रूहि**
41. ब्रवेत्	**41. ब्रूयात्**
42. ब्रूष्यति	**42. वक्ष्यति**
43. तिष्ठियसि	**43. स्थास्यसि**
44. स्थामि	**44. तिष्ठामि**
45. दृश्यति	**45. पश्यति**
46. घ्रामः	**46. जिघ्राम**
47. मोदति	**47. मोदते**
48. जानिष्यमि	**48. ज्ञास्यामि**
49. ग्रहणाति	**49. गृह्णाति**
50. मोचते	**50. मुञ्चति**
51. स्पर्शति	**51. स्पृशति**
52. प्रच्छति	**52. पृच्छति**
53. प्रक्षिष्यति	**53. प्रक्ष्यति**
54. इच्छिष्यति	**54. एषिष्यति**
55. शक्नोसि	**55. शक्नोषि**
56. शक्नोष्यति	**56. शक्ष्यति**
57. नर्तति	**57. नृत्यति**
58. ददान्ति	**58. ददति**
59. शयति	**59. शेते**
60. हनन्ति	**60. घ्नन्ति**

अशुद्धम्	शुद्धम्
61. रोदन्ति	**61. रुदन्ति**
62. रोदामि	**62. रोदिमि**
63. स्वपति	**63. स्वपिति**
64. रोदामः	**64. रुदिमः**
65. दुहसि/दोहसि	**65. धोक्षि**
66. दोहिष्यति	**66. धोक्ष्यति**
67. ब्रवति	**67. ब्रवीति**
68. अदति	**68. अत्ति**
69. नयिष्यति	**69. नेष्यति**
70. लभति	**70. लभते**
71. वसिष्यति	**71. वत्स्यति**
72. श्रुणोमि	**72. शृणोमि**
73. जयते	**73. जयति**
74. जयिष्यति	**74. जेष्यति**
75. पिबिष्यति	**75. पास्यति**
76. जिघ्राष्यति	**76. घ्रास्यति**
77. पश्यिष्यति	**77. द्रक्ष्यति**
78. गच्छिष्यति	**78. गमिष्यति**
79. नमिष्यति	**79. नंस्यति**
80. पचिष्यति	**80. पक्ष्यति**
81. लभन्ति	**81. लभन्ते**
82. लेखापयति	**82. लेखयति**
83. खिद्यति	**83. खिद्यते**
84. वञ्चयति	**84. वञ्चयते**
85. विक्रीणाति	**85. विक्रीणीते**
86. शुध्यते	**86. शुध्यति**
87. भापयति	**87. भाययति**
88. आश्रियते	**88. आश्रीयते**
89. प्रस्थास्यामः	**89. प्रस्थास्यामहे**
90. निहन्ति	**90. निघ्नन्ति**
91. चर्चिष्यामः	**91. चर्चयिष्यामः**

कृत्-प्रत्ययगत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. शृतवान्	**1. श्रुतवान्**
2. श्रुण्वन्	**2. शृण्वन्**
3. ग्रहणन्	**3. गृह्णन्**
4. शृत्वा	**4. श्रुत्वा**

अशुद्धम्	शुद्धम्
5. गृहीतुम्	**5. ग्रहीतुम्**
6. गृहीतव्यम्	**6. ग्रहीतव्यम्**
7. ग्रहीतवान्	**7. गृहीतवान्**
8. आपृच्छनम्	**8. आप्रच्छनम्**
9. बद्धव्यम्	**9. बन्धव्यम्**
10. बद्धुम्	**10. बन्धुम्**
11. उत्तीर्त्वा	**11. उत्तीर्य**
12. आह्वाय	**12. आहूय**
13. वक्तवा	**13. उक्त्वा**
14. दुहित्वा	**14. दुग्ध्वा**
15. तरित्वा	**15. तीर्त्वा**
16. ग्रहीत्वा	**16. गृहीत्वा**
17. लिखितुम्	**17. लेखितुम्**
18. दुग्धुम्	**18. दोग्धुम्**
19. सहितुम्	**19. सोढुम्**
20. प्रच्छितुम्	**20. प्रष्टुम्**
21. शयन्ती	**21. शयाना**
22. अधीयती	**22. अधीयाना**
23. गायती	**23. गायन्ती**
24. आगच्छती	**24. आगच्छन्ती**
25. रुदन्ती	**25. रुदती**
26. पक्तम्	**26. पक्वम्**
27. शुषितः	**27. शुष्कः**
28. वप्तम्	**28. उप्तम्**
29. छित्वा	**29. छित्त्वा**
30. भित्वा	**30. भित्त्वा**
31. दत्वा	**31. दत्त्वा**
32. नोदितवान्	**32. नुन्नवान्**
33. सिञ्चितवान्	**33. सिक्तवान्**
34. खनितवान्	**34. खातवान्**
35. आकर्षितवान्	**35. आकृष्टवान्**
36. गिलितवान्	**36. गीर्णवान्**
37. प्रयतितवान्	**37. प्रयत्तवान्**
38. चयितवान्	**38. चितवान्**
39. जागृतः	**39. जागरितः**
40. अपक्तम्	**40. अपक्वम्**
41. उषितुम्	**41. वस्तुम्**
42. उपन्यस्तुम्	**42. उपन्यसितुम्**
43. तर्तुम्	**43. तरितुम्/तरीतुम्**
44. आह्वयितव्यः	**44. आह्वातव्यः**
45. जाप्यव्यम्	**45. जपितव्यम्**
46. इच्छितव्यम्	**46. एष्टव्यम्**
47. ददन्	**47. ददत्**
48. कुर्वन्ती	**48. कुर्वती**
49. निधत्तवान्	**49. निहितवान्**
50. ताडितव्याः	**50. ताडयितव्यः**
51. वितरितानि	**51. वितीर्णानि**
52. छेदितवान्	**52. छिन्नवान्**
53. प्रक्षालयित्वा	**53. प्रक्षाल्य**
54. परिवर्तयित्वा	**54. परिवर्त्य**
55. समापयित्वा	**55. समाप्य**
56. परिवेषयित्वा	**56. परिवेष्य**
57. प्रकटयित्वा	**57. प्रकटय्य**
58. उत्पादयित्वा	**58. उत्पाद्य**
59. प्रदर्शयित्वा	**59. प्रदर्श्य**
60. सङ्कटयित्वा	**60. सङ्कटय्य**
61. सम्मार्जयित्वा	**61. सम्मार्ज्य**
62. उद्घाटयित्वा	**62. उद्घाट्य**
63. प्रार्थयित्वा	**63. प्रार्थ्य**
64. अज्ञाय	**64. अज्ञात्वा**
65. विरच्य	**65. विरचय्य**
66. मुद्राप्य	**66. मुद्रयित्वा**
67. परिवृत्य	**67. परिवर्त्य**
68. लक्षीकृत्य	**68. लक्ष्यीकृत्य**
69. प्रजवाल्य	**69. प्रज्वाल्य**
70. गीतं गात्वा	**70. गीतं गीत्वा**
71. आज्ञप्य	**71. आज्ञाप्य**
72. प्रतिदत्वा	**72. प्रतिदाय**
73. मिलतुम्	**73. मेलितुम्**
74. गम्तुम्	**74. गन्तुम्**
75. पठतुम्	**75. पठितुम्**

स्त्रीप्रत्यय-गत-दोषाः

अशुद्धम्	शुद्धम्
1. अध्यापकी	**1. अध्यापिका**
2. लेखकी	**2. लेखिका**

अशुद्धम्	शुद्धम्	अशुद्धम्	शुद्धम्
3. उपन्यासकी	**3. उपन्यासिका**	17. षाण्मासिका	**17. षाण्मासिकी**
4. नायकी	**4. नायिका**	18. प्राचीनी	**18. प्राचीना**
5. उद्घोषकी	**5. उद्घोषिका**	19. नवीनी	**19. नवीना**
6. सेवकी	**6. सेविका**	20. नूतनी	**20. नूतना**
7. अनुवादकी	**7. अनुवादिका**	21. भयङ्करी	**21. भयङ्करा**
8. विभूषकी	**8. विभूषिका**	22. सहोदरी	**22. सहोदरा**
9. अध्यक्षिणी	**9. अध्यक्षा**	23. युवती	**23. युवतिः**
10. सिंहिणी	**10. सिंही**	24. स्वाभाविका	**24. स्वाभाविकी**
11. सुन्दरा	**11. सुन्दरी**	25. पावना	**25. पावनी**
12. सनातना	**12. सनातनी**	26. शूर्पणखी	**26. शूर्पणखा**
13. पुरातना	**13. पुरातनी**	27. पिशाचा	**27. पिशाची**
14. आधुनिका	**14. आधुनिकी**	28. नैजा आकृतिः	**28. नैजी आकृतिः**
15. इदानीन्तना	**15. इदानीन्तनी**	29. जनगणतिः	**29. जनगणना**
16. वार्षिका	**16. वार्षिकी**	30. नर्तकिः	**30. नर्तकी**

महत्त्वपूर्ण तथ्य

*	अष्टाध्यायी में प्रगृह्यसंज्ञासूत्र हैं	**8**
*	आर्धधातुकसंज्ञा सूत्र हैं	**4**
*	अव्ययसंज्ञासूत्र हैं	**5**
*	प्रातिपदिकसंज्ञासूत्र हैं	**2**
*	इत्संज्ञा सूत्र हैं	**6**
*	पदसंज्ञासूत्र हैं	**4**
*	अपादानसंज्ञासूत्र हैं	**8**
*	सम्प्रदानसंज्ञासूत्र हैं	**10**
*	'कारके' (1.4.23) के अधिकार में सूत्र पठित हैं	**32**
*	''कर्मप्रवचनीयाः'' के अधिकार में सूत्र पठित हैं	**15**
*	अष्टाध्यायी के त्रिपादी का प्रथमसूत्र है	**पूर्वत्रासिद्धम् (8.2.1)**
*	भर्तृहरि के वाक्यपदीय में तीन काण्ड हैं -	**वाक्यकाण्ड, पदकाण्ड, ब्रह्मकाण्ड**
*	स्वरसन्धि के आठ भेद -	**यण्, अयादि, गुण, वृद्धि, दीर्घ, पररूप, पूर्वरूप, प्रकृतिभाव**
*	आठ स्त्रीप्रत्यय -	**टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति**
*	स्फोट कितने हैं -	**8**
*	महाभाष्य में पतञ्जलि का प्रथमवाक्य है -	**''अथ शब्दानुशासनम्''**
*	''संग्रह'' ग्रन्थ के प्रणेता -	**व्याडिः**
*	व्याकरणशास्त्र के प्रथम प्रवक्ता -	**ब्रह्मा**
*	पाँच दार्शनिक वैयाकरण -	**स्फोटायन, औदुम्बरायण, व्याडि, पतञ्जलि, भर्तृहरिः**
*	पाणिनि की निधनतिथि मानी जाती है -	**त्रयोदशी**
*	**अष्टाध्यायी**-अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः (समाहारद्विगुः)	

11. व्याकरणस्य सामान्य-परिचयः

1. पाणिनि के पिता का नाम है -
(अ) शालंक (इ) वाभ्रव्य
(उ) पणिन् (पणिन) (ऋ) शाकल्य

2. पाणिनि की माता का नाम है -
(अ) दाक्षायणी (इ) दाक्षी
(उ) आर्या (ऋ) लोपामुद्रा

3. पाणिनि के गुरु का नाम है -
(अ) वर्ष (इ) उपोवर्ष
(उ) माहेश्वर (ऋ) शाकटायन

4. पाणिनि कहाँ के निवासी माने जाते हैं -
(अ) शालातुर (इ) गोनर्द
(उ) वाहीक (ऋ) कटक

5. पाणिनि के पितामह माने जाते हैं -
(अ) शलंक (इ) पणि
(उ) शाकल्य (ऋ) वाभ्रव्य

6. 'पाणिनि को विद्वानों ने किस अपर नाम से सम्बोधित किया है -
(अ) शालङ्किः, आहिकः (इ) शालातुरीयः
(उ) दाक्षीपुत्रः, पणिपुत्रः (ऋ) उपर्युक्त सभी

7. ''व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन इति'' इस व्युत्पत्ति से सम्बद्ध है -
(अ) वेद (इ) पुराण
(उ) व्याकरण (ऋ) शिक्षा

8. वेद पुरूष का मुख माना जाता है -
(अ) शिक्षा (इ) निरुक्त
(उ) ज्योतिष (ऋ) व्याकरण

9. 'व्याकरण' का दूसरा नाम है -
(अ) शब्दानुशासनम् (इ) वाक्यानुशासनम्
(उ) लिङ्गानुशासनम् (ऋ) धात्वानुशासनम्

**10. 'नृत्तावसाने नटराजराजो
ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम् ।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान्
एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्'' — यह किसका कथन है -**
(अ) पतञ्जलिः (इ) नन्दिकेश्वरः
(उ) कात्यायनः (ऋ) नागेशभट्टः

11. व्याकरण प्रयोजन के विषय में ''रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्'' यह कथन किसका है -
(अ) पतञ्जलिः (इ) पाणिनिः
(उ) कात्यायनः (ऋ) भट्टोजिदीक्षितः

12. व्याकरण के मुख्य प्रयोजन कितने माने जाते हैं -
(अ) 14 (इ) 5
(उ) 13 (ऋ) 42

13. व्याकरण के गौण प्रयोजनों की संख्या है -
(अ) 13 (इ) 18
(उ) 14 (ऋ) 42

14. 'अष्टाध्यायी' के अतिरिक्त पाणिनि की रचना मानी जाती है -
(अ) जाम्बवतीजयम् (इ) स्वर्गारोहणम्
(उ) पार्वतीविजयम् (ऋ) त्रिपुरविजयम्

15. पाणिनीय ''पञ्चाङ्गव्याकरण'' के अन्तर्गत नहीं गिना जाता है -
(अ) सूत्रपाठ, गणपाठ (इ) धातुपाठ, उणादिपाठ
(उ) लिङ्गानुशासनम् (ऋ) वाक्यपाठ, घनपाठ

16. अष्टाध्यायी के ऊपर लिखे गये वार्तिकों की संख्या लगभग कितनी मानी जाती है—
(अ) 4000 (इ) 5000
(उ) 8000 (ऋ) 1000

17. अष्टाध्यायी का अपरनाम (पर्यायनाम) क्या है -
(अ) शब्दानुशासन (इ) अष्टक
(उ) वृत्तिसूत्र (ऋ) उपर्युक्त सभी

1. (उ), 2. (इ), 3. (अ), 4. (अ), 5. (अ), 6. (ऋ), 7. (उ) 8. (ऋ), 9. (अ) 10. (इ), 11. (अ), 12. (इ), 13. (अ), 14. (अ),15.(ऋ), 16. (इ), 17. (ऋ),

18. संस्कृत के कौन से दो ग्रन्थ 'जगन्माता' और 'जगत्पिता' के नाम से विख्यात हैं -
(अ) अष्टाध्यायी – अमरकोष
(इ) कादम्बरी - महाभारत
(उ) गीता – भागवत
(ऋ) काशिका – महाभाष्य

19. धातु के भेद माने जाते हैं -
(अ) परस्मैपद (इ) आत्मनेपद
(उ) उभयपद (ऋ) उपर्युक्त सभी

20. ''दधाति धारयति विविधान् क्रियार्थान् इति'' – इससे सम्बद्ध है -
(अ) वाक्यम् (इ) पदम्
(उ) धातुः (ऋ) लिङ्गम्

21. परस्मैपद धातुओं का प्रत्यय नहीं है -
(अ) तिप् तस् झि (इ) सिप् थस् थ
(उ) मिप् वस् मस् (ऋ) इड् वहि महिङ्

22. आत्मनेपद धातुओं का प्रत्यय नहीं है–
(अ) मिप् वस् मस् (इ) त आताम् झ
(उ) थास् आथाम् ध्वम् (ऋ) इट् वहि महिङ्

23. संस्कृत में लकार कितने माने जाते हैं -
(अ) 5 (इ) 10
(उ) 14 (ऋ) 3

24. पद के चार प्रकारों में नहीं गिना जाता है -
(अ) सुबन्त (इ) तिङन्त
(उ) उपसर्ग, निपात (ऋ) लकार

25. 'प्रत्याहार' शब्द में प्रकृति/प्रत्यय है -
(अ) प्रति आङ् हृ घञ् (इ) प्रति आहृ ण्वुल्
(उ) प्रति आह तृच् (ऋ) प्रति हञ् तृच्

26. ''सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिनेः'' – इस श्लोकांश से क्या सिद्ध होता है -
(अ) पाणिनि को सिंह ने मारा था
(इ) सिंह को पाणिनि ने मारा था
(उ) पाणिनि ने सिंह को भी व्याकरण पढ़ाया था
(ऋ) पाणिनि सिंह के साथ रहते थे

27. युधिष्ठिर मीमांसक पाणिनि का काल (समय) क्या मानते हैं -
(अ) 2700 विक्रमपूर्व (इ) 2900 विक्रमपूर्व
(उ) 1200 विक्रमपूर्व (ऋ) 1800 विक्रमपूर्व

28. महर्षि पतञ्जलि का काल माना जात है -
(अ) 2700 विक्रमपूर्व (इ) 2900 विक्रमपूर्व
(उ) 2000 विक्रमपूर्व (ऋ) 1200 विक्रमपूर्व

29. ''यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्'' के अनुसार व्याकरण में किसे अन्तिम प्रमाण माना जाता है -
(अ) पाणिनि (इ) पतञ्जलि
(उ) कात्यायन (ऋ) भट्टोजिदीक्षित

30. महर्षि पतञ्जलि की जन्मभूमि मानी जाती है -
(अ) शालातुर (इ) गोनर्द (गोण्डा)
(उ) महाराष्ट्र (ऋ) वाहीक

31. भट्टोजिदीक्षित के पिता का नाम है -
(अ) रङ्गोजिभट्ट (इ) लक्ष्मीधर
(उ) शेषकृष्ण (ऋ) भानुजिदीक्षित

32. सिद्धान्तकौमुदीकार भट्टोजिदीक्षित के गुरू माने जाते हैं -
(अ) लक्ष्मीधर (इ) भानुजीदीक्षित
(उ) रङ्गोजिभट्ट (ऋ) शेषकृष्ण

33. वार्तिककार वररुचि कात्यायन का काल माना जाता है -
(अ) 1800 विक्रमपूर्व (इ) 2700 विक्रमपूर्व
(उ) 1200 विक्रमपूर्व (ऋ) 2900 विक्रमपूर्व

18. (अ), 19. (ऋ),20. (उ), 21. (ऋ), 22. (अ), 23. (इ), 24. (ऋ), 25. (अ) 26. (अ), 27. (इ), 28. (ऋ), 29. (इ), 30. (इ), 31. (इ), 32. (ऋ), 33. (इ)।

व्याकरणस्य केचन प्रमुखग्रन्थाः

ग्रन्थः	ग्रन्थकारः
1. अष्टाध्यायी	पाणिनिः
2. महाभाष्यम्	पतञ्जलि
3. सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजिदीक्षितः
4. प्रौढमनोरमा	भट्टोजिदीक्षितः
5. प्रक्रियाकौमुदी	रामचन्द्रः
6. लिङ्गानुशासनम्	व्याडिः
7. वाक्यपदीयम्	भर्तृहरिः
8. मनोरमाकुचमर्दनम्	पण्डितराजजगन्नाथः
9. लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराजः
10. मध्यसिद्धान्तकौमुदी	वरदराजः
11. सारसिद्धान्तकौमुदी	वरदराजः
12. शब्देन्दुशेखर	नागेशभट्टः
13. परिभाषेन्दुशेखर	नागेशभट्टः
14. वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा	नागेशभट्टः
15. लघुमञ्जूषा	नागेशभट्टः
16. परमलघुमञ्जूषा	नागेशभट्टः
17. सरस्वतीकण्ठाभरणम्	भोजदेवः
18. महाभाष्य की ''प्रदीप'' नाम्नी व्याख्या	कैयटः
19. काशिकावृत्तिः	जयादित्य एवं वामन
20. काशिकाविवरण पञ्जिका	जिनेन्द्रबुद्धिः
21. काशिका की ''पदमञ्जरी'' व्याख्या	हरदत्तः
22. वैयाकरणभूषण	कौण्डभट्टः
23. वैयाकरणभूषणसार	कौण्डभट्टः
24. महाभाष्यप्रत्याख्यानसंग्रहः	नागेशभट्टः
25. कातन्त्रव्याकरण	शर्ववर्मा (कौमार)

ग्रन्थः	ग्रन्थकारः
26. शिवशब्दानुशासनम्	शिवस्वामी
27. सिद्धान्तकौमुदी की व्याख्या ''तत्त्वबोधिनी''	ज्ञानेन्द्र सरस्वती
28. सिद्धान्तकौमुदी की ''बालमनोरमा'' व्याख्या	वासुदेवदीक्षितः
29. जाम्बवतीविजयम्	पाणिनिः
30. स्वर्गारोहणम्	कात्यायनः (वररुचिः)
31. रूपावतारः	धर्मकीर्तिः
32. व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधिः	विश्वेश्वर पाण्डेयः
33. स्फोटवाद	नागेशभट्टः
34. अष्टाध्यायीभाष्यवृत्तिः	दयानन्द सरस्वती
35. रूपमाला	विमलसरस्वती
36. प्रक्रियासर्वस्वम्	नारायणभट्टः
37. महाभाष्यदीपिका	भर्तृहरिः
38. महाभाष्यप्रदीप की 'उद्योत' टीका	नागेशभट्टः
39. मुग्धबोधव्याकरणम्	वोपदेवः
40. सारस्वतव्याकरणम्	अनुभूतिस्वरूपाचार्य
41. प्राकृतप्रकाशः	वररुचिः
42. शब्दानुशासनम्	हेमचन्द्रः
43. दुर्घटवृत्ति	मैत्रेयरक्षित
44. शब्दकौस्तुभम्	भट्टोजिदीक्षित
45. चान्द्रव्याकरणम्	चन्द्रगोमी
46. महानन्दकाव्य	पतञ्जलिः
47. भट्टिकाव्य (रावणवध)	भट्टिकवि

परिशिष्टभागः

स्वरसन्धि-उदाहरणम् (अकारादि क्रम से)

दीर्घ-सन्धिः

सूत्रम् = 'अकः सवर्णे दीर्घः

अ/आ + सवर्ण अच् = आ

अत्र + आसीत् = **अत्रासीत्**
अस्त + अचलः = **अस्ताचलः**
अन्त्य + आदिः = **अन्त्यादिः**
अमित + आनन्दः = **अमितानन्दः**
अल्प + अल्पः = **अल्पाल्पः**
अन्त + आरोपितः = **अन्तारोपितः**
अद्य + अपि = **अद्यापि**
अद्य + अस्माभिः = **अद्यास्माभिः**
अन्य + आरात् = **अन्यारात्**
अवसान + अर्थः = **अवसानार्थः**
अम्बा + अर्थः = **अम्बार्थः**
अधर + अधरः = **अधराधरः**
अत्र + अनुनासिकः = **अत्रानुनासिकः**
अष्ट + अशीतिः = **अष्टाशीतिः**
अद्य + आगतः = **अद्यागतः**
अन्न + अभावः = **अन्नाभावः**
अङ्गेन + अङ्गम् = **अङ्गेनाङ्गम्**
अल्प + अर्धः = **अल्पार्धः**
अलीक + अभिमानी = **अलीकाभिमानी**
आम्रेडित + अन्तेषु = **आम्रेडितान्तेषु**
आज्ञा + अनुसारः = **आज्ञानुसारः**
आदर + अनादरः = **आदरानादरः**
आनन्द + अवसरः = **आनन्दावसरः**
इव + अत्र = **इवात्र**
इव + आत्मा = **इवात्मा**
इव + अस्य = **इवास्य**
इव + अपहारयेत् = **इवापहारयेत्**
उत्तम + अङ्गः = **उत्तमाङ्गः**
उत्तर + अवकाशः = **उत्तरावकाशः**
उच्चारण + अर्थः = **उच्चारणार्थः**
उदात्त + अनुनासिकः = **उदात्तानुनासिकः**
ऊर्ध्व + अधरः = **ऊर्ध्वाधरः**
एक + अजनाङ् = **एकाजनाङ्**
एव + आहुतिः = **एवाहुतिः**
एकेन + अपि = **एकेनापि**
कर + अग्रम् = **कराग्रम्**
कमल + आकरः = **कमलाकरः**
कर्म + अकर्म = **कर्माकर्म**
कच + अचितौ = **कचाचितौ**
कल्याण + अभिनिवेशः = **कल्याणाभिनिवेशः**
कषायित + आत्मनः = **कषायितात्मनः**
कमल + आमोदः = **कमलामोदः**
कक्षा + अस्ति = **कक्षास्ति**
कल्प + अन्तः = **कल्पान्तः**
करुणा + अवतारः = **करुणावतारः**
कदा + आगतः = **कदागतः**
कदा + अत्र = **कदात्र**
कंस + अरिः = **कंसारिः**
कार्य + अर्थी = **कार्यार्थी**
कार्य + आलयः = **कार्यालयः**
कार्य + आरम्भः = **कार्यारम्भः**
काव्य + आदर्शः = **काव्यादर्शः**
किरात + अर्जुनीयम् = **किरातार्जुनीयम्**
क्रिया + अपवर्गे = **क्रियापवर्गे**
कुल + अभिमानी = **कुलाभिमानी**
कुश + आसनम् = **कुशासनम्**
कृत + आकृती = **कृताकृती**
कृत + आधिपत्याम् = **कृताधिपत्याम्**
क्रोध + अग्निः = **क्रोधाग्निः**
क्रोड + अधीनम् = **क्रोडाधीनम्**
गङ्गा + अवतरणम् = **गङ्गावतरणम्**
गच्छ + अरण्यम् = **गच्छारण्यम्**
जग्ध्वा + अरण्येषु = **जग्ध्वारण्येषु**
जाल + अवलम्बा = **जालावलम्बा**
तव + अनुकम्पा = **तवानुकम्पा**
तव + आकारः = **तवाकारः**
तथा + अपि = **तथापि**
तद्धित + अर्थः = **तद्धितार्थः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
तव + अनुभावः	= **तवानुभावः**
तव + अभिधानम्	= **तवाभिधानम्**
तदर्थ + अर्थः	= **तदर्थार्थः**
तव + अर्थे	= **तवार्थे**
तव + अधुना	= **तवाधुना**
तत्र + आगारम्	= **तत्रागारम्**
तत्र + अवश्यम्	= **तत्रावश्यम्**
तत्र + आसीत्	= **तत्रासीत्**
तया + अल्पार्धः	= **तयाल्पार्धः**
तेन + अद्य	= **तेनाद्य**
दश + अवतारः	= **दशावतारः**
दण्ड + आघातः	= **दण्डाघातः**
दया + अर्थी	= **दयार्थी**
दया + अर्णवः	= **दयार्णवः**
दण्ड + अग्रम्	= **दण्डाग्रम्**
दिव्य + अम्बरः	= **दिव्याम्बरः**
दिवा + आकरः	= **दिवाकरः**
दिवस + अन्तः	= **दिवसान्तः**
दिन + आदौ	= **दिनादौ**
द्वितीया + आम्रेडितम्	= **द्वितीयाम्रेडितम्**
दीर्घ + अभावात्	= **दीर्घाभावात्**
दुष्यन्तेन + आहितम्	= **दुष्यन्तेनाहितम्**
दूर + अन्तिकः	= **दूरान्तिकः**
दूर + अर्थः	= **दूरार्थः**
देव + आलोकः	= **देवालोकः**
देश + अधिपतिः	= **देशाधिपतिः**
देह + अन्तः	= **देहान्तः**
देव + आलयः	= **देवालयः**
देव + अरिः	= **देवारिः**
देव + आश्रमः	= **देवाश्रमः**
दैत्य + अरिः	= **दैत्यारिः**
धन + आदेशः	= **धनादेशः**
धन + आगमः	= **धनागमः**
धन + अर्चिता	= **धनार्चिता**
न + अभवत्	= **नाभवत्**
नव + अशीतिः	= **नवाशीतिः**
न + अवगच्छन्ति	= **नावगच्छन्ति**
न + अवसीदति	= **नावसीदति**
न + अधमे	= **नाधमे**
नाम + अपि	= **नामापि**
नित्य + आनन्दः	= **नित्यानन्दः**
निज + अधमः	= **निजाधमः**
निशित + अङ्कुशेन	= **निशिताङ्कुशेन**
नील + आकाशः	= **नीलाकाशः**
नील + अञ्चलः	= **नीलाञ्चलः**
नैव + आकृतिः	= **नैवाकृतिः**
परम + अर्थः	= **परमार्थः**
पञ्च + अशीतिः	= **पञ्चाशीतिः**
परम + आनन्दः	= **परमानन्दः**
परम + आवश्यकः	= **परमावश्यकः**
परम + आत्मा	= **परमात्मा**
पद्म + आसनम्	= **पद्मासनम्**
प्र + आदयः	= **प्रादयः**
प्रत्यय + आदेशः	= **प्रत्ययादेशः**
प्रमाद + अर्थानाम्	= **प्रमादार्थानाम्**
प्रत्यय + आदीनाम्	= **प्रत्ययादीनाम्**
प्रणाम + अञ्जलिः	= **प्रणामाञ्जलिः**
प्रहार + आहता	= **प्रहाराहता**
प्रदेश + आगमः	= **प्रदेशागमः**
प्राप्य + अवन्ती	= **प्राप्यावन्ती**
प्रायेण + अधमः	= **प्रायेणाधमः**
प्राप्त + आपन्नः	= **प्राप्तापन्नः**
प्रातिपदिक + अर्थः	= **प्रातिपदिकार्थः**
पुष्कर + आवर्तकः	= **पुष्करावर्तकः**
पुस्तक + अर्थी	= **पुस्तकार्थी**
पुष्प + अञ्जलिः	= **पुष्पाञ्जलिः**
पूर्वत्र + असिद्धम्	= **पूर्वत्रासिद्धम्**
पूर्व + अवकाशः	= **पूर्वावकाशः**
प्रेम + आकर्षणम्	= **प्रेमाकर्षणम्**
प्रेम + अभिलाषा	= **प्रेमाभिलाषा**
फल + आशयः	= **फलाशयः**
बिम्ब + अधरः	= **बिम्बाधरः**
भ्रष्ट + आचारः	= **भ्रष्टाचारः**
भ्राता + आदिशति	= **भ्रातादिशति**
भय + आक्रान्तः	= **भयाक्रान्तः**
भ्रूविलास + अनभिज्ञैः	= **भ्रूविलासानभिज्ञैः**
भूतैरिव + अभिभूयन्ते	= **भूतैरिवाभिभूयन्ते**
मदन + अन्तकः	= **मदनान्तकः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
मम + आधयः	= **ममाधयः**
मम + अयम्	= **ममायम्**
मज्जतीव + अन्तरात्मा	= मज्जतीवान्तरात्मा
मन्द + आक्रान्ता	= **मन्दाक्रान्ता**
मम + आज्ञा	= **ममाज्ञा**
मर्कट + आसनम्	= **मर्कटासनम्**
मम + अनुमत्या	= **ममानुमत्या**
मद्गोत्र + अङ्कः	= **मद्गोत्राङ्कः**
महा + आलयः	= **महालयः**
महा + अर्णवः	= **महार्णवः**
महा + आत्मा	= **महात्मा**
महा + अनुभावः	= **महानुभावः**
माया + अधीनः	= **मायाधीनः**
महा + आशयः	= **महाशयः**
मृग + अङ्कः	= **मृगाङ्कः**
मेघ + आलोके	= **मेघालोके**
यदा + अभवत्	= **यदाभवत्**
यथा + आह	= **यथाह**
यथा + अर्थः	= **यथार्थः**
यदा + आसीत्	= **यदासीत्**
युग + आदिः	= **युगादिः**
युवा + अवस्था	= **युवावस्था**
युग + आगमनम्	= **युगागमनम्**
येन + अदर्शनम्	= **येनादर्शनम्**
येन + अङ्गः	= **येनाङ्गः**
योग + अभ्यासः	= **योगाभ्यासः**
यौवन + आरम्भे	= **यौवनारम्भे**
रक्त + अशोकः	= **रक्ताशोकः**
रत्न + आकरः	= **रत्नाकरः**
रस + आस्वादः	= **रसास्वादः**
रक्षा + अर्थः	= **रक्षार्थः**
राम + आलयः	= **रामालयः**
राम + अनुचरः	= **रामानुचरः**
राम + अनुजः	= **रामानुजः**
राम + अयनम्	= **रामायणम्**
राम + अवतारः	= **रामावतारः**
राम + आधारः	= **रामाधारः**
राम + आगमनम्	= **रामागमनम्**
लिङ्ग + अनुशासनम्	= **लिङ्गानुशासनम्**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
लोक + अपवादः	= **लोकापवादः**
लोचन + अङ्कः	= **लोचनाङ्कः**
वन + अनिलाः	= **वनानिलाः**
विस्तरेण + अभिधीयसे	= **विस्तरेणाभिधीयसे**
विजय + अर्थिनः	= **विजयार्थिनः**
विद्या + अनवद्या	= **विद्यानवद्या**
विना + अपि	= **विनापि**
विद्या + आलयः	= **विद्यालयः**
विद्या + अभ्यासः	= **विद्याभ्यासः**
विद्या + अर्थी	= **विद्यार्थी**
विद्या + आतुरः	= **विद्यातुरः**
विद्या + आनन्दः	= **विद्यानन्दः**
वेद + अभ्यासः	= **वेदाभ्यासः**
वेद + अन्तः	= **वेदान्तः**
शश + अङ्कः	= **शशाङ्कः**
शब्द + अर्थः	= **शब्दार्थः**
शरण + अर्थी	= **शरणार्थी**
शस्त्र + आगारः	= **शस्त्रागारः**
शाप + अन्तः	= **शापान्तः**
शान्त + आकारः	= **शान्ताकारः**
शिक्षा + अर्थः	= **शिक्षार्थः**
शिक्षा + आलयः	= **शिक्षालयः**
शिव + आलयः	= **शिवालयः**
शिव + आनय	= **शिवानय**
शिष्ट + आचारः	= **शिष्टाचारः**
शिष्य + आयुष्यम्	= **शिष्यायुष्यम्**
शुभ + अशुभम्	= **शुभाशुभम्**
शुष्कमिव + अग्निः	= **शुष्कमिवाग्निः**
शेष + आकृतिः	= **शेषाकृतिः**
श्रद्धा + अस्ति	= **श्रद्धास्ति**
श्रित + अतीतम्	= **श्रितातीतम्**
श्रुत + अपि	= **श्रुतापि**
स्वर्ण + अवसरः	= **स्वर्णावसरः**
स्वर्ण + आकारः	= **स्वर्णाकारः**
सप्त + अध्यायी	= **सप्ताध्यायी**
सर्व + अविनयः	= **सर्वाविनयः**
सत्य + आग्रहः	= **सत्याग्रहः**
सत्त्व + अनुरूपम्	= **सत्त्वानुरूपम्**
सदा + आनन्दः	= **सदानन्दः**

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम्

सन्निपत्य + अभियुक्तः = **सन्निपत्याभियुक्तः**
समान + अधिकरणम् = **समानाधिकरणम्**
सचिव + आलयः = **सचिवालयः**
स्तोक + अन्तिकः = **स्तोकान्तिकः**
सनक + आदिः = **सनकादिः**
संग्रह + आलयः = **संग्रहालयः**
संयोग + अन्तः = **संयोगान्तः**
सन्देश + अर्थः = **सन्देशार्थः**
स्रगिव + अपवर्जिता = **स्रगिवापवर्जिता**
साहित्य + आकाशः = **साहित्याकाशः**
सुख + अर्थः = **सुखार्थः**
सुवर्ण + अवसरः = **सुवर्णावसरः**
सूर्य + अस्तः = **सूर्यास्तः**
सूर्य + अपाये = **सूर्यापाये**
सेवा + अर्थः = **सेवार्थः**
हकार + आदिः = **हकारादिः**
ह्रस्व + अभावः = **ह्रस्वाभावः**
हृदय + अनुरक्ता = **हृदयानुरक्ता**
हिम + आलयः = **हिमालयः**
हिम + अचलः = **हिमाचलः**

इ/ई + सवर्ण अच् = ई

अति + इव = **अतीव**
अपि + ईक्षते = **अपीक्षते**
अपि + इच्छसि = **अपीच्छसि**
अभि + इष्टः = **अभीष्टः**
अति + इन्द्रियम् = **अतीन्द्रियम्**
अस्ति + इदम् = **अस्तीदम्**
इति + इव = **इतीव**
इति + इह = **इतीह**
इति + ईरयित्वा = **इतीरयित्वा**
इति + इदम् = **इतीदम्**
कवि + इन्द्रः = **कवीन्द्रः**
कवि + ईशः = **कवीशः**
कपि + ईशः = **कपीशः**
कवि + इच्छा = **कवीच्छा**
कुमारी + ईहते = **कुमारीहते**
गिरि + ईशः = **गिरीशः**
गिरि + इन्द्रः = **गिरीन्द्रः**

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम्

जानीहि + इति = **जानीहीति**
गौरी + इन्द्रः = **गौरीन्द्रः**
देवी + इति = **देवीति**
नदी + ईशः = **नदीशः**
नदी + इदानीम् = **नदीदानीम्**
परि + ईक्षा = **परीक्षा**
पार्वती + ईशः = **पार्वतीशः**
प्रति + ईहते = **प्रतीहते**
प्रति + ईक्षते = **प्रतीक्षते**
पृथ्वी + ईशः = **पृथ्वीशः**
फलानि + इमानि = **फलानीमानि**
भगवती + इति = **भगवतीति**
भगवती + इच्छा = **भगवतीच्छा**
भवामि + इति = **भवामीति**
भूमि + ईशः = **भूमीशः**
मही + ईशः = **महीशः**
महती + इच्छा = **महतीच्छा**
मुनि + इन्द्रः = **मुनीन्द्रः**
मुनि + ईशः = **मुनीशः**
रजनी + ईशः = **रजनीशः**
रवि + इन्द्रः = **रवीन्द्रः**
रवि + ईश्वरः = **रवीश्वरः**
राज्ञी + इह = **राज्ञीह**
लक्ष्मी + इति = **लक्ष्मीति**
लक्ष्मी + ईशः = **लक्ष्मीशः**
श्री + ईशः = **श्रीशः**
शची + इन्द्रः = **शचीन्द्रः**
सती + ईशः = **सतीशः**
हरि + ईशः = **हरीशः**
हरि + इन्द्रः = **हरीन्द्रः**
क्षिति + ईशः = **क्षितीशः**

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

उपु + उपध्मानीयम् = **उपूपध्मानीयम्**
कटु + उक्तिः = **कटूक्तिः**
कुरु + उपचारम् = **कुरूपचारम्**
कुरु + उपवासम् = **कुरूपवासम्**
गुरु + उत्तमम् = **गुरूत्तमम्**
गुरु + उपदेशः = **गुरूपदेशः**
गुरु + उत्साहः = **गुरूत्साहः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
गुरु + ऊहः	= **गुरूहः**
चमू + उदधिः	= **चमूदधिः**
चमू + उत्साहः	= **चमूत्साहः**
चमू + ऊर्जः	= **चमूर्जः**
तरु + उपेतः	= **तरूपेतः**
तरु + ऊर्ध्वम्	= **तरूर्ध्वम्**
तरु + ऊर्ध्वता	= **तरूर्ध्वता**
धातु + उपसर्गयोः	= **धातूपसर्गयोः**
पिबतु + उदकम्	= **पिबतूदकम्**
बहु + उन्नतिः	= **बहून्नतिः**
भानु + उदयः	= **भानूदयः**
भू + ऊर्ध्वम्	= **भूर्ध्वम्**
भू + ऊष्मा	= **भूष्मा**
भू + उपरि	= **भूपरि**
मधु + उत्तमम्	= **मधूत्तमम्**
रघु + उत्तमम्	= **रघूत्तमम्**
लघु + उक्तिः	= **लघूक्तिः**
लघु + उलूकः	= **लघूलूकः**
लघु + उपहारः	= **लघूपहारः**
लघु + उद्यानम्	= **लघूद्यानम्**
लघु + ऊर्मिः	= **लघूर्मिः**
वधू + उत्सवः	= **वधूत्सवः**
वधू + उक्तिः	= **वधूक्तिः**
वधू + ऊहनम्	= **वधूहनम्**
वधू + ऊरू	= **वधूरू**
विधु + उदयः	= **विधूदयः**
विष्णु + उदयः	= **विष्णूदयः**
वधू + उपहारः	= **वधूपहारः**
वधू + उल्लासः	= **वधूल्लासः**
शिशु + उपहारः	= **शिशूपहारः**
शिशु + उक्तिः	= **शिशूक्तिः**
साधु + उक्तिः	= **साधूक्तिः**
साधु + उदयः	= **साधूदयः**
साधु + ऊचुः	= **साधूचुः**
सिन्धु + ऊर्मिः	= **सिन्धूर्मिः**
सिन्धु + उदकम्	= **सिन्धूदकम्**
सु + उक्तिः	= **सूक्तिः**

ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = ॠ

ऋ + ऌ = ॠ

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
कर्तृ + ऋणि	= **कर्तॄणि**
कर्तृ + ऋजुः	= **कर्तॄजुः**
कृ + ऋकारः	= **कॄकारः**
कर्तृ + ऋद्धिः	= **कर्तॄद्धिः**
पक्तृ + ऋजीषम्	= **पक्तॄजीषम्**
पितृ + ऋणम्	= **पितॄणम्**
पितृ + ऋषभः	= **पितॄषभः**
भर्तृ + ऋद्धिः	= **भर्तॄद्धिः**
मातृ + ऋकारः	= **मातॄकारः**
मातृ + ऋद्धिः	= **मातॄद्धिः**
होतृ + ऋश्यः	= **होतॄश्यः**
होतृ + ऋकारः	= **होतॄकारः**
होतृ + ऌकारः	= **होतॄकारः**

गुणसन्धिः

सूत्र - ''आद् गुणः''

अ/आ + इ/ई = ए

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
अलिखिता + इव	= **अलिखितेव**
अजिन + इच्छाम्	= **अजिनेच्छाम्**
अत्र + इदम्	= **अत्रेदम्**
इव + इषवः	= **इवेषवः**
ईर्ष्या + इव	= **ईर्ष्येव**
उमा + ईशः	= **उमेशः**
उप + इन्द्रः	= **उपेन्द्रः**
एव + इदानीम्	= **एवेदानीम्**
कमल + ईशः	= **कमलेशः**
कमल + इन्दुः	= **कमलेन्दुः**
कान्ता + इव	= **कान्तेव**
कुल्या + इव	= **कुल्येव**
कुरुष्व + इति	= **कुरुष्वेति**
क्षमस्व + इति	= **क्षमस्वेति**
खग + इन्द्रः	= **खगेन्द्रः**
खग + ईशः	= **खगेशः**
गण + ईशः	= **गणेशः**
गज + इन्द्रः	= **गजेन्द्रः**
गङ्गा + ईशः	= **गङ्गेशः**
च + इयम्	= **चेयम्**
च + इन्द्रजालम्	= **चेन्द्रजालम्**
छाया + इव	= **छायेव**
जित + इन्द्रियः	= **जितेन्द्रियः**
जीवित + ईश्वरः	= **जीवितेश्वरः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
तस्य + इव	= **तस्येव**
तव + इति	= **तवेति**
तथा + इति	= **तथेति**
दत्त +ईक्षणः	= **दत्तेक्षणः**
दिन +ईशः	= **दिनेशः**
दीपशिखा + इव	= **दीपशिखेव**
देव + इति	= **देवेति**
देव + इन्द्रः	= **देवेन्द्रः**
देव + ईशः	= **देवेशः**
धन + इच्छा	= **धनेच्छा**
धर्म + इन्दुः	= **धर्मेन्दुः**
धर्म + इन्द्रः	= **धर्मेन्द्रः**
नर + इन्द्रः	= **नरेन्द्रः**
नर + ईशः	= **नरेशः**
न + इयम्	= **नेयम्**
न + इदम्	= **नेदम्**
नवमालिका + इयम्	= **नवमालिकेयम्**
न + इति	= **नेति**
न + इच्छति	= **नेच्छति**
नाग + इन्द्रः	= **नागेन्द्रः**
परम + ईश्वरः	= **परमेश्वरः**
पदस्य + इति	= **पदस्येति**
परिस्फुट + इति	= **परिस्फुटेति**
प्र + इतः	= **प्रेतः**
प्रतिकूल + इदानीम्	= **प्रतिकूलेदानीम्**
पातालगुहा + इव	= **पातालगुहेव**
पापेन + इव	= **पापेनेव**
पिता + इव	= **पितेव**
प्रिया + इति	= **प्रियेति**
भारत + इन्दुः	= **भारतेन्दुः**
भारत + ईश्वरः	= **भारतेश्वरः**
भाष्यकार + इष्टिः	= **भाष्यकारेष्टिः**
भुवन + ईश्वरः	= **भुवनेश्वरः**
महा + ईश्वरः	= **महेश्वरः**
महा + इन्द्रः	= **महेन्द्रः**
महा + ईशः	= **महेशः**
महा + इष्वासः	= **महेष्वासः**
म्लान + इन्द्रियः	= **म्लानेन्द्रियः**
महाराज + इति	= **महाराजेति**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
मध्य + इन्द्रनीलम्	= **मध्येन्द्रनीलम्**
मृग + इन्द्रः	= **मृगेन्द्रः**
माता + इव	= **मातेव**
माता + इति	= **मातेति**
मान + इच्छा	= **मानेच्छा**
मोहिता + इव	= **मोहितेव**
यथा + इष्टः	= **यथेष्टः**
यथा + इच्छा	= **यथेच्छा**
यथा + इयम्	= **यथेयम्**
यथा + ईप्सितम्	= **यथेप्सितम्**
राम + इति	= **रामेति**
रमा + ईशः	= **रमेशः**
रमा + इच्छाम्	= **रमेच्छाम्**
राम + इन्द्रः	= **रामेन्द्रः**
राम + ईश्वरः	= **रामेश्वरः**
राज + ईश्वरः	= **राजेश्वरः**
राम + इतिहासः	= **रामेतिहासः**
राजा + इन्द्रः	= **राजेन्द्रः**
राका + ईशः	= **राकेशः**
लता + इव	= **लतेव**
लङ्का + ईशः	= **लङ्केशः**
लेखा + इव	= **लेखेव**
वृत्तान्ता + इयम्	= **वृत्तान्तेयम्**
व्यथा + इव	= **व्यथेव**
वाराङ्गना + इव	= **वाराङ्गनेव**
वा + इति	= **वेति**
वात्या + इव	= **वात्येव**
वायुना + इव	= **वायुनेव**
विना + इदम्	= **विनेदम्**
विद्या + इव	= **विद्येव**
विकल + इन्द्रियः	= **विकलेन्द्रियः**
वीर + इन्द्रः	= **वीरेन्द्रः**
शब्दाख्या + इयम्	= **शब्दाख्येयम्**
शैल + ईशः	= **शैलेशः**
सर्व + ईशः	= **सर्वेशः**
सखा + इति	= **सखेति**
सह + इता	= **सहेता**
सत्य + इन्द्रः	= **सत्येन्द्रः**
सा +इन्द्रचापः	= **सेन्द्रचापः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
सा + इयम्	= **सेयम्**
सख्या + इव	= **सख्येव**
सा + इव	= **सेव**
सुर + ईशः	= **सुरेशः**
हिडिम्बा + इव	= **हिडिम्बेव**

अ/आ +उ/ऊ = ओ

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
अपरिणाम + उपशमः	= **अपरिणामोपशमः**
अशिशिर + उपचारः	= **अशिशिरोपचारः**
अभिषेक + उत्तीर्णः	= **अभिषेकोत्तीर्णः**
अस्थान + उपशमः	= **अस्थानोपशमः**
अस्थान + उपगतः	= **अस्थानोपगतः**
अत्र + उद्भ्रान्तः	= **अत्रोद्भ्रान्तः**
अत्यन्त + ऊर्ध्वम्	= **अत्यन्तोर्ध्वम्**
आभरण + उचितम्	= **आभरणोचितम्**
आनेय + ऊर्ध्वम्	= **आनेयोर्ध्वम्**
इव + उन्मुखी	= **इवोन्मुखी**
इव + उन्मार्गः	= **इवोन्मार्गः**
इव + उच्छिखः	= **इवोच्छिखः**
उष्ण + उदकम्	= **उष्णोदकम्**
उष्ण + उदकेन	= **उष्णोदकेन**
एषा + उटजा	= **एषोटजा**
एक + ऊनविंशतिः	= **एकोनविंशतिः**
एव + उत्तरेण	= **एवोत्तरेण**
कविना + उक्तम्	= **कविनोक्तम्**
कस्य + उद्धारकः	= **कस्योद्धारकः**
कृष्ण + ऊरुः	= **कृष्णोरुः**
कथा + उद्घाताः	= **कथोद्घाताः**
कानन + उदुम्बरः	= **काननोदुम्बरः**
कानन + उद्देश्यः	= **काननोद्देश्यः**
किसलय + उद्भेदः	= **किसलयोद्भेदः**
किमत्र + उच्यते	= **किमत्रोच्यते**
कुसुम + उद्गमः	= **कुसुमोद्गमः**
केन + उपदिष्टः	= **केनोपदिष्टः**
केका + उत्कण्ठा	= **केकोत्कण्ठा**
गङ्गा + उदकम्	= **गङ्गोदकम्**
खद्योत + उन्मेषः	= **खद्योतोन्मेषः**
जन + उपदेशः	= **जनोपदेशः**
ज्वर + ऊष्मा	= **ज्वरोष्मा**
जन + उदितम्	= **जनोदितम्**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
जल + ऊर्मिः	= **जलोर्मिः**
जाल + उद्गीर्णः	= **जालोद्गीर्णः**
जीवन + उपायः	= **जीवनोपायः**
तट + उपरि	= **तटोपरि**
तट + उन्मूलिता	= **तटोन्मूलिता**
तस्य + उत्सङ्गे	= **तस्योत्सङ्गे**
तथा + उपदिष्टम्	= **तथोपदिष्टम्**
तथा + उद्दिष्टम्	= **तथोद्दिष्टम्**
तव + उत्साहः	= **तवोत्साहः**
तव + उपालम्भः	= **तवोपालम्भः**
त्वया + उपपाद्यः	= **त्वयोपपाद्यः**
तीर + उपान्तः	= **तीरोपान्तः**
तोय + उत्सङ्गे	= **तोयोत्सङ्गे**
दया + उदयः	= **दयोदयः**
दर्शन + उत्सुकः	= **दर्शनोत्सुकः**
दहन + उद्गारः	= **दहनोद्गारः**
दया + उदयः	= **दयोदयः**
दयोदय + उज्ज्वलः	= **दयोदयोज्ज्वलः**
दीर्घ + उपलः	= **दीर्घोपलः**
देश + उपकारः	= **देशोपकारः**
धन + उपयोगः	= **धनोपयोगः**
धन + ऊष्मा	= **धनोष्मा**
धूम + उद्गारः	= **धूमोद्गारः**
नय + उपरि	= **नयोपरि**
नर + उत्तमः	= **नरोत्तमः**
नव + उदयः	= **नवोदयः**
नव + ऊढा	= **नवोढा**
नत + उन्नतः	= **नतोन्नतः**
नयन + उत्सवः	= **नयनोत्सवः**
न + उद्वेगकरः	= **नोद्वेगकरः**
न + उपलब्धिः	= **नोपलब्धिः**
नृत्य + उपहारः	= **नृत्योपहारः**
नित्य + उज्ज्वलः	= **नित्योज्ज्वलः**
निम्न + ऊर्ध्वम्	= **निम्नोर्ध्वम्**
नील + उत्पलम्	= **नीलोत्पलम्**
पश्य + ऊर्ध्वम्	= **पश्योर्ध्वम्**
परम + उत्तमः	= **परमोत्तमः**
पर + उपदेशः	= **परोपदेशः**
परम + उत्कृष्टः	= **परमोत्कृष्टः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
परीक्षा + उत्सुकः	= **परीक्षोत्सुकः**
परम + उत्सवः	= **परमोत्सवः**
पर + उपकारः	= **परोपकारः**
पदादिव + उरगः	= **पदादिवोरगः**
पक्ष्म + उत्क्षेपः	= **पक्ष्मोत्क्षेपः**
परिमल + उद्गारः	= **परिमलोद्गारः**
पक्ष्मल + उत्तानः	= **पक्ष्मलोत्तानः**
पत्र + उज्ज्वलाः	= **पत्रोज्ज्वलाः**
प्रसव + उद्भेदः	= **प्रसवोद्भेदः**
प्रस्थितस्य + उत्तरः	= **प्रस्थितस्योत्तरः**
प्रसाद + उन्मुखः	= **प्रसादोन्मुखः**
पार्थिव + उपाश्रयः	= **पार्थिवोपाश्रयः**
पाटव + उपादानम्	= **पाटवोपादानम्**
पुरुष + उत्तमः	= **पुरुषोत्तमः**
पुत्रस्य + उपरि	= **पुत्रस्योपरि**
पुर + उत्पीडे	= **पुरोत्पीडे**
पूर्व + उदयः	= **पूर्वोदयः**
फल + उद्गमः	= **फलोद्गमः**
बन्ध + उच्छ्वसितः	= **बन्धोच्छ्वसितः**
बल + उपचयः	= **बलोपचयः**
भगवता + उक्तम्	= **भगवतोक्तम्**
भाग + उत्थिते	= **भागोत्थिते**
भाण्ड + उदरे	= **भाण्डोदरे**
भुज + उच्छ्वसितः	= **भुजोच्छ्वसितः**
मम + उपालम्भः	= **ममोपालम्भः**
महा + उत्सवः	= **महोत्सवः**
महा + उदधिः	= **महोदधिः**
महा + उदयः	= **महोदयः**
महा + उपदेशः	= **महोपदेशः**
महा + ऊर्जस्वी	= **महोर्जस्वी**
महा + ऊरुः	= **महोरुः**
मस्तक + ऊर्ध्वम्	= **मस्तकोर्ध्वम्**
मण्डल + उत्पलम्	= **मण्डलोत्पलम्**
मया + उद्वेष्टम्	= **मयोद्वेष्टम्**
मध्यम + उत्तमः	= **मध्यमोत्तमः**
मान + उन्मादः	= **मानोन्मादः**
मात्र + उन्मादः	= **मात्रोन्मादः**
मानस + उत्सुकः	= **मानसोत्सुकः**
मायया + ऊर्जस्विनः	= **माययोर्जस्विनः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
मानव + उत्तमः	= **मानवोत्तमः**
मीन + ऊरुः	= **मीनोरुः**
मुख + उल्लासिनी	= **मुखोल्लासिनी**
मोक्ष + उत्सुकानि	= **मोक्षोत्सुकानि**
यत्र + उपकरणम्	= **यत्रोपकरणम्**
यत्र + उन्मत्तः	= **यत्रोन्मत्तः**
यवन + उद्धतः	= **यवनोद्धतः**
यमुना + उदकम्	= **यमुनोदकम्**
यज्ञ + उपवीतम्	= **यज्ञोपवीतम्**
यथा + उचितम्	= **यथोचितम्**
येन + उद्गच्छत्	= **येनोद्गच्छत्**
रथ + उद्धता	= **रथोद्धता**
राष्ट्र + उद्धारकः	= **राष्ट्रोद्धारकः**
रुदित + उच्छूनः	= **रुदितोच्छूनः**
रेफस्य + ऊर्ध्वगमनम्	= **रेफस्योर्ध्वगमनम्**
लग्न + ऊर्मिः	= **लग्नोर्मिः**
लाभ + उपदेशः	= **लाभोपदेशः**
लीला + उत्खात्	= **लीलोत्खात्**
लोक + उक्तिः	= **लोकोक्तिः**
लोक + उपयोगः	= **लोकोपयोगः**
वसन्त + उत्सवः	= **वसन्तोत्सवः**
वन + उपकरणम्	= **वनोपकरणम्**
वन + उपवनम्	= **वनोपवनम्**
वदन + उदरः	= **वदनोदरः**
वृष + उत्खात्	= **वृषोत्खात्**
वृक + उदरः	= **वृकोदरः**
वृक्ष + उपरि	= **वृक्षोपरि**
वंश + उद्धारकः	= **वंशोद्धारकः**
वार्षिक + उत्सवः	= **वार्षिकोत्सवः**
वासव + उपमः	= **वासवोपमः**
बाण + उच्छिष्टम्	= **बाणोच्छिष्टम्**
विवाह + उत्सवः	= **विवाहोत्सवः**
विद्या + उन्नतिः	= **विद्योन्नतिः**
विरह + उदग्रम्	= **विरहोदग्रम्**
विषय + उपभोगः	= **विषयोपभोगः**
विशेष + उक्तिः	= **विशेषोक्तिः**
वीर + उचितः	= **वीरोचितः**
वेद + उद्धारकः	= **वेदोद्धारकः**
वेग + उत्फुल्लया	= **वेगोत्फुल्लया**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
शफर + उद्वर्तनम्	= **शफरोद्वर्तनम्**
शकुन्तला + उत्थाय	= **शकुन्तलोत्थाय**
श्रीकृष्ण + उपदिष्टम्	= **श्रीकृष्णोपदिष्टम्**
शैल + उदग्रः	= **शैलोदग्रः**
शोक + उद्वेगः	= **शोकोद्वेगः**
सह + उदरः	= **सहोदरः**
सलिल + उद्गारः	= **सलिलोद्गारः**
सलिल + उत्पीडे	= **सलिलोत्पीडे**
सर्व + उपहासः	= **सर्वोपहासः**
सहस्र + उल्लासितः	= **सहस्रोल्लासितः**
सरल + उपायः	= **सरलोपायः**
स्वच्छ + उदकम्	= **स्वच्छोदकम्**
स्वभाव + उक्तिः	= **स्वभावोक्तिः**
समुद्र + ऊर्मिः	= **समुद्रोर्मिः**
सतत + उद्यतः	= **सततोद्यतः**
संजीवन + उपायः	= **संजीवनोपायः**
सूर्य + ऊर्जा	= **सूर्योर्जा**
सौध + उत्सङ्गः	= **सौधोत्सङ्गः**
हस्त + उपहितः	= **हस्तोपहितः**
हित + उपदेशः	= **हितोपदेशः**
ज्ञानस्य + उपशमः	= **ज्ञानस्योपशमः**

अ/आ + ऋ = अर्

अधम + ऋणः	= **अधमर्णः**
उत्तम + ऋणः	= **उत्तमर्णः**
कृष्ण + ऋद्धिः	= **कृष्णर्द्धिः**
ग्रीष्म + ऋतुः	= **ग्रीष्मर्तुः**
देव + ऋषिः	= **देवर्षिः**
नारद + ऋषिः	= **नारदर्षिः**
पुण्य + ऋद्धिः	= **पुण्यर्द्धिः**
पाप + ऋद्धिः	= **पापर्द्धिः**
भरत + ऋषभः	= **भरतर्षभः**
महा + ऋषिः	= **महर्षिः**
राजा + ऋषिः	= **राजर्षिः**
वन + ऋषयः	= **वनर्षयः**
वसन्त + ऋतुः	= **वसन्तर्तुः**
ब्रह्मा + ऋषिः	= **ब्रह्मर्षिः**
ब्रह्मा + ऋषिः	= **ब्रह्म ऋषिः**

सूत्र - ऋत्यकः

शिशिर + ऋतुः	= **शिशिरर्तुः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
शीत + ऋतुः	= **शीतर्तुः**
सप्त + ऋषिः	= **सप्तर्षिः**
वेद + ऋकः	= **वेदर्कः**
हेमन्त + ऋतुः	= **हेमन्तर्तुः**

अ/आ + ऌ = अल्

तव + ऌकारः	= **तवल्कारः**
तव + ऌदन्तः	= **तवल्दन्तः**
मम + ऌकारः	= **ममल्कारः**
मम + ऌवर्णः	= **ममल्वर्णः**

यण् सन्धिः ''इको यणचि''

इ/ई + असमान स्वर = य्

अति + अधिकम्	= **अत्यधिकम्**
अति + अन्तम्	= **अत्यन्तम्**
अति + आनन्दः	= **अत्यानन्दः**
अति + आचारः	= **अत्याचारः**
अति + अधिकम्	= **अत्यधिकम्**
अस्ति + आत्मा	= **अस्त्यात्मा**
अति + उत्तमः	= **अत्युत्तमः**
अति + ऊर्ध्वम्	= **अत्यूर्ध्वम्**
अति + औचित्यः	= **अत्यौचित्यः**
अति + औदार्यः	= **अत्यौदार्यः**
अति + ओजः	= **अत्योजः**
अति + आवश्यकः	= **अत्यावश्यकः**
अति + उक्तः	= **अत्युक्तः**
अस्ति + उज्जयिन्याम्	= **अस्त्युज्जयिन्याम्**
अति + अन्धकारः	= **अत्यन्धकारः**
अस्ति + अनुभवः	= **अस्त्यनुभवः**
अधि + आपतति	= **अध्यापतति**
अधि + एषणम्	= **अध्येषणम्**
अधि + आदेशः	= **अध्यादेशः**
अधि + अयनम्	= **अध्ययनम्**
अनुभूति + एकम्	= **अनुभूत्येकम्**
अपश्यन्ति + आतुराः	= **अपश्यन्त्यातुराः**
अपि + आश्रमः	= **अप्याश्रमः**
अद्यापि + आरूढः	= **अद्याप्यारूढः**
अपि + एवम्	= **अप्येवम्**
अहमपि + आज्ञापिता	= **अहमप्याज्ञापिता**
अद्यापि + आनन्दयति	= **अद्याप्यानन्दयति**
अद्यापि + उच्छ्वासः	= **अद्याप्युच्छ्वासः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
अपि + एतत्	= अप्येतत्
अपि + एतेषु	= अप्येतेषु
अपि + एषाम्	= अप्येषाम्
अपि + आसु	= अप्यासु
अभि + उदयः	= अभ्युदयः
अपि + एषु	= अप्येषु
अभि + उद्यतः	= अभ्युद्यतः
अहमपि + अपह्रिये	= अहमप्यपह्रिये
अर्चयन्ति + अर्चनीयान्	= अर्चयन्त्यर्चनीयान्
अपि + अगम्यः	= अप्यगम्यः
अभि + अग्निः	= अभ्यग्निः
अभि + आगतः	= अभ्यागतः
आदि + अन्तौ	= आद्यन्तौ
आत्मनि + आरोपितम्	= आत्मन्यारोपितम्
आयाति + एवम्	= आयात्येवम्
आदि + अन्तम्	= आद्यन्तम्
इति + अवदत्	= इत्यवदत्
इति + आह	= इत्याह
इति + आचरति	= इत्याचरति
इति + आदिशत्	= इत्यादिशत्
इति + अपि	= इत्यपि
इति + आदिः	= इत्यादिः
इति + आकर्ण्य	= इत्याकर्ण्य
इति + आधारः	= इत्याधारः
इति + अर्थः	= इत्यर्थः
इति + एवम्	= इत्येवम्
इति + अलम्	= इत्यलम्
इति + आश्चर्यः	= इत्याश्चर्यः
इति + उत्कण्ठा	= इत्युत्कण्ठा
इति + उवाच	= इत्युवाच
इति + अतः	= इत्यतः
इति + असूयन्ति	= इत्यसूयन्ति
इति + उत्तरम्	= इत्युत्तरम्
इति + उत्तिष्ठति	= इत्युत्तिष्ठति
इति + उन्नेतव्यः	= इत्युन्नेतव्यः
इति + औत्सुक्यात्	= इत्यौत्सुक्यात्
इति + असन्धानम्	= इत्यसन्धानम्
उपरि + उक्तः	= उपर्युक्तः
ऋति + अकः	= ऋत्यकः

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
एति + आत्मनि	= एत्यात्मनि
एति + एधति	= एत्येधति
एत्येधति + ऊठ्सु	= एत्येधत्यूठ्सु
करोमि + अहम्	= करोम्यहम्
कर्मणि + अनादरे	= कर्मण्यनादरे
कर्मणि + अधिकरणे	= कर्मण्यधिकरणे
कर्मणि + उपसंख्यानम्	= कर्मण्युपसंख्यानम्
करोति + अयम्	= करोत्ययम्
कान्ति + आभा	= कान्त्याभा
कामिनी + उदयः	= कामिन्युदयः
कामिनी + आयाति	= कामिन्यायाति
किमिति + आर्यपुत्रः	= किमित्यार्यपुत्रः
कौमुदी + आयाति	= कौमुद्यायाति
गच्छति + अत्र	= गच्छत्यत्र
गलति + उपदिष्टम्	= गलत्युपदिष्टम्
गृह्णन्ति + उपदेशम्	= गृह्णन्त्युपदेशम्
गोपी + उवाच	= गोप्युवाच
चिन्तयति + एवम्	= चिन्तयत्येवम्
चापि + उपकृते	= चाप्युपकृते
जननी + आह	= जनन्याह
जननी + आगच्छति	= जनन्यागच्छति
जानासि + एव	= जानास्येव
जुहोति + आदयः	= जुहोत्यादयः
झटिति + उत्सुकयति	= झटित्युत्सुकयति
तथापि + एतावत्	= तथाप्येतावत्
त्वयि + अस्याः	= त्वय्यस्याः
त्वयि + उपेक्षेत्	= त्वय्युपेक्षेत्
त्वयि + आसन्ने	= त्वय्यासन्ने
त्वयि + आदातुम्	= त्वय्यादातुम्
त्रि + अशीतिः	= त्र्यशीतिः
त्रिपादी + असिद्धा	= त्रिपाद्यसिद्धा
दधि + अत्र	= दध्यत्र
दधि + आनय	= दध्यानय
दधि + ओदनः	= दध्योदनः
दर्वी + असौ	= दर्व्यसौ
द्वि + अशीतिः	= द्व्यशीतिः
देवी + ऐश्वर्यम्	= देव्यैश्वर्यम्
देवी + उवाच	= देव्युवाच
देवी + उक्तिः	= देव्युक्तिः

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
देवी + अर्थः	= **देव्यर्थः**
देवी + अङ्गम्	= **देव्यङ्गम्**
देवी + ओजः	= **देव्योजः**
देवी + आलयः	= **देव्यालयः**
देवी + आगमः	= **देव्यागमः**
देवी + औदार्यम्	= **देव्यौदार्यम्**
नदी + अत्र	= **नद्यत्र**
नदी + अम्भः	= **नद्यम्भः**
नदी + आवहति	= **नद्यावहति**
नदी + ऊर्मिः	= **नद्यूर्मिः**
नदी + आमुखम्	= **नद्यामुखम्**
नदी + आगमनम्	= **नद्यागमनम्**
नदी + अर्पणः	= **नद्यर्पणः**
नदी + आवेगः	= **नद्यावेगः**
नदी + उदकम्	= **नद्युदकम्**
नयति + अयुग्मः	= **नयत्ययुग्मः**
नहि + एवम्	= **नह्येवम्**
नश्छवि + अप्रशान्	= **नश्छव्यप्रशान्**
नास्ति + एव	= **नास्त्येव**
नि + ऊनम्	= **न्यूनम्**
पति + आदेशः	= **पत्यादेशः**
परि + आवरणम्	= **पर्यावरणम्**
पश्यामि + अहम्	= **पश्याम्यहम्**
पतति + अभिजनः	= **पतत्यभिजनः**
पत्राणि + आदाय	= **पत्राण्यादाय**
पतितमपि + आत्मानम्	= **पतितमप्यात्मानम्**
पश्यन्ति + एव	= **पश्यन्त्येव**
प्रकृति + एव	= **प्रकृत्येव**
प्रति + आङ्	= **प्रत्याङ्**
प्रति + अभिज्ञेयम्	= **प्रत्यभिज्ञेयम्**
प्रभवामि + अहम्	= **प्रभवाम्यहम्**
प्रति + ऊषः	= **प्रत्यूषः**
प्रति + आलिङ्गम्	= **प्रत्यालिङ्गम्**
प्रति + एकः	= **प्रत्येकः**
प्रति + उपकारः	= **प्रत्युपकारः**
प्रति + आदेशात्	= **प्रत्यादेशात्**
फलन्ति + उपायाः	= **फलन्त्युपायाः**
भवति + उत्सवः	= **भवत्युत्सवः**
भणसि + अपरिस्फुटः	= **भणस्यपरिस्फुटः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
भाति + अम्बरे	= **भात्यम्बरे**
मही + आरुढः	= **मह्यारूढः**
मन्दभागिनी + अहम्	= **मन्दभागिन्यहम्**
मयि + अनुक्रोशः	= **मय्यनुक्रोशः**
मयि + अविश्वासिनी	= **मय्यविश्वासिनी**
मधुरतराणि + आपतन्ति	= **मधुरतराण्यापतन्ति**
मति + आशा	= **मत्याशा**
मुनि + आदिः	= **मुन्यादिः**
मुञ्चन्ति + अश्रूणीव	= **मुञ्चन्त्यश्रूणीव**
यदि + अपि	= **यद्यपि**
यदि + एवम्	= **यद्येवम्**
यदि + अस्ति	= **यद्यस्ति**
यान्ति + आपदम्	= **यान्त्यापदम्**
याति + एकतः	= **यात्येकतः**
यास्यति + अद्य	= **यास्यत्यद्य**
यास्यति + ऊरुः	= **यास्यत्यूरुः**
रीति + अनुसारम्	= **रीत्यनुसारम्**
वंशी + आयाति	= **वंश्यायाति**
वाणी + औचित्यम्	= **वाण्यौचित्यम्**
वाणी + ऊर्मिः	= **वाण्यूर्मिः**
वाञ्छन्ति + असुभिः	= **वाञ्छन्त्यसुभिः**
वारि + एति	= **वार्येति**
वि + आप्तः	= **व्याप्तः**
वि + ऊहः	= **व्यूहः**
वि + अपगतः	= **व्यपगतः**
विनश्यति + आशुः	= **विनश्यत्याशुः**
विगतानि + अकर्त्तव्यः	= **विगतान्यकर्त्तव्यः**
शशी + उदियाय	= **शश्युदियाय**
श्रुतापि + अभिसन्धत्ते	= **श्रुताप्यभिसन्धत्ते**
श्रोष्यति + अस्मात्	= **श्रोष्यत्यस्मात्**
सखी + ऐक्यम्	= **सख्यैक्यम्**
सखी + आगमनम्	= **सख्यागमनम्**
सरस्वती + आराधनम्	= **सरस्वत्याराधनम्**
सन्ति + अन्ये	= **सन्त्यन्ये**
सम्प्रति + अतितराम्	= **सम्प्रत्यतितराम्**
सप्तमी + अधिकरणे	= **सप्तम्यधिकरणे**
स्मृति + आदेशः	= **स्मृत्यादेशः**
स्त्री + उत्सवः	= **स्त्र्युत्सवः**
स्वरूपाणि + आस्वाद्यमानानि	= **स्वरूपाण्यास्वाद्यमानानि**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
सुपि + आपिशलः	= **सुप्यापिशलः**
सुधी + उपास्यः	= **सुध्युपास्यः**
हरि + आगच्छति	= **हर्यागच्छति**
हरि + आशा	= **हर्याशा**
हि + एकम्	= **ह्येकम्**
हि + एतस्मिन्	= **ह्येतस्मिन्**
हि + अङ्गनानाम्	= **ह्यङ्गनानाम्**
हि + उत्तमानाम्	= **ह्युत्तमानाम्**
हि + अयम्	= **ह्ययम्**
क्षिपति + एषः	= **क्षिपत्येषः**
ऊ + असमान स्वर = व्	
अनु + इति	= **अन्विति**
अनु + एषणः	= **अन्वेषणः**
अनु + अयः	= **अन्वयः**
अनु + आदेशः	= **अन्वादेशः**
अनु + अर्थः	= **अन्वर्थः**
अनु + इष्टः	= **अन्विष्टः**
अपवर्गेषु + अनुजीविनः	= **अपवर्गेष्वनुजीविनः**
अनु + अगच्छत्	= **अन्वगच्छत्**
अनु + अभवत्	= **अन्वभवत्**
अरण्येषु + अधिकम्	= **अरण्येष्वधिकम्**
अनु + अवसिता	= **अन्ववसिता**
अनु + ईक्षणः	= **अन्वीक्षणः**
अट्कुपु + आङ्	= **अट्कुप्वाङ्**
आगच्छतु + अत्र	= **आगच्छत्वत्र**
उचितेषु + अपि	= **उचितेष्वपि**
कल्पान्तेषु + अपि	= **कल्पान्तेष्वपि**
किन्तु + अस्ति	= **किन्त्वस्ति**
किन्तु + अद्यैव	= **किन्त्वद्यैव**
किन्तु + अङ्गीकृतम्	= **किन्त्वङ्गीकृतम्**
कुरु + इदम्	= **कुर्विदम्**
खलु + इदम्	= **खल्विदम्**
खलु + अत्र	= **खल्वत्र**
खलु + अमी	= **खल्वमी**
खलु + एषः	= **खल्वेषः**
खलु + अनर्थः	= **खल्वनर्थः**
खलु + एतत्	= **खल्वेतत्**
खलु + एहि	= **खल्वेहि**
गुरु + आदेशः	= **गुर्वादेशः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
गुरु + आज्ञा	= **गुर्वाज्ञा**
गुरु + अवस्था	= **गुर्ववस्था**
गुरु + आस्था	= **गुर्वास्था**
गुरु + औदार्यम्	= **गुर्वौदार्यम्**
गृहेषु + आसक्तः	= **गृहेष्वासक्तः**
घु + अदाप्	= **घ्वदाप्**
चित्रगु + अग्रम	= **चित्रग्वग्रम्**
चारु + अङ्गी	= **चार्वङ्गी**
चित्रगु + इन्द्रः	= **चित्रग्विन्द्रः**
जन्मान्तेषु + अपि	= **जन्मान्तेष्वपि**
जातु + असौ	= **जात्वसौ**
ननु + अङ्गम्	= **नन्वङ्गम्**
ननु + अप्रयासेन	= **नन्वप्रयासेन**
ननु + इतः	= **नन्वितः**
पततु + अभिजनः	= **पतत्वभिजनः**
पुष्करेषु + आहतेषु	= **पुष्करेष्वाहतेषु**
पुनर्वसु + ऋक्षः	= **पुनर्वस्वृक्षः**
बहु + एतत्	= **बह्वेतत्**
भवतु + अत्र	= **भवत्वत्र**
भानु + आभा	= **भान्वाभा**
भवनेषु + अपि	= **भवनेष्वपि**
भाग्येषु + अनुत्सेकिनी	= **भाग्येष्वनुत्सेकिनी**
भू + आदयः	= **भ्वादयः**
भू + आदिः	= **भ्वादिः**
मधु + अरिः	= **मध्वरिः**
मधु + अस्ति	= **मध्वस्ति**
मधु + आनय	= **मध्वानय**
मनु + अन्तरः	= **मन्वन्तरः**
मधु + आलयः	= **मध्वालयः**
मखेषु + अखिन्नः	= **मखेष्वखिन्नः**
मनु + आदिः	= **मन्वादिः**
यच्छतु + औषधम्	= **यच्छत्वौषधम्**
मृदु + अस्थिः	= **मृद्वस्थिः**
यातु + आहवे	= **यात्वाहवे**
युष्मासु + अपीतेषु	= **युष्मास्वपीतेषु**
लघु + ओष्ठः	= **लघ्वोष्ठः**
लशकु + अतद्धिते	= **लशक्वतद्धिते**
वधू + आनयनम्	= **वध्वानयनम्**
वधू + अलङ्कारः	= **वध्वलङ्कारः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
वधू + अर्थः	= **वध्वर्थः**
वधू + इष्टः	= **वध्विष्टः**
वस्तु + अस्ति	= **वस्त्वस्ति**
वृणु + इदम्	= **वृण्विदम्**
शकन्धु + आदिषु	= **शकन्ध्वादिषु**
शिशु + अङ्गम्	= **शिश्वङ्गम्**
शिशु + ऐक्यम्	= **शिश्वैक्यम्**
शिशु + अङ्कः	= **शिश्वङ्कः**
स्वादिषु + असर्वनामस्थाने	= **स्वादिष्वसर्वनामस्थाने**
साधु + इति	= **साध्विति**
साधु + अवदत्	= **साध्ववदत्**
साधु + अनाकर्ण्य	= **साध्वनाकर्ण्य**
साधु + असाधुः	= **साध्वसाधुः**
सिध्यतु + एतत्	= **सिध्यत्वेतत्**
सु + आगतम्	= **स्वागतम्**
सु + अस्ति	= **स्वस्ति**
सु + आदिषु	= **स्वादिषु**
हर्मेषु + अस्याः	= **हर्मेष्वस्याः**
हकारादिषु + अकारादिः	= **हकारादिष्वकारादिः**

ऋ + असमान स्वर = र्

कर्तृ + आयुः	= **कर्त्रायुः**
तृ + असौ	= **त्रसौ**
त्वष्टृ + आकांक्षा	= **त्वष्ट्राकांक्षा**
दातृ + उपदेशः	= **दात्रुपदेशः**
दुहितृ + ईशः	= **दुहित्रीशः**
धातृ + एतत्	= **धात्रेतत्**
धातृ + अंशः	= **धात्रंशः**
नृ + आत्मजः	= **न्रात्मजः**
पातृ + एतत्	= **पात्रेतत्**
पितृ + आकृतिः	= **पित्राकृतिः**
पितृ + आदेशः	= **पित्रादेशः**
पितृ + आह्वानम्	= **पित्राह्वानम्**
पितृ + अर्चा	= **पित्रर्चा**
पितृ + आज्ञा	= **पित्राज्ञा**
पितृ + अधीनम्	= **पित्रधीनम्**
पितृ + अनुमतिः	= **पित्रनुमतिः**
भर्तृ + आदेशः	= **भर्त्रादेशः**
भ्रातृ + उक्तः	= **भ्रात्रुक्तः**
भ्रातृ + आशा	= **भ्रात्राशा**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
भ्रातृ + आज्ञा	= **भ्रात्राज्ञा**
भ्रातृ + आगमनम्	= **भ्रात्रागमनम्**
मातृ + उपदेशः	= **मात्रुपदेशः**
मातृ + इच्छा	= **मात्रिच्छा**
मातृ + अनुमतिः	= **मात्रनुमतिः**
मातृ + आनन्दः	= **मात्रानन्दः**
मातृ + अर्थः	= **मात्रर्थः**
मातृ + आज्ञा	= **मात्राज्ञा**
सवितृ + उदयः	= **सवित्रुदयः**

ऌ + असवर्ण स्वर = ल्

ऌ + आकृतिः	= **लाकृतिः**
ऌ + आकारः	= **लाकारः**
ऌ + आदेशः	= **लादेशः**
ऌ + अनुबन्धः	= **लनुबन्धः**
ऌ + अङ्गः	= **लङ्गः**
गम्ऌ + आदेशः	= **गम्लादेशः**
घस्ऌ + आदेशः	= **घस्लादेशः**

वृद्धिसन्धि

सूत्र = 'वृद्धिरेचि'

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अद्य + एव	= **अद्यैव**
अनेन + एव	= **अनेनैव**
अथ + एकदा	= **अथैकदा**
अधुना + एव	= **अधुनैव**
अनया + एव	= **अनयैव**

सूत्र 'एत्येधत्यूठ्सु'

अव + एधते	= **अवैधते**
अव + एति	= **अवैति**
उप + एति	= **उपैति**
उप + एधते	= **उपैधते**
उप + एडकीयति	= **उपैडकीयति** (विकल्प से)
उप + एता	= **उपैता**

अत्र + एव	= **अत्रैव**
अत्र + एकदा	= **अत्रैकदा**
एक + एकम्	= **एकैकम्**
कृष्ण + ऐक्यम्	= **कृष्णैक्यम्**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
कृष्ण + एकदा	= **कृष्णैकदा**
गङ्गा + एषा	= **गङ्गैषा**
च + एतत्	= **चैतत्**
चित्त + एकाग्रम्	= **चित्तैकाग्रम्**
जन + एकदा	= **जनैकदा**
जनस्य + एतत्	= **जनस्यैतत्**
त्वया + एव	= **त्वयैव**
तथा + एव	= **तथैव**
तव + एव	= **तवैव**
तस्य + एषः	= **तस्यैषः**
तदा + एव	= **तदैव**
तव + ऐश्वर्यम्	= **तवैश्वर्यम्**
तत्र + एव	= **तत्रैव**
त्रस्त + एकहायनम्	= **त्रस्तैकहायनम्**
दिन + एकम्	= **दिनैकम्**
दृष्ट्वा + एव	= **दृष्ट्वैव**
दीर्घ + एकारः	= **दीर्घैकारः**
देवता + एकात्म्यम्	= **देवतैकात्म्यम्**
न + एवम्	= **नैवम्**
न + एजते	= **नैजते**
न + एव	= **नैव**
न + एका	= **नैका**
न + एताः	= **नैताः**
न + एतत्	= **नैतत्**
नव + ऐश्वर्यम्	= **नवैश्वर्यम्**
नृप + ऐश्वर्यम्	= **नृपैश्वर्यम्**
धन + ऐक्यम्	= **धनैक्यम्**
पञ्च + एते	= **पञ्चैते**
पुत्र + एषणा	= **पुत्रैषणा**

सूत्र ''प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु''

प्र + एषः	= **प्रैषः**
प्र + एष्यः	= **प्रैष्यः**

प्रथमा + एकवचनम्	= **प्रथमैकवचनम्**
बाला + एषा	= **बालैषा**
बाला + एका	= **बालैका**
मम + एव	= **ममैव**
मया + एव	= **मयैव**
यदा + एव	= **यदैव**
यथा + एव	= **यथैव**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
या + एवम्	= **यैवम्**
येन + एतादृशम्	= **येनैतादृशम्**
राम + ऐश्वर्यम्	= **रामैश्वर्यम्**
राष्ट्र + ऐक्यम्	= **राष्ट्रैक्यम्**
राजा + एषः	= **राजैषः**
विश्व + ऐक्यम्	= **विश्वैक्यम्**
वीर + एकम्	= **वीरैकम्**
स्थूल + एषः	= **स्थूलैषः**
संहिता + एकपदे	= **संहितैकपदे**
सर्वदा + ऐक्यम्	= **सर्वदैक्यम्**
सदा + एव	= **सदैव**

सूत्र - एत्येधत्यूठ्सु

सम + एति	= **समैति**
सम + एधते	= **समैधते**

सदा + एव	= **सदैव**
सा + एव	= **सैव**
सदा + ऐक्यम्	= **सदैक्यम्**
संज्ञा + एव	= **संज्ञैव**

वार्तिक-'स्वादीरेरिणोः'

स्व + ईरिणी	= **स्वैरिणी**
स्व + ईरः	= **स्वैरः**
स्व + ईरम्	= **स्वैरम्**

आ/आ+ओ/औ=औ

अस्य + औचित्यः	= **अस्यौचित्यः**
अधर + ओष्ठः	= **अधरोष्ठः/अधरौष्ठः (विकल्प से)**

वार्तिक- 'अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्'

अक्ष + ऊहिनी	= **अक्षौहिणी**

उष्ण + ओदनम्	= **उष्णौदनम्**
कर + औपम्यः	= **करौपम्यः**
कण्ठ + औत्सुक्यम्	= **कण्ठौत्सुक्यम्**
कृष्ण + औत्कण्ठ्यम्	= **कृष्णौत्कण्ठ्यम्**
गङ्गा + ओघः	= **गङ्गौघः**
जल + ओघः	= **जलौघः**
जल + औषधम्	= **जलौषधम्**
तव + ओष्ठः	= **तवौष्ठः**
तण्डुल + ओदनम्	= **तण्डुलौदनम्**
तव + औदार्यम्	= **तवौदार्यम्**
तव + ओषति	= **तवौषति**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
तस्य + औषधम्	= **तस्यौषधम्**
तीव्र + औषधम्	= **तीव्रौषधम्**
दर्शन + औत्सुक्यम्	= **दर्शनौत्सुक्यम्**
दिव्य + औषधम्	= **दिव्यौषधम्**
धन + ओघः	= **धनौघः**
परम + औषधिः	= **परमौषधिः**
परम + औदार्यम्	= **परमौदार्यम्**
प्र + ओधीयति	= **प्रौधीयति**

वार्तिक - 'प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु'

प्र + ऊढिः	= **प्रौढिः**
प्र + ऊढः	= **प्रौढः**
प्र + ऊहः	= **प्रौहः**

भव + औषधम्	= **भवौषधम्**
भृत्य + औद्धत्यम्	= **भृत्यौद्धत्यम्**
भार + ऊहः	= **भारौहः**
महा + ओजसः	= **महौजसः**
महा + औषधिः	= **महौषधिः**
महा + औदार्यम्	= **महौदार्यम्**
महा + ओजस्वी	= **महौजस्वी**
मम + औत्सुक्यम्	= **ममौत्सुक्यम्**
मम + औदासीन्यम्	= **ममौदासीन्यम्**
मम + ओष्ठः	= **ममौष्ठः**
महा + औष्ठ्यम्	= **महौष्ठ्यम्**
मेघ + ओघः	= **मेघौघः**
यमुना + ओघः	= **यमुनौघः**
विश्व + ओहः	= **विश्वौहः**
विद्या + ओघः	= **विद्यौघः**
वन + ओकः	= **वनौकः**
शर्करा + ओदनम्	= **शर्करौदनम्**
शुद्ध + ओदनम्	= **शुद्धौदनम्**
श्रिया + औत्सुक्यम्	= **श्रियौत्सुक्यम्**
संजीवन + औषधिः	= **संजीवनौषधिः**
सुर + ओकः	= **सुरौकः**
सुख + औपयिकः	= **सुखौपयिकः**
सौष्ठव + औदार्यम्	= **सौष्ठवौदार्यम्**
हृदय + औदार्यम्	= **हृदयौदार्यम्**
ज्ञात + औषधिः	= **ज्ञातौषधिः**

वृद्धि-सन्धिः

सूत्र - 'उपसर्गादृति धातौ'

अव + ऋञ्जते	= **अवार्ञ्जते**
अप + ऋच्छति	= **अपार्च्छति**
उप + ऋच्छति	= **उपार्च्छति**
प्र + ऋच्छति	= **प्रार्च्छति**
प्र + ऋषभीयति	= **प्रार्षभीयति (विकल्प से)**

वार्तिक 'प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे'

ऋण + ऋणम्	= **ऋणार्णम्**
कम्बल + ऋणम्	= **कम्बलार्णम्**
दश + ऋणम्	= **दशार्णम्**
वसन + ऋणम्	= **वसनार्णम्**
प्र + ऋणम्	= **प्रार्णम्**
वत्सतर + ऋणम्	= **वत्सतरार्णम्**

वार्तिक = 'ऋते च तृतीयासमासे'

सुख + ऋतः	= **सुखार्तः**
दुःख + ऋतः	= **दुःखार्तः**
भय + ऋतः	= **भयार्तः**
प्रमोद + ऋतः	= **प्रमोदार्तः**

अयादिसन्धिः सूत्र - 'एचोऽयवायावः'

ए + स्वर	**= अय्**
आसने + आस्ते	= **आसनयास्ते**
कवे + ए	= **कवये**
क्रे + अनम्	= **क्रयणम्**
गणे + अति	= **गणयति**
गृहे + आसीत्	= **गृहयासीत्**
चे + अनम्	= **चयनम्**
चे + अः	= **चयः**
चोरे + अति	= **चोरयति**
जे + अः	= **जयः**
ते + आगच्छन्ति	= **तयागच्छन्ति**
ने + अनम्	= **नयनम्**
ने + अति	= **नयति**
ने + अः	= **नयः**
पे + असि	= **पयसि**
प्रजापतये + इदम्	= **प्रजापतयियिदम्**
मुने + ए	= **मुनये**
ये + इह	= **ययिह**
शे + अनम्	= **शयनम्**
शे + आनः	= **शयानः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
हरे + ए	= **हरये**
हरे + एहि	= **हरयेहि**
हरे + इह	= **हरयिह**
स्थले + इदानीम्	= **स्थलयिदानीम्**
क्षे + अः	= **क्षयः**
ऐ + अच्	= आय्
कै + इकः	= **कायिकः**
कस्मै + अयच्छत्	= **कस्माययच्छत्**
कस्यै + अददात्	= **कस्यायददात्**
गै + अकः	= **गायकः**
गै + अनम्	= **गायनम्**
गै + इका	= **गायिका**
गै + अति	= **गायति**
गै + अन्ति	= **गायन्ति**
ग्लै + अति	= **ग्लायति**
चिक्षै + अः	= **चिक्षायः**
चै + अकः	= **चायकः**
तस्मै + एतत्	= **तस्मायेतत्**
तस्यै + इमानि	= **तस्यायिमानि**
तस्मै + अदात्	= **तस्मायदात्**
त्रै + अते	= **त्रायते**
दै + अकः	= **दायकः**
नै + अकः	= **नायकः**
नै + इका	= **नायिका**
पार्वत्यै + आगतायै	= **पार्वत्यायागतायै**
रै + अकः	= **रायकः**
लै + अकः	= **लायकः**
विनै + अकः	= **विनायकः**
श्रियै + औत्सुक्यम्	= **श्रियायौत्सुक्यम्**
श्रियै + इच्छा	= **श्रियायिच्छा**
श्रियै + उत्सुकः	= **श्रियायुत्सुकः**
सखै + औ	= **सखायौ**
सै + अकः	= **सायकः**
ओ + अच्	= **अव्**
गो + अनम्	= **गवनम्**
गो + ईश्वरः	= **गवीश्वरः**
गो + इच्छा	= **गविच्छा**
गो + उदयः	= **गवुदयः**
गो + ऋद्धिः	= **गवृद्धिः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
गो + ईशः	= **गवीशः**
द्रो + अति	= **द्रवति**
स्तो + अनम्	= **स्तवनम्**
पो + इत्रः	= **पवित्रः**
भो + अनम्	= **भवनम्**
भो + अति	= **भवति**
मनो + ए	= **मनवे**
लो + अनः	= **लवणः**
लो + इत्रम्	= **लवित्रम्**
वटो + ऋक्षः	= **वटवृक्षः**
विष्णो + ए	= **विष्णवे**
विष्णो + इह	= **विष्णविह**
श्रो + अनः	= **श्रवणः**
साधो + ए	= **साधवे**
औ + स्वर	= **आव्**
अग्नौ + इह	= **अग्नाविह**
अम्बौ + इह	= **अम्बाविह**
असौ + उत्तुङ्गः	= **असावुत्तुङ्गः**
असौ + अयम्	= **असावयम्**
इन्दौ + उदिते	= **इन्दावुदिते**
उभौ + एतौ	= **उभावेतौ**
ऋतौ + अन्नम्	= **ऋतावन्नम्**
करौ + एतौ	= **करावेतौ**
गतौ + उभौ	= **गतावुभौ**
गुरौ + उत्कः	= **गुरावुत्कः**
गोपालौ + आयातः	= **गोपालावायातः**
ग्लौ + औ	= **ग्लावौ**
तौ + अपि	= **तावपि**
तौ + उभौ	= **तावुभौ**
तौ + एकदा	= **तावेकदा**
तौ + अत्र	= **तावत्र**
तौ + ईश्वरौ	= **तावीश्वरौ**
द्वौ + अपि	= **द्वावपि**
द्वौ + इव	= **द्वाविव**
द्वौ + एव	= **द्वावेव**
धौ + अनम्	= **धावनम्**
धौ + इकः	= **धाविकः**
धौ + इतम्	= **धावितम्**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
नौ + इकः	= **नाविकः**
नरौ + उदारौ	= **नरावुदारौ**
प्रस्तौ + अकः	= **प्रस्तावकः**
पौ + अकः	= **पावकः**
पौ + अनः	= **पावनः**
पपावसौ + इह	= **पपावसाविह**
पूजार्हौ + अरिसूदनः	= **पूजार्हावरिसूदनः**
बालौ + आयातौ	= **बालावायातौ**
बालौ + अत्र	= **बालावत्र**
बालौ + ओजस्विनौ	= **बालावोजस्विनौ**
भानौ + अपि	= **भानावपि**
भ्रातरौ + आजग्मतुः	= **भ्रातरावाजग्मतुः**
भौ + उकः	= **भावुकः**
भौ + अयति	= **भावयति**
रात्रौ + आगतौ	= **रात्रावागतौ**
रात्रौ + आगतः	= **रात्रावागतः**
रात्रौ + अस्ताचलः	= **रात्रावस्ताचलः**
रौ + अनः	= **रावणः**
रामकृष्णौ + अमू	= **रामकृष्णावमू**
लोकनाथौ + उभौ	= **लोकनाथावुभौ**
वागर्थौ + इव	= **वागर्थाविव**
विधौ + उदिते	= **विधावुदिते**
स्फटिकमणौ + इव	= **स्फटिकमणाविव**
स्तौ + अकः	= **स्तावकः**

सूत्र - 'लोपः शाकल्यस्य'
('यकार' और 'वकार' का लोप हो)

हरे + एहि	= **हर एहि**
विष्णो + इह	= **विष्ण इह**
तस्यै + इमानि	= **तस्या इमानि**
श्रियै + उत्सुकः	= **श्रिया उत्सुकः**
गुरौ + उत्कः	= **गुरा उत्कः**
रात्रौ + आगतः	= **रात्रा आगतः**
ऋतौ + अन्नम्	= **ऋता अन्नम्**

सूत्र - 'वान्तो यि प्रत्यये'

गो + यम्	= **गव्यम्**
नौ + यम्	= **नाव्यम्**

वार्तिक - 'अध्वपरिमाणे च'

गो + यूतिः	= **गव्यूतिः**

सन्धि - पररूपसन्धिः सूत्र - 'एङि पररूपम्'
अ + एकारादि ओकारादि धातु = पररूप

अव + एहि	= **अवेहि**
प्र + एजते	= **प्रेजते**
उप + एजते	= **उपेजते**
उप + ओषति	= **उपोषति**
प्र + ओषति	= **प्रोषति**
उप + एडकीयति	= **उपेडकीयति**
	= **उपैडकीयति** (विकल्प से)
प्र + ओधीयति	= **प्रोधीयति**
	= **प्रौधीयति** (विकल्प से)

'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' (वा०)

शक + अन्धुः	= **शकन्धुः**
कर्क + अन्धुः	= **कर्कन्धुः**
कुल + अटा	= **कुलटा**
मनस् + ईषा	= **मनीषा**

(संज्ञा-सूत्र **'अचोऽन्त्यादि टि'** से मनस् के 'अस्' की टि संज्ञा हुई है)

हल + ईषा	= **हलीषा**
लाङ्गल + ईषा	= **लाङ्गलीषा**
पतत् + अञ्जलिः	= **पतञ्जलिः**
सार + अङ्गः	= **सारङ्गः**
सीम + अन्तः	= **सीमन्तः**
मार्त + अण्डः	= **मार्तण्डः**

विधिसूत्र = 'ओमाङोश्च'

शिवाय + ओम् + नमः = **शिवायोंनमः**

अतिदेशसूत्र + 'अन्तादिवच्च'

शिव + आङ् + इहि, या शिव + एहि = **शिवेहि**

सूत्र = ''एङः पदान्तादति'' पूर्वरूपसन्धिः

ए + अ	= **पूर्वरूप**
अमुके + अत्र	= **अमुकेऽत्र**
अग्ने + अत्र	= **अग्नेऽत्र**
अन्ते + अपि	= **अन्तेऽपि**

अनुनासिके + अनुनासिकः = **अनुनासिकेऽनुनासिकः**

उपदेशे + अजनुनासिकः = **उपदेशेऽजनुनासिकः**

के + अत्र	= **केऽत्र**
गृहे + अहम्	= **गृहेऽहम्**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
ग्रामे + अस्मिन्	= **ग्रामेऽस्मिन्**
गृहे + अतिथिः	= **गृहेऽतिथिः**
गते + अपि	= **गतेऽपि**
ते + अहम्	= **तेऽहम्**
ते + अद्य	= **तेऽद्य**
ते + अत्र	= **तेऽत्र**
ते + अपि	= **तेऽपि**
ते + अकर्मकाः	= **तेऽकर्मकाः**
ते + अमी	= **तेऽमी**
दीर्घे + अस्मिन्	= **दीर्घेऽस्मिन्**
देशे + अस्मिन्	= **देशेऽस्मिन्**
ध्रुवमपाये + अपादानम्	= **ध्रुवमपायेऽपादानम्**
नगरे + अस्मिन्	= **नगरेऽस्मिन्**
नमो + अस्तु	= **नमोऽस्तु**
पुस्तके + अस्मिन्	= **पुस्तकेऽस्मिन्**
पचेते + असौ	= **पचेतेऽसौ**
बालके + अस्मिन्	= **बालकेऽस्मिन्**
बालके + अपि	= **बालकेऽपि**
ब्रह्मणे + अस्तु	= **ब्रह्मणेऽस्तु**
मार्गे + अन्यः	= **मार्गेऽन्यः**
मात्रे + अर्पितः	= **मात्रेऽर्पितः**
मार्गे + अत्र	= **मार्गेऽत्र**
मे + अन्तिके	= **मेऽन्तिके**
मे + अपि	= **मेऽपि**
मुने + अर्चः	= **मुनेऽर्चः**
लोके + अत्र	= **लोकेऽत्र**
वने + अत्र	= **वनेऽत्र**
वने + अस्मिन्	= **वनेऽस्मिन्**
विशेषे + अनुरक्तः	= **विशेषेऽनुरक्तः**
वृक्षे + अस्मिन्	= **वृक्षेऽस्मिन्**
सखे + अत्र	= **सखेऽत्र**
सुन्दरे + अम्बरे	= **सुन्दरेऽम्बरे**
संसारे + अस्मिन्	= **संसारेऽस्मिन्**
सहयुक्ते + अप्रधाने	= **सहयुक्तेऽप्रधाने**
संसारे + अधुना	= **संसारेऽधुना**
सर्वे + अपि	= **सर्वेऽपि**
समुद्रे + अपि	= **समुद्रेऽपि**
स्थाने + अन्तरतमः	= **स्थानेऽन्तरतमः**

सन्धिविच्छेदः	सन्धिपदम्
हरे + अव	= **हरेऽव**
क्षुद्रे + अपि	= **क्षुद्रेऽपि**
ओ + अ	= **पूर्वरूपसन्धि**
अन्धो + असौ	= **अन्धोऽसौ**
अपूर्वो + अपि	= **अपूर्वोऽपि**
अपूर्वो + अहम्	= **अपूर्वोऽहम्**
अभ्यासो + अत्र	= **अभ्यासोऽत्र**
आधारो + अधिकरणम्	= **आधारोऽधिकरणम्**
इको + असवर्णे	= **इकोऽसवर्णे**
उपो + अधिके	= **उपोऽधिके**
एचो + अयवायावः	= **एचोऽयवायावः**
कार्यालयो + अयम्	= **कार्यालयोऽयम्**
को + अपि	= **कोऽपि**
कोषो + अयम्	= **कोषोऽयम्**
को + असि	= **कोऽसि**
को + अयम्	= **कोऽयम्**
गुरवो + अधुना	= **गुरवोऽधुना**
गुरो + अहम्	= **गुरोऽहम्**
गो + अग्रम्	= **गोऽग्रम्**
गुरो + अत्र	= **गुरोऽत्र**
गोविन्दो + अतिथिः	= **गोविन्दोऽतिथिः**
चादयो + असत्वे	= **चादयोऽसत्वे**
जशो + अन्ते	= **जशोऽन्ते**
ततो + अत्र	= **ततोऽत्र**
ततो + अन्यः	= **ततोऽन्यः**
ततो + अन्यत्र	= **ततोऽन्यत्र**
दीर्घो + अणः	= **दीर्घोऽणः**
दासो + अहम्	= **दासोऽहम्**
दोषो + अस्ति	= **दोषोऽस्ति**
नमो + अस्तु	= **नमोऽस्तु**
पण्डितो + अपि	= **पण्डितोऽपि**
प्रथमो + अङ्कः	= **प्रथमोऽङ्कः**
प्रभो + अहम्	= **प्रभोऽहम्**
प्रभो + अनुगृहाण	= **प्रभोऽनुगृहाण**
पुरुषो + अत्र	= **पुरुषोऽत्र**
बहवो + अत्र	= **बहवोऽत्र**
बहवो + अद्य	= **बहवोऽद्य**
मो + अनुस्वारः	= **मोऽनुस्वारः**

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम्

ब्राह्मणो + अब्रवीत् = **ब्राह्मणोऽब्रवीत्**

यरो + अनुनासिकः = **यरोऽनुनासिकः**

यो + अशि = **योऽशि**

रामो + अहसत् = **रामोऽहसत्**

वटो + अयम् = **वटोऽयम्**

विरामो + अवसानम् = **विरामोऽवसानम्**

विप्रो + अहम् = **विप्रोऽहम्**

वचनो + अनुनासिकः = **वचनोऽनुनासिकः**

वायो + अत्र = **वायोऽत्र**

सर्पो + अहम् = **सर्पोऽहम्**

संज्ञो + अन्यतरस्याम् = **संज्ञोऽन्यतरस्याम्**

सो + अवदत् = **सोऽवदत्**

सो + अयम् = **सोऽयम्**

हो + अन्यतरस्याम् = **होऽन्यतरस्याम्**

विधिसूत्र = ''सर्वत्र विभाषा गोः''

गो + अग्रम् = **गोअग्रम्**

विधिसूत्र = ''अवङ् स्फोटायनस्य''

गो + अग्रम् = **गवाग्रम्**

गो + अधिपः = **गवाधिपः**

गो + अक्षः = **गवाक्षः**

गो + अनृतम् = **गवानृतम्**

गो + ईशः = ग् अवङ् ईशः = **गवेशः**

गो + ईश्वरः = ग् अवङ् + ईश्वरः = **गवेश्वरः**

गो + ऋद्धिः = ग् अवङ् ऋद्धिः =ग् अव ऋद्धिः = **गवर्द्धिः**

गो + इच्छा = **गवेच्छा**

'नित्य अवङ्' आदेश

विधि सूत्र - ''इन्द्रे च''

गो + इन्द्रः = ग् अवङ् इन्द्रः=ग् अव इन्द्रः=**गवेन्द्रः**

सन्धि = प्रकृतिभाव

आगच्छ कृष्ण३ अत्र गौश्चरति

सूत्र - ''दूराद्धूते च''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम्

सूत्र - ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्

हरी + एतौ = **हरी एतौ**

विष्णू + इमौ = **विष्णू इमौ**

गङ्गे + अमू = **गङ्गे अमू**

भानू + एतौ = **भानू एतौ**

प्रकृतिभाव

इ + इन्द्र = **इ इन्द्र**

1. ''**चादयोऽसत्त्वे**'' से निपात संज्ञा

2. '**निपात एकाजनाङ्**' से प्रगृह्यसंज्ञा

3. प्रगृह्य संज्ञा का फल 'प्रकृतिभाव'

नोट - इसी प्रकार नीचे के अन्य उदाहरणों में भी प्रकृतिभाव है।

उ + उमेशः = **उ उमेशः**

आ + एवं नु मन्यसे = **आ एवं नु मन्यसे**

सूत्र-ओत्

अहो + ईशाः = **अहो ईशाः**

''**चादयोऽसत्वे**'' से 'ओ' की निपातसंज्ञा,'ओत्' सूत्र से प्रगृह्यसंज्ञा

प्रगृह्यसंज्ञा का फल है प्रकृतिभाव -

विष्णो + इति = विष्णो इति

प्रकृतिभाव ''**सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे**'' सूत्र से

विष्णो + इति = **विष्ण इति**

वकार का लोप ''**लोपः शाकल्यस्य**'' सूत्र से

विष्णो + इति = **विष्णविति**

सूत्र = ''एचोऽयवायावः'' सूत्र से

प्रकृतिभाव विकल्प से

सूत्र '' मय उञो वो वा''

किमु + उत्तम् = **किम् + उ + उत्तम्**

उकार की '**निपात एकाजनाङ्**' से प्रगृह्यसंज्ञा

प्रकृतिभाव को बाधकर उकार को वकार आदेश हुआ।

किम् + व् + उत्तम् = **किम्वुत्तम्**

''**मय उञो वो वा**'' को न लगाने पर प्रकृतिभाव होकर = **किमु उत्तम्** बनेगाा।

व्यञ्जन-सन्धि-उदाहरणम्

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

अग्निचित् + नयति = **अग्निचिन्नयति** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
अधिष् + थाता = **अधिष्ठाता** ''ष्टुना ष्टुः''
एकस्मिन् + अहीनः = **एकस्मिन्नहीनः** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
अप्रज्ञावान् + संशेते = **अप्रज्ञावान्त्संशेते** ''नश्च''
अस्मिन् + समये= **अस्मिन्त्समये/अस्मिन्समये** ''नश्च''
अग्निचित् + ङकारः = **अग्निचिन्ङकारः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
अश् + नित्यम् = **अश्नित्यम्** ''शात्''
असकृद् + डयनम् = **असकृड्डयनम्** ''ष्टुना ष्टुः''
अप् + मात्रम् = **अम्मात्रम्** ''प्रत्यये भाषायां नित्यम्''
अप् + हस्ती = **अब्भस्ती** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
अज् + ह्रस्वः = **अज्झ्रस्वः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
अस्मिन् + उद्याने = **अस्मिन्नुद्याने** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
अप् + ह्रासः = **अब्भ्रासः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
अप् + ह्रदौ = **अब्ह्रदौ / अब्भ्रदौ** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
अनम् + सीत् = **अनंसीत्** ''नश्चापदान्तस्य झलि''
अहं + कारः = **अहङ्कारः** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अन्यत् + च = **अन्यच्च** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
अप् + जम् = **अब्जम्** ''झलां जशोऽन्ते''
अच् + अन्तः = **अजन्तः** ''झलां जशोऽन्ते''
अच् + वर्णः = **अज्वर्णः** ''झलां जशोऽन्ते''
अनुष्टुप् + एव = **अनुष्टुबेव** ''झलां जशोऽन्ते''
अस्मात् + वचनात् = **अस्माद्वचनात्** ''झलां जशोऽन्ते''
अप् + धिः = **अब्धिः** ''झलां जशोऽन्ते''
अच् + हीनम् = **अज्झीनम्** ''झलां जशोऽन्ते'' + झयो होऽन्यतरस्याम्
अप् + नदी = **अब्नदी** ''झलां जशोऽन्ते''
अप् + जः = **अब्जः** ''झलां जशोऽन्ते''
अस्मत् + देशः =**अस्मद्देशः** ''झलां जशोऽन्ते''
असकृत् + डयनम् = **असकृड्डयनम्** ''झलां जशोऽन्ते''
अस्मद् + पुत्रः = **अस्मत्पुत्रः** ''खरि च''
अपरस्मिन् + औषधे = **अपरस्मिन्नौषधे** ''ङमुडागमः''
अस्मान् + तारय = **अस्मांस्तारय** ''नश्छव्यप्रशान्''
अनु + छेदः = **अनुच्छेदः** ''छे च''
अं + कितः = **अङ्कित** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अहम् + गच्छामि =**अहं गच्छामि** ''मोऽनुस्वारः''
अहम् + पठामि = **अहं पठामि** ''मोऽनुस्वारः''
मातरम् + वन्दे = **मातरं वन्दे** ''मोऽनुस्वारः''
अप् + इन्धनम् = **अबिन्धनम्** ''झलां जशोऽन्ते''
अट् + आगमः = **अडागमः** ''झलां जशोऽन्ते''
अस्मद् + श्वसुरः = **अस्मच्छ्वसुरः/अस्मच्श्वसुरः** ''शश्छोऽटि'' + ''स्तोः श्चुना श्चुः''
अप् + हविः = **अब्भविः/ अब्हविः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
अहम् + वेद = **अहंवेद** ''मोऽनुस्वारः''
अं + गम् = **अङ्गम्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

अवाक् + मुखः = **अवाङ्मुखः/अवाग्मुखः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा'' + ''झलां जशोऽन्ते''
अप् + नदी = **अम्नदी** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
अं + चित् = **अञ्चित्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अप् + मयम् = **अम्मयम्** ''प्रत्यये भाषायां नित्यम्''
अं + बरम् = **अम्बरम्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अं + कनम् = **अङ्कनम्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अं + घ्रिः = **अङ्घ्रिः** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
अज् + हलौ = **अज्झलौ/अज्हलौ** ''पूर्व सवर्ण'' ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
आकृष् + तः = **आकृष्टः** ''ष्टुना ष्टुः''
आपणम् + गत्वा = **आपणं गत्वा** ''मोऽनुस्वारः''
आक्रम् + स्यते = **आक्रंस्यते** ''नश्चापदान्तस्य झलि''
आ + छिद्यते = **आच्छिद्यते** ''दीर्घात्''
आ + छादयति = **आच्छादयति** ''आङ्माङोश्च''
आ + छादनम् = **आच्छादनम्** ''आङ्माङोश्च''
आरिभ् + सते = **आरिप्सते** ''खरि च''
इट् + निषेधः = **इण्निषेधः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
इ + छति = **इच्छति** ''छे च''
इ + छा = **इच्छा** ''छे च''
इत्थम् + कृत्वा = **इत्थङ्कृत्वा** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
इम् + गितम् = **इङ्गितम्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
इष् + तः = **इष्टः** ''ष्टुना ष्टुः''
इट् + तः = **इट्टः** ''ष्टुना ष्टुः''
ईश्वराद् + जयते = **ईश्वराज्जयते** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
ईट् + ते = **ईट्टे** ''ष्टुना ष्टुः''
ईश्वरात् + आगतः = **ईश्वरादागतः** ''झलां जशोऽन्ते''
उत् + स्थानम् = **उत्थानम्** ''उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य''
उत् + चारणम् = **उच्चारणम्** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
उत् + लेखः = **उल्लेखः** ''तोर्लि''
उत् + हारः = **उद्धारः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
उद् + डयनम् = **उड्डयनम्** ''ष्टुना ष्टुः''
उत् + योगः = **उद्योगः** ''झलां जशोऽन्ते''
उद् + डीयताम् = **उड्डीयताम्** ''ष्टुना ष्टुः''
उत् + हृतम् = **उद्धृतम्** ''झलां जशोऽन्ते''+ ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
उत् + ज्वलः = **उज्ज्वलः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
उत् + टलति = **उट्टलति** ''ष्टुना ष्टुः''
उत् + टङ्कनम् = **उट्टङ्कनम्** ''ष्टुना ष्टुः''
उत् + गमः = **उद्गमः** ''झलां जशोऽन्ते '
उद् + पतति = **उत्पतति** ''खरि च''
उत् + स्थातुम् = **उत्थातुम्** ''उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य''
उत् + स्तम्भितः = **उत्थम्भितः/उत्तम्भितः** ''उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

उत् + स्थितिः = **उत्थितिः** "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"

उद् + स्थाप्य =**उत्थाप्य** "खरि च" + "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"

उत् + स्तम्भनीयः = **उत्थतम्भनीयः** "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"

उद् + जीवनम् = **उज्जीवनम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"

उद् + स्थातव्यम् = **उत्थातव्यम्** "खरि च' + "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"

उत् + छेदः = **उच्छेदः** "स्तोः श्चुना श्चुः"

उद् + स्तम्भते = **उत्तम्भते** "खरि च" + "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"

उद् + स्थापयति = **उत्थापयति** "खरि च"+"उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"

उद् + स्थापकः = **उत्थापकः** "खरि च" + "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"

उद् + स्थितः = **उत्थितः** "खरि च" + "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य"

उद् + प्रस्थानम् = **उत्प्रस्थानम्** "खरि च"

ऊर्ध्वं + डीयते = **उर्ध्वण्डीयते** "वा पदान्तस्य"

एतद् + जयति = **एतज्जयति** "स्तोः श्चुना श्चुः"

एतत् + टीकते = **एतट्टीकते** "ष्टुना ष्टुः"

एतत् + श्रुत्वा = **एतच्छ्रुत्वा** "स्तोः श्चुना श्चुः" + शश्छोऽटि

एतद् + डामरः = **एतड्डामरः** "ष्टुना ष्टुः"

एतद् + मुरारिः = **एतन्मुरारिः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"

एतद् + मनोहरः = **एतन्मनोहरः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"

एतद् + ज्ञात्वा = **एतज्ज्ञात्वा** "स्तोः श्चुना श्चुः"

एतद् + कृतम् = **एतत्कृतम्** "खरि च"

एतत् + शरीरम् = **एतच्छरीरम्** "शश्छोऽटि"

एतद् + ढक्का = **एतड्ढक्का** "ष्टुना ष्टुः"

एकस्मिन् + अम्बुजे = **एकस्मिन्नम्बुजे** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"

काम् + तिः = **कान्तिः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"

किम् + चित् = **किञ्चित** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"

किम् + करोषि = **किङ्करोषि** "वा पदान्तस्य"

कष्टम् + सहते = **कष्टं सहते** "मोऽनुस्वारः"

कस् + चित् = **कश्चित्** "स्तोः श्चुना श्चुः"

कतमस् + टकारः = **कतमष्टकारः** "ष्टुना ष्टुः"

कार्य + छलम् = **कार्यच्छलम्** "छे च"

कामधुग् + खादति = **कामधुक्खादति** "खरि च"

कृष्णस् + चपलः = **कृष्णश्चपलः** "स्तोः श्चुना श्चुः"

ककुभ् + ईशः = **ककुबीशः** "झलां जशोऽन्ते"

ककुब् + नायकः = **ककुम्नायकः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"

कश्चित् + लभते = **कश्चिल्लभते** "तोर्लि"

कुशान् + लुनाति = **कुशाल्ँलुनाति** "तोर्लि"

कश्चित् + शेते = **कश्चिच्शेते** "स्तोः श्चुना श्चुः"

किम् + ह्यः = **किंह्यः/कियँह्यः** "यवलपरे यवला वा"

कान् + लेढि = **काँल्लेढि** "तोर्लि"

कं + टकम् = **कण्टकम्** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"

किम् + करोति = **किं करोति/किङ्करोति** 'मोऽनुस्वारः' "वा पदान्तस्य"

किम् + ह्वलयति=**किंह्वलयति/किवँह्वलयति** "यवलपरे यवला वा"

किम् + ह्लादयति=**किंह्लादयति/किलँह्लादयति** "यवलपरे यवला वा"

किम् + ह्वयतु = **किवँह्वयतु** "यवलपरे यवला वा"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

किम् + ह्नुते = **किंह्नुते/किन्ह्नुते** "नपरे नः"

कथम् + ह्नुते = **कथन्ह्नुते** "नपरे नः"

कुर्वन् + आस्ते = **कुर्वन्नास्ते** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"

कस्मिन् + चित् = **कस्मिंश्चित्** "नश्छव्यप्रशान्"

कान् + कान् = **काँस्कान्** "कानाम्रेडितम्"

काले + छिद्यते = **कालेच्छिद्यते** "दीर्घात् पदान्ताद् वा"

ककुब् + हस्ती = **ककुब्भस्ती** "झयो होऽन्यतरस्याम्"

कुशान् + लाति = **कुशाल्ँलाति** "तोर्लि"

कतिचित् + दिनानि = **कतिचिद्दिनानि** "झलां जशोऽन्ते"

कुं + तः = **कुन्तः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"

कस्मिन् + इह = **कश्मिन्निह** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"

कथम् + चलसि = **कथं चलसि** "मोऽनुस्वारः"

कुलटा + छिन्नासिका = **कुलटाच्छिन्नासिका** "दीर्घात् पदान्ताद् वा"

कृषीस् + टः = **कृषीष्टः** "ष्टुना ष्टुः"

कां + तः = **कान्तः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"

क्लिश् + नाति = **क्लिश्नाति** "शात्"

कृष् + तवती = **कृष्टवती** "ष्टुना ष्टुः"

कृद् + तद्वितौ = **कृत्तद्वितौ** "खरि च"

गरुत्मान् + डयते = **गरुत्माण्डयते** "ष्टुना ष्टुः"

गुच्छ +छेदः = **गुच्छच्छेदः** "छे च"

गुढा + छेकोक्तिः = **गुढाच्छेकोक्तिः** "दीर्घात् पदान्ताद् वा"

गुणिन् + जयः = **गुणिञ्जयः** "स्तोः श्चुना श्चुः"

गृहम् + गत्वा = **गृहङ्गत्वा** "वा पदान्तस्य"

गच्छन् + अस्ति = **गच्छन्नस्ति** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"

गच्छद् + हूणः = **गच्छद्धूणः** "झयो होऽन्यतरस्याम्"

गुप् + शूरता = **गुप्छूरता** "शश्छोऽटि"

गृहम् + गच्छति = **गृहं गच्छति** "मोऽनुस्वारः"

गुरुम् + नमति =**गुरुं नमति** "मोऽनुस्वारः"

गुं + जति = **गुञ्जति** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"

गुं + फितः = **गुम्फितः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"

गं + ता = **गन्ता** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"

ग्रामात् + चलितः = **ग्रामाच्चलितः** "स्तोः श्चुना श्चुः"

गच्छन् + अवोचत् = **गच्छन्नवोचत्** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"

गच्छन् + लक्ष्मणः = **गच्छल्ँलक्ष्मणः** "तोर्लि"

गर्जन् + लङ्केश्वरः = **गर्जल्ँलङ्केश्वरः** "तोर्लि"

गम् + स्यति = **गंस्यति** "नश्चापदान्तस्य झलि"

चि + छेदः = **चिच्छेदः** "छे च"

चलत् + लाङ्लनम् = **चलल्लाङ्लनम्** "तोर्लि"

चलन् + टिट्टिभः = **चलं ष्टिट्टिभः** "नश्छव्यप्रशान्"

चञ्चुमान् + टिट्टिभः = **चञ्चुमाँष्टिट्टिभः/चञ्चुमांष्टिट्टिभः** "नश्छव्यप्रशान्"

चं + चुः = **चञ्चुः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"

चलत् + शुकः = **चलच्छुकः** "शश्छोऽटि"

चक्रिन् + त्रायस्व = **चक्रिंस्त्रायस्व** "नश्छव्यप्रशान्"

चित् + आनन्दः =**चिदानन्दः** "झलां जशोऽन्ते"

चित् + लीनः = **चिल्लीनः** "तोर्लि"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

चक्रिन् + ढौकसे = **चक्रिण्ढौकसे** ''ष्टुना ष्टुः''
चे + छिद्यते = **चेच्छिद्यते** ''दीर्घात् पदान्ताद् वा''
चित् + मयः = **चिन्मयः** '' प्रत्यये भाषायां नित्यम्''
चतुर् + नाम् = **चतुर्णाम्** ''रषाभ्यां नो णः समानपदे''
छेद् + तव्यम् = **छेत्तव्यम्** ''खरि च''
छेद् + तुम् = **छेत्तुम्** ''खरि च''
जगत् + ईशः = **जगदीशः** ''झलां जशोऽन्ते''
जगत् + नाथः = **जगन्नाथः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
जगत् + अन्तः = **जगदन्तः** ''झलां जशोऽन्ते''
जगत् + आदिः = **जगदादिः** ''झलां जशोऽन्ते''
जयत् + रथः = **जयद्रथः** ''झलां जशोऽन्ते''
जगत् + गुरुः =**जगद्गुरुः** ''झलां जशोऽन्ते''
जगद् + नियामकः =**जगन्नियामकः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
जाग्रत् + नागरिकः=**जाग्रन्नागरिकः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
जलं + पिबति = **जलम्पिबति** ''वा पदान्तस्य''
जहत् + लक्षणा = **जहल्लक्षणा** ''तोर्लि''
जगत् + लयः = **जगल्लयः** ''तोर्लि''
जनान् + लब्ध्वा = **जनाल्ँलब्ध्वा** ''तोर्लि''
जगत् + हितः = **जगद्धितः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
जगत् + लीयते = **जगल्लीयते** ''तोर्लि''
जगत् + धाता = **जगद्धाता** ''झलां जशोऽन्ते''
जगत् + शान्तिः = **जगच्छान्तिः** ''शश्छोऽटि'' + ''स्तोः श्चुना श्चुः''
जानन् + अपि = **जानन्नपि** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
जश् + त्वम् = **जशत्वम्** ''शात्''
जलमुक् + गर्जति = **जलमुग्गर्जति** ''झलां जशोऽन्ते''
झं + झावातः = **झञ्झावातः** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
टित् + ढाणञ् = **टिड्ढाणञ्** ''झलां जशोऽन्ते''
टवर्गस् + टादिः = **टवर्गष्टादिः** ''ष्टुना ष्टुः''
ठक्करात् +उत्पन्नः = **ठक्करादुत्पन्नः** ''झलां जशोऽन्ते''
डिण्डिमात् + आगतः = **डिण्डिमादागतः** ''झलां जशोऽन्ते''
तपस् + चर्या = **तपश्चर्या** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
तत् + चिन्त्यम् = **तच्चिन्त्यम्** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
तत् + च = **तच्च** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
तत् + टीका = **तट्टीका** ''ष्टुना ष्टुः''
तद् + डमरुः = **तड्डमरुः** ''ष्टुना ष्टुः''
तत् + लीनः = **तल्लीनः** ''तोर्लि''
तत् + लयः = **तल्लयः** ''तोर्लि''
तत् + मात्रम् = **तन्मात्रम्** ''प्रत्यये भाषायां नित्यम्''
तत् + शिवः = **तच्छिवः** ''स्तोः श्चुना श्चुः'' + ''शश्छोऽटि''
तान् + साध्यान् = **तान्त्साध्यान्** ''नश्च''
तान् + तान् = **ताँस्तान्** ''नश्छव्यप्रशान्''
तत् + शरणम् = **तच्शरणम्/तच्छरणम्** ''स्तोः श्चुना श्चुः'' ''शश्छोऽटि''
तद् + शरीरम् = **तच्छरीरम्** ''स्तोः श्चुना श्चुः'' ''शश्छोऽटि''
तद् + हेयम् = **तद्धेयम्** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
तत् + ऋणम् = **तदृणम्** ''झलां जशोऽन्ते''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

तत् + यथा = **तद्यथा** ''झलां जशोऽन्ते''
तत् + श्लोकेन = **तच्छ्लोकेन** ''शश्छोऽटि'' + ''स्तोः श्चुना श्चुः''
तावत् + एनम् = **तावदेनम्** ''झलां जशोऽन्ते''
तत् + अपि = **तदपि** ''झलां जशोऽन्ते''
तादृग् + कर्म = **तादृक्कर्म** ''खरि च''
तत् + नयति = **तन्नयति** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
तद् + मङ्गलम् = **तन्मङ्गलम्** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
तस्माद् + नागरिकः = **तस्मान्नागरिकः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
त्वग् + मोचनम् = **त्वङ्मोचनम्** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
त्वं + करोषि = **त्वङ्करोषि** ''वा पदान्तस्य''
तिर्यङ् + अत्र = **तिर्यङ्ङत्र** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
तपस्विन् + एहि = **तपस्विन्नेहि** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
तस्मिन् + एतस्मिन् = **तस्मिन्नेतस्मिन्** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
तद् + हेतुकम् = **तद्धेतुकम्** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
तद् + हि = **तद्धि** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
तत् + श्मश्रुः = **तच्छ्मश्रुः** 'शश्छोऽटि''
तत् + श्नाप्रत्ययः = **तच्छ्नाप्रत्ययः** ''शश्छोऽटि''
तत् + शुभम् = **तच्छुभम्/तत्शुभम्** ''शश्छोऽटि''
तत् + श्लाघनम् = **तच्छ्लाघनम्** ''शश्छोऽटि''
तान् + च = **ताँश्च/तांश्च** ''नश्छव्यप्रशान्''
तिप् + अन्तः = **तिबन्तः** ''झलां जशोऽन्ते''
तद् + न = **तन्न** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
तरन् + अन्तः = **तरन्नन्तः** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
तद् + लीला = **तल्लीला** ''तोर्लि''
तत् + जानाति = **तज्जानाति** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
तुक् + आगमः = **तुगागमः** ''झलां जशोऽन्ते''
तत् + हितम् = **तद्धितम्** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
तद् + हानिः = **तद्धानिः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
तत् + श्रुत्वा = **तच्छ्रुत्वा** ''शश्छोऽटि''
तद् + श्लक्ष्णः = **तच्छ्लक्ष्णः** ''शश्छोऽटि''
त्वग् + मनसी = **त्वङ्मनसी** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
दयुत् + शलेन = **दयुच्छलेन** ''स्तोः श्चुना श्चुः'' + ''शश्छोऽटि''
दानम् + यच्छति =**दानं यच्छति** ''वा पदान्तस्य''
दन्त + छदः = **दन्तच्छदः** ''छे च''
दृष् + तः = **दृष्टः** ''ष्टुना ष्टुः''
दांम् + तः =**दांतः/दान्तः** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
दिक् + गजः = **दिग्गजः** ''झलां जशोऽन्ते''
दिग् + पालः = **दिक्पालः** ''खरि च''
देवी + छाया = **देवीच्छाया** ''दीर्घात्''
दिक् + भाग = **दिग्भागः** ''झलां जशोऽन्ते''
दिग् + मध्ये = **दिङ्मध्ये** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
दुःखम् + सहते =**दुःखं सहते** ''मोऽनुस्वारः''
देशम् + रक्षति = **देशं रक्षति** ''मोऽनुस्वारः''
दिक् + विजयः = **दिग्विजयः** ''झलां जशोऽन्ते''
दिग् + हस्ते = **दिग्घस्ते** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

दिग् + हस्ती = **दिग्घस्ती** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
दूरात् +हूते = **दूराद्धूते** ''झयो होऽन्यतस्याम्''
ददत् + हसति = **ददद्धसति** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
दिव्यम् + सरः = **दिव्यं सरः** ''मोऽनुस्वारः''
दं + डः = **दण्डः** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
धनम् + यच्छ = **धनं यच्छ** ''मोऽनुस्वारः''
धर्मम् + चर = **धर्मं चर** ''मोऽनुस्वारः''
धावन् + अपतत् = **धावन्नपतत्** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
धनुस् + टङ्कारः = **धनुष्टङ्कारः** ''ष्टुना ष्टुः''
धनवान् + शूद्रः = **धनवाञ्शूद्रः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
धिक् + मूर्खम् = **धिङ्मूर्खम्** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
धीमान् + लिखति = **धीमाँल्लिखति** ''तोर्लि''
धिक् + याचकम् = **धिग्याचकम्** ''झलां जशोऽन्ते''
धान्यम् + मीयते = **धान्यं मीयते/धान्यम्मीयते** ''वा पदान्तस्य''
निविष् + तः = **निविष्टः** ''ष्टुना ष्टुः''
नम् + दति = **नन्दति** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
नृन् + पाहि = **नॄँपाहि/नॄंपाहि, नॄँःपाहि/नॄंःपाहि** ''नॄन् पे''
नो + छेदः = **नोच्छेदः** ''दीर्घात् पदान्तात् वा''
नॄंः + पाहि = **नॄ$\asymp$पाहि** ''कुप्वोः$\asymp$क$\asymp$पौ च''
नॄँ + पश्य = **नॄ$\asymp$पश्य** ''कुप्वोः$\asymp$क$\asymp$पौ च''
नॄँ + पाठयति = **नॄँ पाठयति** ''कुप्वोः$\asymp$क$\asymp$पौ च''
नृन् + पिपर्ति =**नॄँपिपर्ति/नॄंपिपर्ति, नॄँःपिपर्ति/नॄंःपिपर्ति** ''नॄन् पे''
नारदस् + शशापः = **नारदश्शशापः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
नव + छिद्राणि = **नवच्छिद्राणि** ''छे च''
नमन् + शाखी = **नमञ्छशाखी** ''शि तुक्''
परिव्राट् + साधुः = **परिव्राट्साधुः** ''न पदान्ताट्टोरनाम्''
पठन् + साख्यम् = **पठन्साख्यम्** ''नश्च''
प्राक् + नमस्कारः = **प्राङ्नमस्कारः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
पुमान् + श्रूयते = **पुमाञ्छ्रूयते** ''शि तुक्''
पयान् + सि = **पयांसि** ''नश्चापदान्तस्य झलि''
पठन् + अपतत् = **पठन्नपतत्** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
पुम् + कोकिलः = **पुँस्कोकिलः/पुंस्कोकिलः** ''पुमः खय्यम्परे''
पुम् + पुत्रः = **पुँस्पुत्रः/पुंस्पुत्रः** ''पुमः खय्यम्परे''
पुम् + फेरुः = **पुँस्फेरुः/पुंस्फेरुः** ''पुमः खय्यम्परे''
पुम् + चरित्रः = **पुँस्चरित्रः/पुंस्चरित्रः** ''पुमः खय्यम्परे''
पुम् + क्रोधः = **पुँस्क्रोधः/पुंस्क्रोधः** ''पुमः खय्यम्परे''
पद + छेदः = **पदच्छेदः** ''छे च''
प्रश् + नः = **प्रश्नः** ''शात्''
प्रष् + ता = **प्रष्टा** ''ष्टुना ष्टुः''
पदार्थास् +षट् = **पदार्थाष्षट्** ''ष्टुना ष्टुः''
प्राङ् + शूरः = **प्राङ्क्शूरः** ''ङ्णोःकुक्टुक्शरि''
पुत्रान्+शाययति=**पुत्राञ्शाययति/पुत्राञ्छाययति/पुत्राञ्शाययति** ''शि तुक्''
पुम् + टिट्टिभिः = **पुँष्टिट्टिभिः/पुंष्टिट्टिभिः** ''पुमः खय्यम्परे''
पक्षिन् + टिट्टिभिः = **पक्षिण्टिट्टिभिः** ''ष्टुना ष्टुः''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

पतद् + डिम्भः =**पतड्डिम्भः** ''ष्टुना ष्टुः''
पुस्तकम् + पश्य = **पुस्तकं पश्य** ''मोऽनुस्वारः''
पापम् + शान्तम् = **पापं शान्तम्** ''मोऽनुस्वारः''
प्रें + खा = **प्रेङ्खा** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
पं + जरम् = **पञ्जरम्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
पिं + डम् = **पिण्डम्** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
पठन् + लिखति = **पठल्लिँखति** ''तोर्लि''
पतत् + लेखनी =**पतल्लेखनी** ''तोर्लि''
पचन् + अस्ति = **पचन्नस्ति** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
पूर्वस्मिन् + ईश्वरे = **पूर्वस्मिन्नीश्वरे** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
प्राग् + हसित्वा = **प्राग्घसित्वा** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
पतत् + हितम् = **पतद्धितम्** '' झयो होऽन्यतरस्याम्''
पदवी + छात्रा =**पदवीच्छात्रा** ''दीर्घात्''
परि + छेदः = **परिच्छेदः** ''छे च''
पश्यन् + चकितः = **पश्यंश्चकितः/पश्यँश्चकितः** ''नश्छव्यप्रशान्''
प्राक् + मुखः = **प्राङ्मुखः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
पृष् + तः = **पृष्टः** ''ष्टुना ष्टुः''
पृष् + थः = **पृष्ठः** ''ष्टुना ष्टुः''
पेष् + ता = **पेष्टा** ''ष्टुना ष्टुः''
पुस्तकम् + पठति = **पुस्तकं पठति** ''मोऽनुस्वारः''
पूष् + ना = **पूष्णा** ''रषाभ्यां नो णः समानपदे''
पेष् + तुम् = **पेष्टुम्** ''ष्टुना ष्टुः''
बृहत् + छादनम् = **बृहच्छादनम्** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
बुद्धिमान् + छात्रः = **बुद्धिमाँश्छात्रः** ''नश्छव्यप्रशान्''
बृहत् + छिद्रम् = **बृहच्छिद्रम्** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
बृहत् + चित्रम् = **बृहच्चित्रम्** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
बृहत् + छत्रम् = **बृहच्छत्रम्** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
बृहद् + ढक्का = **बृहड्ढक्का** ''ष्टुना ष्टुः''
बृहत् + टीका = **बृहट्टीका** ''ष्टुना ष्टुः''
बृहत् + नदी = **बृहन्नदी** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
बृहद् + डिण्डिमः = **बृहड्डिण्डिमः** ''ष्टुना ष्टुः''
भवद् + डमरुः = **भवड्डमरुः** ''ष्टुना ष्टुः''
भीष्मात् + षाड्गुण्यं शिक्षते = **भीष्मात्षाड्गुण्यं शिक्षते** ''तोः षि''
भेद् + तव्यम् = **भेत्तव्यम्** ''खरि च''
भारतम् + वहति = **भारतं वहति** ''मोऽनुस्वारः''
भुं + क्ते = **भुङ्क्ते** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
भवान् + चलति = **भवांश्चलति** ''नश्छव्यप्रशान्''+''विसर्जनीयस्य सः''
भूमिं +खनति = **भूमिङ्खनति** ''वा पदान्तस्य''
भवद् + हितरक्षकः = **भवद्धितरक्षकः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
भेद् + तुम् = **भेत्तुम्** ''खरि च''
भ्राजद् + हिरण्यम् = **भ्राजद्धिरण्यम्** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
भूभृत् + चलति = **भूभृच्चलति** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
भगवत् + शक्तिः = **भगवच्छक्तिः** ''स्तोः श्चुना श्चुः'' + ''शश्छोऽटि''
भास्वान् + चरति = **भास्वांश्चरति** ''नश्छव्यप्रशान्''
भृद् + जौ = **भृज्जौ** ''स्तोः श्चुना श्चुः''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

भूभृत् + श्लाघा=**भूभृच्छ्लाघा** ''स्तोः श्चुना श्चुः'' ''छत्वमीति वाच्यम्'' (वा.)
भवान् + सखा = **भवान्त्सखा** ''नश्च''
भगवन् + अत्र = **भगवन्नत्र** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
भूपति + छाया = **भूपतिच्छाया** ''छे च''
भजन् + शिवम् = **भजञ्छिवम्** ''शि तुक्'' + ''शश्छोऽटि''
मत् + टीका = **मट्टीका** ''ष्टुना ष्टुः''
मानवान् + लोभयित्वा = **मानवाँल्लोभयित्वा** ''तोर्लि''
मनाक् + हसति = **मनाग्हसति** ''झलां जशोऽन्ते''
मद् + नीतिः = **मन्नीतिः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
मृड् + मयम् = **मृण्मयम्** ''प्रत्यये भाषायां नित्यम्''
मधुरं + गायति = **मधुरङ्गायति** ''वा पदान्तस्य''
महान् + तिरस्कारः = **महांश्तिरस्कारः** ''नश्छव्यप्रशान्''
महान् + लाभः = **महाँल्लाभः** ''तोर्लि''
महान् + डमरुः = **महाण्डमरुः** ''ष्टुना ष्टुः''
मधुलिट् + हसति = **मधुलिड्ढसति** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''''ष्टुना ष्टुः''
मधुलिट् + शेते = **मधुलिट्छेते** ''शश्छोऽटि''
महान् + तुन्दिलः = **महास्तुन्दिलः** ''नश्छव्यप्रशान्''
मनान् + सि = **मनांसि** ''नश्चापदान्तस्य झलि''
मन्दम् + हसति = **मन्दं हसति** ''मोऽनुस्वारः''
मङ्गल + छाया = **मङ्गलच्छाया** ''छे च''
मूषक + छेदः = **मूषकच्छेदः** ''छे च''
मा + छित्वा = **माच्छित्वा** ''आङमाङोश्च''
मधु + छन्दस् = **मधुच्छन्दस्** ''छे च''
महाविद्यालय + छात्रः = **महाविद्यालयच्छात्रः** ''छे च''
महान् + तारकः = **महाँःतारकः/महांःतारकः** ''नश्छव्यप्रशान्''
महत् + शरण्यम् = **महच्छरण्यम्** ''शश्छोऽटि''
मतिमान् + श्लाघते = **मतिमाञ्श्लाघते** ''शि तुक्''
मित्वाद् + ह्रस्वः = **मित्वाद्घ्रस्वः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
मुनीन् + जितवान् = **मुनीञ्जितवान्** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
यज् + नः = **यज्ञः** ''स्तोः श्चुना श्चुः'' (यज् धातु से नङ् प्रत्यय)
यद् + लक्षणम् = **यल्लक्षणम्** ''तोर्लि''
यशान् + सि = **यशांसि** ''नश्चापदान्तस्य झलि''
यद् + लाभः = **यल्लाभः** ''तोर्लि''
यज्ञ + छागः = **यज्ञच्छागः** ''छे च''
य + छति = **यच्छति** ''छे च ''
यद् + मण्डलम् = **यन्मण्डलम्** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
युयुद् + सवः = **युयुत्सवः** ''खरि च''
यावत् + शक्यम् = **यावच्छक्यम्** ''स्तोः श्चुना श्चुः''+''शश्छोऽटि''
यस्मिन् + लीयते = **यस्मिँल्लीयते** ''तोर्लि''
रम् + स्यते = **रंस्यते** ''नश्चापदान्तस्य झलि''
राजन् + जागृहि = **राजञ्जागृहि** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
राज् + नी = **राज्ञीः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
राज + छत्रम् = **राजच्छत्रम्** ''छे च''
राजन् + जयः = **राजञ्जयः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

रामस् + षष्ठः = **रामष्षष्ठः** ''ष्टुना ष्टुः''
रामस् + टीकते = **रामष्टीकते** ''ष्टुना ष्टुः''
रामस् + शेते = **रामश्शेते** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
रामस् + चिनोति = **रामश्चिनोति** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
रामस् + छात्रः = **रामश्छात्रः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
रामस् + च = **रामश्च** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
रामम् + वन्दे = **रामं वन्दे** ''मोऽनुस्वारः''
रत्नमुड् + हरति = **रत्नमुड्ढरति** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
राट् + नगरी = **राण्णगरी** ''अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्''
रत्नमुट् + धावति = **रत्नमुड्धावति** ''झलां जशोऽन्ते''
राज् + नः = **राज्ञः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
लिड् + सु = **लिट्त्सु** ''डः सि धुट्''
लुन् + ठति = **लुण्ठति** ''ष्टुना ष्टुः''
लिं + पति = **लिम्पति** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
लक्ष्मी + छाया = **लक्ष्मीच्छाया** ''दीर्घात् पदान्ताद् वा''
लिभ् + सा = **लिप्सा** ''खरि च''
लिड् + निमित्तः = **लिण्निमित्तः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
लिड् + सु = **लिट्सु** ''न पदान्ताट्टोरनाम्''
वाणिम् + वन्दे = **वाणिं वन्दे** ''मोऽनुस्वारः''
वाक्यम् + शृणोति = **वाक्यं शृणोति** ''मोऽनुस्वारः''
वाक् + मूलम् = **वाङ्मूलम्** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
वाग् + नियमः = **वाङ्नियमः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
वाक् + ईशः = **वागीशः** ''झलां जशोऽन्ते''
वाक् + व्यवहारः = **वाग्व्यवहारः** ''झलां जशोऽन्ते''
वाक् + देवता = **वाग्देवता** ''झलां जशोऽन्ते''
विपद् + कालः = **विपत्कालः** ''खरि च''
विराड् + पुरुषः = **विराट्पुरुषः** ''खरि च''
विश्वाराड् + कुत्र = **विश्वाराट्कुत्र** ''खरि च''
विपद् + प्रतीकारः = **विपत्प्रतीकारः** ''खरि च''
विद्युत् + नगरी =**विद्युन्नगरी** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
वीणाम् + वादयति = **वीणां वादयति** ''मोऽनुस्वारः''
वदन् + लज्जितः = **वदँल्लज्जितः** ''तोर्लि''
विलसत् + लङ्का = **विलसल्लङ्का** ''तोर्लि''
वणिग् + हसति = **वणिग्घसति** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
वाग् + हीनः = **वाग्घीनः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
विड् + हसति = **विड्ढसति** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
वियत् + चरः = **वियच्चरः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
वाक् + शरः = **वाक्छरः/वाक्शरः** ''शश्छोऽटि''
वाक् + शास्त्रम् = **वाक्छास्त्रम्** ''शश्छोऽटि''
वाक् + शस्त्रम् = **वाक्छस्त्रम्** ''शश्छोऽटि''
विट् + शङ्करः = **विट्छन्करः/विट्शङ्करः** ''शश्छोऽटि''
विद्वत् + श्रद्धा = **विद्वच्छ्रद्धा/विद्वच्श्रद्धा** ''शश्छोऽटि''
वृक्ष + छाया = **वृक्षच्छाया** ''छे च''
विश् + नः = **विश्नः** ''शात्''
वाक् + अत्र = **वागत्र** ''झलां जशोऽन्ते''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

वाग् + कलहः = **वाक्कलहः** ''खरि च''
वत्सान् + लेढि = **वत्साँल्लेढि** ''तोर्लि''
वचान् + सि = **वचांसि** ''नश्चापदान्तस्य झलि''
विद्वान् + सौ = **विद्वांसौ** ''नश्चापदान्तस्य झलि''
विरम् + स्यति = **विरंस्यति** ''नश्चापदान्तस्य झलि''
विद्युत् + गच्छति = **विद्युद्गच्छति** ''झलां जशोऽन्ते''
वाक् + मयम् = **वाङ्मयम्** ''प्रत्यये भाषायां नित्यम्''
वाक् + मात्रम् = **वाङ्मात्रम्** ''प्रत्यये भाषायां नित्यम्''
विद्वान् + लिखति = **विद्वाल्लिँखति** ''तोर्लि''
वस्त्रम् + हरति = **वस्त्रं हरति** ''मोऽनुस्वारः''
वाक् + हरिः = **वाग्घरि** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
वि + छेदः = **विच्छेदः** ''छे च''
विपद् + हेतुः =**विपद्धेतुः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
वाक् + जालम् =**वाग्जालम्** ''झलां जशोऽन्ते''
वाक् + दानम् = **वाग्दानम्** ''झलां जशोऽन्ते''
वाक् + रोधः = **वाग्रोधः** ''झलां जशोऽन्ते''
वाक् + मलम् = **वाङ्मलम्** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
वाक् + शूरः = **वाक्शूरः/वाक्छूरः** ''शश्छोऽटि''
विश्वसृट् + शेते = **विश्वसृट्छेते** ''शश्छोऽटि''
विपद् + लीनः = **विपल्लीनः** ''तोर्लि''
वृध् + धः = **वृद्धः** ''झलां जश् झशि''
वृच्छात् + लगुडम् = **वृक्षाल्लगुडम्** ''तोर्लि''
विद्युत् + लेखा = **विद्युल्लेखा** ''तोर्लि''
विद्वान् + सहते = **विद्वान्त्सहते** ''नश्च''
विद्वान्+शोभते=**विद्वाञ्छोभते/विद्वाञ्छोभते,विद्वाञ्शशोभते/ विद्वान्शोभते** ''शि तुक्''
विद्वान् + च्यवनः = **विद्वांश्च्यवनः** ''नश्छव्यप्रशान्''
विरप्+शिन्=**विरफ्शिन्/विरप्शिन्** ''चयोः द्वितीयाः शरि पौष्करशादेरिति''
वैदिक + छन्दांसि = **वैदिकच्छन्दांसि** ''छे च'
शत्रुम् + जहि = **शत्रुं जहि/शत्रुञ्जहि** '' वा पदान्तस्य''
शिशुस् + शेते = **शिशुश्शेते** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
शार्ङ्गिन् + जयः = **शर्ङ्गिञ्जयः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
शत्रुन् + जय =**शत्रुञ्जयः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
श् + तिप् = **श्तिप्** ''शात्''
शिव + छाया = **शिवच्छाया** ''छे च''
शश् + नाथः = **शश्नाथः** ''शात्''
शरद् + डम्बरः = **शरड्डम्बरः** ''ष्टुना ष्टुः''
शं + करः = **शङ्करः** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
शत्रुम् + जयति = **शत्रुं जयति** ''मोऽनुस्वारः''
शंखं + धमति = **शंखन्धमति** ''वा पदान्तस्य''
शिवं + भजति = **शिवम्भजति** ''वा पदान्तस्य''
श्वसन् + शेते = **श्वसञ्छेते** ''शश्छोऽटि'' +''स्तोः श्चुना श्चुः''
शर्मन् + अधीहि = **शर्मन्नधीहि** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
शां + तः = **शान्तः** ''अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः''
श्लोकान् + टीकाभिः = **श्लोकाँष्टीकाभिः** ''नश्छव्यप्रशान्''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

शिखरिणी + छन्दः = **शिखरिणीच्छन्दः** ''दीर्घात्''
श्वेत + छत्रम् =**श्वेतच्छत्रम्** ''छे च''
शुभ्र + छविः = **शुभ्रच्छविः** ''छे च''
श्रीमन् + झटिति = **श्रीमञ्झटिति** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
शार्ङ्गिन् + छिन्धि = **शार्ङ्गिंश्छिन्धि** ''नश्छव्यप्रशान्''
षट् + नाम् = **षण्णाम्** ''प्रत्यये भाषायां नित्यम्''
षट् + नवतिः = **षण्णवतिः** ''अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्''
षड् + नगर्यः = **षण्णगर्यः** ''अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्''
षट् + आननः = **षडाननः** ''झलां जशोऽन्ते''
षष् + थः = **षष्ठः** ''ष्टुना ष्टुः''
षट् + मुखः = **षण्मुखः/षड्मुखः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
षट् + दर्शनानि = **षड्दर्शनानि** ''झलां जशोऽन्ते''
षड् + खाद्यानि = **षट्खाद्यानि** ''खरि च''
षड् + मयूखाः = **षण्मयूखाः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
षड् + हयाः = **षड्ढयाः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
षड् + हर्म्याणि = **षड्ढर्म्याणि** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
षट् + भ्रातरः = **षड्भ्रातरः** ''झलां जशोऽन्ते''
षट् + मासः = **षण्मासः** ''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा''
षट् + होतारः = **षड्होतारः/षड्ढोतारः** ''झलां जशोऽन्ते''
षट् + सन्तः = **षट्सन्तः** ''न पदान्ताट्टोरनाम्''
षट् + आगच्छति = **षडागच्छति** ''झलां जशोऽन्ते''
षट् + सन्ततयः = **षट्त्सन्ततयः** ''डः सि धुट्''
षट् + समस्याः = **षट्त्समस्याः** ''डः सि धुट्''
षट् + सन्निकर्षाः = **षट्त्सन्निकर्षाः** ''डः सि धुट्''
सोमसुद् + झकारः = **सोमसुज्झकारः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
सन् + सः = **सन्त्सः** ''नश्च''
सत् + छात्रः = **सच्छात्रः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
सन् + शम्भुः = **सञ्छम्भुः** ''शि तुक्'' + शश्छोऽटि
समन्ताद् + जिघ्रति = **समताज्जिघ्रति** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
सुगण् + आलयः = **सुगण्णालयः** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
सर्पिस् + तम् = **सर्पिष्टम्** ''इसिसोः सामर्थ्ये''
सत् + छागः = **सच्छागः** ''स्तोः श्चुना श्चुः''
सोमसुद् + ढौकसे = **सोमसुड्ढौकसे** ''ष्टुना ष्टुः''
सच्चित् + आनन्दः = **सच्चिदानन्दः** ''झलां जशोऽन्ते''
स्याद् + णौ = **स्याण्णौ** ''ष्टुना ष्टुः''
सत् + जनः = **सज्जनः** ''झलां जशोऽन्ते'' + ''स्तोः श्चुना श्चुः''
स्व + छन्दः = **स्वच्छन्दः** ''छे च''
सुप् + अन्तः = **सुबन्तः** ''झलां जशोऽन्ते''
सत्वरम् + याति = **सत्वरं याति** ''मोऽनुस्वारः''
समिध् + अत्र = **समिदत्र** ''झलां जशोऽन्ते''
सत् + ठकारः = **सट्ठकारः** ''ष्टुना ष्टुः''
सम्राट् + इच्छति = **सम्राडिच्छति** ''झलां जशोऽन्ते''
सम्यक् + उक्तम् = **सम्यगुक्तम्** ''झलां जशोऽन्ते''
सम्पद् + हर्षः = **सम्पद्धर्षः** ''झयो होऽन्यतरस्याम्''
सन्नध् + धः = **सन्नद्धः** ''झलां जश् झशि''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

समुद् + हर्ता = **समुद्धर्ता** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
सुहृद् + क्रीडति = **सुहृत्क्रीडति** "खरि च"
सकृत् + श्लेष्मा=**सकृच्छ्लेष्मा** "छत्वममीतिवाच्यम्"+"स्तोः श्चुना श्चुः"
सन् + ति = **सन्ति** "नश्चापदान्तस्य झलि"
सत् + चित् = **सच्चित्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सुगण् + षष्ठः = **सुगण्ठ्षष्ठः** "ङ्णोः कुक्टुक् शरि"
सत् + चरित्रम् = **सच्चरित्रम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सुगण् + शेते = **सुगण्ठ्शेते** "ङ्णोः कुक्टुक्शरि"
सूर्यस् + छत्रः = **सूर्यश्छत्रः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सुगण् + सरति = **सुगण्ट्सरति** "ङ्णोः कुक्टुक्शरि"
सन् + षष्ठः = **सन्षष्ठः** "तोः षि"
सद् + मार्ग = **सन्मार्गः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"
सुहृद् + जगाम = **सुहृज्जगाम** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सम् + स्कर्ता = **सँस्स्कर्ता/ सँस्कर्ता** "सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे" "समः सुटि"
सत् + चिद्रूपम् = **सच्चिद्रूपम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सम् + स्कृतम् = **सँस्स्कृतम् / संस्कृतम्** "सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे" "समः सुटि"
सम्राट् + गच्छति = **सम्राड्गच्छति** "झलां जशोऽन्ते"
सुखम् + शेते = **सुखं शेते** "मोऽनुस्वारः"
सकृत् + चर्वणम् = **सकृच्चर्वणम्** "स्तोः श्चुना श्चुः"
सत् + टिप्पणी = **सट्टिप्पणी** "ष्टुना ष्टुः"
संस्कृत + छात्र = **संस्कृतच्छात्रः** "छे च"
सुप् + विभक्तिः = **सुब्विभक्तिः** "झलां जशोऽन्ते"
सूक्ष्म + छिद्रम् = **सूक्ष्मच्छिद्रम्** "छे च"
सम्यक् + अभिहितम् = **सम्यगभिहितम्** "झलां जशोऽन्ते"
सम्पद् + पुत्रः = **सम्पत्पुत्रः** "खरि च"
सम् + कारः = **संस्कारः** "नश्चापदान्तस्य झलि"
सम्पद् + कुमारः = **सम्पत्कुमारः** "खरि च"
सम् + धिः = **सन्धिः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सत्यम् + वद् = **सत्यं वद** "मोऽनुस्वारः"
सम् + तोषः = **सन्तोषः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सज्जनम् + मानय = **सज्जनं मानय** "मोऽनुस्वारः"
सम् + सारः = **संसारः** "नश्चापदान्तस्य झलि"
सर्वम् + स्थानम् = **सर्वंस्थानम्** "मोऽनुस्वारः"
सम्राट्+हरिद्राम्=**सम्राड्ढरिद्राम्** "झयो होऽन्यतरस्याम्"+"झलां जशोऽन्ते"
सं + पृक्तौ = **सम्पृक्तौ** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सृहृद् + हृष्टः = **सुहृद्धृष्टः** "झयो होऽन्यतरस्याम्"
सम् + यमः = **संय्यमः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सं + ख्या = **सङ्ख्या** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सं + वत्सरः = **सँव्वत्सरः/संवत्सरः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
संरं + भः = **संरम्भः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सं + लापः = **सलँ्लापः/ संलापः** तोर्लि "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सं + भ्रमः = **सम्भ्रमः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सं + भवः = **सम्भवः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सम् + बन्धः = **सम्बन्धः** "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः"
सुगण् + ईशः = **सुगण्णीशः** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

सर्वस्मिन् + अपि = **सर्वस्मिन्नपि** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
सर्वस्मिन् + एव = **सर्वस्मिन्नेव** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
हरिस् + छत्रधरः = **हरिश्छत्रधरः** "स्तोः श्चुना श्चुः"
हरिस् + शेते = **हरिश्शेते** "स्तोः श्चुना श्चुः"
हरिस् + षडङ्गमधीते = **हरिष्षडङ्गमधीते** "ष्टुना ष्टुः"
हेतुमत् + णौ = **हेतुमण्णौ** "ष्टुना ष्टुः"
हनुमान् + लङ्कादहति = **हनुमाल्ँलङ्कादहति** "तोर्लि"
हसन् + लेढि = **हसल्ँलेढि** "तोर्लि"
हन् + सि = **हंसि** "नश्चापदान्तस्य झलि"
हसन् + आगच्छति = **हसन्नागच्छति** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
हरिम् + वन्दे = **हरिं वन्दे** "मोऽनुस्वारः"
हे! गुणिन् + जानातु = **हे! गुणिञ्जानातु** "स्तोः श्चुना श्चुः"
हसन् + अत्ति = **हसन्नत्ति** "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"
क्षेत्रम् + लुनाति = **क्षेत्रं लुनाति** "मोऽनुस्वारः"
त्रिष्टुप् + आदिः = **त्रिष्टुबादिः** "झलां जशोऽन्ते"
त्रिष्टुप् + छन्दः = **त्रिष्टुप्छन्दः** "खरि च"
ज्ञानात् + मुक्तिः = **ज्ञानान्मुक्तिः** "यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"

विसर्गसन्धि-उदाहरणम् (अकारादि क्रम से)

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

अयः + करः = **अयस्करः** "कस्कादिषु च"
अहन् + अहः = **अहरहः** "रोऽसुपि"
अहन् + अदः = **अहरदः** "रोऽसुपि"
अहन् + गणः = **अहर्गणः** "रोऽसुपि"
अहन् + भाति = **अहर्भाति** "रोऽसुपि"
अधः + पदम् = **अधस्पदम्** "अधःशिरशीपदे"
अन्तर् + राष्ट्रियः = **अन्ताराष्ट्रियः** "रो रि" "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
अलिढ् + ढः = **अलीढः** "ढो ढे लोपः" + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
अहर् + रम्यः = **अहारम्यः** "रो रि" + "ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"
अशस् + शिवः =**अशःशिवः/अशश्शिवः** "अनञ्समासे"
अहन् + गच्छति = **अहर्गच्छति** "रोऽसुपि"
अर्कः + सेव्यः = **अर्कःसेव्यः/अर्कस्सेव्यः** "वा शरि"
अयः + कुशा = **अयस्कुशा** "अतः कृकमिकंस........"
अयः + कामः = **अयस्कामः** "अतः कृकमिक............"
अयः + कान्तः = **अयस्कान्तः** "कस्कादिषु च"
अन्तर् + करणम् = **अन्तःकरणम्** "खरवसानयोर्विसर्जनीयः"
अहन् + अहन् + गच्छति = **अहरहर्गच्छति** "रोऽसुपि"
अपिपर् + अयम् = **अपिपोऽयम्** "अतोरोरप्लुतादप्लुते"
अकुतः + भयः = **अकुतोभयः** "हशि च"
अहन् + अहन् + अत्र = **अहरहरत्र** "रोऽसुपि"
अन्तर् + करोति = **अन्तःकरोति** "खरवसानयोर्विसर्जनीयः"
अहन् + इदानीम् = **अहरिदानीम्** "रोऽसुपि"
अतीतः + मासः = **अतीतोमासः** "हशि च"
अयः + कारः = **अयस्कारः** "अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य"
अयः + पात्रम् = **अयस्पात्रम्** "अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य"

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

अयः + कामः = **अयस्कामः** “अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य”
अयः + केशः = **अयस्केशः** “अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य”
अयः + कुम्भः = **अयस्कुम्भः** “अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य”
अयः + कर्णी = **अयस्कर्णी** “अतःकृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य”
अहन् + इदम् = **अहरिदम्** “रोऽसुपि”
अहन् + रूपम् = **अहोरूपम्** “रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम्” हशि च
अहन् + रथन्तरम्=**अहोरथन्तरम्** “रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम्” हशि च
अहन् + रात्रः = **अहोरात्रः** “रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम्” हशि च
अहन् + भ्याम् = **अहोभ्याम्** “हशि च”
अहर् + पति = **अहर्पतिः** “अहरादीनां पत्यादिषु वा रेफः”
अश्वास् + धावान्ति =**अश्वा धावन्ति** “हलि सर्वेषाम्”
अगदस् + ज्वरम् = **अगदोज्वरम्** “हशि च”
अघोस् + याति = **अघोयाति** “भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि”
अगदः + ज्वरघ्नः = **अगदोज्वरघ्नः** “हशि च”
आविः + कारः =**आविष्कारः** “इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य”
आविः + कृतम् = **आविष्कृतम्** “इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य”
इतः + ततः = **इतस्ततः** “विसर्जनीयस्य सः”
ईश्वरस् + रचयति = **ईश्वरोरचयति** “विप्रतिषेधे परं कार्यम्”+“हशि च”
उन्नतः + तरुः = **उन्नतस्तरुः** “विसर्जनीयस्य सः”
उच्चैस् + करोति = **उच्चैः करोति** “खरवसानयोर्विसर्जनीयः”
उन्नतः + शीलः = **उन्नतश्शीलः** “विसर्जनीयस्य सः” स्तोः श्चुना श्चुः
उढ् + ढः =**ऊढः** “ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः”
एषः + लुनाति = **एष लुनाति** “एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + धावति = **एष धावति** “एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + रमते = **एष रमते** “एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + जयति = **एष जयति** “एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + विष्णुः = **एष विष्णुः** “एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + बध्नाति = **एष बध्नाति** “एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + अत्र = **एषोऽत्र** “अतो रोरप्लुतादप्लुते”
एषः + गच्छति = **एष गच्छति** “एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + लिखति = **एष लिखति** “एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषस् + गच्छति = **एष गच्छति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषस् + हसति = **एष हसति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + घोषः = **एष घोषः** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + याति = **एष याति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + झलत्कारः = **एष झलत्कारः** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + वमति = **एष वमति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + भाति = **एष भाति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
ए + साम् = **एषाम्** “अपदान्तस्य मूर्धन्यः इण्को आदेशप्रत्यययोः”
एषः + ञकारः =**एष ञकारः** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + मुह्यति = **एष मुह्यति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + गकारः = **एष गकारः** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + णकारः = **एष णकारः** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + नमति = **एष नमति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + डिड्ये = **एष डिड्ये** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

एषः + ददाति = **एष ददाति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + खनति = **एष खनति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + फलति = **एष फलति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + छादयति = **एष छादयति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + ढक्कुरः = **एष ढक्कुरः** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + थूत्करोति = **एष थूत्करोति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + चलति = **एष चलति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + तरति = **एष तरति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + करोति = **एष करोति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + पठति = **एष पठति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + शेते = **एष शेते** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + षष्ठः = **एष षष्ठः** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
एषः + सर्पति = **एष सर्पति** “एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि”
कृष्ण + स् = **कृष्णः** “ससजुषो रुः”+“खरवसानयोर्विसर्जनीयः”
कवेस् + कृतिः = **कवेर्कृतिः** “ससजुषो रुः”
कः + चित् = **कश्चित्** “विसर्जनीयस्य सः”
कः + करिष्यति = **कः करिष्यति/क≍करिष्यति** “कुप्वोः≍क≍पौ च”
कः + त्सरुः = **कःत्सरुः** “सर्परे विसर्जनीयः”
कः + चलति = **कश्चलति** “विसर्जनीयस्य सः”
कः + कः = **कस्कः** “कस्कादिषु च”
काकः + रौति = **काको रौति** “हशि च”
कः + त्वम् = **कस्त्वम्** “विसर्जनीयस्य सः”
कः + अयम् = **कोऽयम्** “अतोरोरप्लुतादप्लुते”
कः + बालः = **को बालः** “हशि च”
कः + अदात् = **कोऽदात्** “अतोरोरप्लुतादप्लुते”
कविस् + करोति = **कविःकरोति** “खरवसानयोर्विसर्जनीयः”
कृतस् + अत्र = **कृतोऽत्र** “अतोरोरप्लुतादप्लुते”
कृष्णमेघः + तिरस् = **कृष्णमेघस्तिरस्** “विसर्जनीयस्य सः”
कदागुरोकसस् + भवन्तः =**कदागुरोकसोभवन्तः** “हशि च”
कविः + शृणोति = **कविःशृणोति/कविश्शृणोति** “वा शरि”
कस् + करोति = **कः करोति** “खरवसानयोर्विसर्जनीयः”
कुतः + अत्र = **कुतोऽत्र** “अतोरोरप्लुतादप्लुते”
कुतः + लोभः = **कुतो लोभः** “हशि च”
कः + एषः = **क एषः** “लोपः शाकल्यस्य, भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि”
कः + आयाति = **क आयाति** “लोपः शाकल्यस्य”
कृष्णः + जयति = **कृष्णो जयति** “हशि च”
कः + णोपदेशः = **को णोपदेशः** “हशि च”
काकः + डिड्ये = **काकोडिड्ये** “हशि च”
गतिः + इयम् = **गतिरियम्** “ससजुषो रुः”
गजः + चलति = **गजश्चलति** “विसर्जनीयस्य सः”
गजः + तिष्ठति = **गजस्तिष्ठति** “विसर्जनीयस्य सः”
गुणाः + षड् = **गुणाष्षड्/गुणाःषड्** “वा शरि”
ग्रामः + अभ्यर्णः = **ग्रामोऽभ्यर्णः** “अतोरोरप्लुतादप्लुते”
गजः + चलति = **गजश्चलति** “विसर्जनीयस्य सः” स्तोः श्चुना श्चुः
गौस् + गच्छति = **गौर्गच्छति** “ससजुषो रुः”

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

गीर् + पतिः = **गीर्पतिः/गीष्पतिः** ''अहरादिनांपत्यादिषु वा रेफः''
गुरुर् + रुष्टः = **गुरूरुष्टः** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
गो + सु = गोषु ''अपदान्तस्यमूर्धन्यः इण्कोः आदेशप्रत्यययोः''
ग्लौ + सु = **ग्लौषु** ''अपदान्तस्य मूर्धन्य इण्कोः आदेशप्रत्यययोः''
गुरोस् + भाषणम् = **गुरोर्भाषणम्** ''ससजुषो रुः'
गौः + चरति =**गौश्चरति** ''विसर्जनीयस्य सः'' + स्तोः श्चुना श्चुः
घोराघोणिनः + घोणाः = **घोराघोणिनोघोणाः** ''हशि च''
चाण्डालः + अभिजायते = **चाण्डालोऽभिजायते** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
चतुः + पठति = **चतुष्पठति** ''द्विस्त्रिस्चतुरिति कृत्वोऽर्थे''
चतुः + पुत्री = **चतुष्पुत्री** ''इसुसोः सामर्थ्ये''
चतसृ + नाम् = **चतसृणाम्** ''रषाभ्यां नो णः समानपदे''
चतुस् + भुजः = **चतुर्भुजः** ''ससजुषो रुः''
चतुर् + नाम् = **चतुर्णाम्** ''रषाभ्यां नो णः समानपदे''
चतुः + तयम् = **चतुष्टयम्** ''इसुसोः सामर्थ्ये''
चक्रिन् + त्रायस्व=**चक्रिंस्त्रायस्व** ''नश्छव्यप्रशान्''+''विसर्जनीयस्य सः''
छात्राः + सन्ति = **छात्राःसन्ति/छात्रास्सन्ति** ''वा शरि''
छात्रः + अयम् = **छात्रोऽयम्** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
छात्रः + अस्ति = **छात्रोस्ति** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
छात्रास् + हसन्ति = **छात्रा हसन्ति** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''
ज्योतिः + चक्रम् = **ज्योतिश्चक्रम्** ''विसर्जनीयस्य सः''
ज्येष्ठः +अनुजः = **ज्येष्ठोऽनुजः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
जनः + ङादिशब्दं न विन्दन्ति=**जनोङादिशब्दं न विन्दन्ति** ''हशि च''
तिरः + कर्ता = **तिरःकर्ता/तिरस्कर्ता** ''तिरसोऽन्यतरस्याम्''
ताराः + उदिताः = **तारा उदिताः** ''भो-भगोअघोऽपूर्वस्य योऽसि''
तिरः + कृत्य = **तिरःकृत्य/तिरस्कृत्य** ''वा शरि''
तरोः + छात्रा = **तरोश्छात्रा** ''विसर्जनीयस्य सः''
तिरः + करोति = **तिरःकरोति/तिरस्करोति** ''तिरसोऽन्यतरस्याम्''
तिरः + कारः = **तिरस्कारः** ''तिरसोऽन्यतरस्याम्''
तमः + काण्डः = **तमष्काण्डः** '' विसर्जनीयस्य सः''
ततः + अन्यथा = **ततोऽन्यथा** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
तिरः + कृतम् = **तिरस्कृतम्** ''तिरसोऽन्यतरस्याम्''
तृतीयः + अध्यायः = **तृतीयोध्यायः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
ततः + अन्यथा = **ततोऽन्यथा** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
तृढ् + ढः = **तृढः** ''ढो ढे लोपः'' + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
तन्त्रस् + आसुव = **तन्त्रआसुव/तन्त्रयासुव** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''
तपः + तप्त्वा = **तपस्तप्त्वा** ''विसर्जनीयस्य सः''
देवः + वन्द्यः = **देवोवन्द्यः** ''हशि च''
देवास् + इह = **देवा इह/देवायिह** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''
देवाः + नम्याः = **देवा नम्याः** ''लोपःशाकल्यस्य''+''हलि सर्वेषाम्''
देवदत्तः + मन्यते = **देवदत्तो मन्यते** ''हशि च''
देवः + अधुना = **देवोऽधुना** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
द्विः + करोति = **द्विस्करोति/द्विःकरोति** ''द्विस्त्रिस्चतुरितिकृत्वोऽर्थे''
दुः + कृतम् = **दुष्कृतम्** ''इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य''
देवः + आयाति=**देव आयाति/देवयायाति** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

दुः + शासनम् = **दुश्शासनम्/दुःशासनम्** ''वा शरि''
देवः + अपि = **देवोऽपि** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
देवदत्तः + पचति = **देवदत्ᳶपचति/देवदत्तःपचति** ''कुप्वोःᳶकᳶपौ च''
दाशरथिर् + रामः=**दाशरथीरामः** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
देवः + ऋषिः = **देवऋषिः** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''
देवः + राजते = **देवोराजते** ''विप्रतिषेधे परं कार्यम्''+''हशि''
दर्पे + न = **दर्पेण** ''अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि''
देवः + ठक्कुरः = **देवष्ठक्कुरः** ''विसर्जनीयस्य सः''
दुष्टः + जिम्हः = **दुष्टोजिम्हः** ''हशि च''
दुः + कर्म = **दुष्कर्म** ''इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य''
धनुः + टङ्कारः = **धनुष्टंकारः** ''विसर्जनीयस्य सः''
धनुः + करोति = **धनुष्करोति/धनुःकरोति** ''इसुसोः सामर्थ्ये''
धर्मः + रक्षति = **धर्मोरक्षति** ''विप्रतिषेधे परं कार्यम्''+''हशि च''
धेनुः + सु = **धेनुषु** ''अपदान्त स्मूर्धन्यः इण्कोः आदेशप्रत्यययोः''
धनुः + सि = **धनूंसि** ''नुम् विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि''
धूः + पतिः = **धूर्पतिः/धूष्पतिः** ''अहरादिनां पत्यादिषु वा रेफः''
धनुः + कपालः = **धनुष्कपालः** ''कस्कादिषु च''
धीरः + न शोचति = **धीरो न शोचति** ''हशि च''
नमः + कारः = **नमस्कारः/नमःकार** ''नमस्पुरसोर्गत्योः''
निः + कुलम् = **निष्कुलम्** ''इदुदुपधस्य चाप्रत्ययः''
नमः + ते = **नमस्ते** ''विसर्जनीयस्य सः''
निः + फलम् = **निष्फलम्** ''इदुदुपधस्य चाप्रत्ययः''
निः + करम् = **निस्करम्** ''विसर्जनीयस्य सः''
नमः + षडाननाय = **नमः षडाननाय/नमष्षडाननाय** ''वा शरि''
निः + रोगः = **नीरोगः** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
निः + रसः = **नीरसः** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
नराः + यान्ति = **नरायान्ति** ''हलि सर्वेषाम्''
नृपस् + अस्ति = **नृपोस्ति** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
नृपास् + ददति = **नृपा ददति** ''हलि सर्वेषाम्''
निः + चयः = **निश्चयः** ''विसर्जनीयस्य सः'' + स्तोः श्चुनाश्चुः
नद्याः + तीरम् = **नद्यास्तीरम्** ''विसर्जनीयस्य सः''
निः + सृतः = **निःसृत/निस्सृतः** ''वा शरि''
नृपः + षष्ठः = **नृपष्षष्ठः/नृपःषष्ठः** ''वा शरि'' + ''ष्टुना ष्टुः''
नराः + गच्छति = **नरागच्छति** ''हलि सर्वेषाम्''
नृपः + पाति = **नृपःपाति/नृपᳶपाति** ''कुप्वोःᳶकᳶपौ च''
नमः + करोति = **नमस्करोति/नमःकरोति** ''नमस्पुरसोर्गत्योः''
नदी + सु = **नदीषु** ''अपदान्तस्य मर्धून्यः इण्कोः आदेशः''
निः + प्रत्युहम् = **निष्प्रत्युहम्** ''इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य''
नृपः + अवदत् = **नृपोऽवदत्** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
नरः + हन्ति = **नरो हन्ति** ''हशि च''
नरः + गच्छति = **नरो गच्छति** ''हशि च''
नृपः + गच्छति = **नृपो गच्छति** ''हशि च''
नूतनः + अभ्यासः = **नूतनोऽभ्यासः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
न्यूनः + अस्ति = **न्यूनोस्ति** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
नरः + खादति = **नरᳶखादति/ नरःखादति** ''कुप्वोः ᳶकᳶपौ च''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

नूतनः + अभ्यागतः = **नूतनोऽभ्यागतः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
नर् + रम्यः =**नारम्यः** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
निर् + रुक् = **नीरुक्** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
नार्थस् + ऌकारोपदेशेन = **नार्थोऌकारोपदेशेन** ''हशि च''
पुनर् + रमते = **पुनारमते** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
पुष् + नाति = **पुष्णाति** ''रषाभ्यां नो णः समानपदे''
प्रातः + पठति = **प्रातᳶपठति** ''कुप्वोःᳵकᳶपौ च''
प्रातः + कालः = **प्रातᳵकालः** ''कुप्वोःᳵकᳶपौ च''
पुनर् + खादति = **पुनᳵखादति/पुनर्खादति** ''कुप्वोःᳵकᳶपौ च''
पुनस् + आगतः = **पुनरागतः** ''ससजुषो रुः''
पूर्णः + चन्द्रः =**पूर्णश्चन्द्रः** ''विसर्जनीयस्य सः''
पयः + धरः = **पयोधरः** ''हशि च''
पुरः + कारः = **पुरस्कारः** ''नमस् पुरसोर्गत्योः''
पुनर् + रमते = **पुनारमते** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
पुनर् + पृच्छति = **पुनःपृच्छति** ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः''
पितुस् + इच्छा = **पितुरिच्छा** ''ससजुषो रुः''
पर्वतः + धौतः = **पर्वतोधौतः** ''हशि च''
परमशिरः + पदम् = **परमशिरःपदम्** ''अधःशिरशि पदे''
प्रातः + अत्र = **प्रातरत्र** ''ससजुषो रुः''
पुनर् + हसति = **पुनोहसति** ''हशि च''
प्रातः + गच्छ = **प्रातर्गच्छ** ''ससजुषो रुः''
पुरुषः + शेते = **पुरुषःशेते/पुरुषश्शेते** ''वा शरि''
पुरुषः + चिनोति = **पुरुषश्चिनोति** 'विसर्जनीयस्य सः' 'स्तोः श्चुना श्चुः'
पुरः + करोति = **पुरस्करोति** ''नमस्पुरसोर्गत्योः''
पदार्थाः + सप्त = **पदार्थास्सप्त** ''विसर्जनीयस्य सः''
पुरुषः + अधुना = **पुरुषोऽधुना** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
पण्डिताः + भाग्यवन्तः = **पण्डिताभाग्यवन्तः** ''हलि सर्वेषाम्''
पुत्रः + सेवते = **पुत्रःसेवते/पुत्रस्सेवते** ''वा शरि''
फेरुर् + रौति = **फेरूरौति** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
बालः + रोदिति = **बालोरोदिति** ''हशि च''
बालः + हसति = **बालोहसति** ''हशि च''
बालाः + आगच्छन्ति = **बाला आगच्छन्ति** ''लोपः शाकल्यस्य''
बालः + अत्र = **बालोऽत्र** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
बालः + थूत्करोरोति = **बालस्थूत्करोति** ''विसर्जनीयस्य सः''
बालः + करोति = **बालᳵकरोति/बालःकरोति** ''कुप्वोःᳵकᳶपौ च''
बालः + चलति = **बालश्चलति** ''विसर्जनीयस्य सः''
बालः + तिष्ठति = **बालस्तिष्ठति** ''विसर्जनीयस्य सः''
बालः + स्वपिति = **बालस्वपिति/बालःस्वपिति** '' वा शरि''
बालः + अस्ति = **बालोऽस्ति** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
बालकः + अयम् = **बालकोऽयम्** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
बालः + अकारपश्यति = **बालोऽकारपश्यति** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
बुधः + लिखति = **बुधोलिखति** ''हशि च''
बालः + याति = **बालोयाति** ''हशि च''
बालः + रौति = **बालोरौति** ''हशि च''
बालः + तावत् = **बालस्तावत्** ''विसर्जनीयस्य सः''
भूभृतस् + रोषः = **भूभृतोरोषः** ''विप्रतिषेधे परं कार्यम्''+''हशि च''
शम्भुर् + राजते = **शम्भूराजते** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
भूयस् + रमते = **भूयोरमते** ''विप्रतिषेधे परं कार्यम्''+''हशि च''
भीतः + टलति = **भीतष्टलति** ''विसर्जनीयस्य सः'' + ''ष्टुना ष्टुः''
भूपतिर् + रक्षति = **भूपतीरक्षति** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
भाः + करः = **भास्करः** ''कस्कादिषु च''
भोस् + देवा = भोय् देवा = **भो देवाः** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''+''हलि सर्वेषाम्''
भगोस्+नमस्ते=**भगोय्नमस्ते=भगोनमस्ते** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''+ ''हलि सर्वेषाम्''
भूयः + खादति = **भूयःखादति/भूयᳵखादति** ''कुप्वोःᳵकᳶपौ च''
भक्तः + नमतीश्वरम् = **भक्तोनमतीश्वरम्** ''हशि च''
भक्तास् + भजन्ति = **भक्ताभजन्ति** ''हलि सर्वेषाम्''
भ्रातुस् + कन्यका = **भ्रातुःकन्यका** ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः''
मूर्खः + मुह्यति = **मूर्खोमुह्यति** ''हशि च''
मः + अनुस्वारः = **मोऽनुस्वारः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
मानुषः + अधः = **मानुषोऽधः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
मनस् + रथः = **मनोरथः** ''विप्रतिषेधे परं कार्यम्''+''हशि च''
मृगः + एति = **मृग एति/मृगयेति** ''लोपःशाकल्यस्य''
मनः + कामः = **मनस्कामः** ''विसर्जनीयस्य सः''
मेघः + पिण्डः = **मेघस्पिण्डः** ''विसर्जनीयस्य सः''
मृगे + न = **मृगेण** ''अट्-कु-प्वाङ्-नुम्-व्यवायेऽपि''
मूर्खे + न = **मूर्खेण** ''अट्-कु-प्वाङ्-नुम्-व्यवायेऽपि''
मुनि + सु = **मुनिषु** ''अपदान्तस्य मूर्धन्यः इण्कोः आदेशप्रत्यययोः''
मनः + चञ्चलम् = **मनश्चञ्चलम्** ''विसर्जनीयस्य सः''
मातृ + सु = **मातृषु** ''अपदान्तस्य मूर्धन्यः इण्कोः आदेशप्रत्यययोः''
मनः + कामना = **मनस्काना** ''अतः कृकमिकंस........''
यशः+कल्पम्=**यशस्कल्पम्** ''सोऽपदादौ''+''पाशकल्पककाम्येष्विति वाच्यम्''
यशः + कम = **यशस्कम्** ''सोऽपदादौ''+''पाशकल्पककाम्येष्विति वाच्यम्''
यशः + चिनोति = **यशश्चिनोति** ''विसर्जनीयस्य सः''
यशः + तनोति = **यशस्तनोति** ''विसर्जनीयस्य सः''
याज्ञिकाः + यजन्ति = **याज्ञिकायजन्ति** ''भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि''+''हलि सर्वेषाम्''
यः + अपि = **योऽपि** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
रविस् + उदेति = **रविरुदेति** ''ससजुषो रुः''
रामः + अस्मि = **रामोऽस्मि** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
राज्ञः + अभिषेकः = **राज्ञोऽभिषेकः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
रामः + त्राता = **रामस्त्राता** ''विसर्जनीयस्य सः''
रामः + षष्ठः = **रामष्षष्ठः** ''विसर्जनीयस्य सः''
रामः + शेते = **रामश्शेते** ''विसर्जनीयस्य सः''
रामः + करोति = **रामᳵकरोति/ रामस्करोति** ''कुप्वोःᳵकᳶपौ च''
रामः + अयम् = **रामोऽयम्** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
रामस् + पठति = **रामःपठति** ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः''
रामः+स्थाता=**रामःस्थाता/रामस्थ्थाता** ''वा शरि'' उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य
रामस् + अब्रवीत् = **रामोऽब्रवीत्** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
रामः + टीकते = **रामष्टीकते** ''विसर्जनीयस्य सः'' + ष्टुना ष्टुः

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

रामः + वदति = **रामोवदति** ''हशि च''
रामे + सु = **रामेषु** ''अपदान्तस्य मूर्धन्य इण्कोः आदेशप्रत्यययोः''
लिढ् + ढाम् = **लीढाम्** ढो ढे लोपः + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
लिढ् + ढ = **लीढः** ढो ढे लोपः + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
लिढ् + ढे = **लीढे** ढो ढे लोपः + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
लतास् + आकम्पन्ते = **लताआकम्पन्ते/लतायाकम्पन्ते** ''लोपः शाकल्यस्य''
लक्ष्मीस् + इच्छति = **लक्ष्मीरिच्छति** ''ससजुषो रुः''
लोकः + तदनु = **लोकस्तदनु** ''विसर्जनीयस्य सः''
विप्रास् + आगता = **विप्राआगता/विप्रायागता** ''लोपःशाकल्यस्य''
विष्णुः + त्राता = **विष्णुस्त्राता** ''विसर्जनीयस्य सः''
विष्णुः + टीकते = **विष्णुष्टीकते** ''विसर्जनीयस्य सः'' + ष्टुना ष्टुः
वधूस् + एषा = **वधूरेषा** ''ससजुषो रुः''
विष्णुः + त्रायते = **विष्णुस्त्रायते** ''विसर्जनीयस्य सः''
वीराः + शेरते = **वीराःशेरते/वीराश्शेरते** ''वा शरि''
बहिः + कृतम् = **बहिष्कृतम्** ''इसुसोः सामर्थ्ये''
वेदः + अधीतः = **वेदोऽधीतः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
वचनः + अनुनासिकः = **वचनोऽनुनासिकः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
वृक्षः + झग्झयापतितः = **वृक्षोझग्झयापतितः** ''हशि च''
शिशुस् + आगच्छत् = **शिशुरागच्छत्** ''ससजुषो रुः''
शीतः + वायुः = **शीतोवायुः** ''हशि च ''
शिवः + अर्च्यः = **शिवोऽर्च्यः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
शिवः + वन्द्यः = **शिवोवन्द्यः** ''हशि च''
शान्तः + रोषः = **शान्तो रोषः** ''हशि च''
शोभनः + गन्धः = **शोभनोगन्धः** ''हशि च''
शिशुर् + रोदिति = **शिशूरोदिति** ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
शुद्धः + अहम् = **शुद्धोऽहम्** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
शम्भुर् + राजते = **शम्भू राजते** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
श्रेयः + करः = **श्रेयस्करः** ''अतः कृकमिकं........''
शान्तः + अनलः = **शान्तोऽनलः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
सः + धावति = **स धावति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + जयति = **स जयति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सर्पिः + कुण्डिका = **सर्पिष्कुण्डिका** ''कस्कादिषु च''
सः + बध्नाति = **स बध्नाति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + डिड्ये = **स डिड्ये** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + ददाति = **स ददाति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + फलति = **स फलति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सर्पिः + करोति = **सर्पिष्करोति** ''इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य''
सः + खनति = **स खनति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + इच्छति = **स इच्छति** ''लोपः शाकल्यस्य''
सः + घोषः = **स घोषः** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + भाति = **स भाति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + षष्ठः = **स षष्ठः** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''

सन्धिविच्छेदः सन्धिपदम् सूत्रम्

सः + पठति = **स पठति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + शेते = **स शेते** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + सर्पति = **स सर्पति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + करोति = **स करोति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सस् + शम्भू = **स शम्भू** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सस् + ब्रवीति = **स ब्रवीति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + हसति = **स हसति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + याति = **स याति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + वमति = **स वमति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + रमते = **स रमते** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + लुनाति = **स लुनाति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + ञकारः = **स ञकारः** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + मुह्यति = **स मुह्यति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + ङकारः = **स ङकारः** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + णकार = **स णकारः** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + नमति = **स नमति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः+झणत्कारः=**स झणत्कारः** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः+छादयति = **स छादयति** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सः + ठक्कुरः = **स ठक्कुरः** ''एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि''
सर्पः + सरति = **सर्पःसरति/सर्पस्सरति** ''वा शरि''
सुतः + आगच्छति = **सुत आगच्छति** ''लोपः शाकल्यस्य''
सः + अपि = **सोऽपि** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
सः + अपवादः = **सोपवादः** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
समाचारः + अस्ति = **समाचारोऽस्ति** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
सः + अत्र = **सोऽत्र** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
हसन् + नुदति = **हसन्नुदति** ''ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्''
हरिः + अवदत् = **हरिरवदत्** 'ससजुषो रुः''
हरिः + त्राता = **हरिस्त्राता** ''विसर्जनीयस्य सः''
हरेः + द्रव्यम् = **हरेर्द्रव्यम्** ''ससजुषो रुः''
हरिस् + भ्राता = **हरिर्भ्राता** ''ससजुषो रुः''
हरिः + शेते = **हरिश्शेते/हरिःशेते** ''वा शरि'' + स्तोः श्चुना श्चुः
हयास् + हेसन्ति = **हया हेसन्ति** ''हलि सर्वेषाम्''
हस्तः + अस्य = **हस्तोऽस्य** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''
हरिर् + रम्यः = **हरीरम्यः** रो रि + ''ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः''
हरिः + जयति = **हरिर्जयति** ''ससजुषो रुः''
हरिः + चरति = **हरिस्चरति** ''विसर्जनीयस्य सः''
हरिः + तिष्ठति = **हरिस्तिष्ठति** ''विसर्जनीयस्य सः''
हयास् + धावन्ति = **हया धावन्ति** ''हलि सर्वेषाम्''
क्षिप्रः + थुत्कारः = **क्षिप्रस्थुत्कारः** ''विसर्जनीयस्य सः''
त्रिः + खादति = **त्रिस्खादति/त्रिःखादति** ''द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोऽर्थे''
त्रैगुण्यविषयाः + वेदाः = **त्रैगुण्यविषया वेदाः** ''हलि सर्वेषाम्''
ज्ञानः + अस्ति = **ज्ञानोस्ति** ''अतोरोरप्लुतादप्लुते''

❑❑

स्त्रीप्रत्यय–गङ्गा

1. 'टाप्'–प्रत्यय–विधायक–सूत्रम्

सूत्रम्–अजाद्यतष्टाप् 4.1.4
प्रत्यय – 'टाप्'
सूत्रार्थ–अजादिगण में पढ़े गए शब्द अथवा ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'टाप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–अजा, एडका, अश्वा, चटका, मूषिका, बाला, वत्सा, होडा, मन्दा, विलाता, मेधा, गङ्गा, सर्वा, त्रिफला, त्र्यनीका, एता, रोहिता, गोपालिका, प्रजापालिका, पशुपालिका, भूपालिका, द्वारपालिका, बहुपरिव्राजका, अर्या, क्षत्रिया, अतिकेशा, चन्द्रमुखा, सुगुल्फा, कल्याणक्रोडा, सुजघना, शूर्पणखा, गौरमुखा, ताम्रमुखा, मुण्डा, धनक्रीता, शूद्रा।

2. 'ङीप्' प्रत्यय विधायक सूत्र/वार्तिक

सूत्रम्–1. ''उगितश्च'' 4.1.6
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–जिसमें उक् = उ, ऋ, लृ की इत्संज्ञा हो गयी हो, ऐसे प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–भवती, भवन्ती, पचन्ती, दीव्यन्ती।

सूत्रम्–2. **''टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः''** 4.1.15
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–अनुपसर्जन जो टित् प्रत्यय, ढ, अण्, अञ्, द्वयसच्, दघ्नञ्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, कञ् और क्वरप् ये प्रत्यय जिनके अन्त में हों, ऐसे प्रधान व अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीप्' होता है। **'टित्' का अर्थ है**–ऐसा प्रत्यय जिसका टकार इत् है।
उदाहरण–● टित् – कुरुचरी, नदी, चोरी, देवी, मद्रचरी, स्तनन्धयी
- **'ढ' प्रत्ययान्त**–सौपर्णेयी,
- **'अण्' प्रत्ययान्त**–ऐन्द्री, कुम्भकारी
- **'अञ्' प्रत्ययान्त**–औत्सी
- **'द्वयसच्' प्रत्ययान्त**–ऊरुद्वयसी
- **'दघ्नञ्' प्रत्ययान्त**–ऊरुदघ्नी
- **'मात्रच्' प्रत्ययान्त**–ऊरुमात्री
- **'तयप्' प्रत्ययान्त**–पञ्चतयी
- **'ठक्' प्रत्ययान्त**–आक्षिकी
- **'ठञ्' प्रत्ययान्त**–प्रास्थिकी, लावणिकी
- **'कञ्' प्रत्ययान्त**–यादृशी
- **'क्वरप्' प्रत्ययान्त**–इत्वरी

वार्तिक 3. ''नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम्''
प्रत्यय–'ङीप्'
वार्तिकार्थ–नञ्-प्रत्ययान्त, स्नञ् प्रत्ययान्त, ईकक्-प्रत्ययान्त, और ख्युन्-प्रत्ययान्त प्रातिपदिकों से तथा 'तरुण' व 'तलुन' प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–● 'नञ्'-प्रत्ययान्त – स्त्रैणी
- **'स्नञ्'-प्रत्ययान्त** – पौंस्नी
- **'ईकक्'-प्रत्ययान्त** – शाक्तीकी, याष्टीकी
- **'ख्युन्'-प्रत्ययान्त** – आढ्यङ्करणी
- **'तरुण'-प्रातिपदिक** – तरुणी
- **'तलुन'-प्रातिपदिक** – तलुनी

सूत्रम् 4. यञश्च 4.1.16
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–'यञ्' प्रत्ययान्त प्रातिपदिक से **'ङीप्'** प्रत्यय होता है; स्त्रीत्व की विवक्षा में।
उदाहरण–गर्ग + यञ् = गार्ग्य। गार्ग्य + ङीप् = गार्गी

सूत्रम् 5. ''वयसि प्रथमे'' 4.1.20
प्रत्यय – 'ङीप्'
सूत्रार्थ – प्रथम अवस्था अर्थात् कौमार अवस्था के सूचक शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्' प्रत्यय** होता है।
उदाहरण–कुमारी, किशोरी

सूत्रम् 6. द्विगोः 4.1.21
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–अदन्त द्विगु समास से स्त्रीलिङ्ग की विवक्षा में **'ङीप्'** प्रत्यय होता है।
उदाहरण–त्रिलोकी, त्रिपादी, पञ्चमूली, अष्टाध्यायी, पञ्चवटी, चतुःसूत्री, सप्तश्लोकी, दशरथी

सूत्रम् 7. ''वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः'' 4.1.39
प्रत्यय–'ङीप्'
सूत्रार्थ–वर्णवाची जो अनुदात्तान्त तकारोपध (जिसकी उपधा 'तकार' है) तदन्त अनुपसर्जन प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीप्'** प्रत्यय तथा तकार को नकारादेश विकल्प से होते हैं। 'ङीप्' होने के पक्ष में नकारादेश होता है, अन्यथा नहीं होता है। यहाँ 'वर्ण' शब्द सफेद, लाल, पीला आदि रंगों का वाचक है।
उदाहरण–एनी, रोहिणी, श्येनी, हरिणी

'ङीष्'-प्रत्यय विधायक सूत्र/वार्तिक

सूत्रम् 1. ''षिद्गौरादिभ्यश्च'' 4.1.41

प्रत्यय– 'ङीष्'

सूत्रार्थ–'षित्' = जिनका षकार इत् है; तथा गौरादिगण पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीष्' प्रत्यय** होता है।

उदाहरण–नर्तकी, गार्ग्यायणी, गौरी, अनड्वाही, अनडुही, खनकी, रजकी, वात्स्यायनी, मत्सी, सुन्दरी, कटी, शुनी

सूत्र 2. वोतो गुणवचनात् 4.1.44

प्रत्यय– ङीष्

सूत्रार्थ–ह्रस्व उकारान्त शब्दों से स्त्रीत्व-विवक्षा में वैकल्पिक **'ङीष्' प्रत्यय** होता है।

उदाहरण–

ङीष्	**विकल्प**
मृद्वी	मृदुः
पट्वी	पटुः
लघ्वी	लघुः
गुर्वी	गुरुः
तन्वी	तनुः
पृथ्वी	पृथुः
साध्वी	साधुः
ऋज्वी	ऋजुः

सूत्रम् 3. ''बह्वादिभ्यश्च'' 4.1.45

प्रत्यय– **'ङीष्'**

सूत्रार्थ–'बहु' आदि गण में पठित प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से 'ङीष्' प्रत्यय होता है।

उदाहरण– बह्वी/बहुः, पद्धती/पद्धतिः, शक्ती/शक्तिः, कपी/कपिः

वार्तिक 4. 'कृदिकारादक्तिनः'

प्रत्यय– 'ङीष्'

वार्तिकार्थ–'कृत्' से सम्बन्धित इकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से **'ङीष्'** प्रत्यय होता है; परन्तु 'क्तिन्' प्रत्ययान्त से नहीं होता है।

उदाहरण–रात्री/रात्रिः

वार्तिक 5. सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके

प्रत्यय–'ङीष्'

वार्तिकार्थ–'क्तिन्' प्रत्ययान्त से भिन्न सभी इदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से **'ङीष्'** होता है। कुछ आचार्य ऐसा भी मानते हैं।

उदाहरण–शकटी/शकटिः

सूत्र 6. पुंयोगादाख्यायाम् 4.1.48

प्रत्यय–'ङीष्'

सूत्रार्थ–पुरुष के साथ सम्बन्ध के कारण पुंवाचक अदन्त शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीष्' होता है। स्त्री, वह पत्नी भी हो सकती है, और पुत्री, बहन आदि भी हो सकती है।

उदाहरण–(i) गोपस्य पत्नी, भगिनी, पुत्री **गोपी**।

(ii) बकस्य पत्नी **बकी**।

(iii) गणकस्य पत्नी **गणकी**,

(iv)महापात्रस्य पत्नी **महापात्री,**

(v) सूर्यस्य स्त्री मानुषी **सूरी (कुन्ती)**,

(vi) केकयस्य अपत्यं स्त्री **केकयी**,

(vii) देवकस्य दुहिता **देवकी**,

(viii) रेवतस्य दुहिता **रेवती**,

(ix) यमस्य भगिनी **यमी**

सूत्र 7. ''इन्द्र - वरुण - भव - शर्व - रुद्र - मृड - हिमाऽरण्य- यव - यवन - मातुलाऽऽचार्याणामानुक्'' 4.1.49

प्रत्यय–ङीष्

सूत्रार्थ–इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल, और आचार्य–इन बारह शब्दों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **''ङीष्'' प्रत्यय** तथा इन शब्दों से **'आनुक्' आगम** होता है।

उदाहरण–इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी, हिमानी, अरण्यानी, यवानी, यवनानी, मातुलानी, आचार्यानी

वार्तिक–'हिमारण्ययोर्महत्त्वे

वार्तिकार्थ–'हिम' और 'अरण्य' इन दो प्रातिपदिकों से 'महत्त्व' अर्थ में ही **'ङीष्'** प्रत्यय और **'आनुक्'** आगम होता है।

उदाहरण–(i) महत् हिमं = **हिमानी**

(ii) महत् अरण्यम् = **अरण्यानी**

वार्तिक–''यवाद् दोषे''

वार्तिकार्थ–दोष अर्थ द्योत्य होने पर 'यव' इस प्रातिपदिक से **'ङीष्'** प्रत्यय और **'आनुक्'** आगम होता है।

उदाहरण–दुष्टो यवो = **यवानी**

वार्तिक–'यवनाल्लिप्याम्'

वार्तिकार्थ–'यवन' इस प्रातिपदिक से लिपि विशेष अर्थ होने पर

ही **'ङीष्' प्रत्यय** तथा 'आनुक्' आगम होता है।

उदाहरण–यवनानां लिपिः = **यवनानी**

वार्तिक–'मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'

वार्तिकार्थ–'मातुल' और 'उपाध्याय' शब्दों से स्त्रीत्वविवक्षा में पुंयोग में 'आनुक्' आगम विकल्प से होता है।

उदाहरण–मातुली/मातुलानी। उपाध्यायी/उपाध्यायानी

वार्तिक–''आचार्यादणत्वं च''

वार्तिकार्थ–'आचार्य' इस प्रातिपदिक से परे 'आनुक्' के नकार को णत्व नही होता है।

उदाहरण–आचार्यस्य स्त्री = आचार्यानी

वार्तिक–''अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे''

वार्तिकार्थ–'अर्य' और 'क्षत्रिय' – इन दो प्रातिपदिकों से स्वार्थ में **'ङीष्'** प्रत्यय और 'आनुक्' का आगम विकल्प से होता है।

उदाहरण–(i) अर्याणी/अर्या, (ii) क्षत्रियाणी/क्षत्रिया

सूत्रम् 8. ''क्रीतात् करणपूर्वात्'' 4.1.50

प्रत्यय–'ङीष्'

सूत्रार्थ– 'क्रीत' शब्द जिसके अन्त में हो तथा करणवाचक जिसका पूर्वावयव हो, ऐसे अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीष्' प्रत्यय** होता है।

उदाहरण–वस्त्रक्रीती

विशेष–यह सूत्र कहीं कहीं नही भी लगता है। यथा–**धनक्रीता।**

सूत्रम्–9. ''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' 4.1.54

प्रत्यय–''ङीष्'' (वैकल्पिक)

सूत्रार्थ–उपधा में संयोग न हो ऐसे उपसर्जन-संज्ञक स्वाङ्गवाची शब्द अन्त में हों तो ऐसे अदन्त प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में विकल्प से **'ङीष्'** प्रत्यय होता है।

उदाहरण– ङीष्	**टाप्**
चन्द्रमुखी	चन्द्रमुखा
अतिकेशी	अतिकेशा
पीनस्तनी	पीनस्तना
सुकेशी	सुकेशा
ताम्रमुखी	ताम्रमुखा

सूत्रम् 10. ''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' 4.1.63

प्रत्यय–'ङीष्'

सूत्रार्थ–जो नित्यस्त्रीलिङ्ग न हो, और यकार भी उपधा में न हो, ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीष्'** होता है।

उदाहरण–मयूरी, वृषली, तटी, सूकरी, बह्वृची, औपगवी, कठी

वार्तिक 11. ''योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः।''

प्रत्यय–''ङीष्''

वार्तिकार्थ–हय, गवय, मुकय, मनुष्य, तथा मत्स्य – इन यकारोपध प्रातिपदिकों से भी **'ङीष्'** प्रत्यय होता है।

उदाहरण–हयी, गवयी, मुकयी, मनुषी, मत्सी।

वार्तिक–'मत्स्यस्य ङ्याम्'

वार्तिकार्थ–'ङी' के परे होने पर ही 'मत्स्य' शब्द के उपधाभूत 'यकार' का लोप हो।

यथा–मत्स्य + ङीष् (यकार का लोप) = **मत्सी**

सूत्रम् 12. ''इतो मनुष्यजातेः'' 4.1.65

प्रत्यय–'ङीष्'

सूत्रार्थ–मनुष्यजातिवाचक ह्रस्व इकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीष्' प्रत्यय होता है।

उदाहरण–दाक्षी (दक्षस्य अपत्यं स्त्री)। प्लाक्षी (प्लक्षस्य अपत्यं स्त्री)

'ऊङ्'–प्रत्यय-विधायक-सूत्राणि

सूत्रम्–01. **''ऊङुतः''** 4.1.66

प्रत्यय–'ऊङ्'

सूत्रार्थ–जिसकी उपधा में 'यकार' न हो, ऐसे मनुष्य जातिवाची, ह्रस्व उकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ऊङ्' प्रत्यय** होता है।

उदाहरण–कुरूः

सूत्रम् 2. ''पङ्गोश्च'' 4.1.68

प्रत्यय–'ऊङ्'

सूत्रार्थ–'पङ्गु' इस प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय होता है।

उदाहरण–पङ्गूः

वार्तिक 3. ''श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च''

प्रत्यय–''ऊङ्''

वार्तिकार्थ–'श्वशुर' शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय के साथ उकार और अकार का लोप होता है।

उदाहरण्–श्वश्रूः (सास)

सूत्रम् 4. ''ऊरूत्तरपदादौपम्ये'' 4.1.69

प्रत्यय–'ऊङ्'

सूत्रार्थ–जिसका पूर्वपद उपमानवाची तथा उत्तरपद 'ऊरु' हो तो उससे स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्–करभोरूः, रम्भोरूः, कदलीस्तम्भोरूः, गजनासोरूः, नागनासोरूः, सुन्दरोरूः स्त्री, पीवरोरूः स्त्री।

सूत्रम् 05. ''संहितशफलक्षणवामादेश्च'' 4.1.70

प्रत्यय–'ऊङ्'

सूत्रार्थ–संहित, शफ, लक्षण और वाम–ये शब्द हैं पूर्वपद में जिसके तथा 'ऊरु' शब्द है उत्तरपद में जिसके, ऐसे प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ऊङ्' प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्– (i) संहितौ ऊरू यस्याः सा **संहितोरूः**,
(ii) शफौ ऊरू यस्याः सा **शफोरूः**,
(iii) लक्षणौ ऊरू यस्याः सा **लक्षणोरूः**,
(iv) वामौ ऊरू यस्याः सा **वामोरूः**

वार्तिक–संहितसहाभ्यां चेति वक्तव्यम्

वार्तिकार्थ–'संहित' और 'सह' शब्द से उत्तरवर्ती 'ऊरु' शब्द वाले प्रातिपदिक से 'ऊङ्' होता है।

उदाहरणम्–संहितोरूः, सहोरूः

'ङीन्'-प्रत्यय-विधायक-सूत्राणि

सूत्रम् 01. ''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्'' 4.1.73

प्रत्यय–'ङीन्'

सूत्रार्थ–'शार्ङ्गरव' आदि गणपठित शब्दों तथा **'अञ्'** प्रत्यय अन्त में हों–ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीन्'** प्रत्यय होता है।

उदाहरण्–शार्ङ्गरवी, ब्राह्मणी, बैदी

वार्तिक 02. ''नृनरयोर्वृद्धिश्च''

प्रत्यय–'ङीन्'

वार्तिकार्थ–'नृ' तथा 'नर'–इन दो जातिवाचक प्रातिपदिकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में **'ङीन्'** प्रत्यय होता है; तथा इन शब्दों को वृद्धि आदेश होता है।

उदाहरणम्– (i) नृ + ङीन् = नारी (ii) नर + ङीन् = नारी

'ति'-प्रत्यय-विधायक-सूत्रम्

सूत्रम्–''यूनस्तिः'' 4.1.77

प्रत्यय–'ति'

सूत्रार्थ–'युवन्' शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ति' प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्–युवन् + ति = युवतिः

'चाप्'–प्रत्यय-विधायक-वार्तिक

वार्तिक–''सूर्याद् देवतायां चाब् वाच्या''

प्रत्यय–'चाप्'

वार्तिकार्थ–देवता अर्थ में 'सूर्य' शब्द से 'चाप्' प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्–सूर्यस्य स्त्री देवता = सूर्या (सूर्य + चाप्)

स्त्री-प्रत्यय-तालिका

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
01.	• अजा	बकरी	अज + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
02.	• एडका	मादा भेड	एडक + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
03.	• अश्वा	घोड़ी	अश्व + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
04.	• चटका	चिड़िया	चटक + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
05.	• मूषिका	चुहिया	मूषक + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
06.	• बाला	बालिका	बाल + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
07.	• वत्सा	बछिया	वत्स + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
08.	• होडा	कन्या	होड + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
09.	• मन्दा	कन्या	मन्द + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
10.	• विलाता	कन्या	विलात + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
11.	• मेधा	बुद्धि	मेध + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
12.	• गङ्गा	नदी विशेष	गङ्ग + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
13.	• सर्वा	सभी (स्त्री)	सर्व + टाप्	अजाद्यतष्टाप्
14.	• भवती	आप (स्त्री)	भवत् + ङीप्	उगितश्च
15.	• भवन्ती	होती हुई	भवत् + ङीप्	उगितश्च
16.	• पचन्ती	पकाती हुई	पचत् + ङीप्	उगितश्च
17.	• दीव्यन्ती	चमकती हुई	दीव्यत् + ङीप्	उगितश्च
18.	• शूद्रा	शूद्र स्त्री	शूद्र + टाप्	अजाद्यतष्टाप्

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
19.	• **कुरुचरी**	कुरु देश में विचरण करने वाली स्त्री	**कुरुचर + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
20.	• **नदी**	दरिया, सरिता	**नद + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
21.	• **सौपर्णेयी**	सुपर्णी की कन्या, गरुड़ की बहन	**सौपर्णेय + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
22.	• **ऐन्द्री**	इन्द्र देवता है जिसका, ऐसी पूर्वदिशा	**ऐन्द्र + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
23.	• **औत्सी**	झरने में उत्पन्न होने वाली मछली आदि	**औत्स + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
24.	• **ऊरुद्वयसी**	ऊरु प्रमाण है जिसका, ऐसी नदी	**ऊरुद्वयस + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
25.	• **ऊरुदघ्नी**	ऊरु (जंघा) पर्यन्त जल है, जिस नदी में	**ऊरुदघ्न + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
26.	• **ऊरुमात्री**	ऊरु (जंघा) पर्यन्त जल है, जिस नदी में	**ऊरुमात्र + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
27.	• **देवी**	देव स्त्री	**देव + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
28.	• **पञ्चतयी**	पञ्च अवयवाः अस्याः (पाँच अवयव वाली स्त्री)	**पञ्चतय + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
29.	• **आक्षिकी**	अक्षैर्दीव्यति (पाँसों से जुआ खेलने वाली स्त्री)	**आक्षिक + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
30.	• **प्रास्थिकी**	प्रस्थेन क्रीता (एक प्रस्थ में खरीदी गयी स्त्री)	**प्रास्थिक + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
31.	• **लावणिकी**	लवणं पण्यम् अस्याः (नमक का व्यापार करने वाली स्त्री)	**लावणिक + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
32.	• **यादृशी**	यत् प्रमाणम् अस्य (जिस प्रकार थी)	**यादृश + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
33.	• **इत्वरी**	यात्रा करने वाली स्त्री	**इत्वर + ङीप्**	"टिड्ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः"
34.	• **स्त्रैणी**	स्त्रियों की प्रकृति (स्त्रीत्व)	**स्त्रैण + ङीप्**	नञ् स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
35.	• **पौंस्नी**	पुरुषार्थिनी स्त्री	**पौंस्न + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
36.	• **शाक्तीकी**	बर्छी रखने वाली (भाला धारिणी स्त्री)	**शाक्तीक + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)
37.	• **याष्टीकी**	लाठी से सुसज्जित स्त्री	**याष्टीक + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा0)

क्र०	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
38.	• **आढ्यङ्करणी**	धनसम्पन्न स्त्री	**आढ्यङ्करण + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा०)
39.	• **तरुणी**	युवती	**तरुण + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा०)
40.	• **तलुनी**	सुन्दर तलवों वाली स्त्री	**तलुन + ङीप्**	नञ्स्नञीकक्ख्युँस्तरुणतलुनानामुपसङ्ख्यानम् (वा०)
41.	• **गार्गी**	गर्गस्य गोत्रापत्यं स्त्री (गर्ग गोत्र की सन्तति कन्या)	**गार्ग्य + ङीप्**	यञश्च
42.	• **गार्ग्यायणी**	गर्ग गोत्र की स्त्री	**गार्ग्यायण + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
43.	• **नर्तकी**	नाचने वाले स्त्री	**नर्तक + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
44.	• **गौरी**	पार्वती	**गौर + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
45.	• **अनड्वाही**	गाय	**अनडुह् + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
46.	• **अनडुही**	गाय	**अनडुह् + ङीष्**	षिद्गौरादिभ्यश्च
47.	• **कुमारी**	कौमार अवस्था की स्त्री	**कुमार + ङीप्**	वयसि प्रथमे
48.	• **किशोरी**	किशोरावस्था की स्त्री	**किशोर + ङीप्**	वयसि प्रथमे
49.	• **त्रिलोकी**	त्रयाणां लोकानां समाहरः (तीनों लोकों का स्वामी)	**त्रिलोक + ङीप्**	द्विगोः
50.	• **त्रिफला**	त्रयाणां फलानां समाहार (तीनों फलों का समाहार, औषधि विशेष)	**त्रिफल + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
51.	• **त्र्यनीका**	त्रयाणाम् अनीकानां समाहरः (तीन तरह की सेनाओं का समूह)	**त्र्यनीक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
52.	• **एनी**	चितकबरी (अनेक रंगों वाली)	**एत + ङीप्**	वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः
53.	• **एता**	चितकबरी (अनेक रंगों वाली)	**एत + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
54.	• **रोहिणी**	लाल रंगों वाली	**रोहित + ङीप्**	वर्णादनुदात्तोत्तापधात्तो नः
55.	• **रोहिता**	लाल रंगों वाली	**रोहित + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
56.	• **मृद्वी (मृदुः)**	कोमल	**मृदु + ङीष्**	वोतो गुणवचनात्
57.	• **पट्वी (पटुः)**	चतुर स्त्री	**पटु + ङीष्**	वोतो गुणवचनात्
58.	• **बह्वी (बहुः)**	बहुत स्त्री	**बहु + ङीष्**	बह्वादिभ्यश्च
59.	• **रात्री (रात्रिः)**	रात	**रात्रि + ङीष्**	कृदिकारादक्तिनः (वा०)
60.	• **शकटी (शकटिः)**	छोटी गाड़ी	**शकटि + ङीष्**	सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके (वा०)
61.	• **गोपी**	गोपस्य स्त्री, पत्नी भगिनी पुत्री वा	**गोप + ङीष्**	पुंयोगादाख्यायाम्
62.	• **गोपालिका**	गाय पालने वाली स्त्री	**गोपालक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
63.	• **सर्विका**	सब कुछ करने वाली स्त्री	**सर्वक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
64.	• **कारिका**	व्याकरण, सांख्यदर्शन आदि से संबद्ध पद्यसंग्रह	**कारक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
65.	• **अश्वपालिका**	घोड़े पालने वाली स्त्री	**अश्वपालक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
66.	• **बहुपरिव्राजका**	संन्यासिनी स्त्री	**बहुपरिव्राजक + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
67.	• **सूर्या**	सूर्यस्य देवता स्त्री (सन्ध्या)	**सूर्य + चाप्**	सूर्याद् देवतायां चाब्वाच्यः (वा0)
68.	• **सूरी**	सूर्यस्य मानुषी स्त्री (कुन्ती)	**सूर्य + ङीष्**	पुंयोगादाख्यायाम् ''सूर्यागस्त्योश्छे च'' ङ्यां च'' (वा) से 'यकार' का लोप
69.	• **इन्द्राणी**	इन्द्रस्य स्त्री (इन्द्र की पत्नी)	**इन्द्र + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
70.	• **वरुणानी**	वरुण की स्त्री या पत्नी	**वरुण + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
71.	• **शर्वाणी**	शर्वस्य स्त्री	**शर्व + आनुक + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
72.	• **रुद्राणी**	रुद्रस्य स्त्री	**रुद्र + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
73.	• **भवानी**	भवस्य स्त्री	**भव + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
74.	• **मृडानी**	मृडस्य स्त्री	**मृड + आनुक् + ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्याणाम् आनुक्''
75.	• **हिमानी**	महद्धिमं हिमानी (बड़ी बर्फ)	**हिम + आनुक् + ङीष्**	''हिमारण्ययोर्महत्त्वे'' (वा0) ''इन्द्र-वरुण-भव............."
76.	• **अरण्यानी**	महद् अरण्यम् (बड़ा जंगल)	**अरण्य + आनुक् + ङीष्**	''हिमारण्ययोर्महत्त्वे'' (वा0) ''इन्द्र-वरुण-भव............"
77.	• **यवानी**	दुष्टो यवो यवानी (दूषित जौ, अथवा अजवाइन	**यव + आनुक् + ङीष्**	''यवाद् दोषे'' (वा0)
78.	• **यवनानी**	यवनानां लिपिः यवनानी (यवनों की लिपि, उर्दू, फारसी आदि)	**यवन + आनुक् + ङीष्**	यवनाल्लिप्याम् (वा0) (इन्द्र-वरुण-भव....)
79.	• **मातुलानी**	मातुलस्य पत्नी (मामी)	**मातुल + आनुक्+ङीष्**	''मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'' ''इन्द्र-वरुण-भव..."
80.	• **मातुली**	मामा की पत्नी, मामी	मातुल + ङीष्	''मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'' (वा0) ('आनुक्' का आगम विकल्प से)
81.	• **उपाध्यायानी**	उपाध्याय की पत्नी	**उपाध्याय+आनुक् + ङीष्**	इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृड-हिमारण्य यव-यवन-मातुलाचार्याणाम्-आनुक्''
82.	• **उपाध्यायी**	उपाध्याय की पत्नी	**उपाध्याय + ङीष्**	''मातुलोपाध्याययोरानुग् वा'' (वा0) (आनुक् का आगम विकल्प से)
83.	• **आचार्यानी**	आचार्यस्य स्त्री	**आचार्य+आनुक्+ङीष्**	''इन्द्र-वरुण-भव-शर्व.... ''आचार्यदणत्वं च'' वार्तिक से णत्व का निषेध।

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
84.	• **अर्याणी**	अर्य अर्थात् वैश्य जाति की स्त्री	**अर्य + आनुक् + ङीष्**	''अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे'' (वा0) इन्द्र-वरुण-भव– ('आनुक्' और 'ङीष्' दोनों वैकल्पिक)
85.	• **अर्या**	वैश्य जाति की स्त्री	**अर्य + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
86.	• **क्षत्रियाणी**	क्षत्रिय जाति की स्त्री	**क्षत्रिय+आनुक्+ङीष्**	''अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे'' (वा0) इन्द्र-वरुण-भव..... ('आनुक्' और 'ङीष्' दोनों वैकल्पिक)
87.	• **क्षत्रिया**	क्षत्रिय जाति की स्त्री	**क्षत्रिय + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
88.	• **वस्त्रक्रीती**	वस्त्रों के द्वारा खरीदी गयी वस्तु, भूमि स्त्री आदि।	**वस्त्रक्रीत + ङीष्**	''क्रीतात् करणपूर्वात्''
89.	• **अतिकेशी**	केशों को लाँघने वाली (लम्बी माला आदि)	**अतिकेश + ङीष्**	''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्''
90.	• **अतिकेशा**	केशो को लाँघने वाली (लम्बी माला आदि)	**अतिकेश + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
91.	• **चन्द्रमुखी**	चन्द्र के समान मुख वाली स्त्री	**चन्द्रमुख + ङीष्**	''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्''
92.	• **चन्द्रमुखा**	चन्द्र के समान मुखवाली स्त्री	**चन्द्रमुख + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
93.	• **सुगुल्फा**	सुन्दर गुल्फों वाली स्त्री	**सुगुल्फ + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
94.	•**कल्याणक्रोडा**	अच्छी छाती वाली स्त्री, (घोड़ी)	**कल्याणक्रोड + टाप्**	अजाद्यतष्टाप् ''न क्रोडादिबह्वचः'' सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
95.	• **सुजघना**	अच्छी जघनों वाली स्त्री	**सुजघन + टाप्**	अजाद्यतष्टाप् ''न क्रोडादिबह्वचः'' सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
96.	• **शूर्पणखा**	रावण की बहन, जिसके नख शूपे की तरह होते हैं	**शूर्पनख + टाप्**	अजाद्यतष्टाप् ''नखमुखात् सञ्ज्ञायाम्'' से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
97.	• **गौरमुखा**	'गौरमुख' नाम वाली स्त्री या गोरे मुख वाली स्त्री	**गौरमुख + टाप्**	अजाद्यतष्टाप् ''नखमुखात् सञ्ज्ञायाम्'' से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध
98.	• **ताम्रमुखी**	ताम्रमुख वाली स्त्री	**ताम्रमुख + ङीष्**	''स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्'' (विकल्प से 'ङीष्')
99.	• **ताम्रमुखा**	ताम्रमुख वाली स्त्री	**ताम्रमुख + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
100.	• **तटी**	नदी का किनारा	**तट + ङीष्**	जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
101.	• **बह्वृची**	बहुत ऋचाओं का अध्ययन करने वाली स्त्री	**बह्वृच + ङीष्**	जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्
102.	• **मुण्डा**	मुण्डितशिर वाली स्त्री	**मुण्ड + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्
103.	• **हयी**	घोड़ी	**हय + ङीष्**	''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' ''योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः'' (वा0)

क्र0	शब्द	अर्थ	मूलपद + स्त्रीप्रत्यय	प्रत्यय-विधायक-सूत्र
104.	● **गवयी**	नीलगाय	**गवय + ङीष्**	''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' ''योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः'' (वा0)
105.	● **मुकयी**	खच्चरी	**मुकय + ङीष्**	''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' ''योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः'' (वा0)
106.	● **मनुषी**	मनुष्य जाति की स्त्री	**मनुष्य + ङीष्**	''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' ''योपधप्रतिषेधे......"
107.	● **मत्सी**	मादा मछली	**मत्स्य + ङीष्**	''जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'' ''योपधप्रतिषेधे....." ''मत्स्यस्य ङ्याम्'' (वा0)
108.	● **दाक्षी**	दक्षस्य अपत्यं स्त्री (दक्ष की कन्या)	**दाक्षि + ङीष्**	''इतो मनुष्यजातेः''
109.	● **कुरूः**	कुरोः अपत्यं स्त्री कुरु की सन्तान स्त्री	**कुरु + ऊङ्**	''ऊङुतः''
110.	● **पङ्गूः**	लँगडी स्त्री	**पङ्गु + ऊङ्**	''पङ्गोश्च''
111.	● **श्वश्रूः**	श्वशुरस्य स्त्री (सास)	**श्वशुर + ऊङ्**	''श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च'' (वा0)
112.	● **करभोरूः**	करभ के समान अर्थात् मांसल जंघा वाली स्त्री	**करभोरु + ऊङ्**	''ऊरूत्तरपदादौपम्ये''
113.	● **संहितोरूः**	सटी हुई जाँघों वाली स्त्री	**संहितोरु + ऊङ्**	''संहितशफलक्षणवामादेश्च''
114.	● **लक्षणोरूः**	सुलक्षण जाँघों वाली स्त्री	**लक्षणोरु + ऊङ्**	''संहितशफलक्षणवामादेश्च''
115.	● **वामोरूः**	सुन्दर जाँघों वाली स्त्री	**वामोरु + ऊङ्**	''संहितशफलक्षणवामादेश्च''
116.	● **शफोरूः**	जिसकी जाँघे मिली हुई हो ऐसी स्त्री	**शफोरु + ऊङ्**	''संहितशफलक्षणवामादेश्च''
117.	● **शार्ङ्गरवी**	शृङ्गरोः अपत्यं स्त्री (शृङ्गरु की कन्या)	**शार्ङ्गरव + ङीन्**	''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्''
118.	● **बैदी**	बिदस्य अपत्यं स्त्री (बैद ऋषि की कन्या)	**बैद + ङीन्**	''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्''
119.	● **ब्राह्मणी**	ब्राह्मण की पत्नी, कन्या	**ब्राह्मण + ङीन्**	''शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्''
120.	● **नारी**	स्त्री जाति	**नृ + ङीन्** **नर + ङीन्**	''नृनरयोर्वृद्धिश्च''
121.	● **युवतिः**	जवान, स्त्री	**युवन् + ति**	''यूनस्तिः''
122.	● **धनक्रीता**	धन द्वारा खरीदी गयी स्त्री	**धनक्रीत + टाप्**	अजाद्यतष्टाप्

तव्यत्-अनीयर्-तालिका

क्रमाङ्कः	धातुः	धात्वर्थः	तव्यत्	अनीयर्
1.	अट्	घूमना	**अटितव्यः**	**अटनीयः**
2.	अद्	खाना	**अत्तव्यः**	**अदनीयः**
3.	अर्च्	पूजा करना	**अर्चितव्यः**	**अर्चनीयः**
4.	अर्थ्	माँगना	**अर्थयितव्यः**	**अर्थनीयः**
5.	अस्	होना	**भवितव्यः**	**भवनीयः**
6.	प्र√आप्	पाना	**प्राप्तव्यः**	**प्रापणीयः**
7.	अधि√इ (ङ्)	पढ़ना	**अध्येतव्यः**	**अध्ययनीयः**
8.	इष्	चाहना	**एषितव्यः, एष्टव्यः**	**एषणीयः**
9.	निर्√ईक्ष्	देखना	**निरीक्षितव्यः**	**निरीक्षणीयः**
10.	एध्	बढ़ना	**एधितव्यः**	**एधनीयः**
11.	कथ्	कहना	**कथयितव्यः**	**कथनीयः**
12.	कम्प्	कांपना	**कम्पितव्यः**	**कम्पनीयः**
13.	कूज्	कूजना	**कूजितव्यः**	**कूजनीयः**
14.	कृ	करना	**कर्तव्यः**	**करणीयः**
15.	क्रन्द्	चिल्लाना	**क्रन्दितव्यः**	**क्रन्दनीयः**
16.	क्री	खरीदना	**क्रेतव्यः**	**क्रयणीयः**
17.	क्रीड्	खेलना	**क्रीडितव्यः**	**क्रीडनीयः**
18.	क्रुध्	क्रोध करना	**क्रोद्धव्यः**	**क्रोधनीयः**
19.	क्षल्	धोना	**क्षालयितव्यः**	**क्षालनीयः**
20.	क्षिप्	फेंकना	**क्षेप्तव्यः**	**क्षेपणीयः**
21.	खन्	खोदना	**खनितव्यः**	**खननीयः**
22.	खाद्	खाना	**खादितव्यः**	**खादनीयः**
23.	खेल्	खेलना	**खेलितव्यः**	**खेलनीयः**
24.	गण्	गिनना	**गणयितव्यः**	**गणनीयः**
25.	गम्	जाना	**गन्तव्यः**	**गमनीयः**
26.	गर्ज्	गर्जना	**गर्जितव्यः**	**गर्जनीयः**
27.	गर्ह्	निन्दा करना	**गर्हितव्यः**	**गर्हणीयः**
28.	गै	गाना	**गातव्यः**	**गानीयः**
29.	ग्रह्	ग्रहण करना	**ग्रहीतव्यः**	**ग्रहणीयः**
30.	चर्	घूमना	**चरितव्यः**	**चरणीयः**
31.	चल्	चलना	**चलितव्यः**	**चलनीयः**
32.	चि	चुनना	**चेतव्यः**	**चयनीयः**
33.	चिन्त्	चिन्ता करना	**चिन्तयितव्यः**	**चिन्तनीयः**
34.	चुर्	चुराना	**चोरयितव्यः**	**चोरणीयः**

क्रमाङ्क	धातुः	धात्वर्थः	तव्यत्	अनीयर्
35.	चुष्ट्	चेष्टा करना	**चेष्टितव्यः**	**चेष्टनीयः**
36.	छिद्	काटना	**छेत्तव्यः**	**छेदनीयः**
37.	जन्	पैदा होना	**जनितव्यः**	**जननीयः**
38.	जागृ	जागना	**जागरितव्यः**	**जागरणीयः**
39.	जि	जीतना	**जेतव्यः**	**जयनीयः**
40.	ज्ञा	जानना	**ज्ञातव्यः**	**ज्ञानीयः**
41.	तृ	तैरना	**तरितव्यः/तरीतव्यः**	**तरणीयः**
42.	त्यज्	छोड़ना	**त्यक्तव्यः**	**त्यजनीयः**
43.	दण्ड्	दण्ड देना	**दण्डयितव्यः**	**दण्डनीयः**
44.	दह्	जलाना	**दग्धव्यः**	**दहनीयः**
45.	दा	देना	**दातव्यः**	**दानीयः**
46.	दुह्	दोहना	**दोग्धव्यः**	**दोहनीयः**
47.	आ√दृ	आदर करना	**आदर्तव्यः**	**आदरणीयः**
48.	दृश्	देखना	**द्रष्टव्यः**	**दर्शनीयः**
49.	धाव्	भागना	**धावितव्यः**	**धावनीयः**
50.	ध्यै	ध्यान करना	**ध्यातव्यः**	**ध्यानीयः**
51.	नम्	झुकना	**नन्तव्यः**	**नमनीयः**
52.	निन्द्	निन्दा करना	**निन्दितव्यः**	**निन्दनीयः**
53.	नी	ले जाना	**नेतव्यः**	**नयनीयः**
54.	नृत्	नाँचना	**नर्तितव्यः**	**नर्तनीयः**
55.	पच्	पकाना	**पक्तव्यः**	**पचनीयः**
56.	पठ्	पढ़ना	**पठितव्यः**	**पठनीयः**
57.	पत्	गिरना	**पतितव्यः**	**पतनीयः**
58.	पा	पीना	**पातव्यः**	**पानीयः**
59.	पा	रक्षा करना	**पातव्यः**	**पानीयः**
60.	पुष्	पुष्ट करना	**पोष्टतव्यः**	**पोषणीयः**
61.	पू	पवित्र करना	**पवितव्यः**	**पवनीयः**
62.	पूज्	पूजना	**पूजयितव्यः**	**पूजनीयः**
63.	प्रच्छ्	पूँछना	**प्रष्टव्यः**	**प्रच्छनीयः**
64.	ब्रू	कहना	**वक्तव्यः**	**वचनीयः**
65.	भक्ष्	खाना	**भक्षयितव्यः**	**भक्षणीयः**
66.	भाष्	भाषण करना	**भाषितव्यः**	**भाषणीयः**
67.	भिद्	तोड़ना	**भेतव्यः**	**भेदनीयः**
68.	भुज्	खाना	**भोक्तव्यः**	**भोजनीयः**
69.	भू	होना	**भवितव्यः**	**भवनीयः**
70.	भूष्	सजाना	**भूषयितव्यः**	**भूषणीयः**
71.	भृ	धारण करना	**भर्तव्यः**	**भरणीयः**
72.	भ्रम्	घूमना	**भ्रमितव्यः**	**भ्रमणीयः**

क्रमाङ्क	धातुः	धात्वर्थः	तव्यत्	अनीयर्
73.	मन्	मानना	**मन्तव्यः**	**मननीयः**
74.	मिल्	मिलना	**मेलितव्यः**	**मेलनीयः**
75.	मुच्	छोड़ना	**मोक्तव्यः**	**मोचनीयः**
76.	यत्	यत्न करना	**यतितव्यः**	**यतनीयः**
77.	याच्	मांगना	**याचितव्यः**	**याचनीयः**
78.	रक्ष्	रक्षा करना	**रक्षितव्यः**	**रक्षणीयः**
79.	रुद्	रोना	**रोदितव्यः**	**रोदनीयः**
80.	रुध्	रोकना	**रोद्धव्यः**	**रोधनीयः**
81.	लभ्	पाना	**लब्धव्यः**	**लम्भनीयः**
82.	लिख्	लिखना	**लेखितव्यः**	**लेखनीयः**
83.	लिह्	चाटना	**लेढव्यः**	**लेहनीयः**
84.	वद्	बोलना	**वदितव्यः**	**वदनीयः**
85.	वन्द्	नमस्कार करना	**वन्दितव्यः**	**वन्दनीयः**
86.	वप्	काटना -बोना	**वप्तव्यः**	**वपनीयः**
87.	वस्	रहना	**वस्तव्यः**	**वसनीयः**
88.	वाञ्छ्	चाहना	**वाञ्छितव्यः**	**वाञ्छनीयः**
89.	विद्	जानना	**वेदितव्यः**	**वेदनीयः**
90.	विद्	पाना	**वेतव्यः**	**वेदनीयः**
91.	प्र√विश्	प्रवेश करना	**प्रवेष्टव्यः**	**प्रवेशनीयः**
92.	वृत्	वर्तना	**वर्तितव्यः**	**वर्तनीयः**
93.	वृध्	बढ़ना	**वर्धितव्यः**	**वर्धनीयः**
94.	शी	सोना	**शयितव्यः**	**शयनीयः**
95.	श्रु	सुनना	**श्रोतव्यः**	**श्रवणीयः**
96.	सिच्	सींचना	**सेक्तव्यः**	**सेचनीयः**
97.	सृज्	छोड़ना/ पैदा करना	**स्रष्टव्यः**	**सर्जनीयः**
98.	सेव्	सेवा करना	**सेवितव्यः**	**सेवनीयः**
99.	स्तु	स्तुति करना	**स्तोतव्यः**	**स्तवनीयः**
100.	स्था	ठहरना	**स्थातव्यः**	**स्थानीयः**
101.	स्मृ	स्मरण करना	**स्मर्तव्यः**	**स्मरणीयः**
102.	हन्	मारना	**हन्तव्यः**	**हननीय**
103.	हस्	हंसना	**हसितव्यः**	**हसनीयः**
104.	हृ	चुराना	**हर्तव्यः**	**हरणीयः**
105.	आ√ह्वे	बुलाना	**आह्वतव्यः**	**आह्वनीयः**

क्त-क्तवतु-प्रत्यय-तालिका

क्रमाङ्कः	धातुः	अर्थः	क्त	क्तवतु
1.	अर्च्	पूजा करना	**अर्चितः**	**अर्चितवान्**
2.	अस्	होना	**भूतः**	**भूतवान्**
3.	आप्	पाना	**प्राप्तः**	**प्राप्तवान्**
4.	आस्	बैठना	**आसितः**	**आसितवान्**
5.	इङ्	पढ़ना	**अधीतः**	**अधीतवान्**
6.	इष्	चाहना	**इष्टः**	**इष्टवान्**
7.	ईक्ष्	देखना	**ईक्षितः**	**ईक्षितवान्**
8.	एध्	बढ़ना	**एधितः**	**एधितवान्**
9.	कथ्	कहना	**कथितः**	**कथितवान्**
10.	कम्प्	कांपना	**कम्पितः**	**कम्पितवान्**
11.	कृ	करना	**कृतः**	**कृतवान्**
12.	क्री	खरीदना	**क्रीतः**	**क्रीतवान्**
13.	क्रीड्	खेलना	**क्रीडितः**	**क्रीडितवान्**
14.	क्षिप्	फेंकना	**क्षिप्तः**	**क्षिप्तवान्**
15.	खाद्	खाना	**खादितः**	**खादितवान्**
16.	ख्या	कहना	**ख्यातः**	**ख्यातवान्**
17.	गण्	गिनना	**गणितः**	**गणितवान्**
18.	गम्	जाना	**गतः**	**गतवान्**
19.	गर्ज्	गरजना	**गर्जितः**	**गर्जितवान्**
20.	गर्ह्	निन्दा करना	**गर्हितः**	**गर्हितवान्**
21.	गॄ	निगलना	**गीर्णः**	**गीर्णवान्**
22.	गै	गाना	**गीतः**	**गीतवान्**
23.	ग्रह्	ग्रहण करना	**गृहीतः**	**गृहीतवान्**
24.	घुष्	घोषणा करना	**घोषितः**	**घोषितवान्**
25.	चल्	चलना	**चलितः**	**चलितवान्**
26.	चि	चुनना	**चितः**	**चितवान्**
27.	चिन्त्	सोचना	**चिन्तितः**	**चिन्तितवान्**
28.	चुम्ब्	चूमना	**चुम्बितः**	**चुम्बितवान्**
29.	चुर्	चुराना	**चोरितः**	**चोरितवान्**
30.	छिद्	काटना	**छिन्नः**	**छिन्नवान्**
31.	जन्	पैदा होना	**जातः**	**जातवान्**
32.	जागृ	जागना	**जागरितः**	**जागरितवान्**
33.	जि	जीतना	**जितः**	**जितवान्**
34.	ज्ञा	जानना	**ज्ञातः**	**ज्ञातवान्**
35.	तर्ज्	झिड़कना	**तर्जितः**	**तर्जितवान्**

क्रमाङ्कः	धातुः	अर्थः	क्त	क्तवतु
36.	तृष्	प्यासा होना	**तृषितः**	**तृषितवान्**
37.	तृ	पार करना	**तीर्णः**	**तीर्णवान्**
38.	त्यज्	छोडना	**त्यक्तः**	**त्यक्तवान्**
39.	त्रुट्	टूटना	**त्रुटितः**	**त्रुटितवान्**
40.	दण्ड्	दण्ड देना	**दण्डितः**	**दण्डितवान्**
41.	दह्	जलाना	**दग्धः**	**दग्धवान्**
42.	दा	देना	**दत्तः**	**दत्तवान्**
43.	दुह्	दुहना	**दुग्धः**	**दुग्धवान्**
44.	दृश्	देखना	**दृष्टः**	**दृष्टवान्**
45.	धा	धारण करना	**हितः**	**हितवान्**
46.	धाव्	भागना	**धावितः**	**धावितवान्**
47.	धृ	धारण करना	**धृतः**	**धृतवान्**
48.	नन्द्	प्रसन्न होना	**नन्दितः**	**नन्दितवान्**
49.	नम्	झुकना	**नतः**	**नतवान्**
50.	नश्	नष्ट होना	**नष्टः**	**नष्टवान्**
51.	निन्द्	निन्दा करना	**निन्दितः**	**निन्दितवान्**
52.	नी	ले जाना	**नीतः**	**नीतवान्**
53.	पच्	पकाना	**पक्वः**	**पक्ववान्**
54.	पठ्	पढ़ना	**पठितः**	**पठितवान्**
55.	पत्	गिरना	**पतितः**	**पतितवान्**
56.	पा	पीना	**पीतः**	**पीतवान्**
57.	पीड्	पीडा देना	**पीडितः**	**पीडितवान्**
58.	पूज्	पूजा करना	**पूजितः**	**पूजितवान्**
59.	प्रच्छ्	पूछना	**पृष्टः**	**पृष्ट्वान्**
60.	बन्ध्	बांधना	**बद्धः**	**बद्धवान्**
61.	ब्रू	कहना	**उक्तः**	**उक्तवान्**
62.	भक्ष्	खाना	**भक्षितः**	**भक्षितवान्**
63.	भञ्ज्	तोड़ना	**भग्नः**	**भग्नवान्**
64.	भाष्	कहना	**भाषितः**	**भाषितवान्**
65.	भी	डरना	**भीतः**	**भीतवान्**
66.	भुज्	पालना	**भुक्तः**	**भुक्तवान्**
67.	भू	होना	**भूतः**	**भूतवान्**
68.	मिल्	मिलना	**मिलितः**	**मिलितवान्**
69.	मुच्	छोडना	**मुक्तः**	**मुक्तवान्**
70.	मुष्	लूटना	**मुषितः**	**मुषितवान्**
71.	मृ	मरना	**मृतः**	**मृतवान्**
72.	यज्	पूजा करना	**इष्टः**	**इष्टवान्**
73.	या	जाना	**यातः**	**यातवान्**
74.	याच्	मांगना	**याचितः**	**याचितवान्**

क्रमाङ्कः	धातुः	अर्थः	क्त	क्तवतु
75.	रक्ष्	बचाना	**रक्षितः**	**रक्षितवान्**
76.	रट्	रटना	**रटितः**	**रटितवान्**
77.	रुद्	रोना	**रुदितः**	**रुदितवान्**
78.	रुह्	चढ़ना	**आरूढः**	**आरूढवान्**
79.	लभ्	पाना	**लब्धः**	**लब्धवान्**
80.	लिख्	लिखना	**लिखितः**	**लिखितवान्**
81.	लिह्	चाटना	**लीढः**	**लीढवान्**
82.	वच्	कहना	**उक्तः**	**उक्तवान्**
83.	वद्	बोलना	**उदितः**	**उदितवान्**
84.	वन्द्	वन्दना करना	**वन्दितः**	**वन्दितवान्**
85.	वस्	रहना	**उषितः**	**उषितवान्**
86.	वह्	ले जाना	**ऊढः**	**ऊढवान्**
87.	वाञ्छ्	चाहना	**वाञ्छितः**	**वाञ्छितवान्**
88.	विद्	जानना	**विदितः**	**विदितवान्**
89.	विद्	पाना	**विन्नः**	**विन्नवान्**
90.	शक्	समर्थ होना	**शक्तः**	**शक्तवान्**
91.	शङ्क्	शंका करना	**शङ्कितः**	**शङ्कितवान्**
92.	शास्	उपदेश देना	**शिष्टः**	**शिष्टवान्**
93.	शिक्ष्	सीखना	**शिक्षितः**	**शिक्षितवान्**
94.	शी (ङ्)	सोना	**शयितः**	**शयितवान्**
95.	शुभ्	शोभा पाना	**शोभितः**	**शोभितवान्**
96.	शुष्	सूखना	**शुष्कः**	**शुष्कवान्**
97.	श्रम्	थकना	**श्रान्तः**	**श्रान्तवान्**
98.	श्रि (ञ्)	सेवन करना	**श्रितः**	**श्रितवान्**
99.	श्रु	सुनना	**श्रुतः**	**श्रुतवान्**
100.	सह्	सहना	**सोढः**	**सोढवान्**
101.	सिच्	सींचना	**सिक्तः**	**सिक्तवान्**
102.	सूच्	सूचित करना	**सूचितः**	**सूचितवान्**
103.	स्तु	स्तुति करना	**स्तुतः**	**स्तुतवान्**
104.	स्था	ठहरना	**स्थितः**	**स्थितवान्**
105.	स्ना	नहाना	**स्नातः**	**स्नातवान्**
106.	स्पृश्	छूना	**स्पृष्टः**	**स्पृष्टवान्**
107.	स्मृ	याद करना	**स्मृतः**	**स्मृतवान्**
108.	स्वप्	सोना	**सुप्तः**	**सुप्तवान्**
109.	हन्	मारना	**हतः**	**हतवान्**
110.	हृ	हरना	**हृतः**	**हृतवान्**
111.	हस्	हँसना	**हसितः**	**हसितवान्**

क्त्वान्त-ल्यबन्त-तालिका

क्रमाङ्कः	धातुः	धात्वर्थः	क्त्वान्त-पदम्	ल्यबन्त-पदम्
1.	अट्	घूमना	**अटित्वा**	**पर्यट्य**
2.	अर्च्	पूजना	**अर्चित्वा**	**समर्च्य**
3.	अर्जि	कमाना	**अर्जयित्वा**	**उपार्ज्य**
4.	अर्थि	मांगना	**अर्थयित्वा**	**प्रार्थ्य**
5.	अस्	होना	**भूत्वा**	**अनुभूय**
6.	आप्	पाना	**आप्त्वा**	**प्राप्य**
7.	इ (ङ्)	पढ़ना	**-**	**अधीत्य**
8.	ईक्ष्	देखना	**ईक्षित्वा**	**निरीक्ष्य**
9.	कम्प्	कांपना	**कम्पित्वा**	**प्रकम्प्य**
10.	काङ्क्ष्	चाहना	**काङ्क्षित्वा**	**अभिकाङ्क्ष्य**
11.	कुर्द्	कूदना	**कूर्दित्वा**	**संकूर्द्य**
12.	कृ	करना	**कृत्वा**	**अधिकृत्य**
13.	कृष्	खींचना	**कृष्ट्वा**	**आकृष्य**
14.	क्रन्द्	चिल्लाना	**क्रन्दित्वा**	**आक्रन्द्य**
15.	क्री	खरीदना	**क्रीत्वा**	**विक्रीय**
16.	क्रीड्	खेलना	**क्रीडित्वा**	**संक्रीड्य**
17.	क्षिप्	फेंकना	**क्षिप्त्वा**	**प्रक्षिप्य**
18.	खन्	खोदना	**खनित्वा/खात्वा**	**उत्खन्य/उत्खाय**
19.	खाद्	खाना	**खादित्वा**	**संखाद्य**
20.	खेल्	खेलना	**खेलित्वा**	**संखेल्य**
21.	गम्	जाना	**गत्वा**	**अवगत्य/अवगम्य**
22.	गर्ज्	गरजना	**गर्जित्वा**	**संगर्ज्य**
23.	गर्ह्	निन्दा करना	**गर्हित्वा**	**विगर्ह्य**
24.	गै	गाना	**गीत्वा**	**प्रगाय**
25.	ग्रह्	ग्रहण करना	**गृहीत्वा**	**विगृह्य**
26.	घ्रा	सूंघना	**घ्रात्वा**	**विघ्राय**
27.	चर्	चलना	**चरित्वा**	**आचर्य**
28.	चि	चुनना	**चित्वा**	**संचित्य**
29.	चुम्ब्	चूमना	**चुम्बित्वा**	**संचुम्ब्य**
30.	चुर्	चुराना	**चोरयित्वा**	**संचोर्य**
31.	छिद्	काटना	**छित्त्वा**	**विच्छिद्य**
32.	जन्	पैदा होना	**जनित्वा**	**संजाय/संजन्य**
33.	जागृ	जागना	**जागरित्वा**	**प्रजागर्य**
34.	जि	जीतना	**जित्वा**	**विजित्य**
35.	ज्ञा	जानना	**ज्ञात्वा**	**विज्ञाय**
36.	तर्ज्	धमकाना	**तर्जित्वा**	**प्रतर्ज्य**
37.	तॄ	पार करना	**तीर्त्वा**	**सन्तीर्य**
38.	त्यज्	छोड़ना	**त्यक्त्वा**	**परित्यज्य**

क्रमाङ्कः	धातुः	धात्वर्थः	क्त्वान्त-पदम्	ल्यबन्त-पदम्
39.	त्रुट्	टूटना	**त्रुटित्वा**	**प्रत्रुट्य**
40.	दह्	जलाना	**दग्ध्वा**	**सन्दह्य**
41.	दा	देना	**दत्त्वा**	**प्रदाय**
42.	दुह्	दोहना	**दुग्ध्वा**	**संदुह्य**
43.	दृश्	देखना	**दृष्ट्वा**	**सन्दृश्य**
44.	धा	धारण करना	**हित्वा**	**सन्धाय**
45.	धाव्	दौड़ना	**धावित्वा**	**प्रधाव्य**
46.	ध्यै	ध्यान करना	**ध्यात्वा**	**सन्ध्याय**
47.	नद्	गरजना	**नदित्वा**	**निनद्य**
48.	नम्	झुकना	**नत्वा**	**प्रणत्य/प्रणम्य**
49.	नी	ले जाना	**नीत्वा**	**आनीय**
50.	नृत्	नाचना	**नर्तित्वा**	**प्रनृत्य**
51.	पच्	पकाना	**पक्त्वा**	**प्रपच्य**
52.	पठ्	पढ़ना	**पठित्वा**	**प्रपठ्य**
53.	पत्	गिरना	**पतित्वा**	**निपत्य**
54.	पा	पीना	**पीत्वा**	**प्रपाय**
55.	पा	बचाना	**पात्वा**	**परिपाय**
56.	पूज्	पूजना	**पूजयित्वा**	**सम्पूज्य**
57.	प्रच्छ्	पूछना	**पृष्ट्वा**	**आपृच्छ्य**
58.	फल्	फलना	**फलित्वा**	**संफल्य**
59.	बन्ध्	बाँधना	**बद्ध्वा**	**अनुबध्य**
60.	ब्रू	कहना	**उक्त्वा**	**प्रोच्य**
61.	भक्ष्	खाना	**भक्षयित्वा**	**आभक्ष्य**
62.	भज्	सेवा करना	**भक्त्वा**	**विभज्य**
63.	भाष्	कहना	**भाषित्वा**	**संभाष्य**
64.	भिक्ष्	मांगना	**भिक्षित्वा**	**संभिक्ष्य**
65.	भी	डरना	**भीत्वा**	**विभीय**
66.	भुज्	पालना,खाना	**भुक्त्वा**	**उपभुज्य**
67.	भू	होना	**भूत्वा**	**अनुभूय**
68.	मार्ग	ढूंढना	**मार्गयित्वा**	**संमार्ग्य**
69.	मिल्	मिलना	**मिलित्वा/मेलित्वा**	**सम्मिल्य**
70.	मुच्	छोडना	**मुक्त्वा**	**विमुच्य**
71.	मुद्	प्रसन्न होना	**मुदित्वा/मोदित्वा**	**प्रमुद्य**
72.	यज्	यज्ञ करना	**इष्ट्वा**	**प्रेज्य**
73.	या	जाना	**यात्वा**	**प्रयाय**
74.	याच्	मांगना	**याचित्वा**	**उपयाच्य**
75.	रक्ष्	बचाना	**रक्षित्वा**	**संरक्ष्य**
76.	रट्	रटना	**रटित्वा**	**संरट्य**
77.	रुद्	रोना	**रुदित्वा**	**प्ररुद्य**
78.	लिख्	लिखना	**लिखित्वा/लेखित्वा**	**आलिख्य**
79.	लोक्	देखना	**लोकित्वा**	**विलोक्य**

क्रमाङ्कः	धातुः	धात्वर्थः	क्त्वान्त-पदम्	ल्यबन्त-पदम्
80.	वच्	कहना	**उक्त्वा**	**निरूच्य**
81.	वद्	बोलना	**उदित्वा**	**अनूद्य**
82.	वस्	रहना	**उषित्वा**	**प्रोष्य**
83.	वह्	ढोना	**ऊढ्वा**	**प्रोह्य**
84.	वाञ्छ्	चाहना	**वाञ्छित्वा**	**अभिवाञ्छ्य**
85.	विद्	जानना	**विदित्वा**	**संविद्य**
86.	विद्	होना	**वित्त्वा**	**संविद्य**
87.	विश्	घुसना	**विष्ट्वा**	**प्रविश्य**
88.	शक्	समर्थ होना	**शक्त्वा**	**अतिशक्य**
89.	शिक्ष्	सीखना	**शिक्षित्वा**	**प्रशिक्ष्य**
90.	शी	सोना	**शयित्वा**	**उपशय्य**
91.	श्रु	सुनना	**श्रुत्वा**	**संश्रुत्य**
92.	सह्	सहना	**सहित्वा**	**प्रसह्य**
93.	सृ	सरकना	**सृत्वा**	**अनुसृत्य**
94.	सेव्	सेवा करना	**सेवित्वा**	**आसेव्य**
95.	स्था	ठहरना	**स्थित्वा**	**प्रस्थाय**
96.	स्ना	नहाना	**स्नात्वा**	**प्रस्नाय**
97.	स्पृश्	छूना	**स्पृष्ट्वा**	**संस्पृश्य**
98.	स्मृ	स्मरण करना	**स्मृत्वा**	**विस्मृत्य**
99.	स्वप्	सोना	**सुप्त्वा**	**प्रसुप्य**
100.	हन्	मारना	**हत्वा**	**निहत्य**
101.	हस्	हंसना	**हसित्वा**	**विहस्य**
102.	हा	छोडना	**हित्वा**	**विहाय**
103.	हु	यज्ञ करना	**हुत्वा**	**आहुत्य**
104.	हृ	हरना	**हृत्वा**	**आहृत्य**
105.	ह्वे	बुलाना	**हूत्वा**	**आहूय**
106.	चल्	चलना	**चलित्वा**	**संचल्य**

तुमुन् प्रत्ययान्त–तालिका

क्र0	धातु	तुमुनन्त	अर्थ
1.	अट्	**अटितुम्**	घूमने के लिए
2.	अद्	**अत्तुम्**	खाने के लिए
3.	अर्च्	**अर्चितुम्**	पूजने के लिए
4.	अर्ज्	**अर्जितुम्**	कमाने के लिए
5.	अर्थ्	**प्रार्थयितुम्**	मांगने के लिए
6.	अश्	**अशितुम्**	खाने के लिए
7.	अस्	**भवितुम्**	होने के लिए
8.	आप्	**प्राप्तुम्**	पाने के लिए
9.	इङ्	**अध्येतुम्**	पढ़ने के लिए
10.	इष्	**एषितुम्, एष्टुम्**	चाहने के लिए

क्र0	धातु	तुमुनन्त	अर्थ
11.	ईक्ष्	**निरीक्षितुम्**	निरीक्षण करने के लिए
12.	ऊह्	**ऊहितुम्**	अनुमान करने के लिए
13.	एध्	**एधितुम्**	बढने के लिए
14.	कथ्	**कथयितुम्**	कहने के लिए
15.	कम्प्	**कम्पितुम्**	कांपने के लिए
16.	काङ्क्ष्	**काङ्क्षितुम्**	चाहने के लिए
17.	कूज्	**कूजितुम्**	कूकने के लिए
18.	कृ	**कर्तुम्**	करने के लिए
19.	क्रन्द्	**क्रन्दितुम्**	चिल्लाने के लिए
20.	क्री	**क्रेतुम्**	खरीदने के लिए
21.	क्रीड्	**क्रीडितुम्**	खेलने के लिए
22.	क्षम्	**क्षमितुम्/क्षन्तुम्**	सहने के लिए
23.	क्षल्	**क्षालयितुम्**	धोने के लिए
24.	क्षिप्	**क्षेप्तुम्**	फेकने के लिए
25.	खन्	**खनितुम्**	खोदने के लिए
26.	खाद्	**खादितुम्**	खाने के लिए
27.	खेल्	**खेलितुम्**	खेलने के लिए
28.	ख्या	**ख्यातुम् /आख्यातुम्**	कहने के लिए
29.	गण्	**गणयितुम्**	गिनने के लिए
30.	गम्	**गन्तुम्**	जाने के लिए
31.	गर्ज्	**गर्जितुम्**	गरजने के लिए
32.	गर्ह्	**गर्हितुम्**	निन्दा करने के लिए
33.	गै	**गातुम्**	गाने के लिए
34.	ग्रह्	**ग्रहीतुम्**	ग्रहण करने के लिए
35.	घ्रा	**घ्रातुम्**	सूंघने के लिए
36.	चर्	**चरितुम्**	घूमने के लिए
37.	चर्व्	**चर्वितुम्**	चबाने के लिए
38.	चल्	**चलितुम्**	चलने के लिए
39.	चि	**चेतुम्**	चुनने के लिए
40.	चित्	**चेतितुम्**	चेतने के लिए
41.	चिन्त्	**चिन्तयितुम्**	सोचने के लिए
42.	चुम्ब्	**चुम्बितुम्**	चूमने के लिए
43.	चुर्	**चोरयितुम्**	चुराने के लिए
44.	छिद्	**छेत्तुम्**	काटने के लिए
45.	जन्	**जनितुम्**	पैदा होने के लिए
46.	जप्	**जपितुम्**	जपने के लिए
47.	जागृ	**जागरितुम्**	जागने के लिए
48.	जि	**जेतुम्**	जीतने के लिए
49.	जीव्	**जीवितुम्**	जीने के लिए
50.	ज्ञा	**ज्ञातुम्**	जानने के लिए
51.	ज्वल्	**ज्वलितुम्**	जलने के लिए

क्र0	धातु	तुमुनन्त	अर्थ
52.	डी	**उड्डयितुम्**	उडने के लिए
53.	तड्	**ताडयितुम्**	पीटने के लिए
54.	तप्	**तप्तुम्**	तपाने के लिए
55.	तृ	**तरितुम् / तरीतुम्**	पार करने के लिए
56.	त्यज्	**त्यक्तुम्**	छोडने के लिए
57.	त्रै ,	**त्रातुम्**	बचाने के लिए
58.	दंश्	**दंष्टुम्**	डसने के लिए
59.	दह्	**दग्धुम्**	जलाने के लिए
60.	दा	**दातुम्**	देने के लिए
61.	दुह्	**दोग्धुम्**	दोहने के लिए
62.	दृश्	**द्रष्टुम्**	देखने के लिए
63.	धाव्	**धावितुम्**	दौडने के लिए
64.	धृ	**धर्तुम्**	धारण करने के लिए
65.	नन्द्	**नन्दितुम्**	खुश होने के लिए
66.	नश्	**नशितुम् / नंष्टुम्**	नष्ट होने के लिए
67.	निन्द्	**निन्दितुम्**	निन्दा करने के लिए
68.	नी	**नेतुम्**	ले जाने के लिए
69.	नृत्	**नर्तितुम्**	नाचने के लिए
70.	पच्	**पक्तुम्**	पकाने के लिए
71.	पठ्	**पठितुम्**	पढने के लिए
72.	पत्	**पतितुम्**	गिरने के लिए
73.	पा	**पातुम्**	पीने के लिए
74.	पाल्	**पालयितुम्**	पालने के लिए
75.	पूज्	**पूजयितुम्**	पूजने के लिए
76.	प्रच्छ्	**प्रष्टुम्**	पूछने के लिए
77.	फल्	**फलितुम्**	फलने के लिए
78.	बन्ध्	**बन्द्धुम्**	बांधने के लिए
79.	बाध्	**बाधितुम्**	रोकने के लिए
80.	बुध्	**बोधितुम्**	जानने के लिए
81.	ब्रू	**वक्तुम्**	कहने के लिए
82.	भञ्ज्	**भङ्क्तुम्**	तोड़ने के लिए
83.	भाष्	**भाषितुम्**	बोलने के लिए
84.	भिक्ष्	**भिक्षितुम्**	मांगने के लिए
85.	भिद्	**भेत्तुम्**	तोड़ने के लिए
86.	भी	**भेतुम्**	डरने के लिए
87.	भुज्	**भोक्तुम्**	खाने के लिए
88.	भू	**भवितुम्**	होने के लिए
89.	भ्रम्	**भ्रमितुम्**	घूमने के लिए
90.	मन्	**मन्तुम्**	मानने के लिए
91.	मन्त्र्	**मन्त्रयितुम्**	सलाह करने के लिए
92.	मार्ग	**मार्गयितुम्**	ढूँढने के लिए

क्र0	धातु	तुमुनन्त	अर्थ
93.	मिल्	**मेलितुम्**	मिलाने के लिए
94.	मुच्	**मोक्तुम्**	छोड़ने के लिए
95.	मुर्च्छ्	**मूर्च्छितुम्**	बेहोश होने के लिए
96.	मृ	**मर्तुम्**	मरने के लिए
97.	यज्	**यष्टुम्**	यज्ञ करने के लिए
98.	यत्	**यतितुम्**	यत्न करने के लिए
99.	या	**यातुम्**	जाने के लिए
100.	याच्	**याचितुम्**	मांगने के लिए
101.	युज्	**योक्तुम्**	जोड़ने के लिए
102.	युध्	**योद्धुम्**	युद्ध करने के लिए
103.	रक्ष्	**रक्षितुम्**	रक्षा करने के लिए
104.	रच्	**रचयितुम्**	बनाने के लिए
105.	रुद्	**रोदितुम्**	रोने के लिए
106.	रुध्	**रोद्धुम्**	रोकने के लिए
107.	रुह्	**अरोढुम्**	चढ़ने के लिए
108.	लभ्	**लब्धुम्**	पाने के लिए
109.	लिख्	**लेखितुम्**	लिखने के लिए
110.	वच्	**वक्तुम्**	कहने के लिए
111.	वद्	**वदितुम्**	कहने के लिए
112.	वप्	**वप्तुम्**	बोने के लिए
113.	वस्	**वस्तुम्**	रहने के लिए
114.	वह्	**वोढुम्**	ले जाने के लिए
115.	विद्	**वेदितुम्**	जानने के लिए
116.	विश्	**प्रवेष्टुम्**	प्रवेश करने के लिए
117.	वृत्	**वर्तितुम्**	होने के लिए
118.	वृध्	**वर्धितुम्**	बढ़ने के लिए
119.	शक्	**शक्तुम्**	सकने के लिए
120.	शप्	**शप्तुम्**	शाप देने के लिए
121.	शास्	**शासितुम्**	शिक्षा देने के लिए
122.	शिक्ष्	**शिक्षितुम्**	सीखने के लिए
123.	शुच्	**शोचितुम्**	शोक करने के लिए
124.	श्रु	**श्रोतुम्**	सुनने के लिए
125.	सिच्	**सेक्तुम्**	सींचने के लिए
126.	सिव्	**सेवितुम्**	सीने के लिए
127.	सूच्	**सूचयितुम्**	सूचना देने के लिए
128.	सृ	**सर्तुम्**	सरकने के लिए
129.	सेव्	**सेवितुम्**	सेवा करने के लिए
130.	स्था	**स्थातुम्**	ठहरने के लिए
131.	स्ना	**स्नातुम्**	नहाने के लिए
132.	स्पृश्	**स्प्रष्टुम्/स्पर्ष्टुम्**	छूने के लिए
133.	स्मृ	**स्मर्तुम्**	याद करने के लिए
134.	स्वप्	**स्वप्तुम्**	सोने के लिए
135.	हन्	**हन्तुम्**	मारने के लिए

सन्धिविधायक सूत्र

सन्धि	सन्धिसूत्र
1. यण्सन्धि	इको यणचि
2. दीर्घसन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः
3. गुणसन्धि	आद् गुणः
4. वृद्धिसन्धि	वृद्धिरेचि
5. अयादिसन्धि	एचोऽयवायावः
6. पूर्वरूपसन्धि	एङः पदान्तादति
7. पररूपसन्धि	एङि पररूपम्
8. प्रगृह्यसन्धि	प्लुतप्रगृह्याचि नित्यम्
9. श्चुत्वसन्धि	स्तोः श्चुना श्चुः
10. ष्टुत्वसन्धि	ष्टुना ष्टुः
11. जश्त्वसन्धि	झलां जशोऽन्ते
12. अनुनासिकसन्धि	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा
13. लत्वसन्धि	तोर्लि
14. अनुस्वारसन्धि	मोऽनुस्वारः
15. परसवर्णसन्धि	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः
16. छत्वसन्धि	शश्छोऽटि
17. विसर्गसन्धि	खरवसानयोर्विसर्जनीयः

क्र0	धातु	तुमुनन्त	अर्थ
136.	हस्	**हसितुम्**	हंसने के लिए
137.	हा	**हातुम्**	छोड़ने के लिए
138.	हृ	**हर्तुम्**	हरने के लिए
139.	ह्वे	**आह्वातुम्**	बुलाने के लिए
140.	वन्द्	**वन्दितुम्**	नमस्कार करने के लिए
141.	वाञ्छ्	**वाञ्छितुम्**	चाहने के लिए
142.	शङ्क्	**शङ्कितुम्**	शंका करने के लिए
143.	शी	**शयितुम्**	सोने के लिए
144.	सह्	**सहितुम्/सोढुम्**	सहने के लिए

शतृ-प्रत्ययान्त-तालिका

क्रमाङ्कः	धातुः	पु0	स्त्री0	नपु0	अर्थः
1.	अट्	**अटन्**	**अटन्ती**	**अटत्**	घूमता हुआ
2.	अद्	**अदन्**	**अदती**	**अदत्**	खाता हुआ
3.	अर्च्	**अर्चन्**	**अर्चन्ती**	**अर्चत्**	पूजता हुआ
4.	अर्ज्	**अर्जयन्**	**अर्जयन्ती**	**अर्जयत्**	कमाता हुआ
5.	अश्	**अश्नन्**	**अश्नती**	**अश्नत्**	खाता हुआ
6.	इष्	**इच्छन्**	**इच्छती/इच्छन्ती**	**इच्छत्**	चाहता हुआ
7.	कथ्	**कथयन्**	**कथयन्ती**	**कथयत्**	कहता हुआ
8.	काङ्क्ष्	**काङ्क्षन्**	**काङ्क्षन्ती**	**काङ्क्षत्**	चाहता हुआ
9.	कुप्	**कुप्यन्**	**कुप्यन्ती**	**कुप्यत्**	क्रोध करता हुआ
10.	कूज्	**कूजन्**	**कूजन्ती**	**कूजत्**	गूंजता हुआ
11.	कृ	**कुर्वन्**	**कुर्वती**	**कुर्वत्**	करता हुआ
12.	कृष्	**कर्षन्**	**कर्षन्ती**	**कर्षत्**	खींचता हुआ
13.	कृष्	**कृषन्**	**कृषती/कृषन्ती**	**कृषत्**	हल चलाता हुआ
14.	क्रन्द्	**क्रन्दन्**	**क्रन्दन्ती**	**क्रन्दत्**	चिल्लाता हुआ
15.	क्री	**क्रीणन्**	**क्रीणती**	**क्रीणत्**	खरीदता हुआ
16.	क्रीड्	**क्रीडन्**	**क्रीडन्ती**	**क्रीडत्**	खेलता हुआ
17.	क्रुध्	**क्रुध्यन्**	**क्रुध्यन्ती**	**क्रुध्यत्**	क्रोध करता हुआ
18.	क्षर्	**क्षरन्**	**क्षरन्ती**	**क्षरत्**	झरता हुआ
19.	क्षल्	**क्षालयन्**	**क्षालयन्ती**	**क्षालयत्**	धोता हुआ
20.	क्षि	**क्षयन्**	**क्षयन्ती**	**क्षयत्**	घटता हुआ
21.	क्षिप्	**क्षिपन्**	**क्षिपती/क्षिपन्ती**	**क्षिपत्**	फेंकता हुआ
22.	क्षुध्	**क्षुध्यन्**	**क्षुध्यन्ती**	**क्षुध्यत्**	भूखा होता हुआ
23.	खन्	**खनन्**	**खनन्ती**	**खनत्**	खोदता हुआ
24.	खाद्	**खादन्**	**खादन्ती**	**खादत्**	खाता हुआ
25.	खेल्	**खेलन्**	**खेलन्ती**	**खेलत्**	खेलता हुआ
26.	गण्	**गणयन्**	**गणयन्ती**	**गणयत्**	गिनता हुआ
27.	गम्	**गच्छन्**	**गच्छन्ती**	**गच्छत्**	जाता हुआ
28.	गर्ज्	**गर्जन्**	**गर्जन्ती**	**गर्जत्**	गरजता हुआ
29.	गुञ्ज्	**गुञ्जन्**	**गुञ्जन्ती**	**गुञ्जत्**	गूंजता हुआ

क्रमाङ्कः	धातुः	पु०	स्त्री०	नपु०	अर्थः
30.	गै	**गायन्**	**गायन्ती**	**गायत्**	गाता हुआ
31.	ग्लै	**ग्लायन्**	**ग्लायन्ती**	**ग्लायत्**	दुःखी होता हुआ
32.	घ्रा	**जिघ्रन्**	**जिघ्रन्ती**	**जिघ्रत्**	सूंघता हुआ
33.	चर्	**चरन्**	**चरन्ती**	**चरत्**	चरता हुआ
34.	चल्	**चलन्**	**चलन्ती**	**चलत्**	चलता हुआ
35.	चि	**चिन्वन्**	**चिन्वती**	**चिन्वत्**	चुनता हुआ
36.	चिन्त्	**चिन्तयन्**	**चिन्तयन्ती**	**चिन्तयत्**	सोचता हुआ
37.	चुर्	**चोरयन्**	**चोरयन्ती**	**चोरयत्**	चुराता हुआ
38.	छिद्	**छिन्दन्**	**छिन्दती**	**छिन्दत्**	काटता हुआ
39.	जप्	**जपन्**	**जपन्ती**	**जपत्**	जप करता हुआ
40.	जागृ	**जाग्रन्**	**जाग्रती**	**जाग्रत्**	जागता हुआ
41.	जि	**जयन्**	**जयन्ती**	**जयत्**	जीतता हुआ
42.	जीव्	**जीवन्**	**जीवन्ती**	**जीवत्**	जीता हुआ
43.	ज्ञा	**जानन्**	**जानती**	**जानत्**	जानता हुआ
44.	तुद्	**तुदन्**	**तुदती/तुदन्ती**	**तुदत्**	चुभोता हुआ
45.	तुल्	**तोलयन्**	**तोलयन्ती**	**तोलयत्**	तोलता हुआ
46.	तॄ	**तरन्**	**तरन्ती**	**तरत्**	तैरता हुआ
47.	त्यज्	**त्यजन्**	**त्यजन्ती**	**त्यजत्**	छोड़ता हुआ
48.	दण्ड्	**दण्डयन्**	**दण्डयन्ती**	**दण्डयत्**	दण्ड देता हुआ
49.	दह्	**दहन्**	**दहन्ती**	**दहत्**	जलाता हुआ
50.	दा	**ददन्**	**ददती**	**ददत्**	देता हुआ
51.	दिव्	**दीव्यन्**	**दीव्यन्ती**	**दीव्यत्**	चमकता हुआ
52.	दुह्	**दुहन्**	**दुहती**	**दुहत्**	दोहता हुआ
53.	दृश्	**पश्यन्**	**पश्यन्ती**	**पश्यत्**	देखता हुआ
54.	धा	**दधन्**	**दधती**	**दधत्**	धारण करता हुआ
55.	धाव्	**धावन्**	**धावन्ती**	**धावत्**	दौड़ता हुआ
56.	धृ	**धरन्**	**धरन्ती**	**धरत्**	धारण करता हुआ
57.	नम्	**नमन्**	**नमन्ती**	**नमत्**	नमस्कार करता हुआ
58.	नश्	**नश्यन्**	**नश्यन्ती**	**नश्यत्**	नष्ट होता हुआ
59.	निन्द्	**निन्दन्**	**निन्दन्ती**	**निन्दत्**	निन्दा करता हुआ
60.	नी	**नयन्**	**नयन्ती**	**नयत्**	ले जाता हुआ
61.	नृत	**नृत्यन्**	**नृत्यन्ती**	**नृत्यत्**	नाचता हुआ
62.	पच्	**पचन्**	**पचन्ती**	**पचत्**	पकाता हुआ
63.	पठ्	**पठन्**	**पठन्ती**	**पठत्**	पढ़ता हुआ
64.	पत्	**पतन्**	**पतन्ती**	**पतत्**	गिरता हुआ
65.	पा	**पिबन्**	**पिबन्ती**	**पिबत्**	पीता हुआ
66.	पाल्	**पालयन्**	**पालयन्ती**	**पालयत्**	पालता हुआ
67.	पीड्	**पीडयन्**	**पीडयन्ती**	**पीडयत्**	दुःख देता हुआ
68.	पूज्	**पूजयन्**	**पूजयन्ती**	**पूजयत्**	पूजता हुआ
69.	प्रच्छ्	**पृच्छन्**	**पृच्छती/पृच्छन्ती**	**पृच्छत्**	पूँछता हुआ
70.	भक्ष्	**भक्षयन्**	**भक्षयन्ती**	**भक्षयत्**	खाता हुआ
71.	भज्	**भजन्**	**भजन्ती**	**भजत्**	भजता हुआ
72.	भिद्	**भिन्दन्**	**भिन्दती**	**भिन्दत्**	तोड़ता हुआ

क्रमाङ्कः	धातुः	पु0	स्त्री0	नपु0	अर्थः
73.	भी	**बिभ्यन्**	**बिभ्यती**	**बिभ्यत्**	डरता हुआ
74.	भ्रम्	**भ्रमन्**	**भ्रमन्ती-भ्राम्यन्ती**	**भ्रमत्-भ्राम्यत्**	घूमता हुआ
75.	मिल्	**मिलन्**	**मिलती-मिलन्ती**	**मिलत्**	मिलता हुआ
76.	मुच्	**मुञ्चन्**	**मुञ्चती-मुञ्चन्ती**	**मुञ्चत्**	छोड़ता हुआ
77.	यज्	**यजन्**	**यजन्ती**	**यजत्**	यज्ञ करता हुआ
78.	या	**यान्**	**याती - यान्ती**	**यात्**	जाता हुआ
79.	याच्	**याचन्**	**याचन्ती**	**याचत्**	मांगता हुआ
80.	रक्ष्	**रक्षन्**	**रक्षन्ती**	**रक्षत्**	रक्षा करता हुआ
81.	रच्	**रचयन्**	**रचयन्ती**	**रचयत्**	बनाता हुआ
82.	रुद्	**रुदन्**	**रुदती**	**रुदत्**	रोता हुआ
83.	रुध्	**रुन्धन्**	**रुन्धती**	**रुन्धत्**	रोकता हुआ
84.	लिख्	**लिखन्**	**लिखती-लिखन्ती**	**लिखत्**	लिखता हुआ
85.	लिह्	**लिहन्**	**लिहती**	**लिहत्**	चाटता हुआ
86.	वद्	**वदन्**	**वदन्ती**	**वदत्**	बोलता हुआ
87.	वस्	**वसन्**	**वसन्ती**	**वसत्**	रहता हुआ
88.	वह्	**वहन्**	**वहन्ती**	**वहत्**	ढोता हुआ
89.	वाञ्छ्	**वाञ्छन्**	**वाञ्छन्ती**	**वाञ्छत्**	चाहता हुआ
90.	विद्	**विन्दन्**	**विन्दती-विन्दन्ती**	**विन्दत्**	पाता हुआ
91.	श्रि	**श्रयन्**	**श्रयन्ती**	**श्रयत्**	आश्रय करता हुआ
92.	श्रु	**शृण्वन्**	**शृण्वती**	**शृण्वत्**	सुनता हुआ
93.	सिच्	**सिञ्चन्**	**सिञ्चती- सिञ्चन्ती**	**सिञ्चत्**	सींचता हुआ
94.	सृज्	**सृजन्**	**सृजती-सृजन्ती**	**सृजत्**	पैदा करता हुआ
95.	स्था	**तिष्ठन्**	**तिष्ठन्ती**	**तिष्ठत्**	ठहरता हुआ
96.	स्पृश्	**स्पृशन्**	**स्पृशती-स्पृशन्ती**	**स्पृशत्**	छूता हुआ
97.	स्मृ	**स्मरन्**	**स्मरन्ती**	**स्मरत्**	याद करता हुआ
98.	स्वप्	**स्वपन्**	**स्वपती**	**स्वपत्**	सोता हुआ
99.	हन्	**घ्नन्**	**घ्नती**	**घ्नत्**	मारता हुआ
100.	हस्	**हसन्**	**हसन्ती**	**हसत्**	हँसता हुआ
101.	हा	**जहन्**	**जहती**	**जहत्**	छोड़ता हुआ
102	हृ	**हरन्**	**हरन्ती**	**हरत्**	हरता हुआ

शानच्-प्रत्ययान्त-तालिका

क्रमाङ्कः	धातुः	पु0	स्त्री0	नपु0	अर्थः
1.	प्र + अर्थ्	**प्रार्थयमानः**	**प्रार्थयमाना**	**प्रार्थयमानम्**	प्रार्थना करता हुआ
2.	इङ्	**अधीयानः**	**अधीयाना**	**अधीयानम्**	पढ़ता हुआ
3.	ईक्ष्	**ईक्षमाणः**	**ईक्षमाणा**	**ईक्षमाणम्**	देखता हुआ
4.	एध्	**एधमानः**	**एधमाना**	**एधमानम्**	बढ़ता हुआ
5.	कथ्	**कथयमानः**	**कथयमाना**	**कथयमानम्**	कहता हुआ
6.	कम्	**कामयमानः**	**कामयमाना**	**कामयमानम्**	चाहता हुआ
7.	कम्प्	**कम्पमानः**	**कम्पमाना**	**कम्पमानम्**	काँपता हुआ
8.	कृ	**कुर्वाणः**	**कुर्वाणा**	**कुर्वाणम्**	करता हुआ

क्रमाङ्कः	धातुः	पु0	स्त्री0	नपु0	अर्थः
9.	क्री	**क्रीणानः**	**क्रीणाना**	**क्रीणानम्**	खरीदता हुआ
10.	गण्	**गणयमानः**	**गणयमाना**	**गणयमानम्**	गिनता हुआ
11.	गर्ह्	**गर्हमाणः**	**गर्हमाणा**	**गर्हमाणम्**	निन्दा करता हुआ
12.	घट्	**घटमानः**	**घटमाना**	**घटमानम्**	घटित होता हुआ
13.	चि	**चिन्वानः**	**चिन्वाना**	**चिन्वानम्**	चुनता हुआ
14.	चिन्त्	**चिन्त्यमानः**	**चिन्त्यमाना**	**चिन्त्यमानम्**	सोचा जाता हुआ
15.	चुर्	**चोर्यमाणः**	**चोर्यमाणा**	**चोर्यमाणम्**	चुराया जाता हुआ
16.	चेष्ट्	**चेष्टमानः**	**चेष्टमाना**	**चेष्टमानम्**	चेष्टा करता हुआ
17.	जन्	**जायमानः**	**जायमाना**	**जायमानम्**	पैदा होता हुआ
18.	दय्	**दयमानः**	**दयमाना**	**दयमानम्**	दया करता हुआ
19.	दाञ्	**ददानः**	**ददाना**	**ददानम्**	देता हुआ
20.	दीप्	**दीप्यमानः**	**दीप्यमाना**	**दीप्यमानम्**	चमकता हुआ
21.	दुह्	**दुहानः**	**दुहाना**	**दुहानम्**	दोहता हुआ
22.	धा	**दधानः**	**दधाना**	**दधानम्**	धारण करता हुआ
23.	नी	**नयमानः**	**नयमाना**	**नयमानम्**	ले जाता हुआ
24.	पच्	**पचमानः**	**पचमाना**	**पचमानम्**	पकाता हुआ
25.	पीड्	**पीड्यमानः**	**पीड्यमाना**	**पीड्यमानम्**	पीड़ा देता हुआ
26.	पू	**पुनानः**	**पुनाना**	**पुनानम्**	पवित्र करता हुआ
27.	पूज्	**पूजयमानः**	**पूजयमाना**	**पूजयमानम्**	पूजा जाता हुआ
28.	बुध्	**बुध्यमानः**	**बुध्यमाना**	**बुध्यमानम्**	जागा हुआ
29.	भज्	**भजमानः**	**भजमाना**	**भजमानम्**	भजता हुआ
30.	भाष्	**भाषमाणः**	**भाषमाणा**	**भाषमाणम्**	बोलता हुआ
31.	भिक्ष्	**भिक्षमाणः**	**भिक्षमाणा**	**भिक्षमाणम्**	मांगता हुआ
32.	मुच्	**मुञ्चमानः**	**मुञ्चमाना**	**मुञ्चमानम्**	छोड़ता हुआ
33.	मुद्	**मोदमानः**	**मोदमाना**	**मोदमानम्**	प्रसन्न होता हुआ
34.	याच्	**याचमानः**	**याचमाना**	**याचमानम्**	मांगता हुआ
35.	युध्	**युध्यमानः**	**युध्यमाना**	**युध्यमानम्**	युद्ध करता हुआ
36.	रच्	**रचयमानः**	**रचयमाना**	**रचयमानम्**	रचता हुआ
37.	रम्	**रममाणः**	**रममाणा**	**रममाणम्**	रमण करता हुआ
38.	राज्	**राजमानः**	**राजमाना**	**राजमानम्**	शोभा पाता हुआ
39.	रुच्	**रोचमानः**	**रोचमाना**	**रोचमानम्**	पसन्द आता हुआ
40.	रुध्	**रुन्धानः**	**रुन्धाना**	**रुन्धानम्**	रोकता हुआ
41.	लू	**लुनानः**	**लुनाना**	**लुनानम्**	काटता हुआ
42.	वन्द्	**वन्दमानः**	**वन्दमाना**	**वन्दमानम्**	झुकता हुआ
43.	विद्	**विद्यमानः**	**विद्यमाना**	**विद्यमानम्**	होता हुआ
44.	वृध्	**वर्धमानः**	**वर्धमाना**	**वर्धमानम्**	बढ़ता हुआ
45.	शिक्ष्	**शिक्षमाणः**	**शिक्षमाणा**	**शिक्षमाणम्**	सीखता हुआ
46.	शी	**शयानः**	**शयाना**	**शयानम्**	सोता हुआ
47.	शुभ्	**शोभमानः**	**शोभमाना**	**शोभमानम्**	शोभा पाता हुआ
48.	सह्	**सहमानः**	**सहमाना**	**सहमानम्**	सहता हुआ
49.	हृ	**ह्रियमाणः**	**ह्रियमाणा**	**ह्रियमाणम्**	हरता हुआ

❑❑

कारक-सूत्रोदाहरण-तालिका

सूत्रम् / वार्तिकम्		उदाहरण
	प्रथमाविभक्तिः	
1.	**प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा**	प्रथमाविभक्ति
	क. अलिङ्ग प्रातिपदिकार्थमात्र	**उच्चैः, नीचैः**
	ख. नियतलिङ्गप्रातिपदिकार्थमात्र	**कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्**
	ग. अनियतलिङ्ग/लिङ्गमात्राधिक्य	**तटः, तटी, तटम्**
	घ. परिमाणमात्र	**द्रोणो** ब्रीहिः
	ड़. वचनमात्र	**एकः, द्वौ, बहवः**
2.	**सम्बोधने च**	**हे देवदत्त!** अत्र आगच्छ
	द्वितीयाविभक्तिः	
3.	**(क) कर्तुरीप्सिततमं कर्म**	कर्म संज्ञा
	(ख) कर्मणि द्वितीया	**हरिं** भजति
4.	**तथायुक्तं चानीप्सितम्**	ग्रामं गच्छन् **तृणं** स्पृशति। ओदनं भुञ्जानो **विषं** भुङ्क्ते
5.	**अकथितं च**	
	दुह्	**गां** दोग्धि पयः
	याच्	**बलिं** याचते वसुधाम्
		अविनीतं विनयं याचते
	पच्	**तण्डुलान्** ओदनं पचति
	दण्ड	**गर्गान्** शतं दण्डयति
	रुध्	**व्रजम्** अवरुणद्धि गाम्
	प्रच्छ	**माणवकं** पन्थानं पृच्छति
	चि	**वृक्षम**वचिनोति फलानि
	ब्रू, शास्	**माणवकं** धर्मं ब्रूते, शास्ति वा
	जि	शतं जयति **देवदत्तम्**
	मथ्	**सुधां** क्षीरनिधिं मथ्नाति
	मुष्	**देवदत्तं** शतं मुष्णाति
	नी, हृ, कृष् वह्	**ग्रामम्** अजां नयति, हरति, कर्षति, वहति वा
	भिक्ष्	**बलिं** भिक्षते वसुधाम्
	भाष्	**माणवकं** धर्मं भाषते अभिधत्ते वक्ति वा।
6.	**अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वार्तिक)**	(क). कुरून् स्वपिति (ख). मासम् आस्ते (ग). गोदोहम् आस्ते (घ). क्रोशम् आस्ते

7.	**गतिबुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्द-कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ**	
	अण्यन्त अवस्था	**ण्यन्त अवस्था**
	(क). शत्रवः स्वर्गम् अगच्छन्	**शत्रून्** स्वर्गम् अगमयत् ।
	(ख). स्वे वेदार्थम् अविदुः ।	**स्वान्** वेदार्थम् अवेदयत् ।
	(ग). देवा अमृतम् आश्नन् ।	**देवान्** अमृतम् आशयत् ।
	(घ). विधिः वेदम् अध्यैत्	**वेदम्** अध्यापयत् विधिम्
	(ङ). पृथ्वी सलिले आस्ते।	आसयत् सलिले **पृथ्वीम् ।**
9.	**नीवह्योर्न (वा0)**	नाययति वाहयति वा **भारं भृत्येन।**
10.	**नियन्तृकर्तृकस्य वहेरनिषेधः (वा0)**	वाहयति रथं वाहान् सूतः
11.	**आदिखाद्योर्न (वा0)**	आदयति खादयति वा अन्नं वटुना।
12.	**भक्षेरहिंसार्थस्य न (वा0)**	भक्षयति अन्नं **वटुना**
13.	**जल्पतिप्रभृतीनामुपसङ्ख्यानम् (वा0)**	जल्पयति भाषयति वा **धर्मं पुत्रं** देवदत्तः ।
14.	**दृशेश्च (वा0)**	दर्शयति **हरिं भक्तान्**
15.	**शब्दायतेर्न (वा0)**	शब्दाययति **देवदत्तेन**
16.	**हृक्रोरन्यतरस्याम्**	हारयति कारयति वा **भृत्यं भृत्येन** वा कटम्
17.	**अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति वाच्यम् (वा0)**	अभिवादयते दर्शयते देवं **भक्तं भक्तेन** वा।
18.	**अधिशीङ्स्थासां कर्म**	अधिशेते अधितिष्ठति अध्यास्ते वा **वैकुण्ठं** हरिः ।
19.	**अभिनिविशश्च**	अभिनिविशते **सन्मार्गम्**
20.	**उपान्वध्याङ्वसः**	उपवसति अनुवसति अधिवसति आवसति वा **वैकुण्ठं** हरिः
21.	**अभुक्त्यर्थस्य न (वा0)**	**वने** उपवसति

उपपद- द्वितीया विभक्तिः

22.	**उभसर्वतसोः कार्या**	(क) **उभयतः** कृष्णं गोपाः।
	धिगुपर्यादिषु त्रिषु	(ख) **सर्वतः** कृष्णम् ।
	द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु	(ग) **धिक्** कृष्णाऽभक्तम्
	ततोऽन्यत्रापि दृश्यते (वा0)	(घ) **उपर्युपरि** लोकं हरिः
		(ङ) **अध्यधि** लोकम् ।
		(च) **अधोऽधः** लोकम् ।
23.	**अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रति-योगेऽपि (वा.)**	(क) **अभितः** कृष्णम्
		(ख) **परितः** कृष्णम्
		(ग) **ग्रामं** समया
		(घ) **निकषा** लङ्काम्
		(ङ) **हा** कृष्णाऽभक्तम्
		(च) बुभुक्षितं न **प्रति**भाति किञ्चित् ।
24.	**अन्तराऽन्तरेण युक्ते**	(क) **अन्तरा** त्वां मां हरिः।
		(ख) **अन्तरेण** हरिं न सुखम् ।
25	**(क) अनुर्लक्षणे**	
	(ख) कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया	जपमनु प्रावर्षत्

26. तृतीयार्थे	**नदीम्** अन्ववसिता सेना।
27. हीने	अनु **हरिं** सुराः
28. उपोऽधिके च	उप **हरिं** सुराः
29. लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः	
(क) लक्षणे	**वृक्षं** प्रति परि अनु वा विद्योतते विद्युत्
(ख) इत्थंभूताख्याने	भक्तो **विष्णुं** प्रति परि अनु वा
(ग) भागे	लक्ष्मीः **हरिं** प्रति परि अनु वा
(घ) वीप्सायाम्	**वृक्षं वृक्षं** प्रति परि अनु वा सिञ्चति।
30. अभिरभागे	
(क) लक्षणे	**हरिम**भिवर्तते।
(ख) इत्थंभूताख्याने	भक्तो **हरिम**भि।
(ग) वीप्सायाम्	**देवं देवम**भिसिञ्चति।
31. अधिपरी अनर्थकौ	(क) कुतोऽध्यागच्छति।
	(ख) कुतः पर्यागच्छति।
32. सुः पूजायाम्	(क). **सुसिक्तम्**
	(ख). **सुस्तुतम्**
33. अतिरतिक्रमणे च	**अतिदेवान्** कृष्णः
34. अपिः पदार्थसम्भावनाऽन्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु	
(क) पदार्थ	सर्पिषोऽपि स्यात् ।
(ख) सम्भावनम्	अपि स्तुयात् विष्णुम्
(ग) अन्ववसर्ग	अपि स्तुहि।
(घ) गर्हा	धिक् देवदत्तम् अपि स्तुयात् वृषलम्
(ङ) समुच्चय	अपि सिञ्च अपि स्तुहि
35. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे	(क) **मासं** कल्याणी
	(ख) **मासम्** अधीते
	(ग) **क्रोशं** कुटिला नदी
	(घ). **क्रोश**मधीते
	(ङ) **क्रोशं** गिरिः

तृतीया विभक्ति

36. (क) साधकतमं करणम्	करणसंज्ञा
(ख) कर्तृकरणयोस्तृतीया	रामेण **बाणेन** हतो बालिः।
37. प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् (वा0)	क. **प्रकृत्या** चारुः
	ख. **प्रायेण** याज्ञिकः
	ग. **गोत्रेण** गार्ग्यः
	घ. **समेन** एति, विषमेण एति।
	ङ. **द्विद्रोणेन** धान्यं क्रीणाति।
	च. **सुखेन दुःखेन** वा याति।
38. दिवः कर्म च (कर्म और करणसंज्ञा)	**अक्षैः अक्षान्** वा दीव्यति।
39. अपवर्गे तृतीया	

क. कालवाचक	**अह्ना** अनुवाकः अधीतः
ख. मार्गवाचक	क्रोशेन अनुवाकः अधीतः
40. सहयुक्तेऽप्रधाने	**पुत्रेण** सह आगतः पिता।
41. येनाङ्गविकारः	**अक्ष्णा** काणः
42. इत्थम्भूतलक्षणे	**जटाभि**स्तापसः
43. सञ्ज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि	**पित्रा पितरं** वा सञ्जानीते।
44. हेतौ (क) द्रव्य के प्रति हेतु	(क) **दण्डेन** घटः
(ख) क्रिया के प्रति हेतु	(ख) **पुण्येन** दृष्टः हरिः **अध्ययनेन** वसति।
45. अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया (वा0)	**दास्या** संयच्छते कामुकः

चतुर्थी विभक्तिः

46. (क) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्	सम्प्रदानसंज्ञा
(ख) चतुर्थी सम्प्रदाने	**विप्राय** गां ददाति
47. क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् (वा0)	**पत्ये** शेते
48. यजेः कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्मसंज्ञा	पशुना रुद्रं यजते। पशुं रुद्राय ददाति इत्यर्थः।
49. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः	**हरये** रोचते भक्तिः।
50. श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः	गोपी स्मरात् **कृष्णाय** श्लाघते ह्नुते तिष्ठते शपते वा।
51. धारेरुत्तमर्णः	**भक्ताय** धारयति मोक्षं हरिः
52. स्पृहेरीप्सितः	**पुष्पेभ्यः** स्पृहयति
53. क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः	**हरये** क्रुध्यति द्रुह्यति ईर्ष्यति असूयति वा ।
54. क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म	**क्रूरम्** अभिक्रुध्यति अभिद्रुह्यति वा
55. राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः	**कृष्णाय** राध्यति ईक्षते वा ।
56. प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता	**विप्राय** गां प्रतिशृणोति आशृणोति वा।
57. अनुप्रतिगृणश्च	**होत्रे** अनुगृणाति प्रतिगृणाति वा।
58. परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्	**शतेन शताय** वा परिक्रीतः
59. तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या (वा0)	**मुक्तये** हरिं भजति।
60. क्लृपि सम्पद्यमाने च (वा0)	भक्तिः **ज्ञानाय** कल्पते, सम्पद्यते, जायते।
61. उत्पातेन ज्ञापिते च (वा0)	**वाताय** कपिला विद्युत् ।
62. हितयोगे च (वा0)	**ब्राह्मणाय** हितम्
63. क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः	क. **फलेभ्यो** याति। ख. नमस्कुर्मो **नृसिंहाय**। ग. **स्वयंभुवे** नमस्कृत्य
64. तुमर्थाच्च भाववचनात्	**यागाय** याति।
65. नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलं वषड्योगाच्च (उपपद-चतुर्थी-विभक्तिः)	क. **हरये** नमः ख. **प्रजाभ्यः** स्वस्ति। ग. **अग्नये** स्वाहा घ. **पितृभ्यः** स्वधा ङ. **दैत्येभ्यः** हरिः अलम्

	च. **इन्द्राय** वषट् ।
66. **अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम् (वा0)**	**दैत्येभ्यो** हरिः अलम्, प्रभुः, समर्थः, शक्तः ।
67. **मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु**	न **त्वां** तृणं मन्ये **तृणाय** वा।
68. **अप्राणिष्वित्यपनीय नौकाकान्न-शुकशृगाल वर्जेष्विति वाच्यम् (वा0)**	(क) न **त्वां** नावम् अन्नं वा मन्ये। (ख) न **त्वां** शुने मन्ये।
69. **गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि**	**ग्रामं ग्रामाय** वा गच्छति।

पञ्चमी विभक्तिः

70. **क. ध्रुवमपायेऽपादानम्** **ख. अपादाने पञ्चमी**	(क) **ग्रामात्** आयाति। (ख) **धावतोऽश्वात्** पतति।
71. जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसङ्ख्यानम् (वा.)	(क) **पापात्** जुगुप्सते। (ख) **पापात्** विरमति। (ग) **धर्मात्** प्रमाद्यति ।
72. **भीत्रार्थानां भयहेतुः**	(क) **चोरात्** बिभेति। (ख) **चोरात्** त्रायते।
73. **पराजेरसोढः**	**अध्ययनात्** पराजयते।
74. **वारणार्थानामीप्सितः**	**यवेभ्यो** गां वारयति।
75. **अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति**	**मातुः** निलीयते कृष्णः।
76. **आख्यातोपयोगे**	**उपाध्यायात्** अधीते।
77. **जनिकर्तुः प्रकृतिः**	**ब्रह्मणः** प्रजाः प्रजायन्ते।
78. **भुवः प्रभवः**	**हिमवतः** गङ्गा प्रभवति।
79. **'ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च' (वा0)**	(क) **प्रासादात्** प्रेक्षते। (ख) **आसनात्** प्रेक्षते। (ग) **श्वसुरात्** जिह्रेति।
80. **(क) गम्यमानाऽपि क्रिया कारकविभक्तीनां निमित्तम् ।** **(ख) यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी (वा0)** **(ग) तदुक्तादध्वनः प्रथमासप्तम्यौ** **(घ) कालात् सप्तमी च वक्तव्या (वा0)**	क. **कस्मात्** त्वम् ? नद्याः ख. **वनात्** ग्रामो योजनं योजने वा ग. **कार्तिक्या** आग्रहायणी मासे।
81. **अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते** (उपपद पञ्चमीविभक्तिः)	क. अन्यः भिन्नः इतरः वा **कृष्णात्** ख. आरात् **वनात्** ग. ऋते **कृष्णात्** घ. पूर्वो **ग्रामात्** ङ. **चैत्रात्** पूर्वः फाल्गुनः च. प्राक् प्रत्यक् वा **ग्रामात्** छ. दक्षिणाहि **ग्रामात्** ज. दक्षिणा **ग्रामात्** झ. भवात् प्रभृति आरभ्य वा सेव्यः हरिः ञ. ग्रामात् बहिः
82. **(क) अपपरी वर्जने**	क. अपहरेः संसारः

(ख) आङ्मर्यादावचने	ख. परिहरेः संसारः
(ग) पञ्चम्यपाङ्परिभिः	ग. आमुक्तेः संसारः
83. (क) प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः	क. प्रद्युम्नः **कृष्णात्** प्रति।
(ख) प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्	ख. **तिलेभ्यः** प्रतियच्छति माषान्
84. अकर्तर्यृणे पञ्चमी	**शतात्** बद्धः।
85. विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्	(क) **जाड्यात्** जाड्येन वा बद्धः।
	(ख) **धूमादग्निमान्** ।
	(ग) नास्ति घटो**ऽनुपलब्धेः**
86. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्	(क) पृथक् **रामेण रामात् रामं** वा।
	(ख) विना **रामेण रामात् रामं** वा।
	(ग) नाना **रामेण रामात् रामं** वा ।
87. करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य	**स्तोकेन स्तोकात्** वा मुक्तः
88. दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च	क. ग्रामस्य **दूरं दूरात् दूरेण** वा
(द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी का विधान)	ख. ग्रामस्य **अन्तिकम् अन्तिकात् अन्तिकेन** वा।

षष्ठीविभक्तिः

89. षष्ठी शेषे	
(क) स्वस्वामिभावसम्बन्धः	(क) **राज्ञः** पुरुषः
(ख) कर्तृकारक के शेषत्व विवक्षा में षष्ठी	(ख) **सतां** गतम्
(ग) करणकारक से शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(ग) **सर्पिषो** जानीते।
(घ) कर्मकारक के शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(घ) **मातुः** स्मरति।
(ङ) कर्मकारक के शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी	(ङ) **एधोदकस्यो**पस्कुरुते।
(च) कर्मत्व के शेष की विवक्षा में षष्ठी	(च) भजे **शम्भो**श्चरणयोः
(छ) करणत्व की शेषत्व विवक्षा में षष्ठी	(छ) **फलानां** तृप्तः ।
90. षष्ठी हेतुप्रयोगे	**अन्नस्य** हेतोर्वसति।
(''हैतो'' सूत्र द्वारा प्राप्त तृतीया का अपवाद)	
91. सर्वनाम्नस्तृतीया च	(क) **केन हेतुना** वसति।
(विकल्प से तृतीया एवं षष्ठी का विधान)	(ख) **कस्य हेतोः** वसति।
92. निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम् (वा0)	(क) किं निमित्तं वसति। केन निमित्तेन। कस्मै निमित्ताय।
(प्रायशः सभी विभक्तियों का प्रयोग)	(ख) किं कारणम् ,को हेतुः, किं प्रयोजनम्।
	(ग) ज्ञानेन निमित्तेन हरिः सेव्यः।
	(घ) ज्ञानाय निमित्ताय हरिः सेव्यः।
93. षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन	(क) **ग्रामस्य** दक्षिणतः।
(पञ्चमी का अपवाद)	(ख) **ग्रामस्य** पुरः।
	(ग) **ग्रामस्य** पुरस्तात् ।
	(घ) **ग्रामस्य** उपरि।
	(ङ) **ग्रामस्य** उपरिष्टात्
94. एनपा द्वितीया	(क) दक्षिणेन **ग्रामं ग्रामस्य** वा।
(विकल्प से द्वितीया, एवं षष्ठी का विधान)	(ख) उत्तरेण **ग्रामं ग्रामस्य** वा।

95. **दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्** (विकल्प से पञ्चमी और षष्ठी का विधान)	(क) दूरं **ग्रामस्य ग्रामात्** वा। (ख) निकटं **ग्रामस्य ग्रामात्** वा।
96. **ज्ञोऽविदर्थस्य करणे**	**सर्पिषः** ज्ञानम्
97. **अधीगर्थदयेशां कर्मणि**	क. **मातुः** स्मरणम् ख. **सर्पिषः** दयनम् ग. **सर्पिषः** इशनम्
98. **कृञः प्रतियत्ने**	एधोदकस्य उपस्करणम्
99. **रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः**	चौरस्य रोगस्य रुजा।
100. **अज्वरिसन्ताप्योरिति वाच्यम् (वा0)**	(क) **रोगस्य** चौरज्वरः (ख) **रोगस्य** चौरसन्तापः
101. **आशिषि नाथः**	**सर्पिषः** नाथनम्
102. **जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्** (कर्म से शेषत्व विवक्षा में षष्ठी प्रणिहननम्, निहननम्, प्रहणनम्	(क) **चौरस्य** उज्जासनम् (ख) **चौरस्य** निप्रहणनम् (ग) **चौरस्य** उन्नाटनम् (घ) **चौरस्य** क्राथनम् (ङ) **वृषलस्य** पेषणम् ।
103. **व्यवहृपणोः समर्थयोः**	(क) **शतस्य** व्यवहरणम् (ख) **शतस्य** पणनम्
104. **दिवस्तदर्थस्य (कर्म में षष्ठी)**	**शतस्य** दीव्यति
105. **विभाषोपसर्गे (कर्म में षष्ठी विभक्ति विकल्प से)**	**शतस्य** शतं वा प्रतिदीव्यति।
106. **प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासम्प्रदाने**	अग्नये छागस्य हविषः वपायाः मेदसः प्रेष्य अनुब्रूहि वा।
107. **कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे** (कालवाचक अधिकरण में शेषत्व की विवक्षा में षष्ठी)	(क) पञ्चकृत्वोऽह्नो भोजनम् (ख) द्विरह्नो भोजनम्
108. **कर्तृकर्मणोः कृति** (अनुक्त कर्त्ता और कर्म में षष्ठी)	(क) **कृष्णस्य** कृतिः। (ख) **जगतः** कर्त्ता कृष्णः।
109. **गुणकर्मणि वेष्यते** (वा.)	नेता **अश्वस्य** स्रुघ्नस्य स्रुघ्नं वा
110. **उभय प्राप्तौ कर्मणि** (कृत् प्रत्यय के योग में कर्त्ता और कर्म दोनों में यदि षष्ठी प्राप्त हो, तो कर्म में ही षष्ठी हो)	आश्चर्यो गवां दोहः अगोपेन
111. **स्त्रीप्रत्यययोरकाकारयोर्नायं नियमः** (वा0)	भेदिका बिभित्सा वा रुद्रस्य जगतः।
112. **शेषे विभाषा** (वा0)	(क) विचित्रा जगतः कृतिः हरेः हरिणा वा। (ख) शब्दानाम् अनुशासनम् आचार्येण आचार्यस्य वा।
113. **क्तस्य च वर्तमाने**	**राज्ञां** मतः बुद्धः पूजितः वा।
114. **अधिकरणवाचिनश्च** (अधिकरणवाचक क्त प्रत्यय के योग में अनुक्त कर्त्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति)	(क) **इदम्** एषाम् आसितम् (ख) **इदम्** एषां शयितम् (ग) इदम् **एषां** गतम् (घ) इदम् **एषां** भुक्तम्
115. **न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् ।**	(क) कुर्वन् कुर्वाणो वा सृष्टिं हरिः।

	(ख) हरिं दिदृक्षुः।
	(ग) हरिम् अलङ्करिष्णुः।
	(घ) दैत्यान् घातुकः हरिः।
116. **कमेरनिषेधः (वा.)**	(क) लक्ष्म्याः कामुकः हरिः।
	(ख) जगत्सृष्ट्वा सुखं कर्तुम् ।
	(ग) विष्णुना हता दैत्याः ।
	(घ) दैत्यान् हतवान् विष्णुः ।
	(ङ) ईषत्करः प्रपञ्चः हरिणः।
	(च) सोमं पवमानः
	(छ) आत्मानं मण्डयमानः
	(ज) वेदमधीयन्
	(झ) कर्त्ता लोकान् ।
117. **द्विषः शतुर्वा (वा.)** (षष्ठी का निषेध विकल्प से)	मुरस्य मुरं वा द्विषन् ।
118. **अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः** (षष्ठी का निषेध)	(क) सतः पालकोऽवतरति।
	(ख) व्रजं गामी
	(ग) शतं दायी
119. **कृत्यानां कर्त्तरि वा** (अनुक्त कर्त्ता मे षष्ठी विकल्प से)	(क) मया मम वा सेव्यः हरिः।
	(ख) नेतव्याः व्रजं गावः कृष्णेन ।
120. **तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ।** (तृतीया और षष्ठी विकल्प से)	तुल्यः सदृशः समो वा कृष्णस्य कृष्णेन वा ।
121. **चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः** (चतुर्थी और षष्ठी)	आयुष्यं चिरञ्जीवितं कृष्णाय कृष्णस्य वा भूयात्

सप्तमी विभक्तिः

122. **आधारोऽधिकरणम् सप्तम्यधिकरणे च।** (सप्तमी विभक्ति)	(क) **कटे** आस्ते। (औपश्लेषिक आधार)
	(ख) **स्थाल्यां** पचति। (औपश्लेषिक आधार)
	(ग) **मोक्षे** इच्छा अस्ति। (वैषयिक आधार)
	(घ) **सर्वस्मिन्** आत्मा अस्ति। (अभिव्यापक आधार)
	(ङ) **तिलेषु** तैलम् (अभिव्यापक आधार)
	(च) **दध्नि** सर्पिः (अभिव्यापक आधार)
	(छ) वनस्य **दूरे अन्तिके** वा ।
123. **क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानम् (वा.)**	(क) अधीती **व्याकरणे** ।
124. **साध्वसाधुप्रयोगे च (वा.)**	(क) साधुः कृष्णः **मातरि**
	(ख) असाधुः कृष्णः **मातुले**
125. **निमित्तात् कर्मयोगे (वा.)**	**चर्मणि** द्वीपिनं हन्ति ।
	दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम् ।
	केशेषु चमरीं हन्ति ।
	सीम्नि पुष्कलको हतः ।

126. **यस्य च भावेन भावलक्षणम्**	(क) **गोषु** दुह्यमानासु गतः ।
(सति सप्तमी, भावे सप्तमी)	(ख) **ब्राह्मणेषु** अधीयानेषु गतः ।
127. **अर्हाणां कर्तृत्वे अनर्हाणामकर्तृत्वे**	(क) सत्सु तरत्सु असन्तः आसते ।
तद्वैपरीत्ये च (वा.)	(ख) असत्सु तिष्ठत्सु सन्तः तरन्ति ।
	(ग) सत्सु तिष्ठत्सु असन्तः तरन्ति ।
	(घ) असत्सु तरत्सु सन्तः तिष्ठन्ति ।
128. **षष्ठी चानादरे**	**रुदति रुदतः** वा प्राव्राजीत् ।
(षष्ठी और सप्तमी)	
129. **स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च** (षष्ठी और सप्तमी)	(क) **गवां** स्वामी; **गोषु** स्वामी ।
	(ख) **गवाम्** ईश्वरः ; **गोषु** ईश्वरः
	(ग) **गवाम्** अधिपतिः, **गोषु** अधिपतिः
	(घ) **गवां** दायादः ; **गोषु** दायादः ।
	(ङ) **गवां** साक्षी, **गोषु** साक्षी ।
	(च) **गवां** प्रतिभूः **गोषु** प्रतिभूः ।
	(छ) **गवां** प्रसूतः **गोषु** प्रसूतः ।
130. **आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् ।** (षष्ठी और सप्तमी)	आयुक्तः कुशलः वा **हरिपूजने** हरिपूजनस्य वा।
131. **यतश्च निर्धारणम्** (षष्ठी और सप्तमी)	
(जाति)	(क) **नृणां नृषु** वा द्विजः श्रेष्ठः।
(गुण)	(ख) **गवां गोषु** वा कृष्णा बहुक्षीरा।
(क्रिया)	(ग) **गच्छतां गच्छत्सु** वा धावन् शीघ्रः।
(संज्ञा)	(घ) **छात्राणां छात्रेषु** वा मैत्रः पटुः।
132. **पञ्चमी विभक्ते**	माथुराः **पाटलिपुत्रकेभ्यः** आढ्यतराः।
133. **साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः**	**मातरि** साधुः निपुणः वा।
134. **अप्रत्यादिभिरिति वक्तव्यम् (वा0)**	साधुः निपुणः वा मातरं प्रति परि अनु वा।
(प्रति, परि, अनु के योग में सप्तमी का निषेध)	
135. **प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च** (तृतीया और सप्तमी)	प्रसितः उत्सुकः **हरिणा हरौ** वा.
136. **नक्षत्रे च लुपि** (तृतीया और सप्तमी)	मूलेन आवाहयेत् देवीं श्रवणेन विसर्जयेत्
137. **सप्तमी पञ्चम्यौ कारकमध्ये** (सप्तमी और पञ्चमी)	(क) अद्य भुक्त्वा अयं द्व्यहाद् वा भोक्ता।
	(ख) अयम् इहस्थः क्रोशे क्रोशाद् वा लक्ष्यं विध्येत् ।
	(ग) लोके लोकाद् वा अधिको हरिः
138. **क. अधिरीश्वरे**	(क) उप **परार्धे** हरेर्गुणाः।
ख. **यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी**	(ख) अधि **भुवि** रामः।
(कर्मप्रवचनीय के योग में सप्तमी)	(ग) अधि**रामे** भूः।
139. **विभाषा कृञि**	यदत्र माम् अधिकरिष्यति।

कारक-संज्ञासूत्र-तालिका

'कर्त्तृसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **स्वतन्त्रः कर्त्ता** (क्रिया के साथ स्वतन्त्र रूप में जिसकी विवक्षा हो, उसे कर्त्ता कहते है)
2. **तत्प्रयोजको हेतुश्च**

'कर्मसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **कर्तुरीप्सिततमं कर्म** (ईप्सिततम की कर्मसंज्ञा)
2. **तथायुक्तं चानीप्सितम्** (अनीप्सित की कर्मसंज्ञा)
3. **अकथितं च** (अपादानादि कारकों की अविवक्षा में कर्मसंज्ञा)
4. **अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वार्तिक)**
5. **गति-बुद्धि-प्रत्यवसानार्थ-शब्द कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ (** अण्यन्तावस्था के कर्ता की ण्यन्तावस्था में कर्मसंज्ञा)
6. **हृक्रोरन्यतरस्याम्** (ण्यन्तावस्था में कर्ता की विकल्प से कर्मसंज्ञा)
7. **अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति वाच्यम् (वार्तिक)** (विकल्प से कर्मसंज्ञा)
8. **अधिशीङ्स्थासां कर्म** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
9. **अभिनिविशश्च** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
10. **उपान्वध्याङ्वसः** ('आधार' की कर्मसंज्ञा)
11. **क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म** (उपसर्ग युक्त 'क्रुध्' और द्रुह धातु के योग में, जिसके प्रति कोप किया जाय,उसकी 'कर्मसंज्ञा)

'करणसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **साधकतमं करणम्** (क्रिया की सिद्धि में अत्यन्त उपकारक कारक की 'करणसंज्ञा')
2. **दिवः कर्म च।** ('कर्मसंज्ञा' और 'करणसंज्ञा')
3. **परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरस्याम् ।**
   (परिक्रयण = पारिश्रमिक देकर खरीद लेना, में प्रकृष्ट उपकारक की संप्रदानसंज्ञा विकल्प से। पक्ष में 'करणसंज्ञा')

'सम्प्रदानसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्** (कर्त्ता जिसके साथ सम्बन्ध बनाना चाहता है, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
2. **रुच्यर्थानां प्रीयमाणः** (प्रीयमाण की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
3. **श्लाघ-ह्नुङ्-स्था-शपां ज्ञीप्स्यमानः** (ज्ञीप्स्यमान की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
4. **धारेरुत्तमर्णः** (उत्तमर्ण = उधार देने वाले की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
5. **स्पृहेरीप्सितः** (ईप्सित की 'सम्प्रदानसंज्ञा')
6. **क्रुधद्रुहेर्ष्याऽसूयार्थानां यं प्रति कोपः** (जो कोप का विषय हो, उसकी सम्प्रदानसंज्ञा)
7. **राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः** (जिसके विषय में विविध प्रश्न किये जाय, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
8. **प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता** (पूर्व प्रेरणा रूप व्यापार के कर्ता की सम्प्रदानसंज्ञा')
9. **अनुप्रतिगृणश्च** (जो पूर्व व्यापार प्रेरणा का कर्ता हो, उसकी 'सम्प्रदानसंज्ञा')
10. **क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् (वा०)**

'अपादानसंज्ञा' विधायकसूत्र

1. **ध्रुवमपायेऽपादानम्** (ध्रुव या अवधिभूत की अपादानसंज्ञा)
2. **भीत्रार्थानां भयहेतुः** (भय के हेतु की अपादानसंज्ञा)
3. **पराजेरसोढः** (असह्य पदार्थ की अपादानसंज्ञा)
4. **वारणार्थानामीप्सितः** (ईप्सित की अपादानसंज्ञा)
5. **अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति** (जिससे स्वयं को छिपाना चाहता है,उसकी अपादानसंज्ञा)
6. **आख्यातोपयोगे** (गुरु की अपादानसंज्ञा)

7. **जनिकर्तुः प्रकृतिः** (जनिकर्तुः हेतुरूपकारकस्य अपादानसंज्ञा)
8. **भुवः प्रभवः** (प्रकट होने के स्थान की अपादानसंज्ञा)

'अधिकरणसंज्ञा' विधायक सूत्र

1. **आधारोऽधिकरणम्**
(कर्त्ता और कर्म द्वारा उनमें क्रिया का जो आधार हो,उसकी 'अधिकरणसंज्ञा')

उपपद - द्वितीया विभक्तिः

(क) उभयतः	(ख) सर्वतः	(ग) धिक्
(घ) उपरि,उपरि	(ङ) अध्यधि	(च) अधोऽधो
(छ) अभितः	(ज) परितः	(झ) समया
(ञ) निकषा	(ट) हा	(ठ) प्रति
(ड) अन्तरा	(ढ़) अन्तरेण	(ण) पृथक्
(त) विना	(थ) नाना	

किन कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया होती है ?

(क) अनु	(ख) उप	(ग) प्रति
(घ) परि	(ड) अभि	(च) अधि
(छ) सु	(ज) अति	(झ) अपि

उपपद-तृतीया विभक्तिः

1. सह, साकम्, सार्धम्, समम्, सत्रा।
2. फल प्राप्ति होने पर कालवाचक, मार्गवाचक, अह्न, क्रोश आदि पदों से तृतीया।
3. प्रकृति आदि गण के शब्दों से तृतीया। जैसे -
प्रकृति, प्राय, गोत्र, सम, विषम, द्विद्रोण, सुखम्, दुःखम्
4. पृथक् , विना, नाना
5. स्तोक, अल्प, कृच्छ्र, कतिपय

उपपद - चतुर्थी-विभक्तिः

(क) नमः (ख) स्वस्ति (ग) स्वाहा (घ) स्वधा (ङ) अलम् (च) वषट्

उपपद - पञ्चमी-विभक्तिः

(क) अन्य	(ख) आरात्	(ग) इतर	(घ) ऋते	(ङ) दिक्शब्द	
(च) प्राक्		(छ) प्रत्यक्	(ज) पूर्वम्	(झ) दक्षिणा	(ञ) दक्षिणाहि
(ट) प्रभृति	(ठ) आरभ्य	(ड) पृथक्	(ढ) विना	(ण) नाना	(त) स्तोक
(थ) अल्प	(द) कृच्छ्र	(ध) कतिपय			

(न) दूर एव अन्तिक (समीप) अर्थ वाले शब्दों से

इन कर्मप्रवचनीय के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है– अप, परि, आङ्, और प्रति।

उपपद-षष्ठी विभक्तिः

दक्षिणतः, पुरः पुरस्तात् उपरि, उपरिष्टात् दक्षिणेन

दूर और अन्तिक (निकट) अर्थ वाले शब्दों के योग में षष्ठीविभक्ति।

तुल्यार्थक शब्द - तुल्य, सदृश, सम आदि के योग में षष्ठीविभक्ति

उपपद - सप्तमी विभक्तिः

साधु, निपुण

केवलसमासः ''विशेषसंज्ञा-विनिर्मुक्तः केवलसमासः''

क्र0	सामासिक-पदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिक-विग्रहः	समासविधायक सूत्रम्
1.	भूतपूर्वः वागर्थाविव	जो पहले हुआ हो वाणी और अर्थ की तरह	पूर्वं भूतः वागर्थौ इव	पूर्व अम् भूत सु वागर्थ औ इव	''सह सुपा'' इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च (वा0)

1. पूर्वम् अदृष्टः = अदृष्टपूर्वः
2. पूर्वम् अभूतः = अभूतपूर्वः
3. न एकः = नैकः
4. नैकधा, नसंहत्ताः, नभिन्नवृत्तयः
5. आजन्मशुद्धानाम्, आसमुद्रक्षितीशानाम्
6. उत्तम ऋणे = उत्तमर्णः (ऋण देने वाला)
7. अधम ऋणे = अधमर्णः (ऋण लेने वाला)
8. निसर्गेण निपुणः = निसर्गनिपुणः (स्वभाव से चतुर)
9. प्रकृत्या वक्रः = प्रकृतिवक्रः (स्वभाव से टेढ़ा)
10. विस्पष्टं कटुकम् = विस्पष्टकटुकम् (स्पष्ट रूप से कटु)
11. अवश्यं स्तुत्यः = अवश्यस्तुत्यः
12. जीमूतस्य इव = जीमूतस्येव

अव्ययीभावसमासः (पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः)

सूत्रम्–

''अव्ययं विभक्ति - समीप - समृद्धि - व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति - शब्दप्रादुर्भाव - पश्चाद्यथानुपूर्व्य - यौगपद्य - सादृश्य - सम्पत्ति - साकल्यान्तवचनेषु''

क्र0	सामासिकदपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	विशेषः
1.	**अधिहरि**	हरि में (विभक्ति अर्थ में)	हरौ इति	हरि ङि अधि	**अतिमालम्**
2.	**अधिगोपम्**	गोप में (विभक्ति अर्थ में)	गोपि इति	गोपा ङि अधि	**अतिखट्वम्**
3.	**उपकृष्णम्**	कृष्ण के समीप (समीप अर्थ में)	कृष्णस्य समीपम्	कृष्ण ङस् उप	**उपकूपम्, उपवृक्षम्**
4.	**सुमद्रम्**	मद्रदेशवासियों की समृद्धि ('समृद्धि' के अर्थ में)	मद्राणां समृद्धिः	मद्र आम् सु	भिक्षाणां समृद्धिः **सुभिक्षम्**
5.	**दुर्यवनम्**	यवनों की समृद्धि का अभाव (वृद्धि का अभाव अर्थ में)	यवनानां व्यृद्धिः	यवन आम् दुर्	शकानां व्यृद्धिः **दुःशकम्**
6.	**निर्मक्षिकम्**	मक्खियों का अभाव (अभाव अर्थ में)	मक्षिकाणाम् अभावः	मक्षिका आम् निर्	मशकानाम् अभावः **निर्मशकम्**, विघ्नानाम् अभावः **निर्विघ्नम्**
7.	**अतिहिमम्**	हिम का अत्यय = नाश (अत्यय अर्थ में)	हिमस्य अत्ययः	हिम ङस् अति	शीतस्य अत्ययः **अतिशीतम्**
8.	**अतिनिद्रम्**	निद्रा इस समय उचित नहीं है 'असम्प्रति' इस समय उचित नहीं अर्थ में)	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	निद्रा ङस् अति	कम्बलं सम्प्रति न युज्यते **अतिकम्बलम्**
9.	**इतिहरि**	हरि नाम की प्रसिद्धि 'शब्दप्रादुर्भाव' (नाम की प्रसिद्धि अर्थ में)	हरिशब्दस्य प्रकाशः	हरि ङस् इति	(i) पाणिनि शब्दस्य प्रकाशः-**इतिपाणिनि** (ii) ज्ञानशब्दस्य प्रकाशः-**इतिज्ञानम्**
10.	**अनुविष्णु**	विष्णु के पीछे ('पश्चात्' अर्थ में)	विष्णोः पश्चात्	विष्णु ङस् अनु	**अनुरथम्, अनुशिष्यम्, अनुगोपालम्**
11.	**अनुरूपम्**	रूप के योग्य ('यथा' के योग्यता अर्थ में समास)	रूपस्य योग्यम्	रूप ङस् अनु	**अनुगुणम्** **अनुलेखम्** **अनुविद्यालयम्**
12.	**प्रत्यर्थम्**	प्रत्येक अर्थ के प्रति ('यथा' के वीप्सा अर्थ में समास)	अर्थम् अर्थं प्रति	अर्थ अम् प्रति	(i) छात्रं छात्रं प्रति **प्रतिच्छात्रम्** (ii) जनं जनं प्रति **प्रतिजनम्** (iii) गृहं गृहं प्रति **प्रतिगृहम्**

क्र0	सामासिकदपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	विशेषः
13.	**यथाशक्ति**	शक्ति के अनुसार अर्थात् शक्ति के उल्लंघन के बिना (पदार्थानतिवृत्ति अर्थात् पद के अर्थ का उल्लंघन न करना - इस अर्थ में समास)	शक्तिम् अनतिक्रम्य	शक्ति अम् यथा	(i) बुद्धिम् अनतिक्रम्य **यथाबुद्धि** (ii) ज्ञानम् अनतिक्रम्य **यथाज्ञानम्**
14.	**सहरि**	हरि के सदृश (यथा के सदृश अर्थ में)	हरेः सादृश्यम्	हरि ङस् सह	''अव्ययं विभक्तिसमीप ...." इस सूत्र से समास
15.	**अनुज्येष्ठम्**	ज्येष्ठ के क्रम से (आनुपूर्व्य अर्थ में)	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण	ज्येष्ठ ङस् अनु	वृद्धस्य आनुपूर्व्येण अनुवृद्धम्
16.	**सचक्रम्**	चक्र के साथ एक ही काल में ('यौगपद्य' एक साथ-एक ही काल में-इस अर्थ में समास)	चक्रेण युगपत्	चक्र टा सह	''अव्ययं विभक्ति समीप ....." इस सूत्र से समास
17.	**ससखि**	सखा के समान (सादृश्य अर्थात् समान अर्थ में समास)	सदृशः सख्या	सखि टा सह	''अव्ययं विभक्ति....." सूत्र से समास
18.	**सक्षत्रम्**	क्षत्रियों के अनुरूप ('सम्पत्ति' अर्थ में समास)	क्षत्राणां सम्पत्तिः	क्षत्र आम् सह	''अव्ययं विभक्ति...." सूत्र से समास
19.	**सतृणम् (अत्ति)**	तिनके को भी छोड़े बिना सम्पूर्ण खाता है ('साकल्य' अर्थात् सम्पूर्ण अर्थ में समास)	तृणम् अपि अपरित्यज्य	तृण टा सह	''अव्ययं विभक्ति....." सूत्र से समास
20.	**साग्नि (अधीते)**	अग्निग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है ('अन्त' अर्थात् यहाँ तक-इस अर्थ में समास)	अग्निग्रन्थ-पर्यन्तम्	अग्नि टा सह	''अव्ययं विभक्ति....." सूत्र से समास
21.	**पञ्चगङ्गम्**	पाँच गङ्गाओं का समूह	पञ्चानां गङ्गानां समाहारः	पञ्चन् आम् गङ्गा आम्	**''नदीभिश्च''** सूत्र से समास
22.	**द्वियमुनम्**	दो यमुना नदी धाराओं का समूह	द्वयोर्यमुनयोः समाहारः	द्वि ओस् यमुना ओस्	**''नदीभिश्च''** सूत्र से समास
23.	**उपशरदम्**	शरद् ऋतु के समीप वाली ऋतु ('समीप' अर्थ में समास)	शरदः समीपम्	शरद् ङस् उप	''अव्ययं विभक्ति-समीप-...." सूत्र से समास
24.	**प्रतिविपाशम्**	विपाशा नदी के सम्मुख ('सम्मुख' इस अर्थ में समास)	विपाशं विपाशं प्रति (विपशायाः अभिमुखम्)	विपाश अम् प्रति	''अव्ययं विभक्ति-समीप..." इस सूत्र समास
25.	**उपजरसम्**	बुढ़ापे के निकट ('समीप' अर्थ में समास)	जरायाः समीपम्	जरा ङस् उप	''अव्ययं विभक्ति...." इस सूत्र से समास
26.	**उपराजम्**	राजा के समीप ('समीप' अर्थ में समास)	राज्ञः समीपम्	राजन् ङस् उप	''अव्ययं विभक्ति....." इस सूत्र से समास
27.	**अध्यात्मम्**	आत्मा में, आत्मा के विषय में ('विभक्ति' अर्थ में समास)	आत्मनि	आत्मन् ङि अधि	''अव्ययं विभक्ति...." सूत्र से समास
28.	**उपचर्मम्/उपचर्म**	चमड़े के समीप ('समीप' अर्थ में (समास)	चर्मणः समीपम्	चर्मन् ङस् उप	''अव्ययं विभक्ति...." 'टच्' प्रत्यय होने पर उपचर्मम्
29.	**उपसमिधम्/ उपसमित्**	समिधा के पास = समिधा हवन की लकड़ी ('समीप' इस अर्थ में समास)	समिधः समीपम्	समिध ङस् उप	'टच्' प्रत्यय न होने पर उपसमित्

तत्पुरुषसमासः ''उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः''

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिक विग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	**कृष्णाश्रितः** (हरिश्रितः) (लक्ष्मीश्रितः)	कृष्ण का आश्रय लिया हुआ	कृष्णं श्रितः	कृष्ण अम् + श्रित सु	**''द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्त प्राप्तापन्नैः''** सूत्र से द्वितीया तत्पुरुष
2.	**अरण्यातीतः**	वन को पार किया हुआ	अरण्यम् अतीतः	अरण्य अम् + अतीत सु	**''द्वितीया श्रितातीत....''** सूत्र से द्वितीया तत्पुरुषसमास
3.	**कूपपतितः**	कुएँ में गिरा हुआ	कूपं पतितः	कूप अम् + पतित सु	**''द्वितीया श्रितातीतपतित.....''** सूत्र से द्वितीयातत्पुरुष
4.	**ग्रामगतः**	गाँव गया हुआ	ग्रामं गतः	ग्राम अम् + गत सु	**''द्वितीया श्रितातीत....''** सूत्र से द्वितीयातत्पुरुष
6.	**दुःखापन्नः**	दुःख को प्राप्त हुआ	दुःखम् आपन्नः	दुःख अम् + आपन्न सु	**''द्वितीया श्रितातीत .....''** सूत्र से द्वितीयातत्पुरुष
7.	**शङ्कुलाखण्डः**	सरोते से किया गया टुकड़ा	शङ्कुलया खण्डः	शङ्कुला टा + खण्ड सु	**''तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन''** सूत्र से तृतीया तत्पुरुष
8.	**सुखप्राप्तः**	सुख को पाया हुआ	सुखं प्राप्तः	सुख अम् + प्राप्त सु	''द्वितीया श्रितातीत......''
9.	**विद्यार्थः**	विद्या से प्रयोजन	विद्यया अर्थः	विद्या टा + अर्थ सु	**''तृतीया तत्कृतार्थेन....''** सूत्र से तृतीया तत्पुरुष (**धनार्थः, हिरण्यार्थः**)
10.	**हरित्रातः**	हरि के द्वारा रक्षित	हरिणा त्रातः	हरि टा + त्रात सु	**''कर्तृकरणे कृता बहुलम्''** इस सूत्र से तृतीयातत्पुरुष
11.	**नखभिन्नः**	नाखूनों से चीरा गया	नखैः भिन्नः	नख भिस् + भिन्न सु	**''कर्तृकरणे कृता बहुलम्''** इस सूत्र से तृतीयातत्पुरुष
12.	**नखनिर्भिन्नः**	नखों से फाडा गया	नखैः निर्भिन्नः	नख भिस् + निर्भिन्न सु	**'कृद्ग्रहणे गतिकारक-पूर्वस्यापि ग्रहणम्'** इससे नि उपसर्ग लगने पर भी समास का ग्रहण हुआ
13.	**यूपदारु (गृहदारु, कङ्कण-सुवर्णम्)**	खम्भे के लिए लकड़ी	यूपाय दारु	यूप ङे + दारु सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः''** इस सूत्र से चतुर्थीतत्पुरुष
14.	**द्विजार्थः**	ब्राह्मण के लिए (दान)	द्विजाय अयम्	द्विज ङे + अर्थ सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थ....''** सूत्र से विकल्प तथा **''अर्थेन नित्य समासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्''** इस वार्तिक से नित्यसमास।
15.	**भूतबलिः**	भूतों के लिए बलि	भूतेभ्यो बलिः	भूत भ्यस् + बलि सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः''** सूत्र से चतुर्थी तत्पुरुष
16.	**गोहितम्**	गायों का हित	गोभ्यो हितम्	गो भ्यस् + हित सु	**''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः''** सूत्र से समास। इसी तरह **'गोसुखम्'' 'गोरक्षितम्** आदि
17.	**चोरभयम्**	चोर से डर	चोरात् भयम्	चोर ङसि + भय सु	**'पञ्चमी भयेन'** सूत्र से समास। **वृकभीः, भयभीतः, सिंहभीतिः।**

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिक विग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
18.	**स्तोकान्मुक्तः**	थोड़े से मुक्त हुआ	स्तोकात् मुक्तः	स्तोक ङसि + मुक्त सु	''**स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन**'' सूत्र से अलुक् समास।
19.	**अन्तिकादागतः**	समीप से आया हुआ	अन्तिकाद् आगतः	अन्तिक ङसि + आगत सु	''**स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन**'' सूत्र से अलुक् समास।
20.	**अभ्याशादागतः**	समीप से आया हुआ	अभ्याशात् आगतः	अभ्याश ङसि + आगत सु	''**स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन**'' सूत्र से अलुक् समास।
21.	**दूरादागतः**	दूर से आया हुआ	दूरात् आगतः	दूर ङसि + आगत सु	'**स्तोकान्तिकदूरार्थ....**' सूत्र से अलुक् समास
22.	**कृच्छ्रादागतः**	कष्ट से आया हुआ	कृच्छ्रात् आगतः	कृच्छ्र ङसि + आगत सु	''**स्तोकान्तिक......**'' सूत्र से समास
23.	**राजपुरुषः**	राजा का आदमी/सेवक	राज्ञः पुरुषः	राजन् ङस् + पुरुष सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास।
24.	**आत्मज्ञानम्**	आत्मा का ज्ञान	आत्मनः ज्ञानम्	आत्मन् ङस् + ज्ञान सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास।
25.	**मनोविकारः**	मन का विकार	मनसः विकारः	मनस् ङस् + विकार सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास
26.	**सत्सङ्गतिः**	सज्जनों की सङ्गति	सतां सङ्गतिः	सत् आम् + सङ्गति सु	'**षष्ठी**' सूत्र से षष्ठी तत्पु0 समास
27.	**पूर्वकायः**	शरीर का अगला आधा भाग	पूर्वं कायस्य	काय ङस् + पूर्व सु	'**पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे**' सूत्र से तत्पुरुष समास।
28.	**अपरकायः**	शरीर का दूसरा आधा भाग	अपरं कायस्य	काय ङस् + अपर सु	''**पूर्वापरा.....**'' सूत्र से समास
29.	**अर्धपिप्पली**	पिप्पली का आधा भाग	अर्धं पिप्पल्याः	पिप्पली ङस् + अर्ध सु	''**अर्धं नपुंसकम्**'' सूत्र से समास। इसी तरह ''**आसनार्धम् शरीरार्धम् पणार्धम्**'' आदि।
30.	**अक्षशौण्डः**	पासाओं से खेलने में चतुर	अक्षेषु शौण्डः	अक्ष् सुप् + शौण्ड सु	''**सप्तमी शौण्डैः**'' सूत्र से सप्तमीतत्पुरुष।
31.	**काव्यनिपुणः**	काव्यशास्त्र में निपुण	काव्ये निपुणः	काव्य ङि + निपुण सु	''**सप्तमी शौण्डैः**'' सूत्र से सप्तमीतत्पुरुष समास
32.	**वेदविद्वान्**	वेद को जानने वाला	वेदं विद्वान्	वेद अम् + विद्वस् सु	द्वितीया समास करके वेद-विद्वान् शब्द बना है (द्वि. त.)
33.	**मदान्धः**	मद से अन्धा	मदेन अन्धः	मद टा + अन्ध सु	तृतीया तत्पुरुष समास
34.	**धर्मनियमः**	धर्म के लिए नियम	धर्माय नियमः	धर्म ङे + नियम सु	चतुर्थी तत्पुरुष
35.	**द्विजेतरः**	ब्राह्मण से अलग	द्विजाद् इतरः	द्विज ङसि + इतर सु	पञ्चमी तत्पुरुष
37.	**पूर्वेषु-कामशमी**	पूर्वेषुकामशमी नामक प्राचीन एक गाँव	पूर्वा चासौ इषुकामशमी	पूर्वा सु + इषुकामशमी सु	दिशावचक तथा संज्ञावाचक होने के कारण ''**दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम्**'' से समास हुआ।

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
38.	**सप्तर्षयः**	सात ऋषियों की संज्ञा	सप्त च ते ऋषयः	सप्तन् जस् + ऋषि जस्	**''दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम्''** से तत्पुरुष हुआ।
39.	**पौर्वशालः**	पूर्व दिशा वाली शाला में होने वाली	पूर्वस्यां शालायां भवः	पूर्वा ङि + शाला ङि	**'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'** से समास
40.	**पञ्चगवधनः** (द्विगु + बहुव्रीहि)	पाँच गाय धन हैं जिसका वह व्यक्ति	पञ्च गावो धनं यस्य	पञ्चन् जस् + गो जस् धन सु।	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि
41.	**पञ्चगवम्**	पाँच गायों का समूह	पञ्चानां गवां समाहारः	पञ्चन् आम् + गो आम्	**'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'** सूत्र से समास **''संख्यापूर्वो द्विगुः''** से द्विगुसंज्ञा
42.	**नीलोत्पलम्**	नील कमल	नीलम् उत्पलम्/ नीलं च तद् उत्पलम्	नील सु + उत्पल सु	**''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्''** से कर्मधारय समास।
43.	**निर्मलगुणाः**	निर्मल गुण	निर्मलाः गुणाः अथवा निर्मलाश्च ते गुणाः	निर्मल जस् + गुण जस्	**'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'** से कर्मधारय समास।
44.	**कृष्ण-चतुर्दशी**	कृष्णपक्ष वाली चतुर्दशी	कृष्णा चतुर्दशी या कृष्णा चासौ चतुर्दशी	कृष्णा सु + चतुर्दशी सु	**'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'** से कर्मधारय समास।
45.	**अखिल-भूषणानि**	सारे आभूषण	'अखिलानि भूषणानि' या अखिलानि च तानि भूषणानि	अखिल जस् + भूषण जस्	**'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'** से कर्मधारय समास।
46.	**कृष्णसर्पः**	काला सर्प	कृष्णः सर्पः या कृष्णश्चासौ सर्पः	कृष्ण सु + सर्प सु	**'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'** से बहुलता के अर्थ में 'नित्य' समास
47.	**घनश्यामः**	बादल की तरह श्याम वर्ण वाले श्रीकृष्ण	घन इव श्यामः	घन सु + श्याम सु	**'उपमानानि सामान्यवचनैः'** सूत्र से समास
48.	**कर्पूरगौरः**	कपूर की तरह श्वेत वर्ण वाला	कर्पूर इव गौरः	कर्पूर सु + गौर सु	**'उपमानानि सामान्यवचनैः'** सूत्र से समास
49.	**शाकपार्थिवः**	शाक को प्रिय मानने वाला राजा	शाकप्रियः पार्थिवः	शाकप्रिय सु + पार्थिव सु	मध्यमपदलोपी समास
50.	**देवब्राह्मणः**	देवता का पूजन करने वाला ब्राह्मण	देवपूजको ब्राह्मणः	देवपूजक सु + ब्राह्मण सु	मध्यमपदलोपी समास
51.	**अब्राह्मणः**	ब्राह्मण से भिन्न, ब्राह्मण जैसा, क्षत्रिय आदि	न ब्राह्मणः	न ब्राह्मण सु	**'नञः' से नञ् तत्पुरुष** समास हुआ
52.	**अनश्वः**	घोड़े से भिन्न घोड़े जैसा गधा, खच्चर आदि	न अश्वः	न अश्व सु	**'नञः'** से नञ् तत्पुरुष समास हुआ
53.	**कुपुरुषः(कुमाता, कुदृष्टिः)**	निन्दित पुरुष	कुत्सितः पुरुषः	कु पुरुष सु	**''कुगतिप्रादयः''** से समास
54.	**ऊरीकृत्य**	स्वीकार करके	ऊरी कृत्वा		**''कुगतिप्रादयः''** से समास
55.	**शुक्लीकृत्य**	सफेद करके या अशुक्ल को शुक्ल करके	अशुक्लं शुक्लं कृत्वा	शुक्ल अम् कृत्वा	**''कुगतिप्रादयः''** से समास

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थ	लौकिकविग्रहः	अलौकिक विग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
56.	**पटपटाकृत्य**	पटत् पटत् इस प्रकार शब्द करके	पटत् पटत् इति कृत्वा	पटत् पटत् कृ + क्त्वा + डाच्	**'कुगतिप्रादयः'** से समास
57.	**सुपुरुषः**	सुन्दर पुरुष	शोभनः पुरुष	सु पुरुष सु	**''कुगतिप्रादयः''** से 'प्रादिसमास' होगा (ऐसे ही सुराजा, दुर्जनः, दुर्दिनम्)
58.	**प्राचार्यः** (प्रादितत्पुरुष)	दूर गया हुआ आचार्य, श्रेष्ठ आचार्य, अपने विषय में दक्ष या आचार्य का भी आचार्य	प्रगतः आचार्यः	प्र आचार्य सु	**'प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया'** से समास। (इसीतरह प्रपितामहः, विपक्षः, प्रवीरः आदि)
59.	**अतिमालः**	माला का अतिक्रमण करने वाला या सुगन्ध से माला आदि को मात दे चुका कोई पदार्थ	मालाम् अतिक्रान्तः	माला अम् अति	**''अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीया'** से समास, (अतिमानुषः अत्यर्थः इत्यादि)
60.	**अवकोकिलः** आदि	कोयली से कूजित प्रदेश	अवक्रुष्टः कोकिलया	कोकिला टा + अव	**''अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीया''** से समास
61.	**पर्यध्ययनः**	अध्ययन से थका हुआ या घबराया हुआ	परिग्लानः अध्ययनाय	अध्ययन ङे + परि	**''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या''** से समास
62.	**निष्कौशाम्बिः**	कौशाम्बी नगरी से निकला हुआ	निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः	कौशाम्बी ङसि + निर्	**'निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या'** इस वा0 से समास
63.	**कुम्भकारः**	घड़े को बनाने वाला	कुम्भं करोति	कुम्भ अम् + कृ	**उपपदमतिङ्** से समास। इसी तरह सूत्रकारः आदि बनता है
64.	**व्याघ्री**	विशेष रूप से सूँघने वाली	विशेषेण जिघ्रती		**'उपपदमतिङ्'** सूत्र से समास
65.	**अश्वक्रीती**	घोड़े के द्वारा खरीदी गई वस्तु भूमि आदि	अश्वेन क्रीता	अश्व टा क्रीत	**'कर्तृकरणे कृताबहुलम्'** से तृतीया तत्पुरुष
66.	**कच्छपी**	कच्छ से पीने वाली	कच्छेन पिबति	कच्छ टा + पा	**उपपदमतिङ्** से समास होता है
67.	**द्व्यङ्गुलम्**	दो अंगुल के बराबर नापवाली लकड़ी आदि	द्वे अङ्गुली प्रमाणम् अस्य	द्वि औ + अङ्गुलि औ	**''तद्धितार्थोत्तरपद-समाहारे च''** सूत्र से द्विगुसमास
68.	**निरङ्गुलम्**	निकल गई अंगुली से जो, अंगूठी आदि	निर्गत अङ्गुलिभ्यः	निर् + अङ्गुलि + भ्यस्	**''निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या''** से प्रादि तत्पुरुष
69.	**अहोरात्रः**	दिन - रात	अहन् च रात्रिश्च, अनयोः समाहारः	अहन् सु + रात्रि सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्व समास
70.	**सर्वरात्रः**	सारी रात	सर्वा चासौ रात्रिः	सर्वा सु + रात्रि सु	**''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्''** से कर्मधारय समास
71.	**पूर्वरात्रः**	रात का पहला भाग	पूर्वं रात्रेः	पूर्व सु + रात्रि ङस्	**पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनै-काधिकरणे'** से समास हुआ है
72.	**सङ्ख्यातरात्रः**	गिनी गई रात	सङ्ख्याता चासौ रात्रिः	सङ्ख्याता सु + रात्रि सु	**''पूर्वकालैकसर्व जरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन''** से समास हुआ
73.	**द्विरात्रम्**	दो रातों का समूह	द्वयोः रात्र्योः समाहारः	द्वि ओस् + रात्रि ओस्	**''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे-च''** से समास हुआ

बहुव्रीहिः ''अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः''

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	**कण्ठेकालः**	कण्ठ में काल या नील वर्ण है जिसका वह, (शंकर जी या नीलकण्ठ पंक्षी)	कण्ठे कालो यस्य सः	कण्ठ ङि + काल सु	'**अनेकमन्यपदार्थे**' सूत्र से बहुव्रीहि समास
2.	**प्राप्तोदकः**	प्राप्त हो गया है जल जिसको = ग्राम	प्राप्तं उदकं यं (ग्रामम्)	प्राप्त सु + उदक सु	''**अनेकमन्यपदार्थे**' से बहुव्रीहि समास
3.	**ऊढरथः**	ढो चुका है रथ जिसने (घोड़े ने)	ऊढः रथः येन	ऊढ सु + रथ सु	'**अनेकमन्यपदार्थे**' सूत्र से बहुव्रीहि समास
4.	**उपहृतपशुः**	जिसको पशु भेंट चढ़ाया गया है वह, (शम्भू के अर्थ में)	उपहृतः पशुः यस्मै (शम्भवे)	उपहृत सु + पशु सु	'**अनेकमन्यपदार्थे**' सूत्र से बहुव्रीहि समास
5.	**दत्तद्रव्यः**	जिसको द्रव्य दिया गया है वह	दत्तं द्रव्यं यस्मै (जनाय)	दत्त सु + द्रव्य सु	'**अनेकमन्यपदार्थे**' सूत्र से बहुव्रीहि समास
6.	**उद्धृतौदना**	निकाल लिया गया है भात जिससे वह (बटलोई)	उद्धृतः ओदनः यस्याः (स्थाल्याः)	उद्धृत सु + ओदन सु	'**अनेकमन्यपदार्थे**' से बहुव्रीहि समास
7.	**पीताम्बरः**	पीले वस्त्र हैं जिसके वह (विष्णु)	पीतम् अम्बरम् अस्ति यस्य सः (विष्णुः)	पीत सु + अम्बर सु	'**अनेकमन्यपदार्थे**' से बहुव्रीहि समास
8.	**वीरपुरुषः**	वीर पुरुष है जिस (ग्राम) के	वीराः पुरुषाः सन्ति यस्मिन् (ग्रामे)	वीर जस् + पुरुष जस्	'**अनेकमन्यपदार्थे**' से बहुव्रीहि समास
9.	**समृद्धपुरुषाणि**	समृद्धपुरुष हैं, जिन नगरों में, वे नगर	समृद्धाः पुरुषाः सन्ति येषु (नगरेषु)	समृद्ध जस् + पुरुष जस्	'**अनेकमन्यपदार्थे**' से बहुव्रीहि समास
10.	**प्रपतितः**	जिसके पत्ते अच्छी तरह झड़ चुके हैं, वह (वृक्ष)	प्रपतितानि पर्णानि यस्मात् (सः वृक्षः)	प्रपतित जस् + पर्ण जस्	'**अनेकमन्यपदार्थे**' से बहुव्रीहि समास (ऐसे ही - विधवा, निर्जनः, निर्गुणः, निष्फलं, निरर्थकः आदि)
11.	**अपुत्रः**	जिसका पुत्र नहीं है वह पुत्रहीन पुरुष	अविद्यमानः पुत्रो यस्य	अविद्यमान सु + पुत्र सु	**नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपद-लोपः** (वा0) (अनाथः, अक्रोधः आदि)
12.	**चित्रगुः**	चितकबरी गायों वाला व्यक्ति	चित्राः गावः यस्य	चित्रा जस् + गो जस्	'**अनेकमन्यपदार्थे**' से बहुव्रीहि समास
13.	**रूपवद्भार्यः**	रूपवती स्त्री वाला पुरुष	रूपवती भार्या अस्ति यस्य	रूपवती सु + भार्या सु	'**अनेकमन्यपदार्थे**' से बहुव्रीहि समास
14.	**दीर्घजङ्घः**	लम्बी जाँघ वाला पुरुष	दीर्घे जङ्घे स्तः यस्य (पुरुषस्य)	दीर्घा औ + जङ्घा औ	'**अनेकमन्यपदार्थे**' से बहुव्रीहि समास

क्र०	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
15.	**सुन्दरभार्यः**	सुन्दरी स्त्री वाला पुरुष	सुन्दरी भार्या अस्ति यस्य	सुन्दरी सु + भार्या सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
16.	**कल्याणीपञ्चमाः** (रात्रयः)	जिन रातों में पाँचवीं रात कल्याणदायिनी है, ऐसी सभी रातें	कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणाम्	कल्याणी सु + पञ्चमी सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
17.	**स्त्रीप्रमाणः**	स्त्री जिसके लिए प्रमाण हो, वह पुरुष	स्त्री प्रमाणी यस्य सः	स्त्री सु + प्रमाणी सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
18.	**दीर्घसक्थः**	दीर्घ ऊरुओं वाला पुरुष	दीर्घे सक्थिनी स्तः यस्य (पुरुषस्य)	दीर्घ औ + सक्थि औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
19.	**जलजाक्षी**	कमल की तरह सुन्दर आँख वाली स्त्री	जलजे इव अक्षिणी यस्याः	जलजा औ + अक्षि औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
20.	**द्विमूर्धः**	दो सिर है जिसके वह पुरुष	द्वौ मूर्धानौ यस्य सः	द्वि औ + मूर्धन् औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
21.	**त्रिमूर्धः**	तीन सिर हैं जिसके वह पुरुष	त्रयो मूर्धानो यस्य सः	त्रि जस् + मूर्धन् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
22.	**अन्तर्लोमः**	अन्दर रोम है जिसके ऐसा पुरुष	अन्तर्लोमानि यस्य सः	अन्तर् + लोमन् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
23.	**बहिर्लोमः**	बाहर रोम है जिसके ऐसा वस्त्र	बहिर्लोमानि यस्य सः	बहिस् + लोमन् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
24.	**व्याघ्रपात्**	बाघ के पैरों की तरह पैर वाला	व्याघ्र पादौ इव पादौ यस्य सः	व्याघ्रपाद औ + पाद औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
25.	**द्विपात्**	दो पैरों वाला पुरुष	द्वौ पादौयस्य सः	द्वि औ पाद औ	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
26.	**सुपात्**	सुन्दर पैरों वाला पुरुष	सु शोभनौ पादौ यस्य सः	सु पाद + औ	**'अनेकमन्य पदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
27.	**उत्काकुत्**	उठे हुए तालु वाला	उद्गतं काकुदं यस्य सः	उत् + काकुद् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
28.	**विकाकुत्**	विकृत तालु वाला पुरुष	विकृतं काकुदं यस्य सः	वि + काकुद् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
29.	**पूर्णकाकुत्, पूर्णकाकुदः**	पूर्ण तालु वाला	पूर्णं काकुदं यस्य सः	पूर्ण सु+काकुद् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
30.	**सुहृत् (सुहृद्मित्रम्)**	शोभन हृदय वाला मित्र	सु शोभनं हृदयं यस्य	सु + हृदय सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
31.	**दुर्हत् (दुहृद्मित्रम्)**	दुष्ट हृदय वाला शत्रु	दुर् दुष्टं हृदयं यस्य	दुर् + हृदय सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
32.	**व्यूढोरस्कः**	चौड़ी छाती वाला पुरुष	व्यूढम् उरो यस्य	व्यूढ सु + उरस् सु (पुरुषस्य)	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
33.	**प्रियसर्पिष्कः**	जिसको घी प्रिय हो अर्थात् घी का प्रेमी व्यक्ति	प्रियं सर्पिः यस्य (पुरुषस्य)	प्रिय सु + सर्पिस् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास

क्र०	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
34.	युक्तयोगः	सफल हुआ है योग जिसका	युक्तो योगो यस्य	युक्त सु + योग सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
35.	कृतकृत्यः	कर लिया है अपना कर्तव्य जिसने	कृतं कृत्यं येन	कृत सु + कृत्य सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास
36.	महायशस्कः, महायशाः	बड़े यश वाला व्यक्ति	महद् यशः यस्य (पुरुषस्य)	महत् सु + यशस् सु	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहि समास

द्वन्द्व-समासः ''उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः''

क्र०	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	धवखदिरौ	धव और खदिर के वृक्ष	धवश्च खदिरश्च	धव सु खदिर सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
2.	रामकृष्णौ	राम और कृष्ण	रामश्च कृष्णश्च	राम सु कृष्ण सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
3.	हरिकृष्णरामाः	हरि कृष्ण और राम	हरिश्च कृष्णश्च रामश्च	हरि सु कृष्ण सु राम सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
4.	संज्ञापरिभाषम्	संज्ञा और परिभाषा का समूह	संज्ञा च परिभाषा च अनयोः समाहारः	संज्ञा सु परिभाषा सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
5.	हस्तचरणम्	हाथ और पैर	हस्तश्च चरणश्च या हस्तौ च चरणौ च एतेषां समाहारः	हस्त सु चरण सु या हस्त औ चरण औ	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
6.	राजदन्ताः	दाँतो का राजा अर्थात् ऊपर सामने के दाँत	दन्तानां राजा	दन्त आम् राजन् सु	**'षष्ठी'** सूत्र से तत्पुरुष समास
7.	धर्मार्थौ/ अर्थधर्मौ	धर्म और अर्थ	धर्मश्च अर्थश्च	धर्म सु अर्थ सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
8.	हरिहरौ	हरि और हर (विष्णु और शिव)	हरिश्च हरश्च	हरि सु हर सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
9.	हरिहरगुरवः	हरि (विष्णु), हर (शिव) और गुरु	हरिश्च हरश्च गुरुश्च	हरि सु हर सु गुरु सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
10.	ईशकृष्णौ	ईश और कृष्ण	ईशश्च कृष्णश्च	ईश सु कृष्ण सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
11.	शिवकेशवौ	शिव और केशव	शिवश्च केशवश्च	शिव सु केशव सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
12.	पितरौ मातापितरौ	माता और पिता	माता च पिता च	मातृ सु पितृ सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
13.	पाणिपादम्	हाथ और पैर का समूह	पाणी च पादौ च तेषां समाहारः	पाणी औ पाद औ	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
14.	मार्दङ्गिकवैणविकम्	मृदङ्गवादक और वेणुवादकों का समूह	मार्दङ्गिकाश्च वैणविकाश्च	मार्दङ्गिक जस् + वैणविक जस्	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्व समास
15.	रथिकाश्वारोहम्	रथिकों और घुड़सवारों का समूह	रथिकाश्च अश्वारोहाश्च तेषां समाहारः	रथिक जस् अश्वारोह जस्	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
16.	**वाक्त्वचम्**	वाणी और त्वचा का समुदाय	वाक् च त्वक् च तयोः समाहारः	वाच् सु त्वच् सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
17.	**त्वक्स्त्रजम्**	त्वचा और माला का समुदाय	त्वक् च स्रक् च तयोः समाहारः	त्वच् सु स्रक् सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
18.	**शमीदृषदम्**	शमी और पत्थर का समुदाय	शमी च दृषत् च तयोः समाहारः	शमी सु दृषद् सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
19.	**वाक्त्विषम्**	वाणी और कान्ति का समुदाय	वाक् च त्विट् च तयोः समाहारः	वाच् सु त्विष् सु	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
20.	**छत्रोपानहम्**	छाते और जूते का समुदाय	छत्रं च उपानहौ च तेषां समाहारः	छत्र सु उपानह् औ	**'चार्थे द्वन्द्वः'** से द्वन्द्वसमास
21.	**प्रावृट्शरदौ**	बिजली और ठण्डी	प्रावृट् च शरच्च	प्रावृट् सु शरत् सु	द्वन्द्वसमास

समासान्ताः

क्र0	सामासिकपदम्	अर्थः	लौकिकविग्रहः	अलौकिकविग्रहः	सामासिक-सूत्रम्
1.	**अर्धर्चः**	ऋचा का आधा भाग	ऋचः अर्धम्	ऋच् ङस् अर्ध सु	**'अर्धं नपुंसकम्'** से समास
2.	**विष्णुपुरम्**	विष्णु की नगरी	विष्णोः पूः	विष्णु ङस् पुर् सु	**'षष्ठी'** से तत्पुरुषसमास
3.	**विमलापं सरः**	निर्मल जल है जिसका ऐसा तालाब	विमला आपो यस्य	विमला जस् अप् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** सूत्र से बहुव्रीहि-समास
4.	**राजाधुरा**	राजा का कार्यभार	राज्ञः धूः	राजन् ङस् धुर् सु	**'षष्ठी'** से तत्पुरुष समास
5.	**सखिपथः**	मित्र का रास्ता	सख्युः पन्थाः	सखि ङस् पथिन् सु	**'षष्ठी'** से तत्पुरुष समास
6.	**राम्यपथो देशः**	सुन्दर रास्ता है, जिसका, ऐसा देश	रम्याः पन्थानो यस्य सः	रम्य जस् पथिन् जस्	**'अनेकमन्यपदार्थे'** से बहुव्रीहिसमास
7.	**गवाक्षः**	गाय की आखों जैसी खिड़की, झरोखा	गवाम् अक्षि इव	गो आम् अक्षि सु	**'षष्ठी'** से तत्पुरुष समास
8.	**प्राध्वो रथः**	वह रथ जो मार्ग पर चल पड़ा	प्रगतः अध्वानम्	प्र + अध्वन् अम्	**'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया''** (वा0) से समास
9.	**सुराजा**	अच्छा राजा	शोभनो राजा	सु + राजन् सु	**''कुगतिप्रादयः''** से तत्पुरुष समास
10.	**अतिराजा**	अच्छा राजा	अतिशयितो राजा	अति + राजन् सु	**'कुगतिप्रादयः'** से तत्पुरुष समास
11.	**परमराजः**	अच्छा राजा या महान् राजा	परमश्चासौ राजा	परम सु + राजन् सु	टच् प्रत्यय से 'परमराजः' बनेगा

समासान्त-प्रत्ययः

क्रं0	समस्तपदम्	समासान्तप्रत्ययः	सूत्रम्	अष्टाध्यायी सन्दर्भ
1.	**प्रतिविपाशम्**	**टच्**	अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः	5.4.107
2.	**उपजरसम्**	**टच्**	अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः	5.4.107
3.	**उपराजम्**	**टच्**	अनश्च	5.4.108
4.	**अध्यात्मम्**	**टच्**	अनश्च	5.4.108
5.	**उपचर्मम्**	**टच्** (विकल्पेन)	नपुंसकादन्यतरस्याम्	5.4.109
6.	**उपसमिधम्**	**टच्** (विकल्पेन)	झयः	5.4.111
7.	**पौर्वशालः**	**ञ**	दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः	4.2.106
8.	**पञ्चगवधनः**	**टच्**	गोरतद्धितलुकि	5.4.92
9.	**पञ्चगवम्**	**टच्**	गोरतद्धितलुकि	5.4.92
10.	**द्व्यङ्गुलम्**	**अच्**	''तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः	5.4.86
11.	**निरङ्गुलम्**	**अच्**	''तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः	5.4.86
12.	**अहोरात्रः**	**अच्**	''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः	5.4.87
13.	**सर्वरात्रः**	**अच्**	''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः''	5.4.87
14.	**संख्यातरात्रः**	**अच्**	''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः''	5.4.87
15.	**द्विरात्रम्**	**अच्**	''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः''	5.4.87
16.	**त्रिरात्रम्**	**अच्**	''अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः''	5.4.87
17.	**परमराजः**	**टच्**	''राजाहःसखिभ्यष्टच् ''	5.4.91
18.	**महाराजः**	**टच्**	''राजाहःसखिभ्यष्टच् ''	5.4.91
19.	**अर्धर्चः**	**अ**	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे	5.4.74
20.	**वीरपुरुषकः**	**कप्**	''शेषाद्विभाषा''	5.4.154
21.	**कल्याणीपञ्चमाः(रात्रयः)**	**अप्**	''अप्पूरणीप्रमाण्योः''	5.4.116
22.	**स्त्रीप्रमाणः**	**अप्**	''अप्पूरणीप्रमाण्योः''	5.4.116
23.	**दीर्घसक्थः**	**षच्**	''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्''	5.4.113
24.	**जलजाक्षी**	**षच्**	''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्''	5.4.113
25.	**द्विमूर्धः**	**ष**	''द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः''	5.4.115
26.	**त्रिमूर्धः**	**ष**	''द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः''	5.4.115
27.	**अन्तर्लोमः**	**अप्**	''अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः''	5.4.117
28.	**बहिर्लोमः**	**अप्**	''अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः''	5.4.117
29.	**व्यूढोरस्कः**	**कप्**	''उरः प्रभृतिभ्यः कप्''	5.4.151
30.	**प्रियसर्पिष्कः**	**कप्**	''उरः प्रभृतिभ्यः कप्''	5.4.151
31.	**महायशस्कः**	**कप्** (विकल्पेन)	'शेषाद्विभाषा''	5.4.154
32.	**वाक्त्वचम्**	**टच्**	''द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे''	5.4.106
33.	**त्वक्स्रजम्**	**टच्**	''द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे''	5.4.106
34.	**शमीदृषदम्**	**टच्**	''द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे''	5.4.106
35.	**वाक्त्विषम्**	**टच्**	''द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे''	5.4.106
36.	**प्राध्वः**	**अच्**	''उपसर्गादध्वनः	5.4.85
37.	**छत्रोपानहम्**	**टच्**	''द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे''	5.4.106
38.	**विष्णुपुरम्**	**अ**	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74
39.	**विमलापम्**	**अ**	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74

क्रं०	समस्तपदम्	समासान्तप्रत्ययः	सूत्रम्	अष्टाध्यायी सन्दर्भ
40.	राजधुरा	अ	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74
41.	अक्षधूः	अ	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74
42.	दृढधूः (अक्षः)	अ	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74
43.	सखिपथः	अ	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74
44.	रम्यपथः	अ	''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''	5.4.74
45.	गवाक्षः	अच्	''अक्ष्णोऽदर्शनात्	5.4.76
46.	सुराजा	टच्	''राजाहःसखिभ्यष्टच् '' **''न पूजनात्''**सूत्र से टच् प्रत्यय का निषेध	5.4.91
47.	अतिराजा	टच्	''राजाहःसखिभ्यष्टच् '' **''न पूजनात्''**सूत्र से टच् प्रत्यय का निषेध	5.4.91

अव्ययीभावसमास-सूत्रार्थ-तालिका

''अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्यथानुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु''

	अर्थ	समास-विग्रह	समासपदम्
*	विभक्त्यर्थे	हरौ इति	**अधिहरि**
*	समीपार्थे	कृष्णस्य समीपम्	**उपकृष्णम्**
*	समृद्ध्यर्थे	मद्राणां समृद्धिः	**सुमद्रम्**
*	व्यृद्ध्यर्थे	यवनानां व्यृद्धिः	**दुर्यवनम्**
*	अर्थाभावार्थे	मक्षिकाणाम् अभावः	**निर्मक्षिकम्**
*	अत्ययार्थे	हिमस्य अत्ययः	**अतिहिमम्**
*	असम्प्रत्यर्थे	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	**अतिनिद्रम्**
*	शब्दप्रादुर्भावार्थे	हरि शब्दस्य प्रकाशः	**इतिहरि**
*	पश्चादर्थे	विष्णोः पश्चात्	**अनुविष्णु**
*	यथार्थश्चतुर्धा		
	(क) योग्यतार्थे	रूपस्य योग्यम्	**अनुरूपम्**
	(ख) वीप्सार्थे	अर्थम् अर्थं प्रति	**प्रत्यर्थम्**
	(ग) पदार्थानतिवृत्यर्थे	शक्तिम् अनतिक्रम्य	**यथाशक्ति**
	(घ) सादृश्यार्थे	हरेः सादृश्यम्	**सहरि**
*	आनुपूर्व्यार्थे	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण	**अनुज्येष्ठम्**
*	यौगपद्यार्थे	चक्रेण युगपत्	**सचक्रम्**
*	सादृश्यार्थे	सख्या सदृशः	**ससखि**
*	सम्पत्त्यर्थे	क्षत्राणां सम्पत्तिः	**सक्षत्रम्**
*	साकल्यार्थे	तृणम् अपि अपरित्यज्य	**सतृणम्**
*	अन्तार्थे	अग्निग्रन्थपर्यन्तम् (अधीते)	**साग्नि**
*	अवधारणार्थे	यावन्ति नामानि	**यावन्नाम**
*	मर्यादार्थे	आ हिमालयात् (तेन विना इति मर्यादा)	**आहिमालयम्** **(चीन देशः)**
*	अभिविध्यर्थे	आ हिमालयात् (तेन, सह, इति, अभिविधिः)	**आहिमालयम्** **(भारतदेशः)**
*	आभिमुख्यार्थे	अग्निं प्रति	**प्रत्यग्नि**

❑❑

संख्याएँ

1	एकः, एकम् ,एका
2	द्वौ ,द्वे, द्वे
3	त्रयः ,त्रीणि ,तिस्रः
4	चत्वारः, चत्वारि ,चतस्रः
5	पञ्च
6	षट्
7	सप्त
8	अष्ट/अष्टौ
9	नव
10	**दश**
11	एकादश
12	द्वादश
13	त्रयोदश
14	चतुर्दश
15	पञ्चदश
16	षोडश
17	सप्तदश
18	अष्टादश
19	नवदश
20	**विंशतिः**
21	एकविंशतिः
22	द्वाविंशतिः
23	त्रयोविंशतिः
24	चतुर्विंशतिः
25	पञ्चविंशतिः
26	षड्विंशतिः
27	सप्तविंशतिः
28	अष्टाविंशतिः
29	नवविंशतिः
30	**त्रिंशत्**
31	एकत्रिंशत्
32	द्वात्रिंशत्
33	त्रयस्त्रिंशत्
34	चतुस्त्रिंशत्
35	पञ्चत्रिंशत्
36	षट्त्रिंशत्
37	सप्तत्रिंशत्
38	अष्टात्रिंशत्
39	नवत्रिंशत् , एकोनचत्वारिंशत्
40	**चत्वारिंशत्**

41	एकचत्वारिंशत्
42	द्विचत्वारिंशत् , द्वाचत्वारिंशत्
43	त्रिचत्वारिंशत् , त्रयश्चत्वारिंशत्
44	चतुश्चत्वारिंशत्
45	पञ्चचत्वारिंशत्
46	षट्चत्वारिंशत्
47	सप्तचत्वारिंशत्
48	अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्
49	नवचत्वारिंशत् एकोनपञ्चाशत्
50	**पञ्चाशत्**
51	एकपञ्चाशत्
52	द्विपञ्चाशत् , द्वापञ्चाशत्
53	त्रिपञ्चाशत् , त्रयःपञ्चाशत्
54	चतुःपञ्चाशत्
55	पञ्चपञ्चाशत्
56	षट्पञ्चाशत्
57	सप्तपञ्चाशत्
58	अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्
59	नवपञ्चाशत् , एकोनषष्टिः
60	**षष्टिः**
61	एकषष्टिः
62	द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः
63	त्रिषष्टिः , त्रयःषष्टिः
64	चतुःषष्टिः
65	पञ्चषष्टिः
66	षट्षष्टिः
67	सप्तषष्टिः
68	अष्टषष्टिः, अष्टाषष्टिः
69	नवषष्टिः , एकोनसप्ततिः
70	**सप्ततिः**
71	एकसप्ततिः
72	द्विसप्ततिः , द्वासप्ततिः
73	त्रिसप्ततिः , त्रयःसप्ततिः
74	चतुःसप्ततिः
75	पञ्चसप्ततिः
76	षट्सप्ततिः
77	सप्तसप्ततिः
78	अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः
79	नवसप्ततिः, एकोनाशीतिः
80	**अशीतिः**

81	एकाशीतिः
82	द्व्यशीतिः
83	त्र्यशीतिः
84	चतुरशीतिः
85	पञ्चाशीतिः
86	षडशीतिः
87	सप्ताशीतिः
88	अष्टाशीतिः
89	नवाशीतिः , एकोननवतिः
90	**नवतिः**
91	एकनवतिः
92	द्विनवतिः, द्वानवतिः
93	त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः
94	चतुर्नवतिः
95	पञ्चनवतिः
96	षण्णवतिः
97	सप्तनवतिः
98	अष्टनवतिः , अष्टानवतिः
99	नवनवतिः , एकोनशतम्
100.	**शतम्**

एक हजार	-	सहस्रम्
दस हजार	-	अयुतम्
एक लाख	-	लक्षम्
दस लाख	-	नियुतम्, प्रयुतम्।
एक करोड	-	कोटिः
दस करोड	-	दशकोटिः
एक अरब	-	अर्बुदम्
दस अरब	-	दशार्बुदम्
एक खरब	-	खर्वम्
दस खरब	-	दशखर्वम्
एक नील	-	नीलम्
दस नील	-	दशनीलम्
एक पद्म	-	पद्मम्
दशपद्म	-	दशपद्मम्
एक शंख	-	शंखम्
दस शंख	-	दशशंखम्
महाशंख	-	महाशंखम्

संख्या सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

101	=	एकाधिकं शतम्
102	=	द्व्यधिकं शतम्
103	=	त्र्यधिकं शतम्
104	=	चतुरधिकं शतम्
105	=	पञ्चाधिकं शतम् आदि।

200	=	द्विशती/शतद्वयम्
300	=	त्रिशती/शतत्रयम्
400	=	चतुःशती
500	=	पञ्चशती
600	=	षट्शती
700	=	सप्तशती आदि।

- त्रि (3) से लेकर अष्टादशन् (18) तक सभी शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।
- "**विंशत्यादिरानवतेः**" एकोनविंशतिः (19) से नवनवतिः (99) तक सभी शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग हैं। इनके रूप हमेशा एकवचन में ही चलेंगे।
- इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति – जिन पदों के अन्त में ये पद आयें उनके रूप 'मति' के समान चलेंगे।
- तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् आदि शब्दों के रूप 'सरित्' के समान चलेंगे।
- शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम्, आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'फल' की तरह चलेंगे।

संख्येयशब्दाः/पूरणी-संख्या/क्रमवाचिका संख्या

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
2.	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
3.	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
4.	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
	तुरीयः	तुरीया	तुरीयम्
	तुर्यः	तुर्या	तुर्यम्
5.	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
6.	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
7.	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
8.	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
9.	नवमः	नवमी	नवमम्
10.	दशमः	दशमी	दशमम्
11.	एकादशः	एकादशी	एकादशम्
12.	द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
13.	त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
14.	चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
15.	पञ्चदशः	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
16.	षोडशः	षोडशी	षोडशम्
17.	सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
18.	अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
19.	नवदशः	नवदशी	नवदशम्
	एकोनविंशः	एकोनविंशी	एकोनविंशम्
	एकान्नविंशः	एकान्नविंशी	एकान्नविंशम्
	ऊनविंशः	ऊनविंशी	ऊनविंशम्
20.	विंशः	विंशी	विंशम्
	विंशतितमः	विंशतितमी	विंशतितमम्
21.	एकविंशः	एकविंशी	एकविंशम्
	एकविंशतितमः	एकविंशतितमी	एकविंशतितमम्
22.	द्वाविंशः	द्वाविंशी	द्वाविंशम्
	द्वाविंशतितमः	द्वाविंशतितमी	द्वाविंशतितमम्
23.	त्रयोविंशः	त्रयोविंशी	त्रयोविंशम्
	त्रयोविंशतितमः	त्रयोविंशतितमी	त्रयोविंशतितमम्
24.	चतुर्विंशः	चतुर्विंशी	चतुर्विंशम्
	चतुर्विंशतितमः	चतुर्विंशतितमी	चतुर्विंशतितमम्
25.	पञ्चविंशः	पञ्चविंशी	पञ्चविंशम्
	पञ्चविंशतितमः	पञ्चविंशतितमी	पञ्चविंशतितमम्
26.	षड्विंशः	षड्विंशी	षड्विंशम्
	षड्विंशतितमः	षड्विंशतितमी	षड्विंशतितमम्
27.	सप्तविंशः	सप्तविंशी	सप्तविंशम्
	सप्तविंशतितमः	सप्तविंशतितमी	सप्तविंशतितमम्
28.	अष्टाविंशः	अष्टाविंशी	अष्टाविंशम्
	अष्टाविंशतितमः	अष्टाविंशतितमी	अष्टाविंशतितमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
29.	नवविंशः	नवविंशी	नवविंशम्
	नवविंशतितमः	नविंशतितमी	नवविंशतितमम्
	एकोनत्रिंशः	एकोनत्रिंशी	एकोनत्रिंशम्
	एकोनत्रिशत्तमः	एकोनत्रिशत्तमी	एकोनत्रिंशत्तमम्
	ऊनत्रिंशः	ऊनत्रिंशी	ऊनत्रिंशम्
	ऊनत्रिंशत्तमः	ऊनत्रिंशत्तमी	ऊनत्रिंशत्तमम्
	एकान्नत्रिंशः	एकान्नत्रिंशी	एकान्नत्रिंशम्
	एकान्नत्रिंशत्तमः	एकान्नत्रिंशत्तमी	एकान्नत्रिंशतितमम्
30.	त्रिंशः	त्रिंशी	त्रिंशम्
	त्रिंशत्तमः	त्रिंशत्तमी	त्रिंशत्तमम्
31.	एकत्रिंशः	एकत्रिंशी	एकत्रिंशम्
	एकत्रिंशत्तमः	एकत्रिंशत्तमी	एकत्रिंशत्तमम्
32.	द्वात्रिंशः	द्वात्रिंशी	द्वात्रिंशम्
	द्वात्रिंशत्तमः	द्वात्रिंशत्तमी	द्वात्रिंशत्तमम्
33.	त्रयस्त्रिंशः	त्रयस्त्रिंशी	त्रयस्त्रिंशम्
	त्रयस्त्रिंशत्तमः	त्रयस्त्रिंशत्तमी	त्रयस्त्रिंशत्तमम्
34.	चतुस्त्रिंशः	चतुस्त्रिंशी	चतुस्त्रिंशम्
	चतुस्त्रिंशत्तमः	चतुस्त्रिंशत्तमी	चतुस्त्रिंशत्तमम्
35.	पञ्चत्रिंशः	पञ्चत्रिंशी	पञ्चत्रिंशम्
	पञ्चत्रिंशत्तमः	पञ्चत्रिंशत्तमी	पञ्चत्रिंशत्तमम्
36.	षट्त्रिंशः	षट्त्रिंशी	षट्त्रिंशम्
	षट्त्रिंशत्तमः	षट्त्रिंशत्तमी	षट्त्रिंशत्तमम्
37.	सप्तत्रिंशः	सप्तत्रिंशी	सप्तत्रिंशम्
	सप्तत्रिंशत्तमः	सप्तत्रिंशत्तमी	सप्तत्रिंशत्तमम्
38.	अष्टात्रिंशः	अष्टात्रिंशी	अष्टात्रिंशम्
	अष्टात्रिंशत्तमः	अष्टात्रिंशत्तमी	अष्टात्रिंशत्तमम्
39.	नवत्रिंशः	नवत्रिंशी	नवत्रिंशम्
	नवत्रिंशत्तमः	नवत्रिंशत्तमी	नवत्रिंशत्तमम्
	एकोनचत्वारिंशः	एकोनचत्वारिंशी	एकोनचत्वारिंशम्
	एकोनचत्वारिंशत्तमः	एकोनचत्वारिंशत्तमी	एकोनचत्वारिंशत्तमम्
	ऊनचत्वारिंशः	ऊनचत्वारिंशी	ऊनचत्वारिंशम्
	ऊनचत्वारिंशत्तमः	ऊनचत्वारिंशत्तमी	ऊनचत्वारिंशत्तमम्
	एकान्नचत्वारिंशः	एकान्नचत्वारिंशी	एकान्नचत्वारिंशम्
	एकान्नचत्वा- रिंशत्तमः	एकान्नचत्वा- रिंशत्तमी	एकान्नचत्वा- रिंशत्तमम्
40.	चत्वारिंशः	चत्वारिंशी	चत्वारिंशम्
	चत्वारिंशत्तमः	चत्वारिंशत्तमी	चत्वारिंशत्तमम्
41.	एकचत्वारिंशः	एकचत्वारिंशी	एकचत्वारिंशम्
	एकचत्वारिंशत्तमः	एकचत्वारिंशत्तमी	एकचत्वारिंशत्तमम्
42.	द्वाचत्वारिंशः	द्वाचत्वारिंशी	द्वाचत्वारिंशम्
	द्वाचत्वारिंशत्तमः	द्वाचत्वारिंशत्तमी	द्वाचत्वारिंशत्तमम्
	द्विचत्वारिंशः	द्विचत्वारिंशी	द्विचत्वारिंशम्
	द्विचत्वारिंशत्तमः	द्विचत्वारिंशत्तमी	द्विचत्वारिंशत्तमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
43.	त्रयश्चत्वारिंशः	त्रयश्चत्वारिंशी	त्रयश्चत्वारिंशम्
	त्रयश्चत्वारिंशत्तमः	त्रयश्चत्वारिंशत्तमी	त्रयश्चत्वारिंशत्तमम्
	त्रिचत्वारिंशः	त्रिचत्वारिंशी	त्रिचत्वारिंशम्
	त्रिचत्वारिंशत्तमः	त्रिचत्वारिंशत्तमी	त्रिचत्वारिंशत्तमम्
44.	चतुश्चत्वारिंशः	चतुश्चत्वारिंशी	चतुश्चत्वारिंशम्
	चतुश्चत्वारिंशत्तमः	चतुश्चत्वारिंशत्तमी	चतुश्चत्वारिंशत्तमम्
45.	पञ्चचत्वारिंशः	पञ्चचत्वारिंशी	पञ्चचत्वारिंशम्
	पञ्चचत्वारिंशत्तमः	पञ्चचत्वारिंशत्तमी	पञ्चचत्वारिंशत्तमम्
46.	षट्चत्वारिंशः	षट्चत्वारिंशी	षट्चत्वारिंशम्
	षट्चत्वारिंशत्तमः	षट्चत्वारिंशत्तमी	षट्चत्वारिंशत्तमम्
47.	सप्तचत्वारिंशः	सप्तचत्वारिंशी	सप्तचत्वारिंशम्
	सप्तचत्वारिंशत्तमः	सप्तचत्वारिंशत्तमी	सप्तचत्वारिंशत्तमम्
48.	अष्टाचत्वारिंशः	अष्टाचत्वारिंशी	अष्टाचत्वारिंशम्
	अष्टाचत्वारिंशत्तमः	अष्टाचत्वारिंशत्तमी	अष्टाचत्वारिंशत्तमम्
49.	नवचत्वारिंशः	नवचत्वारिंशी	नवचत्वारिंशम्
	नवचत्वारिंशत्तमः	नवचत्वारिंशत्तमी	नवचत्वारिंशत्तमम्
	एकोनपञ्चाशः	एकोनपञ्चाशी	एकोन्नपञ्चाशम्
	एकोनपञ्चाशत्तमः	एकोनपञ्चाशत्तमी	एकोन्नपञ्चाशत्तमम्
	ऊनपञ्चाशः	ऊनपञ्चाशी	ऊनपञ्चाशम्
	ऊनपञ्चाशत्तमः	ऊनपञ्चाशत्तमी	ऊनपञ्चाशत्तमम्
	एकान्नपञ्चाशः	एकान्नपञ्चाशी	एकान्नपञ्चाशम्
	एकान्नपञ्चाशत्तमः	एकान्नपञ्चाशत्तमी	एकान्नपञ्चाशत्तमम्
50.	पञ्चाशः	पञ्चाशी	पञ्चाशम्
	पञ्चाशत्तमः	पञ्चाशत्तमी	पञ्चाशत्तमम्
51.	एकपञ्चाशः	एकपञ्चाशी	एकपञ्चाशम्
	एकपञ्चाशत्तमः	एकपञ्चाशत्तमी	एकपञ्चाशत्तमम्
52.	द्वापञ्चाशः	द्वापञ्चाशी	द्वापञ्चाशम्
	द्वापञ्चाशत्तमः	द्वापञ्चाशत्तमी	द्वापञ्चाशत्तमम्
53.	त्रयःपञ्चाशः	त्रयःपञ्चाशी	त्रयःपञ्चाशत्तमम्
	त्रयःपञ्चाशत्तमः	त्रयःपञ्चाशत्तमी	त्रयःपञ्चाशत्तमम्
54.	चतुःपञ्चाशः	चतुःपञ्चाशी	चतुःपञ्चाशम्
	चतुःपञ्चाशत्तमः	चतुःपञ्चाशत्तमी	चतुःपञ्चाशत्तमम्
55.	पञ्चपञ्चाशः	पञ्चपञ्चाशी	पञ्चपञ्चाशम्
	पञ्चपञ्चाशत्तमः	पञ्चपञ्चाशत्तमी	पञ्चपञ्चाशत्तमम्
56.	षट्पञ्चाशः	षट्पञ्चाशी	षट्पञ्चाशम्
	षट्पञ्चाशत्तमः	षटपञ्चाशत्तमी	षट्पञ्चाशत्तमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
57.	सप्तपञ्चाशः	सप्तपञ्चाशी	सप्तपञ्चाशम्
	सप्तपञ्चाशत्तमः	सप्तपञ्चाशत्तमी	सप्तपञ्चाशत्तमम्
58.	अष्टपञ्चाशः	अष्टपञ्चाशी	अष्टपञ्चाशम्
	अष्टपञ्चाशत्तमः	अष्टपञ्चाशत्तमी	अष्टपञ्चाशत्तमम्
59.	नवपञ्चाशः	नवपञ्चाशी	नवपञ्चाशम्
	नवपञ्चाशत्तमः	नवपञ्चाशत्तमी	नवपञ्चाशत्तमम्
	एकोनषष्टः	एकोनषष्ठी	एकोनषष्टम्
	एकोनषष्टितमः	एकोनषष्टितमी	एकोनषष्टितमम्
	ऊनषष्टः	ऊनषष्टी	ऊनषष्टम्
	ऊनषष्टितमः	ऊनषष्टितमी	ऊनषष्टितमम्
	एकान्नषष्टितमः	एकान्नषष्टितमी	एकान्नषष्टितमम्
	एकान्नषष्टिः	एकान्नषष्टी	एकान्नषष्टम्
60.	षष्टितमः	षष्टितमी	षष्टितमम्
61.	एकषष्टः	एकषष्टी	एकषष्टम्
	एकषष्टितमः	एकषष्टितमी	एकषष्टतमम्
62.	द्वाषष्टः	द्वाषष्टी	द्वाषष्टम्
	द्वाषष्टितमः	द्वाषष्टितमी	द्वाषष्टितमम्
	द्विषष्टः	द्विषष्टी	द्विषष्टम्
	द्विषष्टितमः	द्विषष्टितमी	द्विषष्टितमम्
63.	त्रयष्षष्टः	त्रयष्षष्टी	त्रयष्षष्टम्
	त्रयष्षष्टितमः	त्रयष्षष्टितमी	त्रयष्षष्टितमम्
	त्रिषष्टः	त्रिषष्टी	त्रिषष्टम्
	त्रिषष्टितमः	त्रिषष्टितमी	त्रिषष्टितमम्
64.	चतुष्षष्टः	चतुष्षष्टी	चतुष्षष्टम्
	चतुष्षष्टितमः	चतुष्षष्टितमी	चतुष्षष्टितमम्
65.	पञ्चषष्टः	पञ्चषष्टी	पञ्चषष्टम्
	पञ्चषष्टितमः	पञ्चषष्टितमी	पञ्चषष्टितमम्
66.	षट्षष्टः	षट्षष्टी	षट्षष्टम्
	षट्षष्टितमः	षट्षष्टितमी	षट्षष्टितमम्
67.	सप्तषष्टः	सप्तषष्टी	सप्तषष्टम्
	सप्तषष्टितमः	सप्तषष्टितमी	सप्तषष्टितमम्
68.	अष्टाषष्टः	अष्टाषष्टी	अष्टाषष्टम्
	अष्टषष्टितमः	अष्टषष्टितमी	अष्टषष्टितमम्
69.	नवषष्टः	नवषष्टी	नवषष्टम्
	नवषष्टितमः	नवषष्टितमी	नवषष्टितमम्
	एकोनसप्ततः	एकोनसप्तती	एकोनसप्ततम्
	एकोनसप्ततितमः	एकोनसप्ततितमी	एकोनसप्ततितमम्
	ऊनसप्ततः	ऊनसप्तती	ऊनसप्ततम्
	ऊनसप्ततितमः	ऊनसप्ततितमी	ऊनसप्ततितमम्
	एकान्नसप्ततः	एकान्नसप्तती	एकान्नसप्ततम्
	एकान्नसप्ततितमः	एकान्नसप्ततितमी	एकान्नसप्ततितमम्
70.	सप्ततः	सप्तती	सप्ततम्
	सप्ततितमः	सप्ततितमी	सप्ततितमम्
71.	एकसप्ततः	एकसप्तती	एकसप्ततम्
	एकसप्ततितमः	एकसप्ततितमी	एकसप्ततितमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
72.	द्वासप्ततः	द्वासप्तती	द्वासप्ततम्
	द्वासप्ततितमः	द्वासप्ततितमी	द्वासप्ततितमम्
	द्विसप्ततः	द्विसप्तती	द्विसप्ततम्
	द्विसप्ततितमः	द्विसप्ततितमी	द्विसप्ततितमम्
73.	त्रयस्सप्ततः	त्रयस्सप्तती	त्रयस्सप्ततमम्
	त्रयस्सप्ततितमः	त्रयस्सप्ततितमी	त्रयस्सप्ततितमम्
	त्रिसप्ततः	त्रिसप्तती	त्रिसप्ततम्
	त्रिसप्ततितमः	त्रिसप्ततितमी	त्रिसप्ततितमम्
74.	चतुस्सप्ततः	चतुस्सप्तती	चतुस्सप्ततम्
	चतुस्सप्ततितमः	चतुस्सप्ततितमी	चतुस्सप्ततितमम्
75.	पञ्चसप्ततः	पञ्चसप्तती	पञ्चसप्ततम्
	पञ्चसप्ततितमः	पञ्चसप्ततितमी	पञ्चसप्ततितमम्
76.	षट्सप्ततः	षट्सप्तती	षट्सप्ततम्
	षट्सप्ततितमः	षट्सप्ततितमी	षट्सप्ततितमम्
77.	सप्तसप्ततः	सप्तसप्तती	सप्तसप्ततम्
	सप्तसप्ततितमः	सप्तसप्ततितमी	सप्तसप्ततितमम्
78.	अष्टासप्ततः	अष्टासप्तती	अष्टासप्ततम्
	अष्टासप्ततितमः	अष्टासप्ततितमी	अष्टासप्ततितमम्
	अष्टसप्ततः	अष्टसप्तती	अष्टसप्ततम्
	अष्टसप्ततितमः	अष्टसप्ततितमी	अष्टसप्ततितमम्
79.	नवसप्ततः	नवसप्तती	नवसप्ततम्
	नवसप्ततितमः	नवसप्ततितमी	नवसप्ततितमम्
	एकोनाशीतः	एकोनाशीती	एकोनाशीतम्
	ऊनाशीतः	ऊनाशीती	ऊनाशीतम्
	ऊनाशीतितमः	ऊनाशीतितमी	ऊनाशीतितमम्
	एकान्नाशीतः	एकान्नाशीती	एकान्नाशीतम्
	एकान्नाशीतितमः	एकान्नाशीतितमी	एकान्नाशीतितमम्
80.	अशीतितमः	अशीतितमी	अशीतितमम्
81.	एकाशीतः	एकाशीती	एकाशीतम्
	एकाशीतितमः	एकाशीतितमी	एकाशीतितमम्
82.	द्व्यशीतः	द्व्यशीती	द्व्यशीतम्
	द्व्यशीतितमः	द्व्यशीतितमी	द्व्यशीतितमम्
83.	त्र्यशीतः	त्र्यशीती	त्र्यशीतम्
	त्र्यशीतितमः	त्र्यशीतितमी	त्र्यशीतितमम्
84.	चतुरशीतः	चतुरशीती	चतुरशीतम्
	चतुरशीतितमः	चतुरशीतितमी	चतुरशीतितमम्
85.	पञ्चाशीतः	पञ्चाशीती	पञ्चाशीतम्
	पञ्चाशीतितमः	पञ्चाशीतितमी	पञ्चाशीतितमम्
86.	षडशीतः	षडशीती	षडशीतम्
	षडशीतितमः	षडशीतितमी	षडशीतितमम्
87.	सप्ताशीतः	सप्ताशीती	सप्ताशीतम्
	सप्ताशीतितमः	सप्ताशीतितमी	सप्ताशीतितमम्
88.	अष्टाशीतः	अष्टाशीती	अष्टाशीतम्
	अष्टाशीतितमः	अष्टाशीतितमी	अष्टाशीतितमम्

संख्याशब्दाः	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
89.	नवाशीतः	नवाशीती	नवाशीतम्
	नवाशीतितमः	नवाशीतितमी	नवाशीतितमम्
	एकोननवतः	एकोननवती	एकोननवतम्
	एकोननवतितमः	एकोननवतितमी	एकोननवतितमम्
	ऊननवतः	ऊननवती	ऊननवतम्
	ऊननवतितमः	ऊननवतितमी	ऊननवतितमम्
	एकान्ननवतः	एकान्ननवती	एकान्ननवतम्
	एकान्ननवतितमः	एकान्ननवतितमी	एकान्ननवतितमम्
90.	नवतितमः	नवतितमी	नवतितमम्
91.	एकनवतः	एकनवती	एकनवतम्
	एकनवतितमः	एकनवतितमी	एकनवतितमम्
92.	द्वानवतः	द्वानवती	द्वानवतम्
	द्वानवतितमः	द्वानवतितमी	द्वानवतितमम्
	द्विनवतः	द्विनवती	द्विनवतम्
	द्विनवतितमः	द्विनवतितमी	द्विनवतितमम्
93.	त्रयोनवतः	त्रयोनवती	त्रयोनवतम्
	त्रयोनवतितमः	त्रयोनवतितमी	त्रयोनवतितमम्
	त्रिनवतः	त्रिनवती	त्रिनवतम्
	त्रिनवतितमः	त्रिनवतितमी	त्रिनवतितमम्
94.	चतुर्नवतः	चतुर्नवती	चतुर्नवतम्
	चतुर्नवतितमः	चतुर्नवतितमी	चतुर्नवतितमम्
95.	पञ्चनवतः	पञ्चनवती	पञ्चनवतम्
	पञ्चनवतितमः	पञ्चनवतितमी	पञ्चनवतितमम्
96.	षण्णवतः	षण्णवती	षण्णवतम्
	षण्णवतितमः	षण्णवतितमी	षण्णवतितमम्
97.	सप्तनवतः	सप्तनवती	सप्तनवतम्
	सप्तनवतितमः	सप्तनवतितमी	सप्तनवतितमम्
98.	अष्टानवतः	अष्टानवती	अष्टानवतम्
	अष्टानवतितमः	अष्टानवतितमी	अष्टानवतितमम्
	अष्टनवतः	अष्टनवती	अष्टनवतम्
	अष्टनवतितमः	अष्टनवतितमी	अष्टनवतितमम्
99.	नवनवतः	नवनवती	नवनवतम्
	नवनवतितमः	नवनवतितमी	नवनवतितमम्
100.	शततमः	शततमी	शततमम्
200.	द्विशततमः	द्विशततमी	द्विशततमम्
300.	त्रिशततमः	त्रिशततमी	त्रिशततमम्
400.	चतुश्शततमः	चतुश्शततमी	चतुश्शततमम्
500.	पञ्चशततमः	पञ्चशततमी	पञ्चशततमम्
1000.	सहस्रतमः	सहस्रतमी	सहस्रतमम्
10,000.	अयुततमः	अयुततमी	अयुततमम्
10,0000.	लक्षतमः	लक्षतमी	लक्षतमम्
10,00000.	प्रयुततमः	प्रयुततमी	प्रयुततमम्
10,000000	कोटितमः	कोटितमी	कोटितमम्

व्याकरणात्मक-टिप्पणी

संस्कृतम् = सम् + कृ + क्त ('सुट्' का आगम)
व्याकरणम् = वि + आङ् + कृ + ल्युट्
श्लोकः = श्लोक् + अच्
सञ्ज्ञा = सम् + ज्ञा + अङ्+ टाप्
सूत्र = सूत्र् + अच्
गणः = गण् + अच्
अतिदेशः = अति + दिश् + घञ्
लिङ्ग = लिङ्ग् + अच्
अनुशासनम् = अनु + शास् + ल्युट्
आगमः = आ + गम् + घञ्
प्रत्यादेशः = प्रति + आङ् + दिश् + घञ्
प्रत्याहारः = प्रति + आङ् + हृ + घञ्
सिद्धिः = सिध् + क्तिन्
प्रकरणम् = प्र + कृ + ल्युट्
उपदेशः = उप + दिश् + घञ्
उच्चारणम् = उत् + चर् + णिच् + ल्युट्
दर्शनम् = दृश् + ल्युट्
अधिकारः = अधि + कृ + घञ्
प्रयत्नः = प्र + यत् + नङ्
नित्यम् = नि + त्यप्
निषेधः = नि + सिध् + घञ्
निपातः = नि + पत् + घञ्
विकल्पः = वि + क्लृप् + घञ्
विकारः = वि + कृ + घञ्
विभाषा = वि + भाष् + अङ् + टाप्
विधायकः = वि + धा + ण्वुल्
स्पर्शः = स्पृश् + घञ्
विवृतम् = वि + वृ + क्त
संवृतम् = सम् + वृ + क्त
संवारः = सम् + वृ + घञ्
विवारः = वि + वृ + घञ्
श्वासः = श्वस् + घञ्
नादः = नद् + घञ्
घोषः = घुष् + घञ्
प्राणः = प्र + अन् + घञ्
उच्चैः = उत् + चि + डैस्
ह्रस्वः = ह्रस् + वत्
दीर्घः = दॄ + घञ्
प्लुतः = प्लु + क्त
विसर्गः = वि + सृज् + घञ्
संयोगः = सम् + युज् + घञ्
सन्निकर्षः = सम् + नि + कृष् + घञ्
संहिता = सम् + धा + क्त + टाप्
निर्दिष्टम् = निर् + दिश् + क्त
प्रकृतिभावः = प्र + कृ + क्तिन् + भू + घञ्
प्रगृह्य = प्र + गृह् + ल्यप्
अभ्यासः = अभि + आङ् + अस् + घञ्
सन्धिः = सम् + धा + कि
अभिहितः = अभि + धा + क्त
अभिप्रायः = अभि + प्र + इ + अच्
अपवादः = अप् + वद् + घञ्
अन्वितः = अनु + इ + क्त
अन्वयः = अनु + इ + अच्
अनुस्वारः = अनु + स्वृ + घञ्
अनुवृत्तिः = अनु + वृत् + क्तिन्
अनुवादः = अनु + वद् + घञ्
अध्याहारः = अधि + आङ् + हृ + घञ्
प्रत्ययः = प्रति + इ + अच्
समासः = सम् + अस् + घञ्
कारकः = कृ + ण्वुल्
कर्त्ता (कर्तृ) = कृ + तृच्
क्रिया = कृ + श् + रिङ् आदेश +इयङ्
कर्म = कृ + मनिन्
करण = कृ + ल्युट्
सम्प्रदानम् = सम् + प्र+दा + ल्युट्
अपादानम् = अप + आङ् + दा + ल्युट्
सम्बन्धः = सम् + बन्ध् + क्त
अधिकरणम् = अधि + कृ + ल्युट्
सम्बोधन = सम् + बुध् + णिच् + ल्युट्
विभक्तिः = वि + भज् + क्तिन्
ईप्सितः = आप् + सन् + क्त
समाहारः = सम् + आङ् + हृ +घञ्
उपसर्जनम् = उप + सृज् + ल्युट्
उपसर्गः = उप + सृज् + घञ्
सर्गः = सृज् + घञ्
उपन्यासः = उप + नि + अस् + घञ्
विरामः = वि + रम् + घञ्
निःश्वासः = निर् + श्वस् + घञ्
अङ्कः = अङ्क + अच्
उच्छ्वासः = उत् + श्वस् + घञ्
उद्योतः = उद् + द्युत् + घञ्
प्रकाशः = प्र + काश् + अच्
रसः = रस् + अच्
अलङ्कारः = अलम् + कृ + घञ्
अनुप्रासः = अनु + प्र + अस् + घञ्
यमकः = यम + कन्

संस्कृत में लिङ्गज्ञान

- पाणिनीय व्याकरण **पञ्चाङ्गव्याकरण** अथवा '**पञ्चपाठी**' के नाम से जाना जाता है। पाणिनीय व्याकरण के पाँच अङ्ग निम्नवत् हैं– 1. सूत्रपाठ 2. धातुपाठ 3. गणपाठ 4. उणादिपाठ तथा 5. लिङ्गानुशासन।
- इन पाँच पाठों में सूत्रपाठ प्रमुख है, तथा शेष चार गौण हैं। इन चारों को '**खिलपाठ**' भी कहा जाता है।
- संस्कृतभाषा में लिङ्गज्ञान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, इसीलिए महर्षि पाणिनि अष्टाध्यायी के सूत्रपाठ की तरह ही लिङ्गानुशासन की रचना भी सूत्रात्मक शैली में की। इसमें कुल **191 सूत्र** तथा **6 प्रकरण** है। यथा– 1. स्त्रीलिङ्गप्रकरण 2. पुँल्लिङ्गप्रकरण 3. नपुंसकलिङ्गप्रकरण 4. स्त्रीपुंसप्रकरण 5. पुन्नपुंसकप्रकरण 6. अविशिष्टलिङ्गप्रकरण। आइये संक्षेप में कुछ प्रमुख सूत्रों को हम समझने का प्रयास करते हैं–

सूत्र– 1. **''ऋकारान्ता मातृदुहितृस्वसृयातृननान्दरः''**

सूत्रार्थ– मातृ, दुहितृ, स्वसृ, यातृ तथा ननान्दृ–ये पाँच ऋकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यातृ के स्थान पर 'पोतृ' पाठ भी प्राप्त होता है।

उदाहरण–

मूलशब्द	प्रथमान्त-रूप		अर्थ
1. मातृ	माता	=	माँ
2. दुहितृ	दुहिता	=	बेटी
3. स्वसृ	स्वसा	=	बहन
4. यातृ	याता	=	देवरानी
5. ननान्दृ	ननान्दा		ननद

सूत्र– 2. **''अन्यूप्रत्ययान्तो धातुः''**

सूत्रार्थ– अनिप्रत्ययान्त तथा ऊप्रत्ययान्त धातु से निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– क. 'अनि' प्रत्ययान्त शब्द

अवनिः = भूमि तरणिः = नौका, सूर्य
सरणिः = पद्धति रजनिः = रात
धरणिः = पृथिवी आशुशुक्षणिः = अग्नि
धमनिः = नाडी क्षिपणिः = शस्त्र
अशनिः = वज्र भरणिः = एक नक्षत्र

ख. 'ऊ' प्रत्ययान्त शब्द–

चमूः = सेना
तनूः = शरीर
खर्जूः = खाज
वधूः = नवोढास्त्री

सूत्र– 3. **''अशनिभरण्यरणयः पुंसि च''**

सूत्रार्थ– **अशनि, भरणि** तथा **अरणि** शब्द पुँल्लिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग दोनों होते हैं। पूर्वसूत्र के द्वारा स्त्रीत्व प्राप्त था। इस सूत्र के द्वारा पुँल्लिङ्ग विधान किया गया।

उदाहरण– अशनिः = वज्र
भरणिः = एक नक्षत्र
अरणिः = अग्नि उत्पन्न करने में प्रयुक्त एक मॅथनी

सूत्र– 4. **''मिन्यन्तः''**

सूत्रार्थ– मि प्रत्ययान्त तथा नि प्रत्ययान्त धातुज शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– नेमिः = पहिए का भाग पार्ष्णिः = एडी
ऊर्मिः = जलतरंग वेणिः = केशविन्यास
भूमिः = पृथिवी श्रेणिः =पंक्ति
रश्मिः = किरण श्रोणिः = कटिप्रदेश
योनिः = स्त्रीजननेन्द्रिय हानिः = हानि

सूत्र 5. **''वह्निवृष्ण्यग्नयः पुंसि''**

सूत्रार्थ– धातु से निष्पन्न निप्रत्ययान्त वह्नि, वृष्णि, तथा अग्नि शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं। इन्हें ''मिन्यन्तः'' सूत्र से स्त्रीत्व प्राप्त था किन्तु इस सूत्र के द्वारा पुँल्लिङ्ग का विधान किया गया।

उदाहरण– वह्निः = आग
अग्निः = आग
वृष्णिः = क्षत्रिय या वैश्य

सूत्र 6. **''श्रोणियोन्यूर्मयः पुंसि च''**

सूत्रार्थ– निप्रत्ययान्त श्रोणि, योनि तथा मिप्रत्ययान्त 'ऊर्मि' शब्द पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों होते हैं। यह पूर्वसूत्र का अपवाद है।

उदाहरण– अयं श्रोणिः, इयं श्रोणिः/श्रोणी
अयं योनिः, इयं योनिः/योनी
अयं ऊर्मिः, इयं ऊर्मिः/ऊर्मी

सूत्र– 7. **''क्तिन्नन्तः''**

सूत्रार्थ– 'क्तिन्' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– कृतिः = रचना
बुद्धिः = बुद्धि
दृष्टिः = दृष्टि
भक्तिः = भक्ति
मतिः = मति

सृष्टिः = संसार
मुक्तिः = मुक्ति
सिद्धिः = सिद्धि
लब्धिः = प्राप्ति

सूत्र –8. **''ईकारान्तश्च''**

सूत्रार्थ– ईप्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– तन्त्रीः = वीणा
लक्ष्मीः = लक्ष्मी
तरीः = नौका
पपीः = सूर्य, चन्द्रमा
अवीः = रजस्वला स्त्री

सूत्र –9. **''ऊङ्ङ्याबन्तश्च''**

सूत्रार्थ– ऊङ्प्रत्ययान्त, ङीप्रत्ययान्त (ङीप्, ङीष्, ङीन्) तथा आप्प्रत्ययान्त (टाप्, डाप्, चाप्) शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– **ऊङ्-प्रत्ययान्त शब्द**

(क) कुरूः = कुरुपत्नी
कर्कन्धूः = बदरी
अलाबूः = तुम्बी
पङ्गूः = लंगड़ी स्त्री
श्वश्रूः = सास

(ख) **ङीप्-प्रत्ययान्त–**
कर्त्री = करने वाली
हर्त्री = हरण करने वाली
ब्रह्मचारिणी = ब्रह्मचारी स्त्री
योगिनी = योगी स्त्री
दण्डिनी = दण्ड धारण करने वाली स्त्री

(ग) **ङीष्-प्रत्ययान्त–**
नर्तकी = नाचने वाली
खनकी = खोदने वाली
रजकी = धोबिन
गौरी = गौर (शिव) की पत्नी

(घ) **ङीन्-प्रत्ययान्त–**
शार्ङ्गरवी = शार्ङ्गरव की पत्नी
कापटवी = कापटव की पत्नी
बैदी = बैद की पत्नी
औवीं = और्व पत्नी
ब्राह्मणी = ब्राह्मण पत्नी

(ङ) **टाप्-प्रत्ययान्त–**
अजा = बकरी
कोकिला = मादा कोयल
एडका = घोड़ी
चटका = चिड़िया

डाप्-प्रत्ययान्त–
पामा = खुजली
सीमा = सीमा
बहुराजा = अनेक राजाओं वाली
बहुतक्षा = अनेक बढई वाली

चाप्-प्रत्ययान्त–
आम्बष्ठ्या = आम्बष्ठ्य की पत्नी
सौवीर्या = सौवीर्य की स्त्री
कारीषगन्ध्या = करीषगन्ध्य की स्त्री
वाराह्या = वाराह्य की स्त्री
आवट्या = आवट्य की स्त्री
कौसल्या = कोसल जनपद की स्त्री

सूत्र– 10. **''य्वन्तमेकाक्षरम्''**

सूत्रार्थ– एकाक्षर जो ईकारान्त अथवा ऊकारान्त शब्द, वह स्त्रीलिङ्ग होता है। ई च यू च – यू (इतरेतरयोगद्वन्द्व) यू अन्ते अस्य य्वन्तम् (बहु0)

उदाहरण– श्रीः = लक्ष्मी भूः = पृथिवी
स्त्रीः = स्त्री भ्रूः = भौंह
धीः = बुद्धि
भीः = भय

सूत्र 11. **''विंशत्यादिरानवतेः''**

सूत्रार्थ– 'विंशति' शब्द से लेकर 'नवति' पर्यन्त संख्यावाची शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। अर्थात् ऊनविंशतिः (19) से नवनवतिः (99) तक शब्द स्त्रीलिङ्ग होंगे।

उदाहरण– (i) इयं विंशतिः (ii) इयं त्रिंशत् (iii) इयं चत्वारिंशत् (iv) इयं पञ्चाशत् (v) इयं षष्टिः (vi) इयं सप्ततिः (vii) इयं अशीतिः (viii) इयं नवतिः (ix) इयं नवनवतिः

सूत्र –12. **''तलन्तः''**

सूत्रार्थ– 'तल्' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं, स्त्रीत्व की विवक्षा में 'अजाद्यतष्टाप्' से 'टाप्' प्रत्यय होता है।

उदाहरण– ● इयं शुक्लता ● इयं जडता ● इयं जनता
● इयं देवता ● इयं बन्धुता ● इयं ग्रामता

सूत्र –13. **''भूमिविद्युत्सरिल्लतावनिताभिधानानि''**

सूत्रार्थ– भूमि, विद्युत्, सरित्, लता तथा वनिता– ये शब्द तथा इनके वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– **(क) भूमि–** भूः, पृथिवी, अनन्ता, विश्वम्भरा, धरा, धरित्री, धरणिः, जया, क्षितिः, सर्वसहा, वसुधा, उर्वी, वसुन्धरा, गोत्रा, कुः, क्ष्मा, मेदिनी

(ख) **विद्युत्**–सौदामिनी, तडित्, चपला, चञ्चला

(ग) **सरित्** – नदी, तरङ्गिणी, शैवालिनी, तटिनी, ह्लादिनी, धुनी, स्रोतस्विनी, द्वीपवती, निम्नगा, अपगा, स्रवन्ती आदि।

(घ) **लता**– वल्ली, वल्लरी, व्रततिः आदि

(ङ) **वनिता**– योषित्, अबला, नारी, सीमन्तिनी, वधूः, वामा, महिला, अङ्गना, कामिनी, प्रमदा, कान्ता, ललना, नितम्बिनी, सुन्दरी, रमणी, रामा, कोपना, भामिनी, मत्तकाशिनी, उत्तमा आदि।

सूत्र 14. **''भास्स्रुक्स्रग्दिगुष्णिगुपानहः''**

सूत्रार्थ– भास्, स्रुक्, स्रज्, दिश्, उष्णिक्, तथा उपानह् ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– भाः = दीप्ति
स्रुक् = यज्ञपात्रविशेष
स्रक् = माला
दिक् = दिशा
उष्णिक् = छन्द का नाम
उपानत् = पादत्राण, जूता

सूत्र 15. **''प्रावृड्विप्रुड्रुट्तृड्विट्त्विषः''**

सूत्रार्थ– प्रावृष्, विप्रुष्, रुष्, तृष्, विष्, त्विष्– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– प्रावृट् = वर्षा
विप्रुट् = बिन्दु
रुट् = क्रोध
त्विट् = प्रभा
विट् = विष्ठा
तृट् = प्यास

सूत्र 16. **''दर्विविदिवेदिखनिशान्यश्रिवेशिकृष्योषधि कट्यङ्गुलयः''**

सूत्रार्थ– दर्वि, विदि, वेदि, खनि, शानि, अश्रि, वेशि कृषि, ओषधि, कटि और अङ्गुलि– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– दर्विः = कड़छी
वेदिः = चबूतरा
खनिः = खान
शानिः = कसौटी
अश्रिः = किनारा
कृषिः = कृषि
औषधिः = दवाई
कटिः = कमर
अङ्गुलिः = अङ्गुलि

सूत्र 17. **''तिथि-नाडि-रुचि-वीचि-नालि-धूलि-किकि-केलिच्छविरात्र्यादयः''**

सूत्रार्थ– तिथि, नाडि, रुचि, वीचि, नालि, धूलि, किकि, केलि, छवि– ये शब्द तथा रात्रि के वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। रात्रि के पर्याय शब्दों में 'नक्तम्' तथा 'दोषा' शब्दों का ग्रहण नहीं होता है।

उदाहरण– तिथिः = दिनमान
नाडिः = धमनी
रुचिः = प्रभा
वीचिः = तरंग
नालिः = नाडी
धूलिः = धूल
किकिः = नीलकण्ठ पक्षी की आवाज
केलिः = क्रीडा
धूलिः = धूल
छविः = कान्ति
रात्रिः= रात

रात्रिवाचक शब्द– रात्रिः, निशा, शर्वरी, विभावरी, निशीथिनी, त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, रजनी, यामिनी, तमिस्रा, तामसी, तमी, तमस्विनी

सूत्र 18. **''शष्कुलिराजिकुट्यवन्तिवर्तिभ्रुकुटि-त्रुटि-वलिपङ्क्तयः''**

सूत्रार्थ– शष्कुलि, राजि, कुटि, अवन्ति, वर्ति, भ्रुकुटि, त्रुटि, वलि, पङ्क्ति– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– शष्कुलिः = कर्णछिद्र या पूड़ी
राजिः = पंक्ति
कुटिः = कुटिया
अवन्तिः = उज्जयिनी
भ्रुकुटिः = भौंह
त्रुटिः = मात्रा

वलिः = प्राण्यङ्गज, झुरी
पंक्तिः = श्रेणी
वर्तिः = बाती

सूत्र 19. **''प्रतिपदापद्विपत्सम्पच्छरत्संसत्परिषदुषः संवित्क्षुत्पुन्मुत्समिधः''**

सूत्रार्थ– प्रतिपद्, आपद्, विपद्, सम्पद्, शरद्, संसद्, परिषद्, उषाः, संविद्, क्षुद्, पुद्, मुद् व समिद्– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– प्रतिपद् = एक तिथि
आपद् = संकट
विपद् = विपत्ति
सम्पद् = धन
शरद् = ऋतुविशेष
संसद् = सभा
परिषद् = सभा
उषाः = प्रातः
संविद् = बुद्धिः
क्षुद् = छींक
पुद् = नरक
मुद् = प्रीति
समिध् = हवन में प्रयुक्त ईंधन

सूत्र 20. **''आशीर्धूःपूर्गीर्द्वारः''**

सूत्रार्थ– आशिष्, धुर्, पुर्, गिर्, तथा द्वार्– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– आशीः = आशीर्वचन
धूः = गाडी का धुरा
पूः = नगरी
गीः = वाणी
द्वाः = द्वार

सूत्र 21. **''अप्सुमनस्समासिकतावर्षाणां बहुत्वं च''**

सूत्रार्थ– अप्, सुमनस्, समा, सिकता तथा वर्षा– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं तथा सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण– इमाः आपः = जल
सुमनसः = फूल
समाः = संवत्सर वर्ष
सिकताः = बालू
वर्षाः = वर्षा, ऋतुविशेष
अमरकोश में भी कहा गया है–
आपः सुमनसो वर्षा अप्सरः सिकताः समाः।
एते स्त्रियां बहुत्वे स्युरेकत्वेऽप्युत्तरत्रयम्।।

सूत्र 22. **''स्रक्त्वग्ज्योग्वाग्यवागूनौस्फिजः''**

सूत्रार्थ– स्रक्, त्वक्, वाग्, यवागू, नौ, तथा स्फिच्– ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– स्रक् = माला
त्वक् = त्वचा
वाक् = वाणी
यवागूः = लप्सी
नौः = नौका
स्फिक् = कटिप्रोथ

सूत्र 23. **''ताराधाराज्योत्स्नादयश्च''**

सूत्रार्थ– तारा, धारा तथा ज्योत्स्ना के वाचक (पर्यायवाची) शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– तारा = नक्षत्र
धारा = जलप्रवाह
ज्योत्स्ना = चन्द्रिका

सूत्र 24. **''शलाका स्त्रियां नित्यम्''**

सूत्रार्थ– 'शलाका' शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग में होता है।

उदाहरण– इयं शलाका

पुँल्लिङ्ग-प्रकरणम्

सूत्र 25. **घञबन्तः**

सूत्रार्थ– घञ् प्रत्ययान्त तथा अप्-प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिङ्ग में होते हैं।

घञ्-प्रत्ययान्त शब्द

उदाहरण– रागः = राग
पाकः = पाक
त्यागः = त्याग

अप्-प्रत्ययान्त शब्द

स्तवः = स्तुति
करः = हाथ
गरः = रोग, शरबत
पवः = पवनः
निश्चयः = निश्चय

सूत्र 26. **''घाऽजन्तश्च''**

सूत्रार्थ– घप्रत्ययान्त तथा अच्प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

घ प्रत्ययान्त शब्द

उदाहरण– गोचरः = चारागाह
सञ्चरः = मार्ग

घटः = घडा
आकरः = खजाना
आलयः = गृह

अच् प्रत्ययान्त शब्द

जयः = जय
अयः = शुभ दैव
चयः = चयन
क्षयः = नाश

सूत्र 27. ''भयलिङ्गभगपदानि नपुंसके''

सूत्रार्थ–
- भय, लिङ्ग, भग तथा पद–ये शब्द नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।
- भय, पद, लिङ्ग– ये तीनों अच्प्रत्ययान्त शब्द हैं।
- 'भग' शब्द घप्रत्ययान्त है।
- पूर्वसूत्र से पुँल्लिङ्ग प्राप्त था, इस सूत्र से नपुंसकत्व कहा गया है।

उदाहरण– भयम् = डर
लिङ्गम् = पुरुषजननेन्द्रिय
भगम् = स्त्रीयोनि
पदम् = पैर, स्थान

सूत्र 28. ''नङन्तः''

सूत्रार्थ– नङ् प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– यज्ञः = यज्ञ
यत्नः = यत्न
प्रश्नः = प्रश्न

सूत्र 29. ''याच्ञा स्त्रियाम्''

सूत्रार्थ–
- नङ् प्रत्ययान्त 'याच्ञा' शब्द स्त्रीलिङ्ग में होता है।
- नङ्प्रत्ययान्त होने से यहाँ पूर्वसूत्र से पुंस्त्व प्राप्त था।

सूत्र 30. ''क्यन्तो घुः''

सूत्रार्थ– 'कि' प्रत्ययान्त घुसंज्ञक शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– आधिः = मानसिक कष्ट
व्याधिः = शारीरिक रोग
निधिः = खजाना
उदधिः = समुद्र
विधिः = दैव, भाग्य, ब्रह्मा
शेवधिः = निधि
प्रधिः = नेमि
उपधिः = छल
सन्निधिः = समीपता

सूत्र 31. ''देवासुरात्मस्वर्गगिरिसमुद्रनखकेशदन्तस्तन-भुजकण्ठखड्गशरपङ्काभिधानानि''

सूत्रार्थ– देव, असुर, आत्मा, स्वर्ग, गिरि, समुद्र, नख, केश, दन्त, स्तन, भुज, कण्ठ, खड्ग, शर, पङ्क– ये शब्द तथा इनके पर्यायवाची शब्द पुँल्लिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण–

(क) देवः– अमरः, निर्जरः, त्रिदशः, विबुधः, सुरः, सुपर्वा, दिवौकः, आदितेयः, दिविषद्, अदितिनन्दनः, आदित्यः, ऋभुः, अमर्त्यः, अमृतान्धाः, बहिर्मुखः, क्रतुभुज्, गीर्वाणः, दानवारिः, वृन्दारकः

(ख) असुरः– दैत्यः, दैतेयः, दनुजः, इन्द्रारिः, दानवः, शुक्रशिष्यः, दितिसुतः, सुरद्विष्

(ग) आत्मा– आत्मा, क्षत्रजः, पुरुषः

(घ) स्वर्गः– स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः, त्रिदशालयः, सुरलोकः

(ङ) गिरिः– महीध्रः, शिखरी, क्ष्माभृत्, पर्वतः, सानुमान्, भूभृत्, अद्रिः, ग्रावाः, अचलः, शैलः, शिलोच्चयः

(च) समुद्रः– अब्धिः, अकूपारः, पारावारः, सरित्पतिः, उदन्वान्, उदधिः, सिन्धुः, सरस्वान्, सागरः, अर्णवः, रत्नाकरः, जलनिधिः, अपाम्पतिः

(छ) नखः– पुनर्भवः, कररुहः, नखरः

(ज) केशाः– शिरोरुहः, चिकुरः, कुन्तलः, बालः, कचः

(झ) दन्ताः– दशनाः, रदनाः, रदाः

(ञ) स्तनः– कुचः, वक्षोरुहः

(ट) भुजः– दोः, बाहुः

(ठ) कण्ठः– गलः

(ड) खड्गः– खड्गः, करवालः, चन्द्रहासः, असिः, कौक्षेयकः, निस्त्रिंशः, मण्डलाग्रः, कृपाणः

(ढ) शरः– शरः, पृषत्कः, बाणः, विशिखः, मार्गणः, कलम्बः, खगः, आशुगः, अयं पत्री, रोपः

(ण) पङ्कः– पङ्कः, कर्दमः, शादः, जम्बालः

सूत्र 32. ''त्रिविष्टपत्रिभुवने नपुंसके''

सूत्रार्थ–
- त्रिविष्टप तथा त्रिभुवन शब्द नपुंसकलिंग होते हैं।
- इन्हे स्वर्गवाची होने से पुँल्लिङ्ग होना चाहिए था। इसलिए यह पूर्वसूत्र का अपवाद है।

उदाहरण– (i) त्रिविष्टपम् (ii) त्रिभुवनम्

सूत्र 33. **''द्यौः स्त्रियाम्''**

सूत्रार्थ– 'दिव्' शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। स्वर्गवाची होने से पुंस्त्व प्राप्त था।

उदाहरण– इयं द्यौः

सूत्र 34. **''बाणकाण्डौ नपुंसके च''**

सूत्रार्थ– 'बाण' तथा 'काण्ड' शब्द नपुंसकलिंग व पुँल्लिङ्ग दोनों में प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण– (i) अयं बाणः (ii) इदं बाणम्
(i) अयं काण्डः (ii) इदं काण्डम्

सूत्र 35. **''नन्तः''**

सूत्रार्थ– नकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण–

प्रातिपदिक	रूप	अर्थ
राजन्	राजा	राजा
श्वन्	श्वा	कुत्ता
वृषन्	वृषा	इन्द्र
उक्षन्	उक्षा	वृषभ
मघवन्	मघवा	इन्द्र
तक्षन्	तक्षा	बढई
ऋभुक्षन्	ऋभुक्षा	इन्द्र
वृत्रहन्	वृत्रहा	इन्द्र

सूत्र 36. **''क्रतुपुरुषकपोलगुल्फमेघाभिधानानि''**

सूत्रार्थ– क्रतु, पुरुष, कपोल, गुल्फ, मेघ– ये शब्द तथा इनके पर्यायवाची शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– (क) **क्रतुः (यज्ञ)–** क्रतुः, यज्ञः, यागः, सवः, मखः, सप्ततन्तुः, अध्वरः
(ख) **पुरुषः (पुरुष)–** पुरुषः, पूरुषः, नरः, मानवः, मनुजः, मर्त्यः, मानुषः, मनुष्यः
(ग) **कपोलः (कपोल)–** कपोलः, गण्डः
(घ) **गुल्फः** (टखना) गुल्फः, प्रपदः
(ङ) **मेघः (बादल)** मेघः, नीरदः, वारिवाहः, स्तनयित्नुः, बलाहकः, धाराधरः, जलधरः, तडित्वान्, वारिदः, अम्बुभृत्, घनः, जीमूतः, मुदिरः, जलमुक्, धूमयोनिः

सूत्र 37. **''अभ्रं नपुंसकम्''**

सूत्रार्थ– 'अभ्र' शब्द नपुंसकलिङ्ग में होता है। 'अभ्र' शब्द के मेघवाची होने से यहाँ पुंस्त्व प्राप्त था, इस सूत्र से नपुंसकलिङ्ग हुआ।

उदाहरण– अभ्रम् = मेघ

सूत्र 38. **''उकारान्तः''**

सूत्रार्थ– उकारान्तशब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– प्रभुः = स्वामी इक्षुः = ईख, गुरुः = गुरु

सूत्र 39. **''धेनुरज्जुकुहुसरयुतनुरेणुप्रियङ्गवः स्त्रियाम्''**

सूत्रार्थ– धेनु, रज्जु, कुहु, सरयु, तनु, रेणु, तथा प्रियङ्गु–ये शब्द स्त्रीलिङ्ग में होंगे

उदाहरण– धेनुः = नयी ब्याही गाय
रज्जुः = रस्सी
कुहुः = अमावस्या
सरयुः = नदी विशेष
तनुः = शरीर
रेणुः = धूल
प्रियङ्गुः = लताविशेष

सूत्र 40. **''श्मश्रुजानुवसुस्वाद्वश्रुजतुत्रपुतालूनि नपुंसके''**

सूत्रार्थ–
- श्मश्रु, जानु, वसु, स्वादु, अश्रु, जतु, त्रपु, तथा तालु– ये शब्द नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।
- सभी शब्द उकारान्त हैं, अतः यहाँ पुंस्त्व प्राप्त था, इस सूत्र से नपुंसकलिङ्ग होता है।
- अमरकोश के अनुसार 'जानु' उभयलिङ्ग है। किरण, अग्नि, तथा कुबेर– इन अर्थों में 'वसु' पुँल्लिङ्ग है।

उदाहरण– श्मश्रु = मूँछ
जानु = घुटना
वसु = धन
स्वादु = मधुर
अश्रु = आँसू
जतु = लाख
त्रपु = टिन
तालु = काकुद

सूत्र 41. **''रुत्वन्तः''**

सूत्रार्थ– 'रु' तथा 'तु' हैं अन्त में जिसके ऐसा शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– मेरुः = पर्वत का नाम
सेतुः = पुल

सूत्र 42. **''दारुकशेरुजतुवस्तुमस्तूनि नपुंसके''**

सूत्रार्थ– 'दारु' तथा 'कशेरु' शब्द रुत्वन्त हैं, जतु, वस्तु, मस्तु शब्द तुकारान्त हैं, अतः यहाँ पुंस्त्व प्राप्त था। किन्तु ये शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– दारु = लकड़ी
कशेरु = रीढ की हड्डी

जतु = लाख
वस्तु = पदार्थ
मस्तु = दही का खट्टा पानी

सूत्र 43. **''कोपधः''**

सूत्रार्थ– जिसकी उपधा में 'क्' वर्ण हो, उसे कोपध शब्द कहते हैं। 'अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा' से अन्त्य अल् से पूर्व की उपधा संज्ञा होती है। कोपध जो अकारान्त शब्द, वह पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– स्तबकः = पुष्पगुच्छ
कल्कः = खली, मैल, धोखा, चूर्ण
कोरकः = कली

सूत्र 44. **''चिबुक-शालूक–प्रातिपदिकांशुकोल्मुकानि नपुंसके''**

सूत्रार्थ– अकारान्त कोपध चिबुक, शालूक, प्रातिपदिक, अंशुक तथा उल्मुक शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। सभी शब्द कोपध व अकारान्त हैं; अतः यहाँ पुंस्त्व प्राप्त था।

उदाहरण– चिबुकम् = ठोडी
शालूकम् = सिंघाडा
प्रातिपदिकम् = अर्थवान् शब्द, पाणिनीयव्याकरण में एक संज्ञा
अंशुकम् = वस्त्र
उल्मुकम् = अंगार

सूत्र 45. **''कण्टक - अनीक - सरक - मोदक - चषक - मस्तक - पुस्तक - तडाक - निष्क - शुष्क - वर्चस्क - पिनाक - भाण्डक - पिण्डक - कटक - शण्डक - पिटक - तालक - फलक - पुलाकानि नपुंसके च''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द कोपध तथा अकारान्त हैं, अतः पुंस्त्व प्राप्त था, इस सूत्र से नपुंसकत्व का भी विधान कर दिया गया। अतः उपर्युक्त शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होंगे।

उदाहरण– कण्टकम्/कण्टकः = काँटा
अनीकम्/अनीकः = सेना, समूह
सरकम्/सरकः = मद्य, मद्यपान, पानपात्र
मोदकम्/मोदकः = लड्डू
चषकम्/चषकः = मद्यपानपात्र
मस्तकम्/मस्तकः = माथा
पुस्तकम्/पुस्तकः = किताब
तडाकम्/तडाकः = तालाब
निष्कम्/निष्कः = सोना
शुष्कम्/शुष्कः = सूखा
वर्चस्कम्/वर्चस्कः = कूडा, विष्ठा
पिनाकम्/पिनाकः = शिव का धनुष
भाण्डकम्/भाण्डकः = कटोरा
पिण्डकम्/पिण्डकः = स्फोटक, फोड़ा
कटकम्/कटकः = मेखला, सेना
शण्डकम्/शण्डकः = नपुंसक
पिटकम्/पिटकः = पेटी
तालकम्/तालकः = ताला
फलकम्/फलकः = ढाल
पुलाकम्/पुलाकः = तुच्छ धान्य

सूत्र 46. **''टोपधः''**

सूत्रार्थ– 'ट्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– घटः = घड़ा
पटः = वस्त्र

सूत्र– 47. **''किरीट - मुकुट - ललाट - वट - विट - शृङ्गाट - कराट - लोष्टानि नपुंसके''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी पद नपुंसकलिङ्ग में होंगे। यह 'टोपधः' सूत्र का अपवाद है। सूत्रोक्त सभी शब्द टोपध तथा अकारान्त हैं, अतः पुंस्त्व प्राप्त था। इस सूत्र के द्वारा नपुंसकत्व का विधान किया गया है।

उदाहरण– किरीटम् = मुकुट
मुकुटम् = मुकुट
ललाटम् = माथा
वटम् = बड़ का वृक्ष
विटम् = दुष्ट
शृङ्गाटम् = चतुष्पथ
लोष्टम् = मिट्टी का ढेला

सूत्र 48. **''कुट - कूट - कपट - कवाट - तर्पट - नट - निकट - कीट - कटानि नपुंसके च''**

सूत्रार्थ–
- सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग होते हैं।
- सूत्रोक्त सभी शब्द टोपध तथा अकारान्त हैं; इन्हें 'टोपधः' सूत्र से पुंस्त्व प्राप्त था; इस सूत्र के द्वारा विकल्प से नपुंसकत्व भी कहा गया।

उदाहरण– कुटः/कुटम् = पर्वत
कूटः/कूटम् = शिखर

कपटः/कपटम् = छल
कवाटः/कवाटम् = कपाट
तर्पटः/तर्पटम् = वर्ष
नटः/नटम् = नर्तक
निकटः/निकटम् = पास
कीटः/कीटम् = क्षुद्रजन्तु
कटः/कटम् = चटाई

सूत्र– 49. **''णोपधः''**
सूत्रार्थ– 'ण्' वर्ण है उपधा में जिसके ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।
उदाहरण– गुणः = गुण
गणः = समूह
पाषाणः = पत्थर
पणः = शर्त

सूत्र 50. **''ऋण - लवण - पर्ण - तोरण - रणोष्णानि नपुंसके''**
सूत्रार्थ–
- सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।
- यह 'गोपधः' सूत्र का अपवाद है। क्योंकि सूत्रोक्त सभी शब्द णोपध तथा अकारान्त हैं अतः पुंस्त्व होना चाहिए किन्तु इस सूत्र से नपुंसकत्व का विधान किया गया।

उदाहरण– ऋणम् = कर्ज
लवणम् = नमक
तोरणम् = बन्दनवार
पर्णम् = पत्ता
रणम् = युद्ध
उष्णम् = गरम

सूत्र 51. **''कार्षापण - स्वर्ण - सुवर्ण - व्रण - चरण - वृषण - विषाण - चूर्ण - तृणानि नपुंसके च''**
सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।
उदाहरण– कार्षापणः/कार्षापणम् = एक सिक्का
स्वर्णः/स्वर्णम् = सोना
सुवर्णः/सुवर्णम् = सोना
व्रणः/व्रणम् = घाव
चरणः/चरणम् = पैर
वृषणः/वृषणम् = अण्डकोष
विषाणः/विषाणम् = सींग
चूर्णः/चूर्णम् = चूर्ण
तृणः/तृणम् = तिनका

सूत्र 52. **''थोपधः''**
सूत्रार्थ– 'थ्' वर्ण है उपधा संज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।
उदाहरण– रथः = रथ
अर्थः = धन

सूत्र 53. **''काष्ठ - पृष्ठ - सिक्थोक्थानि नपुंसके''**
सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। यह 'थोपधः' सूत्र का अपवाद है।
उदाहरण– काष्ठम् = लकड़ी
पृष्ठम् = पीठ
सिक्थम् = मोम
उक्थम् = स्तोत्र

सूत्र 54. **''काष्ठा दिगर्था स्त्रियाम्''**
सूत्रार्थ– दिशावाची 'काष्ठा' शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है।
उदाहरण– काष्ठा = दिशा

सूत्र 55. **''तीर्थ - प्रोथ - यूथ - गाथानि नपुंसके च''**
सूत्रार्थ– ये शब्द पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।
उदाहरण– तीर्थः/तीर्थम् = तीर्थ/गुरु
प्रोथः/प्रोथम् = सुअर नासिका
यूथः/यूथम् = झुण्ड
गाथः/गाथम् = गीत/भजन

सूत्र 56. **''नोपधः''**
सूत्रार्थ– 'न' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।
उदाहरण– इनः = स्वामी, सूर्य
केनः = झाग

सूत्र 57. **''जघनाऽजिन - तुहिन - कानन - वन - वृजिन - विपिन - वेतन - शासन - सोपान - मिथुन - श्मशान - रत्न - निम्न - चिह्नानि - नपुंसके''**
सूत्रार्थ– सूत्रोक्त नोपध तथा अकारान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। यह सूत्र 'नोपधः' का अपवाद है।
उदाहरण– जघनम् = स्त्री की कमर का अगला भाग
अजिनम् = चर्म
तुहिनम् = बर्फ/पाला
काननम् = वन
वनम् = वन
वृजिनम् = पाप
विपिनम् = जंगल

वेतनम् = वृत्ति
शासनम् = आदेश
सोपानम् = सीढ़ी
मिथुनम् = युगल
श्मशानम् = शव का दाहस्थान
रत्नम् = मणि
निम्नम् = नीच
चिह्नम् = लक्षण

सूत्र 58. **''मान - यानाभिधान - नलिन - पुलिनोद्यान शयनासनस्थानचन्दनाऽऽलान - समान - भवन - वसन - सम्भावन - विभावन - विमानानि नपुंसके च''**

सूत्रार्थ– ये नोपध तथा अकारान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग व पुँल्लिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– मानः/मानम् = प्रमाण
यानः/यानम् = वाहन
अभिधानः/अभिधानम् = नाम
नलिनः/नलिनम् = कमल
पुलिनः/पुलिनम् = तट
उद्यानः/उद्यानम् = उपवन
शयनः/शयनम् = पलंग
आसनः/आसनम् = पीठ
स्थानः/स्थानम् = स्थान, घर
चन्दनः/चन्दनम् = चन्दन
आलानः/आलानम् = खूँटा
समानः/समानम् = सदृश
भवनः/भवनम् = घर
वसनः/वसनम् = वस्त्र
सम्भावनः/सम्भावनम् = सम्भावना
विभावनः/विभावनम् = कल्पना
विमानः/विमानम् = देवरथ

सूत्र 59. **''पोपधः''**

सूत्रार्थ– 'प्' वर्ण है उपधा में जिसके ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है

उदाहरण– यूपः = स्तम्भः
दीपः = दीपक
सर्पः = साँप
निपः = घडा

सूत्र 60. **''पापरूपोडुप - तल्प - शिल्प - पुष्प- शष्प - समीपान्तरीपाणि नपुंसके''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– पापम् = पाप
रूपम् = सौन्दर्य
उडुपम् = नौका
तल्पम् = शय्या
शिल्पम् = कलाकौशल
पुष्पम् = फूल
शष्पम् = ताजा घास
समीपम् = पास
अन्तरीपम् = द्वीप

सूत्र 61. **''शूर्प - कुतप - कुणप - द्वीप - विटपानि नपुंसके च''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त ये सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग व पुँल्लिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– शूर्पः/शूर्पम् = छाज
कुतपः/कुतपम् = दिन का आठवाँ भाग
कुणपः/कुणपम् = शव
द्वीपः/द्वीपम् = टापू
विटपः/विटपम् = पेड़, शाखा

सूत्र 62. **''भोपधः''**

सूत्रार्थ– 'भ्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– स्तम्भः = खम्भा
कुम्भः = घड़ा

सूत्र 63. **''मोपधः''**

सूत्रार्थ– 'म्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– सोमः= सोम
स्तोमः = स्तुति
भीमः = भयंकर
होमः = हवन

सूत्र 64. **''सङ्ग्राम - दाडिम - कुसुमाश्रम - क्षेम - क्षौम - होमोद्दामानि नपुंसके च''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग तथा पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– सङ्ग्रामः/सङ्ग्रामम् = युद्ध
दाडिमः/दाडिमम् = अनार
कुसुमः/कुसुमम् = फूल
आश्रमः/आश्रमम् = आश्रम

क्षेमः/क्षेमम् = कुशल मंगल
क्षौमः/क्षौमम् = दुकूल (रेशमीवस्त्र)
होमः/होमम् = हवन
उद्दामः/उद्दामम् = स्वतन्त्र

सूत्र 65. **''योपधः''**

सूत्रार्थ– 'य्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– समयः = काल
हयः = घोड़ा

सूत्र 66. **''किसलय - हृदयेन्द्रियोत्तरीयाणि नपुंसके''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। यह 'योपधः' सूत्र का अपवाद है।

उदाहरण– किसलयम् = नया पत्ता
हृदयम् = हृदय
इन्द्रियम् = इन्द्रिय
उत्तरीयम् = प्रावार

सूत्र 67. **''गोमय - कषाय - मलयाऽन्वयाऽव्ययानि नपुंसके च''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं। यह 'योपधः' सूत्र का वैकल्पिक विधान करता है।

उदाहरण– गोमयः/गोमयम् = गोबर
कषायः/कषायम् = कसैला
मलयः/मलयम् = एक पर्वत
अन्वयः/अन्वयम् = वंश
अव्ययः/अव्ययम् = नित्य, अव्यय एक पद विशेष

सूत्र 68. **''रोपधः''**

सूत्रार्थ– रेफ है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– क्षुरः = छुरा, उस्तरा
अङ्कुरः = कोंपल

सूत्र 69. **''द्वार - अग्र - स्फार - तक्र - वक्र - वप्र - क्षिप्र - क्षुद्र - नार - तीर - कृच्छ्र - रन्ध्र - अस्त्र - श्वभ्र - भीर - गभीर - क्रूर - विचित्र - केयूर - केदार - उदार - अजस्त्र - शरीर - कन्दर - मन्दार - पञ्जर - अजर - जठर - अजिर - वैर - चामर - पुष्कर - गह्वर - कुहर - कुटीर - कुलीर - चत्वर - काश्मीर - नीर - अम्बर - शिशिर - तन्त्र - यन्त्र - क्षत्र - क्षेत्र - मित्र - कलत्र - चित्र - मूत्र - सूत्र - वक्त्र - नेत्र - गोत्र - अङ्गुलित्र - भलत्र - शस्त्र - शास्त्र - वस्त्र - पत्र - पात्र - छत्राणि नपुंसके''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी पद नपुंसकलिङ्ग होंगे। यह 'रोपधः' सूत्र का अपवाद है।

उदाहरण– द्वारम् = द्वार — अग्रम् = अगला
स्फारम् = बाहुल्य — तक्रम् = मट्ठा
वक्रम् = टेढ़ा — वप्रम् = टीला
क्षिप्रम् = मूहूर्त का 1/15वाँ अंश, शीघ्र
क्षुद्रम् = रजकण
नारम् = लोगों का समूह, ज्ञान
तीरम् = किनारा — दूरम् = दूर
कृच्छ्रम् = कठिन — रन्ध्रम् = छिद्र
अश्रम् = आँसू — श्वभ्रम् = रन्ध्र
भीरम् = पटह — गभीरम् = दुन्दुभि
क्रूरम् = उबाला हुआ चावल
विचित्रम् = विस्मय — केयूरम् = बाजूबन्द
केदारम् = आलवाल — उदरम् = पेट
अजस्त्रम् = निरन्तर — शरीरम् = शरीर
कन्दरम् = गुफा — मन्दारम् = मन्दारपुष्प
पञ्जरम् = पिंजरा — अजरम् = वृद्धत्वरहित
जठरम् = तोंद — अजिरम् = झोपड़ी
चामरम् = चँवर — पुष्करम् = कमल
गह्वरम् = गुफा — कुहरम् = छिद्र
कुटीरम् = झोंपडी — कुलीरम् = केंकडा
चत्वरम् = स्थण्डिवल — काश्मीरम् = केसर
नीरम् = जल — अम्बरम् = वस्त्र
शिशिरम् = एक ऋतु — तन्त्रम् = तन्तु
यन्त्रम् = यन्त्र — क्षत्रम् = क्षत्रियजाति
क्षेत्रम् = खेत — मित्रम् = मित्र
कलत्रम् = पत्नी — चित्रम् = चित्र
मूत्रम् = मूत्र — सूत्रम् = धागा
वक्त्रम् = मुख — नेत्रम् = आँख
गोत्रम् = कुल — अंगुलित्रम् = दस्ताना
शस्त्रम् = शस्त्र — शास्त्रम् = शास्त्र
वस्त्रम् = वस्त्र — पत्रम् = पत्ता
पात्रम् = पात्र — छत्रम् = आतपत्र
वैरम् = वैर

सूत्र 70. **''षोपधः''**

सूत्रार्थ– 'ष्' वर्ण उपधासंज्ञक है जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– वृक्षः = वृक्ष
वृषः = बैल
मेषः = मेढा

सूत्र 71. **''सोपधः''**

सूत्रार्थ– 'स्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– वत्सः = बच्चा
महानसः = रसोईघर
वायसः = कौआ

सूत्र 72. **''चमस - अंस - रस - निर्यास - उपवास - कार्पास - वास - मास - कास - कंस - मांसानि नपुंसके च''**

सूत्रार्थ– ये शब्द नपुंसकलिङ्ग व पुँल्लिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– चमसः/चमसम् = चम्मच
अंसः/अंसम् = कंधा
रसः/रसम् = रस
निर्यासः/निर्यासम् = वृक्ष से प्राप्त गोंद
उपवासः/उपवासम् = व्रत
कार्पासः/कार्पासम् = कपास
वासः/वासम् = गन्ध, निवास
मासः/मासम् = महीना
कासः/कासम् = खाँसी
कंसः/कंसम् = मद्य का प्याला
मांसः/मांसम् = मांस

सूत्र 73. **''रश्मिदिवसाभिधानानि''**

सूत्रार्थ– रश्मिवाची तथा दिवसवाची शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– रश्मिः, किरणः, अस्रः, मयूखः, अंशुः, गभस्तिः, घृणिः, मरीचिः,
दिवसः, वासरः, धस्रः

सूत्र 74. **''दिनाऽहनी नपुंसके''**

सूत्रार्थ– 'दिन' तथा 'अहन्' शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

सूत्र 75. **''दाराऽक्षतलाजाऽसूनां बहुत्वं च''**

सूत्रार्थ– दारा, अक्षत तथा लाजा - शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं, तथा ये शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण– दाराः = पत्नी
लाजाः = खील
अक्षताः = बिना टूटे चावल

सूत्र 76. **''ऋषि - राशि - दृति - ग्रन्थि - क्रिमि - ध्वनि - बलि - कौलि - मौलि - रवि - कवि - कपि - मुनयः''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– ऋषिः = ऋषि
राशिः = राशि
दृतिः = मसक
ग्रन्थिः = गाँठ
क्रिमिः = जन्तु
ध्वनिः = ध्वनि
बलिः = बलि
मौलिः = मस्तक
रविः = सूर्य
कविः = कवि
कपिः = बन्दर
मुनिः = मुनि

सूत्र 77. **''ध्वज - गज - मुञ्ज - पुञ्जाः''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– ध्वजः = पताका
गजः = हाथी
मुञ्जः = मूँज
पुञ्जः = समूह

सूत्र 78. **''हस्त - कुन्त - अन्त - वात - व्रात - दूत - धूर्त - सूत - चूत - मुहूर्ताः''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– हस्तः = हाथ
कुन्तः = भाला
अन्तः = अन्त
वातः = वायु
व्रातः = नीच जाति
दूतः = दूत
धूर्तः = ठग
सूतः = सारथि
चूतः = आम्रवृक्ष
मुहूर्तः = कालखण्ड

सूत्र 79. **''पल्लव - पल्वल - कफ - रेफ - कटाह - निर्व्यूह - मठ - मणि - तरङ्ग - तुरङ्ग - गन्ध - स्कन्ध - मृदङ्ग - सङ्ग - समुद्गपुङ्खाः''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– पल्लवः = किसलय
पल्वलः = सरोवर
कफः = श्लेष्मा
रेफः = रकार
कटाहः = कडाही
निर्व्यूहः = द्वार, खूँटी
मठः = छात्रावास
मणिः = रत्न
तरङ्गः = तरंग
तुङ्गः = घोडा
गन्धः = गन्ध
स्कन्धः = कन्धा
मृदङ्गः = एक वाद्य
सङ्गः = संयोग
समुद्गः = सन्दूक
पुङ्खः = बाण का वह भाग जिसमें पंख लगे होते हैं।

सूत्र 80. ''**सारथि - अतिथि - कुक्षि - बस्ति - पाणि - अञ्जलयः**''

सूत्रार्थ– ये शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– सारथिः = सारथि
अतिथिः = अतिथि
कुक्षिः = उदरपार्श्व
बस्तिः = मूत्राशय
पाणिः = हाथ
अञ्जलिः = करसम्पुट

नपुंसकलिङ्ग प्रकरण

सूत्र 81. ''**भावे ल्युडन्तः**''

सूत्रार्थ– भाव अर्थ में विहित जो ल्युट् प्रत्यय, तदन्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– गमनम् = जाना
हसनम् = हँसना
श्रवणम् = सुनना
भक्षणम् = खाना

सूत्र 82. ''**निष्ठा च**''

सूत्रार्थ– भाव अर्थ में विहित जो निष्ठासंज्ञक 'क्त' प्रत्यय, तदन्त प्रातिपदिक नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– हसितम्, गीतम्, विलसितम्, गतम्।

सूत्र 83. ''**त्वष्यञौ तद्धितौ**''

सूत्रार्थ– भाव अर्थ में विहित जो 'त्व' तथा 'ष्यञ्' तद्धित प्रत्यय, तदन्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– **'त्व' - प्रत्ययान्त शब्द**– शुक्लत्वम्, निपुणत्वम्, उचितत्वम्
'ष्यञ्' प्रत्ययान्त शब्द– चातुर्यम्, नैपुण्यम्, शौक्ल्यम्,
माधुर्यम्, सौख्यम्, सामीप्यम्

सूत्र 84. ''**अव्ययीभावः**''

सूत्रार्थ– अव्ययीभावसमास नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार
उपकृष्णम् = कृष्ण के पास
प्रत्येकम् = प्रत्येक

सूत्र 85. ''**द्वन्द्वैकत्वम्**''

सूत्रार्थ– समाहार अर्थ में जो द्वन्द्व समास, वह नपुंसकलिङ्ग होगा।

उदाहरण– पाणिपादम् = हाथ और पैरों का समाहार
काकोलूकम् = काक और उलूकों का समाहार
गवाश्वम् = गायों तथा अश्वों का समाहार
शिरोग्रीवम् = शिर तथा ग्रीवा का समाहार

सूत्र 86. ''**रात्राह्नाहाः पुंसि**''

सूत्रार्थ– रात्र, अह्न तथा अह– ये शब्द हैं अन्त में जिसके, ऐसा तत्पुरुष समास पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– अपररात्रः = रात का अगला भाग
पूर्वरात्रः = रात का पूर्व का भाग
पूर्वाह्णः = दिन का पूर्व का भाग
अपराह्णः = दिन का अगला भाग
द्व्यहः = दो दिन
त्र्यहः = तीन दिन

सूत्र 87. ''**सङ्ख्यापूर्वा रात्रिः**''

सूत्रार्थ– संख्या है पूर्वपद में जिसके, ऐसा द्विगु तत्पुरुष संज्ञक रात्रि शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– द्विरात्रम् = दो रात
त्रिरात्रम् = तीन रात
पञ्चरात्रम् = पाँच रात
नवरात्रम् = नौ रात

विशेष– 'रात्रि' शब्द को समासान्त होकर 'रात्र' बन जाता है 'संख्या' पूर्वपद में न होगा तो पुँल्लिङ्ग ही होगा जैसे– सर्वरात्रः।

सूत्र 88. ''**द्विगुः स्त्रियां च व्यवस्थया**''

सूत्रार्थ– द्विगुसंज्ञक शब्द नपुंसकलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग होता है।

उदाहरण– त्रिलोकी = तीनों लोक
पञ्चमूली = पाँच मूल
पञ्चखट्वी = पाँच खाट
त्रिभुवनम् = तीनों लोक
पञ्चपात्रम् = पाँच पात्र

सूत्र 89. **''इसुसन्तः''**

सूत्रार्थ– इस्-प्रत्ययान्त तथा उस्-प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– हविः = आहुति
धनुः = धनुष

सूत्र 90. **''मुख - नयन - लोह - वन - मांस - रुधिर - कार्मुक - विवर - जल - हल - धनान्नाभिधानानि''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द तथा इनके पर्यायवाची शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण–

(क) **'मुख' के पर्याय नाम**– मुखम्, आस्यम्, वक्त्रम्, वदनम्, तुण्डम्, आननम्, लपनम्।

(ख) **'नयन' के पर्याय नाम**– नयनम्, नेत्रम्, लोचनम्, अक्षि, चक्षुः, ईक्षणम्।

(ग) **'लोह' के पर्याय नाम**– लोहम्, कालायसम्, अयः

(घ) **'वन' के पर्याय नाम**– वनम्, विपिनम्, काननम्, अरण्यम्

(ङ) **'मांस' के पर्याय नाम**– मांसम्, आमिषम्, पिशितम्, कव्यम्, पललम्

(च) **'रुधिर' के पर्याय नाम**– रुधिरम्, रक्तम्, शोणितम्, क्षतजम्।

(छ) **'कार्मुक' के पर्याय नाम**– कार्मुकम्, चापम्, धनुः, शरासनम्।

(ज) **'विवर' के पर्याय नाम**– विवरम्, रन्ध्रम्, श्वभ्रम्, बिलम्।

(झ) **'जल' के पर्याय नाम**– जलम्, नीरम्, अम्बु, तोयम्, वारि, पयः, सलिलम्, अर्णः।

(ञ) **'हल' के पर्याय नाम**– हलम्, लाङ्गलम्, गोदारणम्

(ट) **'धन' के पर्याय नाम**– धनम्, वित्तम्, द्रविणम्, निधानम्

(ठ) **'अन्न' के पर्याय नाम**– अन्नम्, अशनम्, भक्ष्यम्।

सूत्र 91. **''अटवी स्त्रियाम्''**

सूत्रार्थ– 'अटवी' शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होता है, यह शब्द वनवाची है, अतः पूर्वसूत्र से नपुंसकत्व प्राप्त था।

सूत्र 92. **''लोपधः''**

सूत्रार्थ– 'ल्' वर्ण है उपधासंज्ञक जिसका, ऐसा अकारान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– कुलम् = वंश
कूलम् = तट
स्थलम् = स्थल
मूलम् = मूल

सूत्र 93. **''तूल - उपल - ताल - कुसूल - तरल - कम्बल देवल - वृषलाः पुंसि''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त ये शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं। सूत्रोक्त सभी शब्द लोपध तथा अकारान्त हैं; अतः इन्हें 'लोपधः' सूत्र से नपुंसकत्व प्राप्त था। यह पूर्वसूत्र का अपवाद है।

उदाहरण– तूलः = रुई
उपलः = रत्न
तालः = एक वृक्ष
कुसूलः = कोठला
तरलः = हार का मध्यमणि
कम्बलः = कम्बल
देवलः = एक महर्षि
वृषलः = नीच

सूत्र 94. **''शील - मूल - मङ्गल - साल - कमल - तल - मुसल - कुण्डल - पलल - मृणाल - बाल - निगल - पलाल - बिडाल - खिल - शूलाः पुंसि च''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त ये शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग होते हैं। सूत्रोक्त सभी शब्द लोपध तथा अकारान्त हैं, अतः इन्हें 'लोपधः' से नपुंसकत्व प्राप्त था; यहाँ पुंस्त्व भी कह दिया गया।

उदाहरण– शीलः/शीलम् = स्वभाव
मूलः/मूलम् = मूल
मङ्गलः/मङ्गलम् = शुभ
सालः/सालम् = एक वृक्ष
कमलः/कमलम् = एक पुष्प
तलः/तलम् = ऊपरी भाग
मुसलः/मुसलम् = मूसल
कुण्डलः/कुण्डलम् = कर्णाभूषण
पललः/पललम् = मांस
मृणालः/मृणालम् = कमलनाल

बालः/बालम् = बाल
निगलः/निगलम् = निगड़
पलालः/पलालम् = काण्ड, नाल
बिडालः/बिडालम् = बिलाव (बिलार)
खिलः/खिलम् = परिशिष्टांश
शूलः/शूलम् = आयुध, तीव्र वेदना

सूत्र 95. **''शतादिः सङ्ख्या''**

सूत्रार्थ– संख्यावाचक शत आदि शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– शतम् = सौ
सहस्रम् = हजार

सूत्र 96. **''लक्षाकोटी स्त्रियाम्''**

सूत्रार्थ– संख्यावाची 'लक्ष' तथा 'कोटि' शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– लक्षा = लाख
कोटिः = करोड

सूत्र 97. **''शङ्कुः पुंसि च''**

सूत्रार्थ– संख्यावाची 'शङ्कु' शब्द पुँल्लिङ्ग होता है।

उदाहरण– शङ्कुः = दस करोड़

सूत्र 98. **''नामरोमणी नपुंसके''**

सूत्रार्थ– 'मन्' प्रत्ययान्त, दो अच् वाले 'नामन्' तथा 'रोमन्' शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– नाम = नाम
रोम = रोम

सूत्र 99. **''असन्तोद्व्यच्कः''**

सूत्रार्थ– 'अस्' प्रत्ययान्त दो अच् वाला प्रातिपदिक, वह नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– पयस् - पयः = दूध
तपस् - तपः = तपस्या
यशस् - यशः = यश, कीर्ति
तेजस् - तेजः = तेज
मनस् - मनः = मन
वर्चस् - वर्चः = तेज

विशेष– 'चन्द्रमस्' शब्द 'अस्' - प्रत्ययान्त तो है परन्तु दो अच् वाला न होने से नपुंसकत्व नहीं हुआ। यथा– चन्द्रमस् - चन्द्रमाः = चन्द्रमा (पु०)

सूत्र 100. **''अप्सराः स्त्रियाम्''**

सूत्रार्थ– 'असु' प्रत्ययान्त जो 'अप्सरस्' शब्द, वह स्त्रीलिङ्ग होता है।

उदाहरण– अप्सराः = देवांगना

सूत्र 101. **''त्रान्तः''**

सूत्रार्थ– 'त्र' प्रत्ययान्त के अकारान्त प्रातिपदिक, वह नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– पत्रम् = पत्ता
छत्रम् = छाता
दात्रम् = हँसिया
नेत्रम् = आँख
शस्त्रम् = शस्त्र
योत्रम् = रस्सी
योक्त्रम् = रस्सी
तोत्रम् = आर
स्तोत्रम् = स्तुति
सेत्रम् = बेड़ी
सेक्त्रम् = डोलची
मेढ्रम् = लिङ्ग

सूत्र 102. **''यात्रा - मात्रा - भस्त्रा - दंष्ट्रा - वरत्राः स्त्रियामेव''**

सूत्रार्थ– 'त्र' - प्रत्ययान्त यात्रा, मात्रा, भस्त्रा, दंष्ट्रा, तथा वरत्रा शब्द स्त्रीलिङ्ग ही होते हैं। यह 'त्रान्तः' सूत्र का अपवाद है।

उदाहरण– यात्रा = यात्रा
मात्रा = मात्रा
भस्त्रा = धौंकनी
दंष्ट्रा = दाढ
वरत्रा = चर्मपेटिका जो अश्व आदि पशुओं की छाती के नीचे बाँधी जाती है।

सूत्र 103. **''भृत्र - अमित्र - छात्र - पुत्र - मन्त्र - वृत्र - मेढ्र - उष्ट्राः पुंसि''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त 'त्र' प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं। इन्हें 'त्रान्तः' सूत्र से नपुंसकत्व प्राप्त था।

उदाहरण– भृत्रः = पालक
अमित्रः = शत्रु
छात्रः = छात्र
पुत्रः = पुत्र
मन्त्रः = ईश्वरवचन
वृत्रः = मेघ
मेढ्रः = पुरुष (इन्द्रिय)
उष्ट्रः = ऊँट

सूत्र 104. **''पत्र - पात्र - पवित्र - सूत्र - छत्राः पुंसि च''**

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– पत्रः/पत्रम् = पत्ता, पंख, वाहन
पात्रः/पात्रम् = पात्र, भाजन, अर्ह
पवित्रः/पवित्रम् = शुद्ध
सूत्रः/सूत्रम् = यज्ञोपवीत
छत्रः/छत्रम् = छाता, कुकुरमुत्ता

सूत्र 105. ''बल - कुसुम - शुल्ब - पत्तन - रण - अभिधानानि''

सूत्रार्थ– बल, कुसुम, शुल्ब, पत्तन तथा रण – ये शब्द तथा इनके वाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– **(क) 'बल' के पर्याय नाम**– बलम्, द्रविणम्, तरः, सहः, शौर्यम्, शुष्मम्
(ख) 'कुसुम' के पर्याय नाम – कुसुमम्, पुष्पम्, प्रसूनम्
(ग) 'शुल्ब' के पर्याय नाम– शुल्बम्, ताम्रकम्, म्लेच्छमुखम्, उदुम्बरम्
(घ) 'पत्तन' के पर्याय नाम– पत्तनम्, नगरम्
(ङ) 'रण' के पर्याय नाम– युद्धम्, आयोधनम्, जन्यम्, प्रघनम्, मृधम्, आस्कन्दनम्, सङ्ख्यम्, समीकम्, साम्परायिकम्।

सूत्र 106. ''फलजातिः''

सूत्रार्थ– फलवाची शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है।

उदाहरण– आमलकम् = आँवले का फल
आम्रम् = आम्र का फल

सूत्र 107. ''वियत् - जगत् - सकृत् - शकन् - पृषत् - शकृद् - यकृत् - उदश्वितः''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– वियत् = आकाश
जगत् = संसार
सकृत् = एकबार
शकन् = गोबर
पृषत् = बिन्दु
शकृत् = विष्ठा
यकृत् = जिगर
उदश्वित् = लस्सी

सूत्र 108. ''नवनीत - अवतान - अनृत - अमृत - निमित्त - वित्त - चित्त - पित्त - व्रत - रजत - वृत्त - पलितानि''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– नवनीतम् = मक्खन
अवतानम् = फैलाव
अनृतम् = झूठ
अमृतम् = अमृत
निमित्तम् = शकुन
वित्तम् = धन
चित्तम् = चित्त
पित्तम् = पित्त
व्रतम् = व्रत
रजतम् = चाँदी
वृत्तम् = वर्तुल
पलितम् = बालों की सफेदी

सूत्र 109. ''श्राद्ध - कुलिश - दैव - पीठ - कुण्ड - भाण्ड - अङ्क - अङ्ग - दधि - सक्थि - अक्षि - आस्य - आस्पद - आकाश - कण्व - बीजानि''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– श्राद्धम् = श्राद्ध
कुलिशम् = वज्र
दैवम् = भाग्य
पीठम् = कुशासन
कुण्डम् = भिक्षापात्र
भाण्डम् = पात्र
अङ्कम् = गोद, चिह्न
अङ्गम् = अंग
दधि = दही
सक्थि = जंघा, हड्डी
अक्षि = आँख
आस्यम् = मुख
आस्पदम् = स्थान
आकाशम् = आकाश
कण्वम् = निर्मलीफल
बीजम् = बीज

सूत्र 110. ''धान्य - आज्य - सस्य - रुप्य - कुप्य - पण्य - वर्ण्य - धृष्य - हव्य - कव्य - काव्य - सत्य - अपत्य - मूल्य - शिक्य - कुड्य - मद्य - हर्म्य - तूर्य - सैन्यानि''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– धान्यम् = अनाज
आज्यम् = घी

सस्यम् = कृषि
रुप्यम् = रजत
कुप्यम् = धातु
पण्यम् = विक्रेय
वर्ण्यम् = केसर
धृष्यम् = स्थान
हव्यम् = हवि
कव्यम् = बलि अन्न
काव्यम् = काव्य
सत्यम् = सत्य
अपत्यम् = सन्तति/सन्तान
मूल्यम् = मूल्य
शिक्यम् = छिक्का
कुड्यम् = भित्ति
मद्यम् = शराब, मदिरा
हर्म्यम् = महल
तूर्यम् = मृदंग
सैन्यम् = सेना

सूत्र 111. ''**द्वन्द्व - बर्ह - दुःख - बडिश - पिच्छ - बिम्ब - कुटुम्ब - कवच - वर - शर - वृन्दारकाणि**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

उदाहरण– द्वन्द्वम् = कलह
बर्हम् = मयूरपुच्छ
दुःखम् = दुःख
बडिशम् = मछली काँटा
पिच्छम् = मोर का चँदा
बिम्बम् = प्रतिच्छाया
कुटुम्बम् = परिवार
कवचम् = कवच
वरम् = श्रेष्ठ
शरम् = जल
वृन्दारकम् = देवता, श्रेष्ठ

स्त्रीलिङ्ग-पुँल्लिङ्ग-प्रकरण

सूत्र 112. ''**गो - मणि - यष्टि - मुष्टि - पाटलि - वस्ति - शाल्मलि - त्रुटि - मसि - मरीचयः**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त ये शब्द स्त्रीलिङ्ग व पुँल्लिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– गौः = बैल, गाय
मणिः = रत्न
यष्टिः = लाठी
मुष्टिः = मुट्ठी
पाटलिः = श्वेत रक्त पुष्प विशेष
वस्तिः = मूत्राशय
शाल्मलिः = सेमल
त्रुटिः = मात्रा, कण
मसिः/मषी = स्याही
मरीचिः = किरण

सूत्र 113. ''**मृत्यु - सीधु - कर्कन्धु - किष्कु - कण्डु - रेणवः**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द स्त्रीलिङ्ग तथा पुँल्लिङ्ग दोनों होते हैं–

उदाहरण– मृत्युः = मृत्यु
सीधुः = मदिरा
कर्कन्धुः = बदरी
किष्कुः = प्रकोष्ठ
कण्डुः = खुजली
रेणुः = धूलि

सूत्र 114. ''**गुणवचनमुकारान्तं नपुंसकं च**''

सूत्रार्थ– गुणवाची जो उकारान्त शब्द, वह तीनों लिङ्गों में होता है।

उदाहरण– 1. अयं पटुः 2. इदं पटु 3. इयं पट्वी = चतुर

सूत्र 115. ''**अपत्यार्थस्तद्धिते**''

सूत्रार्थ– तद्धित प्रकरण में विहित जो अपत्यार्थक प्रत्यय, तदन्त प्रातिपदिक पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– औपगवः = उपगु का पुत्र
औपगवी = उपगु की कन्या

जरत्कारवः = जरत्कारु का पुत्र
जरत्कारवी = जरत्कारु की कन्या

कापटवः = कपटु का पुत्र
कापटवी = कपटु की कन्या

पुँल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग प्रकरण

सूत्र 116. ''**शृङ्ग - अघ - निदाघ - उद्यम - शल्य- दृढाः**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– शृङ्गः/शृङ्गम् = सींग
अघः/अधम् = पाप, दुःख, कष्ट
निदाघः/निदाघम् = ग्रीष्म
उद्यमः/उद्यमम् = श्रम
शल्यः/शल्यम् = काँटा
दृढः/दृढम् = स्थिर

सूत्र 117. ''**व्रज - कुञ्ज - कुथ - कूर्च - प्रस्थ - दर्प - अर्भ - अर्ध - दर्भ - पुच्छाः**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– व्रजः/व्रजम् = गोष्ठ, समूह
कुञ्जः/कुञ्जम् = लतागृह
कुथः/कुथम् = हाथी की शोभा के लिए चित्रित वस्त्र
कूर्चः/कूर्चम् = गुच्छा, दाढी
प्रस्थः/प्रस्थम् = पर्वत शिखर
दर्पः/दर्पम् = घमण्ड
अर्भः/अर्भम् = बच्चा
अर्धर्चः/अर्धर्चम् = अर्धऋचा
दर्भः/दर्भम् = कुशा
पुच्छः/पुच्छम् = पूँछ

सूत्र 118. ''**कबन्ध - औषध - आयुध - अन्ताः**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– कबन्धः/कबन्धम् = जल, सिर कटा धड़
औषधः/औषधम् = औषधि/दवा
आयुधः/आयुधम् = शस्त्र
अन्तः/अन्तम् = समाप्ति

सूत्र 119. ''**दण्ड - मण्ड - खण्ड - शव - सैन्धव - पार्श्व - आकाश - कुश - काश - अङ्कुश - कुलिशाः**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त सभी शब्द पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– दण्डः/दण्डम् = लाठी
मण्डः/मण्डम् = मॉड
खण्डः/खण्डम् = भाग
शवः/शवम् = मुर्दा
सैन्धवः/सैन्धवम् = घोड़ा/नमक
पार्श्वः/पार्श्वम् = पास
आकाशः/आकाशम् = आकाश
कुशः/कुशम् = एक घास विशेष
काशः/काशम् = एक घास विशेष
अङ्कुशः/अङ्कुशम् = अंकुश
कुलिशः/कुलिशम् = वज्र

सूत्र 120. ''**गृह - मेह - देह - पट्ट - पटह - अष्टापद - अम्बुद - ककुदाश्च**''

सूत्रार्थ– सूत्रोक्त शब्द पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

उदाहरण– गृहः/गृहम् = घर
मेहः/मेहम् = प्रमेहरोग
देहः/देहम् = शरीर
पट्टः/पट्टम् = पीठ
पटहः/पटहम् = नगाड़ा
अष्टापदः/अष्टापदम् = स्वर्ण
अम्बुदः/अम्बुदम् = बादल
ककुदः/ककुदम् = बैल का कुहीन, श्रेष्ठ, प्रधान

अविशिष्टलिङ्ग-प्रकरणम्

सूत्र 121. ''**अव्ययं कतियुष्मदः**''

सूत्रार्थ– अव्ययसंज्ञक 'कति' तथा 'युष्मद्' शब्द अविशिष्टलिङ्ग (सभी लिङ्गों) में होते हैं।

- 'कति' शब्द 'यति' तथा 'तति' शब्दों का उपलक्षण है।
- 'युष्मद्' शब्द 'अस्मद्' का उपलक्षण है।

उदाहरण– **(क) अव्ययशब्दाः**–श्वः, उच्चैः, शनैः, सम्प्रति, नीचैः।
(ख) (i) कति–कति पुरुषाः, कति स्त्रियः, कति फलानि
(ii) यति–यति बालकाः, यति बालिकाः, यति फलानि
(iii) तति–तति बालकाः, तति बालिकाः, तति पुष्पाणि
(ग) (i) युष्मद् – यूयं बालकाः, यूयं कन्याः
(ii) अस्मद् – वयं बालकाः, वयं कन्याः

सूत्र 122. ''**ष्णान्ता सङ्ख्या**''

सूत्रार्थ– षकारान्त और नकारान्त जो संख्यावाची शब्द, वह अविशिष्टलिङ्ग (सभी लिङ्ग) में होते हैं।

उदाहरण– **(क) षष्** – षकारान्त सङ्ख्या– षट् बालकाः, षट् बालिकाः, षट् पुस्तकानि।
(ख) पञ्चन्– नकारान्त सङ्ख्या – पञ्च बालकाः, पञ्च बालिकाः, पञ्च पुस्तकानि

सूत्र 123. ''**गुणवचनं च**''

सूत्रार्थ– गुणवाची शब्द विशेष्य के लिङ्ग और वचन का अनुसरण करते हैं।

उदाहरण– (क) शुक्लः पटः, शुक्ला पटी, शुक्लं पटम्।
(ख) चतुरः बालः, चतुरा बाला, चतुरं मित्रम्।

सूत्र 124. ''**कृत्याश्च**''

सूत्रार्थ– कृत्यसंज्ञक जो प्रत्यय, तदन्त शब्द अविशिष्टलिङ्ग (सभी लिङ्ग) में होते हैं।

उदाहरण– **(क) कर्तरि कृत्याः**– (i) गेयः गेया, गेयम्, (ii) पाठकः, पाठिका, पाठकम्
(ख) कर्मणि कृत्याः– (i) गन्तव्यः ग्रामः, गन्तव्या नगरी, गन्तव्यं नगरम्, (ii) पठनीयः, पठनीया, पठनीयम्

सूत्र 125. ''**सर्वादीनि सर्वनामानि**''

सूत्रार्थ– सर्वनामसंज्ञक 'सर्व' आदि शब्द अविशिष्टलिङ्ग में होते हैं।

उदाहरण– (i) सर्वः, सर्वा, सर्वम्, (ii) अयम्, इयम्, इदम्, (ii) सः, सा, तत्, (iv) कः, का, किम् आदि।